साधु
(The Hermit)

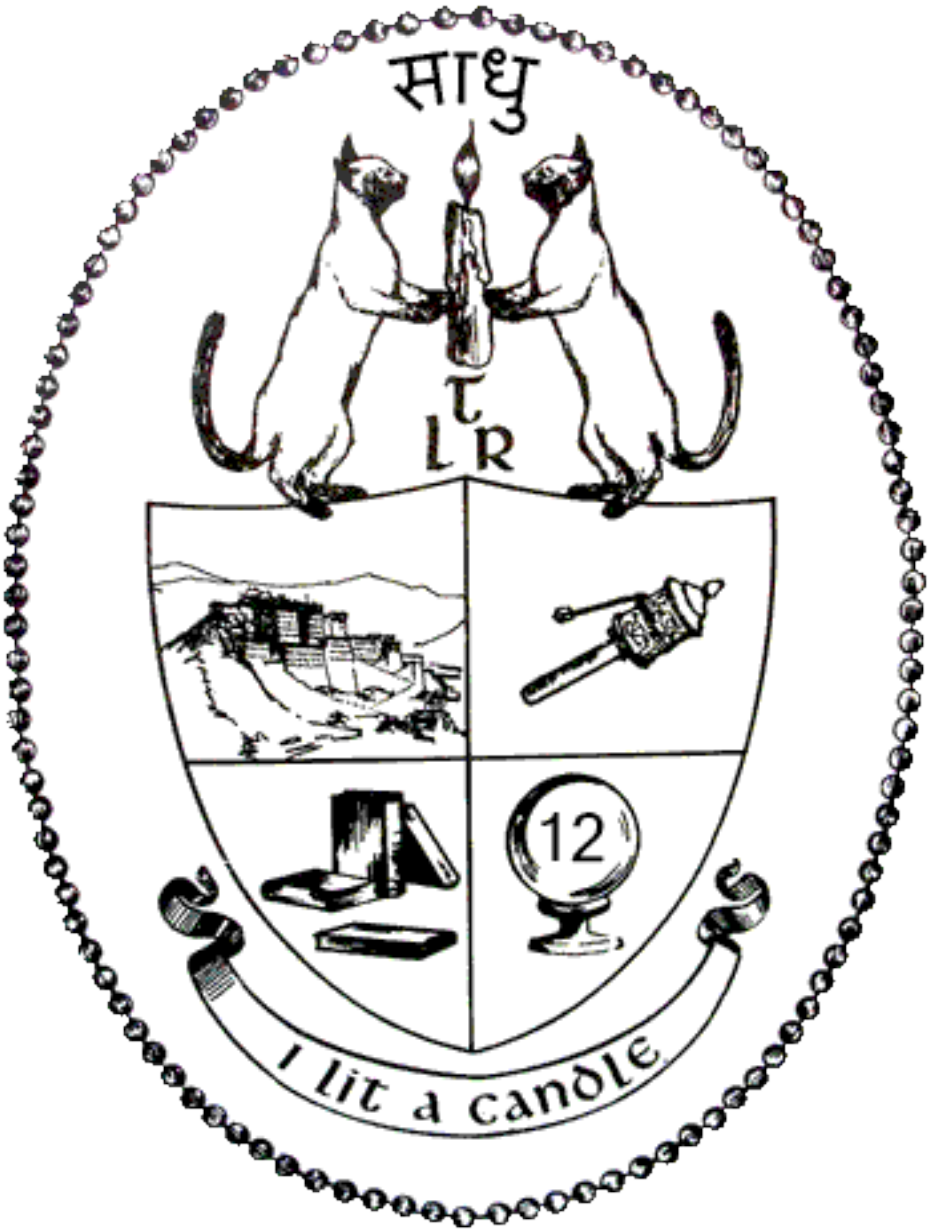

(I Lit a candle)
मैं दीप जलाता हूँ

साधु
(The Hermit)

मूल लेखक
टी. लोबसांग रम्पा

हिन्दी रूपान्तरण कर्ता
डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता

शोधकार्यों के हितार्थ

निःशुल्क वितरण के लिये

प्राप्ति स्थल : www.lobsangrampa.org
email : tuesday@lobsangrampa.org
drguptavp@gmail.com

विषय सूची

अनुवादक का निवेदन	:	i - iv
अध्याय एक	:	1
अध्याय दो	:	12
अध्याय तीन	:	23
अध्याय चार	:	34
अध्याय पॉच	:	45
अध्याय छैः	:	56
अध्याय सात	:	67
अध्याय आठ	:	78
अध्याय नौ	:	88
अध्याय दस	:	98
अध्याय ग्यारह	:	109

अनुवादक का निवेदन

प्रस्तुत पुस्तक माननीय लोबसांग रम्पा (Lobsang Rampa) की 19 पुस्तकों में से बारहवीं पुस्तक है, जबकि मेरे अनुवादक्रम में यह चौथी पुस्तक है। इससे पहिले रम्पा की आत्मकथा में ''तीसरी ऑख'' ''ल्हासा का डाक्टर'' और ''रम्पा की कहानी'' प्रस्तुत की जा चुकीं हैं। पाठकों ने इन पुस्तकों को हाथों–हाथ लिया है और मुझे अपनी प्रतिक्रियायें भी भेजी हैं। पाठकों के इस कृपापूर्ण सहयोग के लिये मैं उनका हृदय से आभारी हूँ।

वर्तमान में तिब्बत के हिमालय क्षेत्र में, 7000 से अधिक गुफाऐं ज्ञात हैं, जिनमें से अधिकांश में बौद्ध साधु (लामा) रहते हैं, जो आत्मा की पुकार पर स्वयं को इन गुफाओं में बन्द कर लेते हैं, केवल मृत्यु ही उनको गुफाओं से बाहर निकाल सकती है। उनको लामामठों की ओर से त्सम्पा और पानी पहुँचाने की व्यवस्था की जाती है। एक स्वयंसेवक सदैव उनके आसपास देखभाल के लिये रहता है। यदि स्वयंसेवक किसी कारण से गुफा के साधु को त्सम्पा और पानी न पहुँचा सके तो निश्चितरूप से साधु अकाल मृत्यु से मर जायेगा। फिर भी तिब्बती साधु, ''आत्मा की पुकार'' पर आत्मा को शरीर और मन दोनों से अलग देखने तथा आत्मज्ञान प्राप्त करने के उद्देश्य के साथ, इस ब्रत का पालन करते हैं और मानवेतर शक्तियॉ (सिद्धियॉ) प्राप्त कर लेते हैं। तिब्बत की तरह, भारत के अरुणांचल प्रदेश में भी अनेक ऐसे गुप्त मठ हैं, जिनमें रहस्यमय ढंग से उच्च अवस्था प्राप्त और मानवेतर शक्ति सम्पन्न, अनेक योगी और साधकगण निवास करते हैं, जिनमें बौद्धों के अतिरिक्त शाक्त और कापालिक सम्प्रदाय के तान्त्रिक भी सम्मिलित हैं। शाक्त और कापालिक सम्प्रदायों के उच्चस्तरीय तान्त्रिक साधक, सामान्यतः स्वयं को सरलता से प्रकट नहीं करते। वे स्वयं के प्रति विरक्त और जगत के प्रति अनासक्त भाव रखते हैं और निष्काम भाव से सतत् अपनी साधना में लीन रहते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में ऐसे ही एक तिब्बती लामा (साधु) की कहानी है, जिसे अपनी उम्र के अंतिम पड़ाव में अतिक्रमणकारी चीनियों के द्वारा पकड़ लिया जाता है, उसे क्रूरतम यातनाऐं दीं जातीं हैं, उसकी आखें नोंच कर बाहर निकाल दी जाती हैं, ताकि उससे दलाईलामा अथवा राज्य एवं प्रशासन से सम्बधित गोपनीय जानकारियॉ, रहस्यमय धार्मिक ज्ञान अथवा धर्म–साहित्य अथवा पाण्डुलिपियों की जानकारियॉ, जो उसके पास हो सकतीं हैं, उससे उगलवाया जा सके। क्रूरतम यातनाओं को झेलने के बाद भी, वह अपना मुँह नहीं खोलता और अंत में, चीनी लोग उसे मरा हुआ समझकर एक तरफ फेंक देते हैं, तभी रात की ठंडी हवा से उसमें चेतना जाग्रत होती है और वह उसी अवस्था में (जबकि उसकी दोनों ऑखें गोलकों में से निकाल ली गई है और वे उसके गालों पर लटक रहीं हैं।) गिरता–पड़ता, ऊपर पहाड़ी की ओर चल देता है और यात्रा के बाद, अंत में, वह एक स्थान पर पहुँच जाता है, जहॉ दूसरे ग्रह के कुछ अज्ञात लोगों द्वारा, उसके मष्तिस्क में, कुछ विशेष क्रियाओं के द्वारा, कुछ उपकरण लगाये जाते हैं और तब उसे विभिन्न प्रकार की ज्ञानों की स्मृतियों से भर दिया जाता है, जो आकाशिक अभिलेख (Akashic records), तिब्बत के पठार के जमीन से ऊपर उठने (land rising), पृथ्वी के जन्म आदि से संबंधित हैं। ज्ञान देने वाले लोग, स्वयं को इस पृथ्वी से और इस आकाश गंगा से भी अलग, किसी अन्य लोक का उच्चविकसित (highly evolved) निवासी, बताते हैं और स्वयं को पृथ्वी के बागवान (gardeners of the earth) कहते हैं। इन बागवानों का कहना है कि वे अपने लोक पर रहते हुए, अंतरिक्षयानों द्वारा विभिन्न लोकों की यात्रा करते है और विभिन्न लोकों पर उन प्राणियों और वनस्पतियों को स्थापित करते हैं, जो वहॉ के वातावरण के अनुसार स्वयं को व्यवस्थित कर सकें और आनुवांशिक प्रगति के साथ–साथ, स्वयं की आत्मिक उन्नति (spiritual evolution) भी कर सकें। उनके कथन के अनुसार, पृथ्वी पर कई बार विभिन्न प्रजातियों के प्राणियों को रखा गया है और वे अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष, छल, कपट अविश्वास आदि दुर्गुणों के कारण परस्पर लड़कर समाप्त हो गए, यहॉ तक कि, मानव की एक प्रजाति ने भूतकाल में, वैज्ञानिक उन्नति करते हुए, परमाणु शक्ति और अन्य घातक

हथियारों का आविष्कार भी कर लिया था और एक दूसरे के विरुद्ध उनका प्रयोग करके, पूरी पृथ्वी को प्राणिहीन बना दिया था। अतः परमाणु के प्रदूषण के समाप्त होने के कुछ शतकों के बाद, उन्होंने नई दूसरी प्रजाति अर्थात् वर्तमान मानव जाति को यहॉ रोपा और उससे अध्यात्मिक प्रगति करने की, नैतिकता, सौहाद्रता, समन्वय आदि बनाने की अपेक्षा की परंतु वे पृथ्वी की वर्तमान मानवीय गतिविधियों, विशेषकर, पिछले दो महायुद्धों में हुए विनाश के कारण अप्रसन्न दिखाई देते हैं, जिनमें परमाणुविक प्रदूषण अत्यधिक बढ़ गया और उनके अनुसार, यदि ऐसा दुबारा हुआ तो इससे दूसरे लोकों को भी नुकसान हो सकता है। वे ध्वनि प्रदूषण को, जो मानवीय प्रभामंडल को अत्यधिक प्रभावित करता है, परमाणुविक प्रदूषण से भी अधिक हानिकारक बताते हैं। अतः उन्होंने इस लामा के माध्यम से, सभी प्रकार के प्रदूषणों, विशेषकर, नाभिकीय और ध्वनि प्रदूषण के विरुद्ध अपना असंतोष जाहिर करते हुए, मानव जाति से नैतिक एवं आध्यात्मिक गुणों का विकास करने की अपेक्षा की है। उन्होंने इस साधु लामा को, जो लामा मिंग्यार डोंडुप से परिचित है, पूरी मानव जाति में यह संदेश प्रसारित करने के लिए चुना क्योंकि, इस लामा की स्मृति, स्वयं में अद्भुत थी और उन्होंने कुछ विशेष युक्तियों द्वारा लामा की स्मृति को और अधिक बढ़ा दिया था। पूरा ज्ञान इस लामा के मस्तिष्क में भरने के बाद, अंत में इसको सम्मोहन में ले जा कर कुछ निर्देश दिए, जिससे कि समय आने पर, वह अपने ज्ञान को केवल एक विशेष व्यक्ति को, जो उसको बाद में किसी समय मिलेगा, ही दे सके, अन्य किसी व्यक्ति को नहीं। वह नौजवान लामा, जो परिस्थितियों एवं संकेतों के अनुसार, लोबसांग रंपा ही दिखाई देता है, जो तिब्बत में चाकपोरी में रहकर अपने गुरू लामा मिंग्यार डोंडुप से शिक्षा प्राप्त कर रहा होता है, को उसकी यौवन अवस्था में वह ज्ञान दे देता है। बूढ़े लामा को पृथ्वी के बागवान, एक अत्यंत एकांतपूर्ण गुफा में, जो विशेषरूप से उसके लिए बनाई गई थी, छोड़ जाते है और वह अंधा लामा साठ वर्ष से अधिक समय तक, उसी गुफा में अकेला, कई बार निराहार रह कर भी, जिंदा बना रहता है और उस नवयुवक लामा, लोबसांग रंपा को अपना ज्ञान दे देता है। नवयुवक रंपा को पूरा ज्ञान दे देने के बाद, तुरंत ही उसकी मृत्यु हो जाती है और रंपा उचित परंपराओं के साथ उसके शव का वायु–संस्कार (air burial) करने के बाद, वहॉ से प्रस्थान करते हैं।

पुस्तक की वर्तमान कथावस्तु यहीं पर समाप्त हो जाती है। रंपा को उनसे ज्ञान प्राप्त कर, भविष्य में इसको पूरी दुनियॉ को देने के लिए निर्देशित किया गया है, ताकि मानवजाति, समय रहते स्वयं में सुधार कर सके। अतः जैसा कि प्रथम तीन पुस्तकों में रंपा ने अपनी आत्मकथा में लिखा है, वह द्वितीय विश्वयुद्ध के बीच, जापानियों के हाथ पड़ जाते हैं, उन्हें अनेक कठोर यातनाऐं झेलनी पड़तीं हैं। अंत में 6 अगस्त 1945 को हिरोशिमा में परमाण्विक बम के बिस्फोट के बाद मची भगदड़ में जापान से भागकर, रूस, पोलेंड, जर्मनी आदि देशों में यात्रा करते हुए, इंग्लेंड, केनेडा, आयरलैण्ड, और अमेरिका आदि देशों में निवास करते हैं। अपने मूल शरीर को तिब्बत के एक मठ में छोड़ देते हैं और अपनी आत्मा को इंग्लैण्ड के एक अंग्रेज के शरीर में परकाया प्रवेश के द्वारा प्रतिष्ठित करते हैं, जहॉ प्रारंभ में अनेक आर्थिक परेशानियों से जूझने के बाद, अपने स्वर्गिक साथियों के अनुरोध पर, अनमने मन से, पुस्तकें लिखने का प्रयास शुरू करते हैं और अपने अंतकाल तक पुस्तकें लिखते हैं, जिनमें अनेक अविश्वसनीय, अनोखे तथ्य बताये जाते हैं। रंपा अपनी हर पुस्तक में ये दावा करते हैं कि, उनकी पुस्तकों में लिखा गया प्रत्येक शब्द सत्य है और ये सत्य भविष्य में आने वाले कुछ दिनों में और अधिक स्पष्ट हो जायेगा। वर्तमान में लामा द्वारा चर्चा में लाये गये, प्राणायाम, प्रभामंडल, अतीन्द्रियज्ञान, दूरानुभूति, सम्मोहन आदि विषयों पर मनोविज्ञान में काफी शोधकार्य चल रहा है। प्रभामंडल के विषय में किरलियन (Kirlian) फोटोग्राफी के उपयोग से रूस, आस्ट्रेलिया आदि देशों में गम्भीरता से शोधकार्य हो रहा है, वर्तमान में मुम्बई में भी डाक्टर जे एम शाह, एवं अन्य लोग चिकित्सा के क्षेत्र में इसका उपयोग कर रहे हैं और ऐसा लगता है कि, आने वाले कुछ वर्षों में शायद रंपा का, मशीनों के द्वारा प्रभामंडल

की जॉच करने और आवश्यकतानुसार प्रभामंडल को ठीक करने का उनका सपना, साकार हो सकेगा।

पुस्तक में दी गई जानकारी अविश्वसनीय और अकल्पनीय लग सकती है परंतु इसको सत्यापित करने का कोई तरीका नहीं है। तिब्बती साधू ने पृथ्वी के जन्म की कहानी का विस्तार के साथ वर्णन किया है परंतु पृथ्वी के जन्म को किसी व्यक्ति के द्वारा नहीं देखा जा सकता था और न हीं किसी प्रकार से इसका सत्यापन किया जा सकता है, केवल विभिन्न वैज्ञानिक सिद्धांतों, गणनाओं और संभावनाओं के आधार पर कुछ अनुमान लगाये जा सकते हैं। उदाहरण के लिए, ये एक अनुमान है कि पृथ्वी पर लगभग हर पचास लाख साल बाद हिमयुग आता है, (पिछला हिमयुग लगभग तीस लाख वर्ष पूर्व आया था।) पूरी पृथ्वी बर्फ से ढक जाती है, शताब्दियों के बाद वह बर्फ पिघलती है, और पूरी पृथ्वी पर सर्वत्र जल ही जल हो जाता है। इसे जल प्लावन या प्रलय कहते हैं, ऐसी प्रलय पृथ्वी पर कई बार हो चुकी है, जिसमें सभी जीवधारी और वनस्पतियॉ समाप्त हो जाती हैं और शताब्दियों के बाद, परिस्थितयॉ सामान्य होने पर, पृथ्वी पर पहले वनस्पतियॉ और उसके बाद प्राणी उत्पन्न होते हैं। साधू के माध्यम से, पृथ्वी के बागवानों ने चेतावनी दी है कि, मानव को विश्व सत्ता के विधान, जो पूरे ब्रहमाण्ड के ऊपर लागू होते हैं, का पालन करना, पर्यावरण के साथ छेड़छाड़ न करना और दूसरे लोगों के साथ सह–अस्तित्व में शांतिपूर्वक रहना चाहिये। निश्चय ही ये चेतावनियॉ मानवजाति के अस्तित्व के लिए आवश्यक हैं। अब हम, विशेषरूप से, हमारे ऊपर शासन करने वाले या हमारा नेतृत्व करने वाले राजनैतिक नायक और वैज्ञानिक शोधकार्य करने वाले प्रबुद्ध विद्वान, कितना ध्यान देते हैं, ये समझने की बात है।

वैज्ञानिकों के अनुसार, इस सृष्टि में हमारा ब्रह्माण्ड (Universe) अकेला नहीं है, ऐसे अनेक ब्रह्माण्ड (multiple universe) हो सकते हैं। प्रत्येक ब्रह्माण्ड में असंख्य निहारिकाऐं (galaxies) होती हैं। हम अपने ब्रह्माण्ड में से, मात्र दो या तीन निहारिकाओं को ही देख पाते हैं। अनेक निहारिकाऐं हमसे इतनी दूर भी हो सकती हैं कि संभव है, उनका प्रकाश अभी तक हम तक नहीं पहुॅच सका हो और वे हमारे लिये अभी अदृश्य ही हों। हमारे ब्रह्माण्ड की हमारी निहारिका का नाम आकाशगंगा (milkyway) है, जिसमें अरबों की संख्या में तारे हैं, ये सभी तारे अपने–अपने सौर मंडलों के सूर्य हैं। हमारा सबसे नजदीकी तारा अल्फा सेंटारी (alpha centari) है, जो हमसे लगभग 2 1/2 प्रकाशवर्ष की दूरी पर है। प्रत्येक सूर्य का सौरमंडल हो सकता है, जिनमें अनेक ग्रह होना संभव है, ग्रहों में से कुछ पर, जीवन की संभावनाओं से इंकार नहीं किया जा सकता। दूसरे ग्रहों पर जीवन की खोज के लिये अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक संस्था ''सेटी (search for extra terrestial intelligence)" गंभीरता से निगरानी कर रही है। यदि अन्य ग्रहों पर जीवन पाया जाता है तो ये विल्कुल आवश्यक नहीं होगा कि वहॉ के प्राणी हमारे जैसे हों। वे न केवल शारीरिक संरचना एवं शक्ल सूरत में वे हमसे भिन्न हो सकते हैं, बल्कि उनकी शारीरिक कोशिकाओं का आधार भी भिन्न हो सकता है, उदाहरण के लिये पृथ्वी पर वनस्पति जगत एवं प्राणि जगत की संरचना कार्बनिक होती है। वनस्पति जगत की कोशिकाओं का आधार मेग्नीशियम होता है, जबकि प्राणी जगत का कोशिकाओं का आधार लोहा होता है। हीमोग्लोबिन और क्लोरोफिल दोनों की संरचना में मात्र यही अंतर है। इसके अतिरिक्त कुछ लोकों के प्राणी तकनीकी और बौद्धिक रूप से हमसे अधिक विकसित भी हो सकते हैं। हमारे विश्व में इस सम्भावना से भी इंकार नहीं किया जा सकता कि हमसे अधिक विकसित सभ्यताऐं, हमारे साथ सम्पर्क बनाने का प्रयास कर रहीं हों। हम संदेश प्रसारण के लिये विद्युत चुम्बकीय तरंगों (electro magnetic waves) का उपयोग करते हैं, सम्भव है, दूसरे ग्रह के जीव संदेश प्रसारण के लिये किसी दूसरी विधा का उपयोग करते हों। दुनियॉ के प्रत्येक भाग से उड़न तश्तरियों (unidentified flying objects) के देखे जाने के समाचार अक्सर मिलते रहते हैं, यद्यपि विश्व की सरकारें इसे स्वीकार नहीं करतीं और उन पर जनता को गुमराह करने के आरोप यदाकदा लगते ही रहते हैं। अमरीका में ''एरिया–51'' एक ऐसा ही प्रतिबंधित

सैन्यक्षेत्र है, जिसके बारे में समझा जाता है कि वहॉ उड़नतश्तरियों का अड्डा है, और दूसरे ग्रहों से मिली उच्चतकनीकों पर अनुसंधान एवं विकास कार्य चल रहा है। खैर, इस सम्बंध में अभी निश्चयपूर्वक कुछ नहीं कहा जा सकता।

यों तो किसी भी भाषा का किसी भी दूसरी भाषा में अनुंवाद करना अपने आप में एक कठिन कार्य है, उसे बोधगम्य और धाराप्रवाह बनाये रखना और भी कठिन है। इसके लिये मैंने वाक्यों में अपनी ओर से कुछ शब्दों को जोड़ा है, जिन्हें कोष्टक में रखा गया है, जिनसे भाव एवं अर्थ दोनों ही अधिक स्पष्ट होते हैं। संदर्भ की मांग पर आवश्यकतानुसार, कुछ टिप्पिणियॉ भी जोड़ी गईं हैं। आशा है, पाठकों को यह प्रयोग पसंद आयेगा।

इस रूपांतरण में मुझे अपने आध्यात्मिक गुरू श्री बी. एन. गच्छ से प्रोत्साहन एवं आर्शीवाद प्राप्त हुआ है तथा अपने मित्रों विशेषकर, श्री राम प्रकाश गुप्ता, श्री दिग्वीर सिंह चौहान एडवोकेट, डॉ. आर. सी. भटिया, डॉ. आर. के. गुप्ता, डॉ. के. पी. शर्मा का भावपूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ है, इसके लिए मैं उनका आभारी हूॅ। विशेषरूप से, श्री प्रगल्भ शर्मा, श्री प्रदीप सेन तथा कुमारी रागिनी मिश्रा, जिनके सहयोग के बिना, इस पुस्तक का प्रस्तुतिकरण संभव नहीं था, का मैं आभारी हूॅ। मैं पुनः उन सभी का आभार व्यक्त करता हूॅ, जिन्होंने प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से, इस पावन कार्य में सहयोग किया।

पुस्तक के प्रस्तुतिकरण में निश्चितरूप से कुछ त्रुटियॉ रह गयी होंगी, मैं उनके लिये पाठकों से क्षमा याचना करता हूॅ तथा अपेक्षा करता हूॅ कि विद्वत् पाठकगण उन्हें मेरे संज्ञान में लाने का कष्ट अवश्य करेंगे ताकि, उन्हें यथाशीघ्र सुधारा जा सके।

डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता

इन्दिरा कॉलोनी, नया बाजार, लश्कर
ग्वालियर – 474009, म.प्र., (भारत)
फोन (0751) 2433425
मोबाइल : 9893167361

दिनांक : 07 मार्च 2016
महाशिवरात्रि 2072 विक्रमी

अध्याय एक

बाहर सूर्य चमक रहा था। उसने जीवन्त रूप से पेड़ों को प्रकाशित किया, बाहर की तरफ निकली हुई चट्टानों के पीछे की ओर, काली छायाओं को डाला, और नीली झील से (परावर्तित करके), नीले चमकते हुए, असंख्य बिन्दुओं को भेजा। यहॉ, यद्यपि, वृद्ध साधु की गुफा की ठण्डी खोह में, सूर्य के देखने से, तनावभरी ऑखों को शान्त करने वाला और हरेपन के साथ, हरा सा चमकता हुआ प्रकाश,, ऊपर लटकते हुए पत्तें से, छन कर आ रहा था।

नौजवान ने, समय के द्वारा चिकनी बनाई गई, एक बड़ी चट्टान के ऊपर, तन कर सीधे बैठे हुए, दुबले–पतले साधु को आदरपूर्वक नमन किया। ''मैं यहॉ आपसे निर्देश पाने के लिए आया हूॅ, आदरणीय,'' उसने नीची आवाज में कहा।

''बैठ जाओ,'' बूढ़े ने आदेश दिया। ईटिंया लाल (brick-red) पोशाक में नौजवान भिक्षु, दोबारा फिर झुका और पालथी मारकर, कठोरता भरी पृथ्वी पर, वरिष्ठ से कुछ फीट दूर, बैठ गया।

बिना ऑखोंवाले गोलकों में से, भूतकाल के अनन्त में, मुस्कराहट के साथ ताकता हुआ सा लगने वाला, बूढ़ा साधु चुप रहा। एक नौजवान लामा के रूप में, काफी लम्बे सालों पहले, ल्हासा[1] में चीनी अधिकारियों के कारण, वह टूट चुका था और उसे राज्य के रहस्य, जो उसके पास नहीं थे, न बताने के लिए, क्रूरता के साथ अन्धा कर दिया गया था। प्रताड़ित, आहत और अन्धा किया हुआ वह, कड़वाहट और भ्रमजाल के साथ, शहर से दूर भटकता, फिरता रहा। वह कष्ट और सदमों के कारण लगभग पागल हुआ, चिंतन करते हुए, हमेशा सोचते हुए, रातों को चलता हुआ, चलता रहा। उसने मानवों के साथ को छोड़ दिया।

हमेशा ऊपर की ओर चढ़ते हुए, विरली, कम मात्रा में, कम घास अथवा किसी भी जड़ीबूटी, जो वह पा सकता था, के ऊपर जिन्दा रहते हुए, पहाड़ों की जलधाराओं की आवाज से पानी पीने के लिए उनकी तरफ जाते हुए, उसने अपने जीवन की चिनगारी के ऊपर, एक कमजोर, सूक्ष्म पकड़ बनाये रखी। धीमे–धीमे, उसके खराब घाव पुर गए, उसके नेत्रहीन गोलक, अब कभी गीले नहीं हुए परन्तु वह, मानवजाति, जिसने उसे अकारण, और पागलपन से प्रताड़ित किया था, से दूर, हमेशा ऊपर चढ़ता रहा।

हवा विरली होती गई। अब वहॉ पेड़ों की शाखाऐं औरअधिक नहीं थीं, जिनको छीला जा सके और खाने के लिए, खाया जा सके। वह इससे और अधिक, ज्यादा आगे नहीं जा सकता था और न हीं घास को तोड़ सकता था। अब उसे, भुखमरी की खराब टीस को झेलते हुए और काफी डालियों को पाने की आशा करते हुए, लुढ़कते हुए, खींचते हुए, हाथों और घुटनों के बल रेंगना पड़ता था। हवा ठण्डी होती गई। हवा का काटना, और तीखा होता गया, परन्तु अभी भी वह धीमे–धीमे, मेहनत के साथ ऊपर, हमेशा ऊपर की तरफ चलता गया, मानो उसे अन्दर से किसी मजबूरी से, चलाया जा रहा हो। हफ्तों पहले, अपनी यात्रा की शुरुआत में, उसे एक मोटी शाखा मिली थी, जिसका उसने, अपना रास्ता नापने के लिए, लाठी के रूप में प्रयोग किया था। अब, उसकी तलाश करने वाली लाठी, एक ठोस रूप अवरोध से टकरा गई और उसकी तलाश को, उसमें से कोई सीधा रास्ता नहीं मिला।

नौजवान साधु ने आशय के साथ, उस बूढ़े आदमी को देखा। हलचल का कोई चिन्ह नहीं। नौजवान आदमी ने आश्चर्य किया, कि क्या वह ठीक था, और तब स्वयं को इस विचार के साथ सांत्वना दी कि, ''आदरणीय पुरखा'' भूतकाल की दुनियॉ में रहता था और वह किसी के लिए भी, जल्दी नहीं करता था। उसने उत्सुकतापूर्वक, खाली गुफा के आसपास नजर

---

1 अनुवादक की टिप्पणी : ल्हासा (Lhasa), तिब्बत का एक नगर और वर्तमान में चीन देश के ''तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र (Tibet Autonomous Region)'' की राजधानी है। यह तिब्बत के पठार पर, समुद्र तल से 11450 फुट की ऊॅचाई पर, सिनिंग (Xining) के बाद दूसरा सबसे बड़ा आबादी वाला नगर है, जिसकी आबादी लगभग 2,23,000 है। यहॉ के अधिकांश निवासी खेती और पशुपालन, ऊन आदि से जीविकोपार्जन करते हैं। जौ की खेती यहॉ बहुलता से होती है। ल्हासा दुनियॉ के सर्वाधिक ऊॅचाई वाले नगरों में से एक है। नगर 17वीं शताब्दी के मध्य से तिब्बत की धार्मिक और प्रशासनिक राजधानी रहा है, जिसके नगरीय क्षेत्र में विभिन्न धर्मों के, जैसे हान(han), हुई (hui), मुस्लिम और दूसरे धर्मावलंबी निवास करते हैं। यहॉ अनेक सांस्कृतिक स्मारक जैसे पोटाला महल, जोखांग मंदिर (Jokhang temple), नोरबूलिंगका (Norbuligka) महल, पार्गो कलिंग और बौद्ध धर्म के ड्रेपुंग (Drepung), सेरा (Sera), चाकपोरी (Chakpori), जैसे अनेक महत्वपूर्ण मठ हैं। ल्हासा का शाब्दिक अर्थ है, '' देवस्थान (place of gods)।'' अप्रैल से सितम्बर तक का तापक्रम, दिन में गर्म तथा रात में सुहाना ठंडा रहता है। इतनी ऊॅचाई पर तथा वायुमंडल एकदम साफ होने के कारण, धूप बहुत तीखी होती है, इसलिये धूप से बचाव अत्यंत आवश्यक है। यहॉ ताबॉ, सीसा, जस्ता आदि अयस्क (ores) प्रचुरता में मिलते हैं।

घुमाई। ये, वास्तव में, पूरी तरह खाली थी। इसके एक तरफ, टीला किया हुआ, घासफूस का एक ढेर – उसकी शैया थी। उसके पास एक कटोरा था। बाहर निकलती हुई चट्टान की उंगली (नोंक) के ऊपर, एक फटी हुई जीर्णशीर्ण केशरिया पोशाक, उदासी के साथ लटक रही थी मानो कि, अपने सूर्य द्वारा साफ की गई चेतना के प्रति जागरूक हो। और इससे ज्यादा कुछ नहीं। कुछ भी नहीं।

पुरातन मनुष्य ने, अपने भूतकाल का, जब वह अपने सामने बैठे हुए नौजवान की ही तरह से जवान था, बखान किया तथा प्रताड़ित होने पर मिलनेवाले अपने दुख का विचार किया, अन्धा हुआ और मिमियाया।

अवसाद के उन्माद में, अनजाने में, उसकी लाठी, उसके सामने के अवरोध के साथ टकरा गयी। उसने बिना ऑखोंवाले गोलकों में हो कर देखने का निरर्थक प्रयास किया। अन्त में, अपनी भावनाओं की तीव्रता से थक कर, वह रहस्यमय अवरोध के चरणों पर गिर पड़ा। धीमे–धीमे, ऊष्मा और भूख में मरते शरीर में से, जीवन को लूटती हुई पतली हवा, उसके एकमात्र परिधान में हो कर रिसी।

लम्बे क्षण गुजर गए, तब चट्टानी जमीन पर से, जूते पहिने हुए पैरों के आने की आवाज हुई। कुछ शब्द, न समझ सकने योग्य भाषा में बड़बड़ाए, और उसका लंगड़ा शरीर, उठाया गया और दूर ले जाया गया। तब एक धातु की, टकरा कर बजने की आवाज आई और एक प्रतीक्षा करते हुए गिद्ध ने, अपने खाने से धोखा खाते हुए, बेढंगी उड़ान भरी।

बूढ़े आदमी ने शुरूआत की; यह सबकुछ, जो काफी पहले था। अब उसे नौजवान साथी को, जो उसके सामने था, इस तरह से, जैसे वह रहा था, निर्देश देने थे। ये कितने साले पहले की बात है ? साठ ? सत्तर ? या और अधिक ? कोई बात नहीं, ये मनुष्य के जीवन के वर्ष थे, जब वह दुनियॉ के वर्षों को जानता था ? वह पीछे छूट गया था, समय के कुहरे में खो गया था।

समय स्थिर खड़ा दिखाई दिया। हवा, जो पत्तियों में हो कर खड़खड़ाहट की आवाज कर रही थी, उसने भी धुंधली हवा की फुसफुसाहट को बंद कर दिया। जब नौजवान साधु, उस बूढ़े साधु के बोलने की प्रतीक्षा कर रहा था। वहॉ लगभग शाश्वत, आशावादी हवा थी। अन्त में, जब उस नौजवान आदमी का तनाव, लगभग असहनीय हुआ तो वह आदरणीय बोला।

''तुम्हें मेरे पास भेजा गया है,'' उसने कहा, *''क्योंकि तुम्हें, जीवन में एक बड़ा काम करना है और मुझे अपने खुद के ज्ञान के साथ, तुम्हारी पहचान करानी है, ताकि तुम कुछ हद तक सजग रहते हुए, अपने भाग्य के प्रति सावधान हो जाओ और अपने धागे (हिसाब) से, उसी ढ़ांचे में ढल जाओ।''* उसने नौजवान भिक्षु की दिशा में मुॅह किया, जो भौंचक्का होकर छटपटा रहा था। उसने सोचा, अन्धे आदमी के साथ व्यवहार करना, कठिन था; वे बिना देखे हुए 'देख लेते हैं,' परन्तु किसी को ये महसूस होता है कि, उन्होंने सब कुछ देख लिया! मामलों की बहुत कठिन अवस्था ।

सूखा, यदाकदा उपयोग में लाया हुआ स्वर, फिर से चालू हुआ : *''जब मैं जवान था, मुझे अनेक अनुभव हुए थे, कष्टपूर्ण अनुभव। मैंने अपने महान शहर ल्हासा को छोड़ दिया और अन्धा हो कर, इस विस्तृत जंगली स्थान में घूमता फिरा। भूखा मरता हुआ, बीमार, बेहोश, मैं नहीं जानता, मुझे कहॉ ले जाया गया, और इस दिन (आज) के लिए तैयार होने के, निर्देश दिए गए। जब मेरा ज्ञान तुम्हें दे दिया जाएगा, मेरे जीवन का काम समाप्त होगा और मैं स्वर्ग के क्षेत्र में, शान्ति में, जा सकूॅगा।''* ऐसा कहते हुए, एक डूबे हुए (साधु) के, झुर्रीदार गालों वाले चेहरे पर, एक दिव्य चमक भर गई, और अचेतन रूप से, उसने अपने प्रार्थनाचक्रों को तेजी से घुमाया।

बाहर, मन्द छायाऐं जमीन पर रेंगती रहीं। हवा की शक्ति बढ़ी और धूल ने, सूखी हड्डियों को, भंवर में मरोड़ दिया। कहीं, एक चिड़िया ने, एक अति आवश्यक चेतावनी दी। ज्यों ही छायाऐं और लम्बी हुईं, लगभग अलक्षितरूप से, दिन की रोशनी प्रकट हुई। अब निश्चितरूप से अंधेरी गुफा में, नौजवान साधु ने, बढ़ती हुई भूख के निवारण की आशा में, अपने शरीर को

कस कर पकड़ लिया। सीखना और भूख, उसने सोचा, ये दोनों हमेशा साथ–साथ चलते हैं। भूख और सीखना। एक उड़ती हुई मुस्कान साधु के चेहरे पर खिली। *''आह !''* वह उल्लास से चिल्लाया, *''इसलिए सूचना सही है। नौजवान भूखा है। नौजवान, एक खोखले ढोल की तरह बजता है। मेरे सूचना देनेवाले ने मुझे बताया था कि ऐसा होगा, इसलिए उसने मुझे इसका इलाज भी बता दिया था।''* वह धीमे से, कष्ट के साथ, और आयु से चटकते हुए, अपने पैरों पर खड़ा हुआ और अभी तक गुफा के अनदेखे हिस्से की तरफ, पैर घसीट कर चला। दुबारा प्रकट होते हुए, उसने नौजवान भिक्षु को एक छोटा पैकेट दिया। *''तुम्हारे आदरणीय शिक्षक की तरफ से,''* उसने स्पष्ट किया, *''उन्होंने कहा था कि, ये तुम्हारे अध्ययन को मीठा बना देगा।''*

मीठी टिकियॉ, शाश्वत जौ या त्सम्पा से मुक्ति के रूप में, आराम के रूप में, भारत से लाई गईं मीठी टिकियॉ, और पानी से बदलाव के रूप में थोड़ा सा बकरी का दूध, और काफी पानी। *''नहीं, नहीं !''* जब उसे भोजन में हिस्सा लेने का आमंत्रण दिया गया, बूढ़ा साधु चिल्लाया। *''मैं नौजवान की आवश्यकताओं की प्रशंसा करता हूँ– और विशेषरूप से उसकी, जो इस विस्तृत दुनियॉ में, पहाड़ों के परे, बाहर जा रहा हो। खाओ, और मजे करो। मैं, मैं एक मूल्यहीन व्यक्ति, मेरे नम्र तरीके से, भव्य भगवान बुद्ध का अनुगमन करने का और उपमामय सरसों के बीज के दाने पर जीने का, प्रयास करो। परन्तु तुम, खाओ और सोओ, क्योंकि मैं समझता हूँ कि, रात घिर चुकी है।''* ऐसा कहते हुए वह मुड़ा, और अच्छी तरह छिपे हुए, गुफा के अन्दरवाले हिस्से में चला।

नौजवान गुफा के मुँह की तरफ चला, जो अब, आंतरिक कालेपन के विरुद्ध, एक भूरी सी अण्डाकार आकृति थी। पहाडों की ऊँची चोटियॉ, आकाश के बैगनीपन के पिछबाड़े से, बीच से काटे गये कटआउट जैसी, एकदम बड़ी काली थीं। जैसे ही, अकेले गुजरते हुए काले बादलों के बीच, पूर्ण चन्द्र दिखाई दिया, अचानक ही वहॉ चांदी जैसे प्रकाश की एक छटा, उड़ती हुई आयी, यद्यपि, मानो किसी देवता के हाथ ने, रात के पर्दे को पीछे खींच दिया हो, ताकि परिश्रम करती हुई मानव जाति, *'आकाश की रानी'* को देख सके, जो उसे देखना चाहिए। परन्तु, नौजवान साधु अब और अधिक नहीं रुका, उसका खाना वास्तव में, कम ही था और किसी पश्चिमी नौजवान को वह पूरी तरह अस्वीकार ही होता। शीघ्र ही, वह गुफा की तरफ वापस लौटा और नरम बालू में, अपने कूल्हे के लिये, गड्ढ़ा बनाता हुआ, गहरी नींद में सो गया।

प्रकाश की पहली धुंधली सी चमक ने, उसे परेशान रूप से हिलते हुए पाया। वह तेजी के साथ जगते हुए, अपने पैरों पर उठ खड़ा हुआ और उसने दोषपूर्ण निगाहों से अपने आसपास देखा। इस क्षण बूढ़ा साधु, गुफा के मुख्य भाग में, धीमे से टहल रहा था। *''ओह, ''आदरणीय,''* नौजवान भिक्षु अवसाद में चिल्लाया, *''मैं अधिक सो गया और मैं रात की सेवा में शामिल नहीं हो सका !''* तब, जैसे ही, उसने ये महसूस किया कि वह कहॉ था, उसने अपनी मूर्खता अनुभव की।

''डरो मत, नौजवान,'' साधु मुस्कुराया, *''हमारे यहॉ कोई प्रार्थना नहीं होती। बच्चे, जब उन्नत हो जाते हैं, मस्तिष्कहीन याकों की तरह झुण्ड बनाए और इकट्ठे हुए बिना, कहीं भी, किसी भी समय, वे इस सेवा को अपने अन्दर करते हैं। परन्तु अपना त्सम्पा बनाओ, अपना खाना खाओ, क्योंकि आज मुझे तुम्हें बताने के लिए बहुत कुछ है और तुमको ये सब याद रखना चाहिए।''* ऐसा कहते हुए, प्रकाशित होते हुए दिन में, वह धीरे से बाहर की तरफ चला–फिरा।

एक घंटे बाद, वह नौजवान, एक कहानी सुनते हुए, जो इतनी मंत्रमुग्ध करने वाली थी, जितनी कि वह अनौखी भी थी, बूढ़े के सामने बैठा हुआ था। एक कहानी, जो परियों की सभी कहानियों की, और सभी धर्मों की सभी किम्बदंतियों की, नींव थी। एक कहानी, जो जनजाति के सबसे पहले दिनों से, शक्ति के ईर्ष्यालु *'पुजारियों'* और *'वैज्ञानिकों'* के द्वारा दबा दी गई थी। धीमे से, धातु के अयस्क से, जो चट्टानों में गुंथा हुआ था, परावर्तित की गई, और गुफा के मुँह पर, पत्तियों से छन कर आईं धूप की जॉच करती हुई उंगलियॉ थिरकीं। हवा थोड़ी सी गर्म हुई और झील की सतह के ऊपर, एक धुंधली सी मेड़ प्रकट हुई। कुछ चिड़ियॉ, जैसे ही उन्होंने

इस अभावग्रस्त क्षेत्र में, पर्याप्त खाने की तलाश में, कभी समाप्त न होनेवाले कार्य के लिये यात्रा शुरू की, जोर से चीं–चीं कर रही थीं। एक अकेला गिद्ध, ज्यों ही उसकी तीखी, तीखी ऑखों ने उस बंजर क्षेत्र का विस्तार किया, मरे हुए या मर रहे की तलाश में, ऊपर की तरफ हवा की बहती हुई धारा में, हवा में बढ़ते, और गिरते हुए और फैलते हुए गतिहीन पंखों के साथ, सिर के ऊपर, ऊॅचा उड़ रहा था। संतुष्ट हो कर कि, वहॉ उसके लिए कुछ नहीं था, उसने कर्कश चीख के साथ, बगल की तरफ उड़ान भरी और कहीं और अधिक लाभकारी स्थलों की ओर, यात्रा के लिये उड़ चला।

बूढ़ा साधु सीधा और गतिहीन बैठा, उसकी दुर्बल काया, सुनहरी पोशाक के अवशेषों से, मुश्किल से ढ़की हुई थी। अब और *''सुनहरी''* नहीं, परन्तु सूर्य ने उसे साफ करके कुछ भूरा बना दिया था। उसके ऊपर पीली पट्टियों के साथ, जहॉ तह या मोड़ों ने, कुछ अंशों तक, सूर्य से फीके होने वाले रंग के प्रभाव को, रंग के हल्के होने को, कम किया था। उसकी खाल, उसके ऊॅचे, गालों की तीखी हड्डियों से, और उस मोम चढ़े, सफेद जैसे फीके, न देखे जाने के लिए इतना सामान्य, चिपकी हुई थी। उसके पैर नंगे थे और उसका सामान, वास्तव में, बहुत कम था, एक कटोरा, एक प्रार्थना चक्र, और मात्र एक फालतू पोशाक, ठीक उतनी ही फटी हुई, जितनी कि दूसरी। इससे ज्यादा कुछ नहीं, इस पूरे संसार में इससे ज्यादा कुछ नहीं।

जवान भिक्षु, उसके सामने बैठा हुआ, इस सब मामले पर आश्चर्य कर रहा था। किसी आदमी की आध्यात्मिकता जितनी ज्यादा होती है, उसका सांसारिक सामान उतना ही कम होता है। (पूर्व में) धर्मग्रन्थों की सेवा, केवल जवानी ही देते हुए, महान मठाध्यक्ष, अपने सोने के कपड़ों में, अपनी धनाढ्यता और अपनी खाद्य सामिग्री की बहुतायत के कारण, अपनी राजनैतिक शक्ति और एक क्षण जिन्दा रहने के लिए, हमेशा लड़ते रहते थे।

''नौजवान!,'' बूढ़ी आवाज फूटी, *''मेरा समय, अब लगभग समाप्ति पर है। मुझे अपना ज्ञान तुम्हें देना है और तब मेरी आत्मा, स्वर्ग के क्षेत्रों में जाने के लिए स्वतन्त्र हो जाएगी। तुम वह हो, जो इस पूरे ज्ञान को, दूसरों को बांटोगे, इसलिए सुनो और इस पूरे को, अपनी स्मृति में संजोकर रखो और असफल मत होना।''*

''इसे सीखो, उसका अध्ययन करो !'' नौजवान भिक्षु ने सोचा, *''जीवन कुछ नहीं है, अब केवल कठिन परिश्रम है। कोई पतंगें नहीं, कोई वैसाखियॉ नहीं, नहीं–''* परन्तु साधु चलता गया, *''तुम जानते हो कि, मेरे साथ चीनियों द्वारा किस प्रकार व्यवहार किया गया, तुम जानते हो कि, मैं जंगलों में घूम रहा था और अन्त में एक महान आश्चर्य की तरफ आया। मेरे ऊपर एक चमत्कार हुआ क्योंकि, अन्दर की मजबूरी ने मुझे तब तक आगे बढ़ाया, जब तक मैं बेहोश हो कर, बुद्धिमत्ता के मठ के द्वार पर गिर नहीं गया। मैं तुम्हें बताऊॅगा। और जैसा मुझे दिखाया गया था, मेरा ज्ञान तुम्हारा होगा क्योंकि, दृष्टिहीन, मैंने पूरा देखा था।''*

नौजवान ने, ये भूलते हुए कि वह अन्धा आदमी उसे देख नहीं सकता, हॉ में अपना सिर हिलाया। तब, इसे याद करते हुए, उसने कहा, ''आदरणीय स्वामी, मैं सुन रहा हूॅ और मुझे, इस सब को याद रखने के लिए, प्रशिक्षित किया गया है।'' ऐसा कहते हुए, उसने झुक कर नमन किया और तब प्रतीक्षा करते हुए पीछे बैठा।

बूढ़ा आदमी, अपने संतोष में, मुस्कुराया और उसने कहना जारी रखा, पहली चीज, जो मुझे याद है, एक नरम बिस्तर के ऊपर आराम से लेटने की थी। वास्तव में, तब मैं जवान था, ठीक वैसे ही जैसे तुम अब हो, और मैंने सोचा, मुझे स्वर्ग के क्षेत्रों में भेज दिया गया है परन्तु मैं देख नहीं सका, परन्तु मैं जानता था कि, यदि ये जीवन का दूसरा पथ है, तो दृष्टि फिर से मेरी होगी। इसलिए मैं वहॉ लेटा रहा और मैने प्रतीक्षा की। बहुत देर होने से काफी पहिले, एकदम शान्त पदचाप, मेरे बगल से पहुॅच कर रुक गये। मैं अभी लेटा रहा, ये नहीं जानते हुए कि, आगे क्या अपेक्षित है। *''आह !''* एक स्वर ने, जो एक तरीके से हमारी अवाजों से अलग दिखता था, कहा। *''आह ! इसलिए तुमने अपनी चेतना को फिर से प्राप्त कर लिया है। क्या तुम अभी ठीक हो ?''*

क्या मूर्खतापूर्ण प्रश्न, मैंने सोचा, चूॅकि मैं भूख से मर रहा हूॅ, मैं कैसे ठीक अनुभव कर

सकता हूँ, भूख से मरना ? परन्तु मैं अब और अधिक भूखा महसूस नहीं कर रहा था। मैं ठीक महसूस कर रहा था, एकदम ठीक। सावधानीपूर्वक, मैंने अपनी उंगलियॉ चलाईं, और अपनी भुजाओं को अनुभव किया। वे कहीं चिपकी नहीं थीं, मैं पूरा भर गया और सिवाय इसके कि, मेरे पास ऑखें नहीं थीं, दुबारा से सामान्य था। *''हॉ, हॉ, मैं ठीक महसूस करता हूँ, पूछने के लिए धन्यवाद,''* मैंने जवाब दिया। स्वर ने कहा *''हमने तुम्हारी ऑखें पुर्नस्थापित कर दी होतीं, परन्तु तुम्हारी ऑखें निकाल दी गई थीं, इसलिए हम ऐसा नहीं कर सके थे। थोड़े समय के लिए आराम करो और फिर हम सब, पूरे विस्तार के साथ कुछ बातें करेंगे।''*

मैंने विश्राम किया; मेरे पास कोई विकल्प नहीं था। अब मैं जल्दी ही, नींद में गिर गया। मैं कितनी देर सोया, ये जानने का कोई तरीका नहीं था, परन्तु घण्टों की मीठी झंकार ने, अन्त में मुझे जगा दिया, मृदु और अच्छे से अच्छे घंटों की तुलना में अधिक सुरीला घण्टानाद, जो अधिकांश पुरानी चांदी की घंटियों से अच्छा होता है। ये मन्दिरों की तुरहियों की अपेक्षा अधिक संगीतमय होता है। मैं उठ बैठा और (मैंने) आसपास नजर घुमा कर देखा, मानो मैं अपने नेत्रहीन गोलकों में, दृष्टि को बलपूर्वक रख सकता था। एक नर्म हाथ, मेरे कन्धों के आसपास फिसला और एक स्वर ने कहा, *''उठो और मेरे साथ आओ। मैं तुम्हें रास्ता बताऊँगा।''*

नौजवान भिक्षु मोहित हुआ, आश्चर्य करता हुआ बैठा रहा, इस तरह की चीजें उसके साथ क्यों नहीं होतीं, थोड़ा जानते हुए कि वे अन्त में होंगी ! *''कृपया आगे जारी रखें, आदरणीय स्वामी, कृपया जारी रखें,''* वह चिल्लाया। बूढ़ा साधु उसके आभार प्रदर्शन पर मुस्कुराया और सुननेवाले की अभिरुचि के अनुरूप आगे कहता गया।

मुझे, स्पष्टरूप से एक बड़े कमरे में ले जाया गया और उसमें कुछ संख्या में लोग थे– मैं उनकी सांसों की आवाजों को और उनके परिधानों की सरसराहट को सुन सकता था। मेरे पथप्रदर्शक ने कहा, *''यहॉ बैठो,''* और एक अनोखा सा यंत्र (device) मेरे अन्दर लगाया। जमीन पर बैठने की आशा के साथ, जैसे कि सभी समझदार लोग करते हैं, मैंने एक सिरे से दूसरे सिरे तक, लगभग हरेक को थपथपाया ।

बूढ़ा साधु एक क्षण के लिए रुका और जब उसने गुजरा हुआ दृश्य याद किया, एक सूखी मुस्कान उसमें से निकली। सावधानीपूर्वक, मैंने इसे महसूस किया, उसने (कहना) जारी रखा, और ये नरम परन्तु मजबूत दिखा। ये चार टागों पर टिका हुआ था और इसके पीछे की तरफ एक रोक थी, जिसने मेरी पीठ को साध कर पकड़ लिया था। मेरा पहला निष्कर्ष था कि, उन्होंने मुझे, बिना सहायता के बैठने के लिये, काफी कमजोर समझा। तब, मैंने दबाए हुए आनन्द, के चिन्ह् पहचाने। इसलिए ऐसा लगा कि, ये उन लोगों के बैठने का तरीका था। मैंने इस ढंग से बैठे हुए होने में, सर्वाधिक असुरक्षित और अजीब सा महसूस किया और मैं मुक्तरूप से स्वीकार करता हूँ कि, मैं उदासी के साथ, एक गद्देदार प्लेटफार्म के ऊपर लटक रहा था।

नौजवान साधु ने, बैठने के प्लेटफॉर्म की कल्पना करने का प्रयास किया। यहॉ ऐसी चीजें क्यों होनी चाहिए ? लोग क्यों ऐसी बेकार चीजों को खोजते हैं ? नहीं, उसने तय किया, जमीन उसके लिए काफी थी; सुरक्षित, गिरने का कोई डर नहीं, और इतना कमजोर कौन था कि, उसे उसकी पीठ को सहारा देना पड़े ? परन्तु बूढा आदमी फिर कह रहा था– उसके फैंफड़े निश्चितरूप से भलीभांति काम कर रहे थे। नौजवान आदमी ने सोचा !

''तुम हमारे संबंध में आश्चर्य कर रहे हो,'' (उस) स्वर ने मुझसे कहा, *''तुमको आश्चर्य होगा कि, हम लोग कौन हैं, तुम इतना अच्छा क्यों महसूस कर रहे हो। आसानी से, और आसानी से बैठो क्योंकि, हमें तुम्हें बताने और दिखाने के लिए बहुत कुछ है।''*

''सर्वाधिक सचित्र,'' मैंने आपत्ति की, *''मैं अन्धा हूँ, मेरी ऑखें निकाल ली गई थीं, फिर भी तुम कहते हो कि तुम्हें, मुझे बहुत कुछ दिखाना है, ये कैसे हो सकता है ?'' ''शान्ति से आराम करो।''* स्वर ने कहा, *''क्योंकि, समय और धैर्य के साथ, तुम्हें सब कुछ स्पष्ट हो जाएगा।''* इतनी भयानक स्थिति में लटकते हुए, मेरी टागों के पिछले भाग ने दर्द करना शुरू कर दिया था, इसलिए मैंने उन्हें ऊपर खींच लिया और लकड़ी के उस छोटे से प्लेटफॉर्म के ऊपर, जो पीठ को बाधित करने वाली चीज के साथ, चार पैरों पर टिका हुआ था और पद्मासन

की मुद्रा में बैठने का प्रयास किया। ऐसे बैठकर, मैंने और अधिक आसानी महसूस की, यद्यपि वहॉ निश्चितरूप से खतरा था कि, न देख पाने के कारण, मैं न जाने कहॉ, लुढ़क सकता हूँ।

''हम पृथ्वी के बागवान हैं,'' स्वर ने कहा। *''हम, लोगों और पशुओं को, अनेक भिन्न–भिन्न लोकों में (बसाते) रखते हुए, ब्रम्हाण्ड में यात्रा करते हैं। तुम्हारे पृथ्वीवासी, हमारे बारे में किम्बदंतियॉ सुनाते हैं, तुम हमें आकाश के देवताओं की भांति संदर्भित करते हो, तुम हमारे ज्वलंत रथों की चर्चा करते हो। अब हम तुम्हें, इस पृथ्वी पर जीवन का मूल क्या था, के बारे में जानकारी दे रहे हैं ताकि, तुम इस ज्ञान को और आगे बढ़ा सको और उसको, जो बाद में (तुम्हारे पास) आएगा और उस संसार में जायेगा और इन चीजों के बारे में लिखेगा, क्योंकि ये समय है कि, लोग अपने देवताओं के सत्य को समझें, इससे पहले कि हम दूसरे चरण में प्रविष्ट हों।''*

''परन्तु यहॉ कुछ गलती है,'' मैं अत्यधिक कातरता से चिल्लाया, *''मैं केवल एक गरीब भिक्षु हूँ, जो इस ऊँचे स्थान में चढ़ गया, मैं नहीं जानता क्यों।''*

''हमने अपने विज्ञान के द्वारा तुम्हें बुला भेजा था,'' स्वर फुसफुसाया, *''तुम्हारी असाधरण स्मृति के कारण, जिसे हम और भी अधिक शक्तिशाली करेंगे, तुम्हें इसके लिए चुना गया है। हम तुम्हारे बारे में सब कुछ जानते हैं और यही कारण है कि तुम यहॉ हो।''*

गुफा के बाहर, अब दिन की चमकदार रोशनी में, और सहसा खतरे की सूचना देने वाला, एक चिड़िया का कर्णभेदी स्वर, तेजी से उभरा। हवाई उपद्रव की एक चीख, जोर से उभरी और जैसे ही चिड़िया, हड़बड़ी में, उस स्थान से उड़ी, तेजी से गायब हो गई। पुरातन साधु ने, क्षण भर के लिए सिर को उठाया और कहा, *''ये कुछ नहीं है, शायद एक ऊँची उड़ती हुई चिड़िया, कहीं थोड़ी सी टकराई !''* नौजवान भिक्षु ने, गये गुजरे जमाने को, एक जमाना, जिसमें काफी अजनबीपन से, अपने समीपवर्ती दृश्य को कल्पना में देखना मुश्किल नहीं था, अपनी इस कहानी से बाधित होते हुए, इसे दर्द भरा पाया। विल्लो (willow) के पेड़ों ने, जो तेज चलनेवाली हवाओं से विक्षुब्ध हुए, जिन्होंने पत्तियों को हिला दिया और उन्हें दूसरों के बुलावे पर, विरोध में चकचक करने को प्रेरित किया, झील के शान्त पानी के द्वारा, उनींदेपन में अपना सिर हिलाया। अब तक, सूर्य की पहली किरणें, गुफा के प्रवेशद्वार को छोड़ चुकी थीं और हरी सी रंगी हुई रोशनी के साथ, अब यहॉ (सब कुछ) ठण्डा था। बूढ़ा साधु थोड़ा सा हिला, उसने अपनी फटी हुई पोशाक को पुर्नव्यवस्थित किया और कहना जारी रखा।

मैं डरा हुआ था, बहुत डरा हुआ। मैं इन पृथ्वी के बागवानों के संबंध में क्या जानता था ? मैं बागवान नहीं था। मैं पेड़ों के बारे में कुछ नहीं जानता था और न ही ब्रम्हाण्ड के बारे में। मैंने इससे निकलना चाहा, ऐसा सोचते हुए, मैंने अपनी टागें प्लेटफॉर्म पर बैठने के स्थान के किनारे पर रखीं और अपने पैरों पर खड़ा हो गया। कोमल, परन्तु बहुत सख्त हाथों ने मुझे पीछे की तरफ धकेल दिया, ताकि मैं फिर से, उस मूर्खतापूर्ण ढंग से, अपनी टांगों को नीचे लटकाते हुए बैठ गया और मेरी पीठ, मेरे पीछे किसी के विरुद्ध, दब रही थी। *''पौधे माली को आदेश नहीं देते''* एक स्वर ने फुसफुसा कर कहा। *''तुम यहॉ लाए गए हो, और तुम यहॉ पढ़ोगे, सीखोगे।''*

मेरे आसपास, परन्तु, जब मैं क्रोध में भरा हुआ बैठा, तब वहॉ अज्ञात भाषा में, एक विचारणीय, विचार–विमर्श हुआ। आवाजें। आवाजें। कुछ ऊँची और पतली, मानो कि, बोनों के गलों से में से आ रहीं हों। कुछ गहरी, गूंजती हुई, सुरीली या कुछ दूर एक भूदृश्य के ऊपर, याक के बैल की तरह, उसके सहवास के समय, चिंघाड़ने की सी। वे जो कुछ भी रहे हों, मैंने सोचा, वे मेरे लिए गलत सिद्ध हुए हैं, एक अनिच्छुक विषय, एक अनिच्छुक बंदी। जैसे ही समझ में न आने योग्य विचार विमर्श आगे बढ़ा, मैंने कुछ आश्चर्य के साथ, पतली नलियों की गहरी गुर्राहट, जैसे कि एक पहाड़ी घाटी के अन्दर तुरहियों का विस्फोट, सुनी। ये किस ढ़ंग के लोग थे, मैंने आश्चर्य किया, क्या आदमी के गले में, सुरों (tones) की, अधिस्वरों (overtones) की और अर्द्धस्वरों (semitones) की इतनी बड़ी परास (range) होती है ? मैं कहॉ था ? शायद मैं, चीनी लोगों के हाथों में होने से भी ज्यादा, बहुत बुरी स्थिति में था। ओह

! नजर के लिए। क्योंकि ऑखें वह देख रही थीं, जो मुझे वर्जित कर दिया गया था। क्या दृष्टि के प्रकाश में, रहस्य गायब हो जाऐंगे ? परन्तु नहीं, रहस्य गहरे होंगे, यह मुझे बाद में पता चलना था। इसलिए मैं अनिच्छापूर्वक और बहुत डरा हुआ बैठा रहा। चीनी हाथों में, मैं जितनी प्रताड़नाओं से गुजरा था, उन्होंने मुझे निहत्था कर दिया था, मुझे ये महसूस करा दिया था कि, मैं अब, औरअधिक, सहन नहीं कर सकता, औरअधिक बिल्कुल नहीं। बनिस्वत इसके कि, मुझे अज्ञात को झेलना पड़े, ये अच्छा होगा कि अब, नौ खंजर आऐं और मेरा खात्मा कर दें। इसलिए–मैं बैठा रहा, क्योंकि वहॉ देखने के लिए कुछ और नहीं था।

उठी हुई आवाजों ने, मुझे अपनी सुरक्षा के प्रति, डरा दिया। यदि मेरे पास नजर होती, तो मैं भागने का एक निराशाजनक प्रयास करता, परन्तु कोई बिना ऑखों के, विशेषरूप से, असहाय होता है, कोई पूरी तरह से, दूसरों की कृपा के ऊपर निर्भर होता है, हर चीज की कृपा। जब किसी के सामने, किसी बन्द दरवाजे पर पत्थर गिरता है, अज्ञात, सदैव उससे पहले, भयानक, अत्याचारी तानाबाना बुन देता है। उपद्रव अपनी चरम सीमा की तरफ बढ़ा। आवाजें उच्चतम आरोह (crescendo) में चीखीं, आवाजें, बैलों की बढ़ती हुईं लड़ाई की तरह से गुर्राईं। मुझे हिंसा का, धक्के–मुक्कों का, जो मेरे शाश्वत अंधकार के कारण मुझे लगेंगे, डर लगा। मैंने अपनी सीट के किनारे को कस कर पकड़ा, तब जल्दी से, मैंने अपनी पकड़ छोड़ दी क्योंकि, मुझे ऐसा लगा कि, यदि मैं इसे छोड़ दूँ, धक्का मुझे थोड़े नुकसान के साथ, थोड़ा उछाल सकता है। फिर भी यदि मैं, गिरने पर इसे पकड़े रहूँ तो ये अच्छा होगा। डरो मत, अब एक परिचित स्वर ने कहा, *''ये केवल, परिषद की एक बैठक है। तुम्हारे लिए कोई नुकसान नहीं होगा। हम केवल विचार–विमर्श कर रहे हैं कि, सबसे अच्छे तरीके से तुम्हें कैसे शिक्षित (indoctrinate) किया जाए।''*

''असाधारण,'' मैंने कुछ भ्रम में उत्तर दिया, *''मैं वास्तव में, यह देख कर आश्चर्यचकित हूँ कि, ऐसे महान लोग, ऐसे शब्द, जिसे कि हमारी पहाड़ियों में, सबसे नीची श्रेणी का याक चलाने वाला कहता है, सविस्तार बोलते हैं!''* एक दबी जुबान की हंसी ने, आनन्द के साथ, मेरी टिप्पिणी का अभिनन्दन किया। ऐसा लगा, शायद मेरी बेवकूफी भरी स्पष्टवादिता से, मेरे श्रोता, नाराज नहीं थे।

''इसे हमेशा याद रखो,'' उन्होंने जवाब दिया, *''कोई बात नहीं, कोई कितना भी ऊॅचा हो जाए, वहॉ हमेशा बहस होती है, असहमति होती है। हमेशा एक का विचार कुछ होता है, जो दूसरों से अलग होता है। किसी को इस पर विचार–विमर्श करना चाहिए, बहस करनी चाहिए, और बलपूर्वक, अपने खुद के विचारों की पुष्टि करनी चाहिए या कोई मात्र दास हो सकता है, दूसरों के विचार को सुनने के लिए हमेशा तैयार, यंत्र मानव। न समझनेवाले दर्शकों द्वारा, भौतिक हिंसा के प्रारंभ के रूप में, मुक्त वादविवाद का हमेशा सम्मान किया जाता है।''* उन्होंने दुबारा आश्वासन देते हुए मेरे कंधे थपथपाए और कहना जारी रखा, *''यहॉ हमारे पास, केवल अनेक प्रजातियों के नहीं, परन्तु अनेक लोकों से आये हुए लोग हैं। कुछ हमारे खुद के सौरमण्डल से हैं, कुछ बहुत दूर की निहारिकाओं (Galaxies) से हैं। कुछ, तुम्हारे लिए, पतले बोने जैसे दिखेंगे, जबकि दूसरे, वास्तव में, दैत्याकार हैं। सबसे छोटे की तुलना में, छः गुने कद–काठी वाले।''* जब वे मुख्य समूह में शामिल होने के लिए चले गए, मैंने उनके कदमों की आवाज को सुना।

हमारी निहारिकाऐं ? ये सब क्या था ? *''दूसरी निहारिकाऐं''* क्या थीं ? दैत्य, ठीक है, अनेक दूसरे लोगों के समान, मैंने उनके बारे में, परी कथाओं में सुना था। बोने, अब इनमें से कुछ, बगल के प्रदर्शनों में, समय–समय पर दिखाई दिए थे। मैंने अपना सिर हिलाया, ये सब मेरे परे था। उन्होंने कहा कि, मुझे कोई नुकसान नहीं होगा, ये केवल एक विचार–विमर्श था। परन्तु भारतीय व्यापारियों, जो ल्हासा के शहर में आए थे, ने भी, हो–हल्ला, जोर की आवाजें और शोर–शराबा, कुछ नहीं किया। मैंने शांत बैठने का निश्चय किया और प्रगति की प्रतीक्षा की। कुल मिलाकर, और कुछ नहीं था, जो मैं कर पाता !

नौजवान भिक्षु, साधु की गुफा में, ठण्डी मन्द रोशनी में, उन अजनवी प्राणियों की

कहानी से मंत्रमुग्ध हो कर, तल्लीन हो कर बैठा। परन्तु वह इतना मंत्रमुग्ध भी नहीं था कि, उसके अन्दर की खलबलाहट, अनदेखी चली जाए। खाना, तुरन्त खाना, और अब ये महत्वपूर्ण विषय था। बूढ़े साधु ने सहसा बोलना बंद कर दिया और बड़बड़ाया, *''हॉ, हमें कुछ विराम लेना चाहिए, अपना खाना तैयार करो। मैं वापस लौटूंगा।''* ऐसा कहते हुए, वह अपने पैरों पर खड़ा हुआ और वह धीमे–धीमे, अपने अन्दर वाले स्थान में चला गया।

नौजवान साधु ने, खुले में आने की जल्दी की। एक क्षण के लिए, वह भूदृश्य के पार, बाहर की तरफ ताकता हुआ, खड़ा रहा। तब उसने, झील के किनारे की तरफ, जहॉ महीन बालू, उतनी भूरी, जितनी कि पृथ्वी, आमंत्रण करती हुई, चमक रही थी, अपना रास्ता लिया। अपनी पोशाक के सामने की तरफ से, उसने अपना लकड़ी का कटोरा निकाला और उसे पानी में डुबोया। एक घुमाव और एक झटका और तब ये धुल गया। अपनी पोशाक में से, पिसे हुए जौ के छोटे थैले को लेते हुए, उसने विवेक से, थोड़ी सी मात्रा अपने पसों बनाए हुए (cupped) हाथों से, अपने कटोरे में उॅडेली और झील के पानी में डाल दिया। उसने सत्तू को प्रसन्नता से साना। वहॉ मक्खन नहीं था, और न ही चाय। पिसा हुआ जौ, पानी के साथ गुंथकर, लुग्दी के रूप में हो गया। खाना ! उसने अपनी उंगली कटोरे में डुबाई और उसको हिलाया, तब तक हिलाया, जबतक कि, उसका गाढ़ापन एकदम सही नहीं हुआ, तब, उसने सत्तू को, अपने सीधे हाथ की दो उंगलियों से, चम्मच बना कर खा लिया और धीमे से, बिना उत्साहपूर्वक, उसने इसे खाया।

अंत में, समाप्त करके, उसने कटोरे को झील के पानी में खंगाला और तब महीन बालू की एक मुट्ठी ली। ऊर्जा के साथ, उसने कटोरे को अन्दर और बाहर की तरफ से मांजा। उसको दुबारा बाहर खंगालने से पहले– अभी भी गीला– अपने पोशाक के सामने वापस रखते हुए। जमीन पर घुटनों के बल बैठे हुए, उसने अपनी पोशाक के निचले आधे हिस्से को फैलाया और उसके ऊपर बालू डाली, जब तक कि, वह उसे और अधिक नहीं उठा सका। अपने पैरों को झटकते हुए, वह गुफा की तरफ लड़खड़ाते हुए चला। उसने बालू को गुफा में, ठीक अन्दर डाल दिया और वह एक गिरी हुई शाखा, जिसमें तमाम छोटी छोटी टहनियॉ, पत्तियॉ लगी थीं, को लिए हुए, खुले स्थान में सावधानीपूर्वक वापस लौटा। और उसने अच्छी तरह से जमी हुई बालूवाली जमीन को, फर्श को, उस पर बालू की एक ताजा मोटी पर्त चढ़ाने के पहले, सावधानीपूर्वक साफ किया। एक बार का लाना काफी नहीं था; संतुष्ट होने से पहले, वह इस प्रकार, सात बार भर कर बालू लाया और अपने गोल बनाए हुए और फटे हुए याक की ऊन के कम्बल के ऊपर, स्पष्ट चेतना के साथ बैठ सका।

वह किसी भी देश की फैशन के प्रति आग्रहग्रस्त नहीं था। उसकी लाल पोशाक, उसका एक मात्र परिधान था। जीर्णशीर्ण और पतली, लगभग कई स्थानों पर आरपार दिखने वाली। ये उसके लिए कटु हवाओं से बचाव भी नहीं था, पैरों में कोई चप्पल नहीं, कोई अण्डरबियर नहीं। कुछ नहीं, परन्तु केवल अकेली पोशाक, जो रात को, जब उसने खुद को अपने कम्बल में लपेट लिया, उतार कर रख दी गई। उपकरणों में उसके पास थे मात्र कटोरा, थोड़े से जौ के थैले, और बहुत पहले किसी दूसरे के द्वारा त्यागा गया, एक पुराना और सुधारा हुआ ताबीजों (charms) का डिब्बा, जिसमें वह एक साधारण से यंत्र (Talisman) को रखता था। उसके पास एक प्रार्थना चक्र (prayer wheel) भी नहीं था क्योंकि, ये अधिक खर्चीला होता; वह और उस जैसे दूसरे, मन्दिरों में सामान्य लोगों के साथ दिखावा करते थे। उसकी खोपड़ी मुंडी हुई थी और उस पर, अपना ध्यान का समर्पण देखने के लिए, जहॉ उसे कष्ट और जलते हुए मांस की बदबू के प्रति, प्रभावशून्य (immune) होना चाहिए था, जलने के निशान थे, जो उन्होंने सीधे, अपने सिर के ऊपर, अगरबत्तियों की काड़ियों से जलते हुए झेले थे, आदमी होने के निशान थे। अब, किसी विशेष कार्य के लिए चुने जाने के बाद, उसने साधु की गुफा की तरफ बहुत दूर यात्रा की थी। परन्तु लम्बी बढ़ती छायाओं के साथ और हवा की बढ़ती ठण्डक के साथ दिन समाप्त हो जा रहा था। वह बैठा और उसने बूढ़े लामा के प्रकट होने की प्रतीक्षा की।

अंत में घिसटते हुए कदमों के चलने की, लम्बी लाठी को टिकटिकाने की, और उस पुरातन आदमी की घरघराहट के साथ सांस लेने की आवाज आई। जवान भिक्षु ने एक नये आदर के साथ, उस पर टकटकी लगाई; उसे किस प्रकार के अनुभव प्राप्त थे। उसने क्या पीड़ाऐं झेली थीं। वह कितना विद्वान दिखाई देता था ! बूढ़ा आदमी पैर घसीटते हुए आसपास टहला और नीचे बैठ गया। उसी क्षण, एक खून जमा देनेवाली चीख ने, हवा पर अधिकार किया और एक बड़े और रोंएदार प्राणी ने गुफा के प्रवेशद्वार में कुलाँचें भरीं। नौजवान भिक्षु, अपने पैरों पर उछल पड़ा और उस बूढे साधु को बचाने के प्रयास में, अपनी मौत से मिलने के लिए तैयार हुआ। जब उसे रोका गया और नवागन्तुक की आवाज के द्वारा दुबारा आश्वासन दिया गया, दो मुट्ठी भर बालू, को पकड़े हुए, जिसे वह उस घुसपैठिए की ऑखों में फैंकने ही वाला था।

''अभिनन्दन, अभिनन्दन, पवित्र साधु !'' वह जोर से चिल्लाया, मानो कि एक मील दूर से चिल्ला रहा हो। *''मैं आपके आशीर्वाद चाहता हूँ, यात्रा पर आपके आशीर्वाद, रात के लिए आपके आशीर्वाद, क्योंकि हमने यहॉ झील के किनारे शिविर लगाया है,''* वह चिल्लाया, *''मैं आपके लिए चाय और जौ लाया हूँ। आपके आशीर्वाद, पवित्र साधु। आपके आशीर्वाद।''* एक बार फिर से सक्रियता में कूदते हुए, नौजवान भिक्षु के अधिक नवीनीकृत हुए खतरे के लिए, वह दौड़ कर साधु के सामने आया और उसने ताजी जमाई हुई बालू, उसके सामने विखरा दी और उसने दो थैले, साधु के बगल में उछाल कर रखे, उसने कहा, *''चाय, जौ, यहॉ– इन्हें ले लो।''*

''व्यापारी, व्यापारी,'' धीमे से साधु ने आपत्ति की, *''तुम अपनी हिंसा के द्वारा, एक बूढ़े और बीमार आदमी को खतरे में डालते हो। तुमको शान्ति मिले। गौतम के शुभाशीर्वाद तुम पर हों और तुम्हारे अन्दर निवास करें। तुम्हारी यात्रा सुरक्षित और शीघ्र हो और तुम्हारा व्यापार फले फूले।''*

''और आप कौन हैं, जमूड़े ?'' व्यापारी ने कहा। *''आह !''* वह अचानक ही जोर से चिल्लाया, *''मेरी क्षमा याचनाऐं, नौजवान पवित्र पिता, मैं इस गुफा के धुंधलेपन में, पहले नहीं देख सका कि, आप कपड़ों से एक ही हैं।''*

''और तुम्हारे पास क्या खबर है, व्यापारी ?'' साधु ने अपनी सूखी और फटी आवाज में पूछा।

''क्या खबर ?,'' व्यापारी आश्चर्य में पड़ गया। *''भारतीय साहूकार को पीटा गया और लूट लिया गया। जब वह रोते हुए कुलानुशासक के पास गया, उन्हें गंदे नाम से पुकारने के लिए, उसे दुबारा पीटा गया। याकों की कीमत गिर गई, और मक्खन की कीमत बढ़ गई थी। द्वार वाले पुजारी, अपनी वसूली को बढ़ा रहे हैं। अंतरतम (inmost)[2] नगीना महल की यात्रा कर चुके हैं। ओह, पवित्र साधु, अब कोई खबर नहीं है। आज रात हम, झील पर शिविर करेंगे और कल हम, कलिंगपोग[3] के लिए अपनी यात्रा शुरू करेंगे। मौसम अच्छा है, बुद्ध ने हमारी देखभाल की है और दैत्यों ने हमको अकेला छोड़ दिया है। क्या आपको पानी मंगवाना है, या अपने दरवाजे के लिए, अपने फर्श के लिए, बालू की एक नई आपूर्ति और क्या ये नौजवान पवित्र पिता, तुम्हारी अच्छी देखभाल कर रहे हैं ?''*

जबकि छायाऐं, दूसरी यात्रा के लिए, रात के अंधेरेपन के लिए, यात्रा कर रही थीं, साधु

---

2 अनुवादक की टिप्पणी : दलाईलामा के लिये उपयोग में लाये जाने वाला सम्मान सूचक शब्द

3 अनुवादक की टिप्पणी : कलिंगपोंग, हिमालय की पहाड़ियों में घनी हरियाली और चाय के बागानों के बीच बसा हुआ, ये एक पहाड़ी नगर है, जहॉ से हर तरफ बर्फ से लदी हुई पहाड़ी चोटियॉ अविश्वसनीयरूप से भौंचक्की करती हुई दिखाई देती हैं। सिलीगुड़ी जंक्शन तथा जलपाइगुड़ी रेल्वे स्टेशनों और बागडोगरा हवाई अड्डे से मात्र 80 किलोमीटर दूर, ये लगभग 1250 मीटर (4060 फुट) ऊंचाई पर बसा हुआ एक छोटा नगर है। इसका जलवायु सामान्यतः गर्मियों में 15 डिग्री सेन्टीग्रेड से 25 डिग्री सेन्टीग्रेड तक और सर्दियों में 7 डिग्री से 15 डिग्री सेन्टीग्रेड तक रहता है, जो कि लगभग पूरे समय आनन्ददायक होता है। पहिले ये लगभग 155 वर्षों तक भूटान राज्य के अन्तर्गत रहा था। 1864 के अंग्रेजों और भूटानियों के बीच हुए युद्ध ने, इसके भाग्य का निर्णय करके, इसको ईस्ट इण्डिया कम्पनी में मिला दिया और बाद में, 1865 में जब यहॉ मात्र तीन या चार परिवार, केवल कुछ गायों के साथ रहते थे, इसे ईस्ट इंडिया कंपनी के द्वारा ब्रिटिश राज्य में मिलाया गया। तब इसे दार्जिलिंग जिले में मिला कर, दार्जिलिंग का एक उपखण्ड (subdivision) बनाया गया था। अंग्रेजों ने इसे दार्जिलिंग के विकल्प के रूप में, पर्यटक पहाड़ी स्थान के रूप में विकसित किया। इसके बाद, तिब्बत के साथ ऊन के व्यापार के कारण, यह बहुत फला फूला। 1907 तक आते–आते कलिंगपोंग अब पुराना कलिंगपोंग नहीं बचा था। यहॉ बौद्ध, हिन्दू तथा ईसाई और गुम्पा, सभी धर्म कंधे से कंधा मिलाकर चलते हैं और असामान्यतः गिरजाघर, मंदिर, भिक्षु और मिशनरी साथ–साथ रहते हैं। कलिंगपोंग में बौद्ध मठ, हिन्दू मंदिर, ईसाई चर्च, फूल, फूल के बागान और बहुत अधिक मात्रा में विभिन्न प्रकार की वनस्पतियॉ, पुराने उपनिवेशीय (colonial) बंगले, प्राकृतिक दृश्य और इन सबसे ऊपर हटकर, बर्फ की झलक देखने को मिलती है। वर्तमान में इसकी आबादी लगभग 70 हजार है। 1962 के चीनियों के आक्रमण के बाद, जिसके कारण जेलेप्ला (Jelepla) के माध्यम से होने वाला व्यापार रोक दिया गया था, कलिंगपोंग का आर्थिक विकास, कुछ धीमा पड़ गया। वर्तमान में कलिंगपोंग को आकर्षक पर्यटनस्थल और शैक्षणिक केन्द्र के रूप में जाना जाता है।

और व्यापारी ने ल्हासा, और तिब्बत की बातें कीं, और भारत जो हिमालय से काफी आगे था, की खबरों का आपस में आदान–प्रदान किया। अंत में, व्यापारी अपने पैरों पर उछला और उसने भय के साथ, बढ़ते हुए अंधकार में ताका। *''ओह ! नौजवान पवित्र पिता, मैं इस अंधेरे में अकेला नहीं जा सकता– मुझे शैतान पकड़ लेगा। क्या तुम मुझे वापस, मेरे शिविर की तरफ पहुॅचा कर आओगे? ''* उसने विनती की।

''मैं आदरणीय साधु के निर्देशों के अंतर्गत हूॅ,'' नौजवान ने जवाब दिया, *''जैसे ही ये आज्ञा देंगे, मैं चला जाऊॅगा। मेरी पुजारीवाली पोशाक, रात के दैत्यों से मेरी रक्षा करेगी।''* जैसे ही जब उसने इजाजत दी, बूढ़ा साधु मन ही मन मुस्कुराया। पतले नौजवान भिक्षु ने गुफा से बाहर का रास्ता दिखाया। याक की ऊन में, और दुर्गन्ध निकालते हुए, एक व्यापारी के ऊॅचे दैत्य ने, इसका पीछा किया। प्रवेशद्वार के ठीक पास, वह एक पत्ती वाली शाखा के साथ रगड़ गया। वहॉ, एक डरी हुई चिड़िया की, चूंकि, वह अपने सहारे से विस्थापित हो गई थी, चीं चीं चीं चीं आवाज हुई। व्यापारी ने भयानक चीख निकाली– वह बेहोश होता हुआ, नौजवान भिक्षु के कदमों पर गिर गया।

''ओह, ! नौजवान पवित्र पिता,'' व्यापारी सुबका, *''मैंने सोचा कि, अंत में शैतान ने मुझे पा लिया है। मैं धन, जो मैंने भारतीय साहूकारों से लिया, को वापस करने के लिए, लगभग, लेकिन पूरा नहीं, तय कर चुका था। तुमने मुझे बचा किया, तुमने शैतान को भगा दिया। मुझे सुरक्षित रूप से, मेरे शिविर तक पहुॅचा दो और मैं तुम्हें चाय की आधी ईंट और त्सम्पा का एक पूरा थैला दूॅगा।''* ये इतना अच्छा प्रस्ताव था कि, इसे गवॉ (miss) देना अच्छा नहीं था। इसलिए नौजवान भिक्षु ने, मृतकों के लिये प्रार्थनाओं को गाते हुए, अशांत आत्माओं को छुड़ाने के लिए धर्मोपदेशों को गुनगुनाते हुए और रास्ते के संरक्षकों के लिए, एक जाप का, विशेष दिखावा किया। नौजवान साधु के लिए परिणामी शोर–बहुत असंगीतमय था– वे जो सभी प्राणियों से बचते हुए रात को घूम रहे थे, उस शैतान के अवसर के लिए कुछ भी करते।

अंत में, वे शिविर की आग के पास पहुॅच गए, जहॉ व्यापारी के दल के दूसरे लोग गा रहे थे और संगीत के उपकरणों को बजा रहे थे, जबकि औरतें, चाय की ईटों को पीस रही थीं और पिसे हुए को, उबलते हुए पानी के कढ़ाव में डाल रही थीं। महीन पीसे गए जौ का एक पूरा थैला, उसमें मिला दिया गया और तब एक बूढ़ी औरत का एक जबड़े जैसा हाथ, एक थैले में पहुॅचा और उसने मुट्ठी भर कर पकडते हुए, याक के मक्खन को निकाला। ये उसने कढ़ाव में डाला, और दूसरा एक और, दूसरा और, जब तक कि वसा टपकने नहीं लगी और सतह पर झाग ऊपर नहीं उठे।

आग की रोशनी की चमक, व्यापारियों के दल के आनन्द के संक्रमण को आमंत्रित कर रही थी। नौजवान भिक्षु ने, अपनी पोशाक को शालीनता से अपने चारों ओर लपेटा और संयत ढंग से (sedately) जमीन पर बैठ गया। नौजवान भिक्षु ने स्व–चेतना से, अपने हाथ उठाए अपने कटोरे को, एक बूढ़ी डायन, जिसकी ठोड़ी लगभग नाक को छूती हुई थी, की आवभगत में निवेदित किया और उसने एक अत्यधिक सहायक होने वाली चाय और त्सम्पा को, पतली पर्वतीय हवा में *''उबलते हुए''* में से, कलछी से उसमें उंडेला। ये सौ डिग्री सेन्टीग्रेड नहीं था, न दो सौ बारह डिग्री फेरनहाईट, परन्तु मुॅह के सहन करने योग्य था। पूरा दल जोश (gusto) के साथ व्यवस्थित हो गया और जलूस शीघ्र ही वहॉ से झील के पानी की तरफ गया ताकि, कटोरा धोया जा सके और नदी की महीन बालू से, एक ताजे रूप से मांजा जा सके। झील को भरने वाली नदी, ऊपर पर्वत श्रंखलाओं में से, बालू जो अधिकतर सोने के रंगों से मिली रहती थी, महीनतम बालू को लाती थी।

दल खुश था, अनेक व्यापारियों की कहानियॉ, और उनके संगीत और गाने, नौजवान के नीरस अस्तित्व के स्थान पर, नौजवान के लिए रंग लाए परन्तु, खाली परिदृश्य को अपनी चांदी की चमक से प्रकाशित करते हुए और वास्तविकता के साथ छाया डालते हुए, चन्द्रमा ऊॅचा उठ गया था। आग की चिनगारियॉ, अब बादलों में और अधिक नहीं उठ रहीं थीं, लपटें समाप्त हो गई थीं। अनिच्छापूर्वक, नौजवान भिक्षु, अपने पैरों पर उठा और उसने धन्यवाद के अनेक नमन

स्वीकार किए और व्यापारी, जो इस बात से पूर्णतः आश्वस्त था कि, नौजवान आदमी ने उसे दैत्यों के शाप से बचा लिया है, द्वारा उसको उपहार दिए गए।

अंत में वह, छोटे पैकेटों से लदा हुआ, बिल्लो (billow) के पेड़ों के छोटे झुरमुट के बीच में हो कर, और जहॉ तक गुफा का छिपा हुआ मुॅह काला चमक रहा था, झील के सहारे लंगड़ाता हुआ, दॉयीं तरफ चला। वह एक क्षण के लिए, प्रवेशद्वार के बगल से रुक गया ओर उसने आकाश को देखा। दूर, ऊपर बहुत दूर, शांत रूप से आकाश के आरपार, मानो देवताओं के दरवाजे तक पहुॅचती हुई, एक चमकीली ज्वाला उठी। देवताओं का रथ, या क्या ? नौजवान भिक्षु ने, संक्षेप में आश्चर्य किया, और गुफा में घुस गया।

अध्याय दो

याकों के रंभाने की आवाज और आदमियों और औरतों के उत्तेजित शोर ने, नौजवान भिक्षु को उत्तेजित कर दिया। अपने पैरों पर उनींदा सा उठते हुए, उसने अपनी पोशाक को अपने आसपास खींचा और ये निश्चित करते हुए कि, अब किसी उत्तेजना को वह चूकेगा नहीं, गुफा में अन्दर की ओर का रास्ता लिया। याकों को, जो पानी में खड़े थे और जिनको बाहर आने के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता था, काम में लाने के प्रयास में, आदमी झील के आसपास इकट्ठे थे। अंत में, अपने धैर्य को खोते हुए, एक नौजवान व्यापारी, पानी में कूदा और पानी में डूबी हुई एक जड़ से जा टकराया। वह दुबारा, एक गूंजती हुई चीख के साथ, मुँह के बल नीचे गिर गया। पानी की बड़ी–बड़ी धाराओं ने, उस पर छींटे लगाए और अब डरे हुए याक, किनारे की तरफ भागे। नौजवान व्यापारी, पतली सी दलदल में ढ़का हुआ और एकदम बेवकूफ जैसा दिखाई देता हुआ, अपने दोस्तों के हास्य और उपहास के साथ, धीमे–धीमे, किनारे की तरफ आया।

शीघ्र ही, तम्बुओं को उखाड़ कर बांध लिया गया और रेत से अच्छी तरह साफ किए गए पकानेवाले बर्तन बांधे गए और पूरा व्यापारी काफिला, उन भारी–भरकम जानवरों को, अधिक तेज गति से चलाने की कोशिश करते हुए, काम की नीरस चीख–पुकारों के बीच, आदमियों के बेकार के शोर के साथ, धीरे–धीरे चला। नौजवान भिक्षु, उगते हुए सूर्य की चमक से बचने के लिए, अपने हाथों से अपनी ऑखों को ढ़कता हुआ, दुःखपूर्वक खड़ा हुआ। वह दुःखपूर्वक खड़ा हुआ और उसने दूर नजर गढ़ा कर देखा। काफी देर बाद, शोर समाप्त हो गया। ओह क्यों? उसने सोचा, वह एक व्यापारी क्यों नहीं हो सका और दूर–दूर के स्थानों को यात्रा क्यों नहीं कर सका ? क्यों उसे हमेशा, उन चीजों को पढ़ना ही पड़ता है, जिनको कोई दूसरा अध्ययन करता नहीं दिखता। वह, प्रसन्नता की नदी पर एक नाविक, एक व्यापारी बनना चाहता था। वह चारों तरफ घूमना चाहता था, स्थानों को जाना चाहता था और चीजों को देखना चाहता था। तब वह थोड़े ही जानता था कि, वह स्थानों को जाएगा और चीजों को तब तक देखेगा जब तक कि, उसका शरीर शान्त न हो जाए और उसकी आत्मा विश्राम के लिए तरसने न लगे। तब उसने ये थोड़े ही सोचा था कि, वह पूर्व के चेहरे की तरफ घूमेगा और अविश्वसनीय उत्पीड़न को झेलेगा। अब वह केवल व्यापारी या एक नाविक–कुछ भी, होना चाहता था, परन्तु वह क्या था ? धीमे –धीमे, झुके हुए सिर के साथ, उसने अतुलनीय शाखा को पकड़ लिया और उसने, फर्श को झाड़ने के लिए और ताजा बालू को छिड़कने के लिए, गुफा में पुनः प्रवेश किया।

बूढ़ा साधु, धीमे–धीमे प्रकट हुआ। नौजवान आदमी की अनुभवहीन निगाहों में, वह प्रकटरूप से असफल हो रहा था। एक लम्बी सॉस के साथ, उसने स्वयं को व्यवस्थित किया और *फटी आवाज में बोला, ''मेरा समय समीप आ रहा है, परन्तु जबतक कि, मैं पूरा ज्ञान, जो मेरा है, तुम्हें न दे दूं, मैं जा नहीं सकता। ये विशिष्ट और बड़ी शक्तिवर्धक जड़ी–बूटियॉ हैं, जो मुझे तुम्हारे अति प्रसिद्ध शिक्षक के द्वारा, ऐसे एक अवसर के लिए दी गईं थीं; क्या मुझे मरना चाहिए और तुम्हें मेरे जीवन का डर लगता है, और अब मेरे मुँह में, छः बूंदे जबरदस्ती डाल दो और बस, मैं पुनर्जीवित हो जाऊँगा। जब तक कि, मैं अपना कार्य समाप्त न कर लूं, मुझे अपने शरीर को छोड़ने से रोका गया है।''* उसने अपनी पोशाक में टटोला और एक पत्थर की बोतल, सामने प्रस्तुत की, जिसे नौजवान भिक्षु ने अत्यन्त सावधानी के साथ लिया। *''अब हम जारी रखेंगे,'' बूढ़े आदमी ने कहा। ''जब मैं थका हुआ होऊँ या थोड़े समय के लिए आराम करूँ, तुम खा सकते हो। अब–सुनो, और इसे याद रखने का बड़ा ध्यान रखना। अपने ध्यान को भटकने मत देना क्योंकि, ये मेरे और तुम्हारे जीवन से भी अधिक कीमती है। ये संजो कर रखा जाने वाला और समय के परिपक्व होने पर, आगे दिए जाने वाला ज्ञान है।''*

कुछ क्षणों के लिए विश्राम करने के बाद, ऐसा लगा कि, उसे शक्ति पुनः प्राप्त हो गई, और थोड़ा रंग उसके गालों पर वापस रेंगा। अपने आपको अधिक सुखपूर्वक व्यवस्थित करते हुए, उसने कहा कि, जो मैं तुम्हें अभी तक बता चुका हूँ, ये सब तुम्हें याद रखना होगा; तब,

हम आगे चलें। वार्तालाप लम्बा चला और– मेरे ख्याल से – बहुत गरमागरम, परन्तु अंत में बातचीत का सिलसिला समाप्त हुआ। वहॉ कई पैरों के घसीटने की आवाज हुई, तब छोटे, हल्के कदम, जैसे कीड़े की तलाश में तेजी से चलती हुई एक चिड़िया के कदम। भारी कदम, इतने आश्चर्यजनक जैसे कि, अत्यधिक लदे हुए, घिसटते हुए, लंगड़ाते हुए, याक की चाल। कदम, जिन्होंने मुझे बहुत जोर से, बहुत बड़ी समस्या में डाल दिया क्योंकि, उनमें से कुछ, जैसाकि मैं जानता था, आदमियों द्वारा चले गए नहीं लगे। परन्तु कदमों के बारे में, मेरे विचार अचानक शीघ्र ही, समाप्त हो गए। एक हाथ ने मुझे बाहों पर पकड़ लिया और एक आवाज ने कहा, *''हमारे साथ आओ।''* दूसरे हाथ ने मेरी दूसरी बांह को पकड़ा और मुझे एक पथ पर ले जाया गया, जिसे मेरे नंगे पैरों ने महसूस किया कि, ये पथ पक्का था। अंधे में, दूसरे ज्ञान विकसित हो जाते हैं; मैंने अनुभव किया कि, हम किसी प्रकार की पक्की नली के अन्दर चल रहे थे, यद्यपि ऐसा कैसे हो सकता है, मैं संभवतः इसकी कल्पना भी न कर सका।

बूढ़ा आदमी मानो कि, उस अस्मरणीय अनुभव का, अपने मन में, एक चित्र बनाने के लिए रुका, तब उसने कहना जारी रखा, शीघ्र ही हम अधिक बड़े क्षेत्र में, जिसे मैं बदलती हुई प्रतिध्वनियों के द्वारा निश्चित कर सका, पहुॅचे। वहॉ मेरे सामने, किसी धातु के चटकने जैसी आवाज हुई और मुझे ले जाने वाले लोगों में से एक ने, किसी के प्रति, जो स्पष्टरूप से, इससे बहुत अधिक ऊॅचा दिखता था, बहुत ही आदर सूचक आवाज ने, मुझे कहा। क्या कहा गया था, इसे जानने का मेरे पास कोई तरीका नहीं था, क्योंकि, यह एक विशेष भाषा, बांसुरियों (pipings) और चीं–चीं (chirps) की भाषा, में कहा गया था। स्पष्टरूप से, उत्तर पुराना था, मुझे आगे की ओर धकेल दिया गया और वह धातु का पदार्थ, मेरे पीछे, एक हल्की सी आवाज के साथ, खिसक कर बंद हो गया। मैं वहॉ किसी की टकटकी का अनुभव करते हुए, जो मुझे कठोरता से घूर रही थी, खड़ा हुआ। वहॉ कपड़े फड़फड़ाने और चटखने की, जिसकी मैं, एक सीट, मेरे ही समान एक सीट, जिस पर मैं बैठा हुआ था, के चरमराने के रूप में कल्पना कर सका, की आवाज हुई। तब एक पतले और हड्डियों वाले हाथ ने, मेरे दायें हाथ को पकड़ा और मुझे आगे की ओर बढ़ा दिया।

साधु संक्षेप में रुका और मन्द–मन्द मुस्कुराया। क्या तुम मेरी भावनाओं का अनुमान कर सकते हो ? मैं एक जीवंत चमत्कार में था, मैं नहीं जानता कि, मेरे सामने क्या था और बिना किसी हिचकिचाहट के, मुझे उन पर विश्वास करना पड़ा, जिन्होंने मुझे आगे बढ़ाया। ये व्यक्ति, कम से कम मेरी अपनी भाषा में, मुझसे बोला। *''यहॉ बैठें,''* साथ ही साथ, मुझे धीमे से नीचे की ओर दबाते हुए, उसने कहा। मैं डर और आतंक के साथ हॉफ गया, यद्यपि मैंने (स्वयं को) इन पंखों के बिस्तर पर गिरते हुए महसूस किया। तब, बैठने के स्थान (seat), या ये जो कुछ भी था, ने मुझे अत्यधिक अभिन्नता के साथ पकड़ लिया, जबकि मैं पकड़े जाने का अभ्यस्त नहीं था। बगल से वहॉ टेक (struts) अथवा हत्थे (arms) थे, जो मेरे ख्याल से, किसी को गिरने से रोकने के लिए बनाए गए थे, यदि कोई अत्यधिक अजीब सी कोमलता में सो जाय। मेरे सामनेवाला व्यक्ति, मेरी प्रतिक्रियाओं पर, बहुत आनंदित दिखाई दिया। एक बुरी तरह दबाई हुई हॅसी से, मैं ये कह सकता था, परन्तु उन लोगों की मजबूरी के ऊपर, जो देख नहीं सकते, अनेक लोग आनन्द लेते हुए दिखे।

''तुम अजनबी और डरे हुए लगते हो,'' मेरे सामने वाले व्यक्ति की आवाज ने कहा। ये वास्तव में, एक परदा डालने वाला कथन (understatement) था ! *''खतरे में मत पड़ो,''* उसने कहना जारी रखा, आश्वासनों के बावजूद, ये सब, बहुत भयानक और रहस्यमय लगा। मैंने कुछ नहीं कहा परन्तु शान्त हो कर बैठा और अगली टिप्पणियों की प्रतीक्षा की, जो आने वाले बहुत दूर समय तक में नहीं थी। *''हम देखने जा रहे हैं,''* उसकी आवाज ने कहा, *''सम्पूर्ण भूतकाल को, तुम्हारी पृथ्वी के जन्म को, देवताओं के मूल को, और तुम्हारे महान दुख के लिए, ये रथ आकाश के आरपार क्यों चलते हैं।'' ''आदरणीय श्रीमान !''* मैं चिल्लाया, *''आपने अभी ''देखना'' शब्द का उपयोग किया है, परन्तु मेरी ऑखें निकाल ली गई हैं, मैं अंधा हूॅ, मेरे पास दृष्टि बिल्कुल नहीं है।''* वहॉ एक बड़बड़ाती हुई, जोर की आवाज हुई, जो कुछ तीक्ष्णता

के साथ, किसी के शामिल होने की, और झुंझलाहट आने की सूचक थी। *''हम तुम्हारे बारे में सब कुछ जानते हैं, उससे भी ज्यादा, जितना कि तुम कभी जान पाओगे। तुम्हारी ऑखें निकाल लीं गईं हैं, परन्तु दृश्य नाड़ी (optic nerve) अभी भी वहॉ है। अपने विज्ञान के द्वारा, हम दृश्य नाड़ी के साथ जुड़ सकते हैं और हम तुम्हें वह दिखायेंगे, जो हम तुम्हें दिखाना चाहते हैं।''*

''क्या इसका ये अर्थ होगा कि, फिर से, मैं हमेशा के लिए दृष्टि पा जाऊॅगा ?'' मैंने पूछा। *''नहीं, ये नहीं होगा,''* जवाब आया।

''हम तुम्हारा उपयोग, एक उद्देश्य के लिए कर रहे हैं। तुमको स्थाईरूप से दृष्टि देने का मतलब होगा, तुमको इस संसार में, एक युक्ति के साथ, जो इस संसार के विज्ञान से बहुत–बहुत आगे की है और जिसकी आज्ञा नहीं है, खुला छोड़ देना। अब, काफी बातें हो गईं, मैं अपने सहायकों को बुलाता हूॅ।''

शीघ्र ही, वहॉ एक आदरणीय, सम्मानजनक थपथपाहट हुई, और उसके पीछे धातु के खिसकने का शोर। वहॉ एक बातचीत थी; स्पष्टरूप से दो लोग प्रविष्ट हो चुके थे। मैंने अपनी सीट को घूमता हुआ पाया और उछलने की कोशिश की। भय के साथ, मुझे अनुभव हुआ कि, मैं पूरी तरह से दुबारा विकृत हो गया था। मैं चल नहीं सका, इतना भी नहीं जैसे एक अंगुल भर। इस अनजान सीट में, जो आसानी से मेरी दिशा में खिसकती हुई लगी, मुझे पूरी तरह से चेतना में चलाया गया। हम रास्ते के साथ–साथ चले, जहॉ प्रतिध्वनियों ने मुझे अनजान प्रभाव दिया। अन्त में वहॉ, सीट पर, एक तीखा मोड़ आया और अधिकांशतः उल्लेखनीय दरवाजों ने, मेरे नकुओं को खुजलाते हुए झटका दिया, घायल किया। मैं एक आदेश पर, बड़बड़ाते हुए खड़ा हुआ और हाथों ने मुझे, कंधों के नीचे और टांगों से पकड़ लिया। मुझे आसानी से बगल की तरफ, और नीचे, सीधा ऊपर उठा लिया गया। मुझे खतरे की जानकारी दी गई, आतंकित कहना अधिक सही होगा। आतंक तब बढ़ा, जब एक कसी हुई पट्टी, मेरी दांयी बॉह के ऊपर, कोहनी के ठीक ऊपर लगाई गई। दवाब हतना ज्यादा बढ़ा कि, ऐसा लगा कि मेरी बॉह सूज रही थी। तब मेरे वांये घुटने में एक चुभन और एक अत्यधिक असाधारण सनसनी हुई, मानो कुछ चीज, मेरे अन्दर खिसकाई जा रही हो। अगला आदेश दे दिया गया और मैंने अपनी कनपटियों पर, बर्फ जैसी ठण्डी दो चकतियों को महसूस किया। वहॉ, कहीं दूरी पर मंडराती हुई मधुमक्खी के गूंजने जैसी एक आवाज हुई, और मैंने अपनी चेतना को मंदा होता हुआ अनुभव किया।

आग की चमकीली लपटें मेरी ऑखों के सामने लहराईं। हरे, लाल, बैंगनी और सभी रंगों की धारियॉ। तब मैं चीखा; मेरे पास कोई दृष्टि नहीं थी, इसलिये मुझे शैतानों के देश में होना चाहिए था और वे मेरे लिये प्रताड़नाऐं तैयार करते हुए दिखे। दर्द की एक तीखी टीस – वास्तव में, एक पिन चुभाने की तरह– और मेरा भय दब गया। मैंने और अधिक परवाह नहीं की ! मेरे प्रति एक स्वर, मेरी अपनी भाषा में, ये कहते हुए गूंजा, *''डरो मत, हम तुम्हें नुकसान नहीं पहुॅचाने वाले हैं। हम सामंजस्य बना रहे हैं, ताकि तुम देख पाओगे। अब तुम्हें कैसा रंग दिखाई दे रहा है ?''* इसलिए मैं अपने डर को भूल गया, जब मैंने लाल देखा, जब मैंने हरा और सभी दूसरे रंग देखे और मैंने बताये। तब मैं आश्चर्य के साथ जोर से चीखा; मैं देख सकता था, परन्तु जो मैं देख सकता था, वह इतना अजीब था कि, मैं मुश्किल से ही, इनमें से किसी को समझ सका।

परन्तु कोई, उस अवर्णनीय का वर्णन कैसे कर सकता है ? कोई, किसी अन्य को चित्र का वह दृश्य कैसे दिखाने का प्रयास कर सकता है, जबकि उसकी भाषा में कोई शब्द ही नहीं है, जो उचित हो, जब कोई विचार नहीं हैं, अवधारणाऐं नहीं हैं, जो इस मामले में ठीक बैठ सकें ? यहॉ, हमारे तिब्बत में, हमें शब्द दिए गए हैं, और देवताओं को और शैतानों को वाक्यांश समर्पित किए गए हैं, परन्तु जब कोई देवताओं या शैतानों के कार्य को व्यवहार करने के लिए आता है, मैं नहीं जानता कौन, कोई क्या कर सकता है, कोई क्या कह सकता है, कोई कैसे चित्र बना सकता है ? मैं केवल ये कह सकता हूॅ कि, मैंने देखा। परन्तु मेरी दृष्टि, मेरे शरीर में, अपने स्थान में नहीं थी, और मैं अपनी दृष्टि के साथ अपने आपको देख सकता था, ये

नाड़ियों को उधेड़ देने वाला बहुत ही बड़ा अनुभव था, एक अनुभव, जिसे मैं दुबारा कभी दुहराना नहीं चाहता : परन्तु मैं एकदम शुरू से शुरू करता हूँ। आवाजों में से एक ने मुझे, जब मैंने लाल देखा, कहने (बताने) के लिए कहा, जब मैंने हरा देखा, कहने के लिए कहा, और जब मैंने अन्य रंगों को देखा, कहने के लिए कहा और तब वहॉ ये आतंकपूर्ण अनुभव हुआ, ये सफेद, विलक्षण चमक, और मैंने पाया कि मैं घूर रहा था, क्योंकि यही वह शब्द है, जो उचित दिखाई देता है, एक दृश्य, जो हर किसी के लिए, जिसे मैं जानता हूँ, पूरी तरह से विदेशी है। मैं उस पर, जो एक धातु का प्लेटफॉर्म प्रतीत होता था, आधा झुका हुआ, आधा बैठा हुआ, लेटा था। ये मात्र एक खम्भे पर टिका हुआ लगा, और मैं एक क्षण के लिए, इससे बहुत सहमा हुआ था कि, मेरे साथ, पूरा यंत्र उलट जाएगा। सामान्य वातावरण इतना स्पष्ट था कि, मुझे इससे पहले पता नहीं था। कुछ चमकीली पदार्थों की दीवारें, दाग धब्बेरहित थीं, उनका हरा सा रंग, बहुत आनन्ददायक, बहुत शान्तिदायक था। इस अनजान कमरे के आसपास, जो वास्तव में, मेरे स्तर के अनुसार, एक बहुत बड़ा कमरा था, वहॉ बड़े –बड़े उपकरण थे, जिनके बारे में, मैं आपको बता नहीं सकता क्योंकि, उनके लिए कोई शब्द नहीं थे, जो किसी भी तरीके से, उनके अनोखेपन को, आप तक पहुँचा सकें।

परन्तु उस कमरे के अंदर के लोग– आह, उन्होंने मुझे बहुत जोर का झटका दिया। उन्होंने मुझे एक झटका दिया, जिसने लगभग मुझे हिलाते हुए और चीखते हुए व्यवस्थित किया, और तब मैंने सोचा शायद ये इस कृत्रिम दृष्टि की, किसी विशेष चाल के द्वारा पैदा की गई एक विकृति है, जो उन्होंने मुझे दी है –नहीं, उधार– मुझे। एक आदमी किसी मशीन के बगल से खड़ा हुआ था। मैंने निर्णय किया कि, वह सबसे बड़े कुलानुशासक (proctor) की ऊँचाई से लगभग दूना लम्बा होगा। मुझे कहना चाहिए वह लगभग पंद्रह फुट ऊँचा था, और उसका शंक्वाकार सिर, अत्यधिक असामान्य था, एक सिर, जो लगभग, एक अण्डे की तरह से, छोटे सिरे के ऊपर तक गया। वह पूरी तरह बालों से रहित था, और वह बहुत बड़ा तगड़ा था। वह किसी प्रकार की हरी सी पोशाक में लपेटा हुआ दिखाई दे रहा था– वे सभी हरे रंग के कपड़ों में ढ़के हुए थे, कैसे भी,– जो उनकी गर्दन से, ठीक उनके टखनों तक, नीचे पहुँचते थे, और असामान्य विचार ने, भुजाओं को वहॉ तक ढ़का, जहॉ तक कि, कलाइयॉ हैं। मैं हाथों को देख कर, और ये पा कर कि उनके ऊपर, वहॉ एक प्रकार की खाल थी, आतंकित था। जब मैंने एक से दूसरे की तरफ घूरा, उनमें से हर एक के हाथों के ऊपर, अजीब सा लेप था और मुझे आश्चर्य हुआ कि, इसका क्या धार्मिक महत्व हो सकता था, और क्या वे सोचते थे कि, मैं साफ नहीं था और वे मुझसे कोई चीज पकड़ सकते थे ?'' मेरी नजर इस दैत्य पर से घूमी; वहॉ दो और थे, जिनका उनके बाहर के घेरे (contour) से मैं, महिला के रूप में निर्णय कर पाया। एक एकदम काला था और एक एकदम गोरा था। एक के बाल, ऊपर मुड़े हुए, गॉठदार (kinky) थे, जबकि दूसरे के, सीधे प्रकार के, सफेद बाल थे। परन्तु मैं औरतों के मामले में, कभी अनुभवी नहीं था और इस प्रकार, ये एक विषय है, जिसको मुझे यहॉ बताना नहीं चाहिए था, और न ही आप में इसके प्रति कोई दिलचस्पी होनी चाहिये।

दो महिलाऐं मेरी ओर घूर रही थीं, और तब एक ने अपना हाथ उस दिशा में घुमाया, जहॉ मैंने अभीतक नहीं देखा था। वहॉ मैंने, एक अत्यधिक असामान्यचीज देखी, एक नाटा (dwarf), एक बौना (gnome) एक बहुत, बहुत छोटे शरीरवाला, एक, पांच साल के बच्चे के शरीर जैसा, मैंने सोचा। परन्तु सिर, आह, सिर बहुत बड़ा था, खोपड़ी का एक बहुत बड़ा गुम्बद, केशरहित भी, इसके ऊपर दृष्टि में, कहीं भी बाल का नामोनिशान नहीं। ठोड़ी (chin) छोटी थी, वास्तव में बहुत छोटी, और जैसा होता है, वैसा मुँह नहीं था, परन्तु एक प्रकार का त्रिकोणात्मक छेद जैसा, अधिक दिखाई दिया। नाक छोटी थी, एक ढलान की तरह नहीं, ये स्पष्टरूप से बहुत महत्वपूर्ण व्यक्ति था क्योंकि, दूसरे लोगों ने उस दिशा में, इसकी ओर भिन्न आदर की दृष्टि से देखा।

परन्तु तब इस मादा ने अपना हाथ फिर हिलाया, और एक व्यक्ति, जिस पर मैंने पहले ध्यान नहीं दिया था, मेरी खुद की भाषा में ये कहते हुए बोला, *''सामने देखो, क्या तुम*

अपने आपको देख सकते हो ?'' इसके साथ ही कहने वाला, मेरी दृष्टि की परास (range) में आया, वह बहुत सामान्य सा दिखाई दिया, वह ठीक सा दिखाई दिया, मुझे कहना चाहिए कि कपड़े पहने हुए, वह एक व्यापारी, शायद एक भारतीय व्यापारी जैसा, लग रहा था। इस तरह आप समझें कि, वह कितना सामान्य था। वह आगे आया और किसी बहुत चमकदार चीज की ओर इशारा किया। मैंने इसे घूरा, कम से कम मैं समझता हूँ मैंने घूरा, परन्तु मेरी दृष्टि, मेरे शरीर के बाहर थी। मेरी कोई ऑखें नहीं थीं, इसलिए उन्होंने उस चीज को कहॉ रखा, जो मुझे दिखा रही थी ? और तब मैंने देखा कि, इस अनोखी धातु के बेंच, जिस पर मैं अधलेटा हुआ था, के साथ जुड़े हुए एक छोटे प्लेटफार्म के ऊपर, मुझे एक प्रकार का डिब्बा दिखाई दिया। अब मैं आश्चर्य करने की स्थिति में था कि, मैं उस चीज को कैसे देख सका, यदि यह वह थी, जिसके साथ मैं देख रहा था, जब मुझे ऐसा लगा कि, मेरे सामने की चीज, वह चमकदार चीज, एक प्रकार का परावर्तक (reflector) थी; सर्वाधिक सामान्य आदमी ने उस परावर्तक को थोड़ा चलाया, उसके कोण को थोड़ा बदला या घुमाया, और तब मैं डर और घबराहट के कारण चिल्ला पड़ा क्योंकि, मैंने अपने आपको प्लेटफॉर्म के ऊपर लेटे हुए देखा। जब मेरी ऑखें मुझसे ले ली गई थीं, उससे पहले मैंने खुद को अपनी ऑखों से देखा था। कईबार, जब मैं पानी के किनारे पर पानी पीने के लिए गया था, मैंने शांत धारा में अपना परावर्तित प्रतिविम्ब देखा था, और इसप्रकार, मैं अपने आपको पहचान सका। परन्तु यहॉ, इस परावर्तक सतह में, मैंने लगभग मृत्यु के कगाार पर पहुॅचती हुई, एक कृशकाय आकृति को देखा। उसकी एक भुजा के चारों ओर एक पट्टा और उसके टखनों के चारों ओर एक पट्टा बंधा था। अनोखी नलियॉ इन पट्टों में से वहॉ तक आईं, जहॉ मैंने उन्हें नहीं देखा। परन्तु, एक नली एक नकुए में से बाहर निकली, और वह कुछ पारदर्शक बोतल, जो मेरे बगल में धातु की छड़ से बंधी थी, में चली गई।

परन्तु सिर, सिर ! जिसे मैं मुश्किल से याद कर सकता हूँ और शान्त रह सकता हूँ। परन्तु माथे के ठीक ऊपर, सिर से निकलते हुए धातु के तमाम टुकड़े, जिनके साथ, निकले हुए हिस्सों में से कुछ डोरियॉ आती हुईं लगीं। ये डोरियॉ खास तौर से, आगे उस डिब्बे की तरफ जाती थीं, जो मैंने अपने बगल से, छोटे धातु के प्लेटफॉर्म पर देखा था। मैंने कल्पना की कि, ये उस काले डिब्बे के अन्दर जाती हुई, मेरी प्रकाश नाड़ी (optic nerve) का विस्तार है, परन्तु इसे मैंने बढ़ते हुए आतंक के साथ देखा और तोड़फोड़ कर उन चीजों को अपने से अलग करने लगा, और पाया कि, मैं अभी भी हिल नहीं सकता था, मैं बिल्कुल हिल नहीं सका, एक अंगुल भी नहीं। मैं वहॉ केवल लेटा रह सकता था और इस अनोखी चीज के ऊपर, जो मेरे साथ हो रही थी, टकटकी लगा सकता था।

सामान्य दिखनेवाले आदमी ने, अपने हाथ काले डिब्बे के बाहर की तरफ रखे और यदि मैं हिलने के योग्य होता, तो मैंने उसे, हिंसक रूप से हटा दिया होता। मैंने सोचा वह अपनी उंगलियॉ मेरी नजर में घुसा रहा था, ये भ्रम एकदम पूर्ण था, परन्तु बदले में उसने डिब्बे को थोड़ा सा हिलाया और मुझे एक अलग दृश्य दिखाई दिया। मैं प्लेटफार्म, जिसके ऊपर मैं टिका हुआ था, के पीछे की तरफ देख सकता था, मैं दो और लोगों को वहॉ देख सकता था। वे पूरी तरह सामान्य दिख रहे थे; एक सफेद था, दूसरा पीला, इतना पीला, जितना कि एक मंगोलियन। वे ठीक मेरी तरफ देखते हुए, पलकें न झपकाते हुए, मेरे ऊपर कोई ध्यान न देते हुए, वहॉ खड़े थे। वे इस पूरे मामले से परेशान दिख रहे थे, और तब मैंने यह सोचते हुए याद किया कि, यदि वे मेरे स्थान पर होते, तो वे निश्चितरूप से दुखी नहीं हुए होते। आवाज ने, यह कहते हुए, दुबारा कहा, *''ठीक है कि, ये एक थोड़े समय के लिए, तुम्हारी दृष्टि है। ये नलियॉ तुम्हें तुम्हारा पोषण करेंगी, यहॉ कुछ दूसरी नलियॉ भी हैं, जो तुम्हें बहाकर ले जाऐंगी और दूसरे कामों को करेंगी। वर्तमान में, तुम हिलने के योग्य नहीं होगे क्योंकि, हमें डर है कि, यदि हम तुम्हें ऐसा करने की, चलने की इजाजत दे दें, तुम अपनी सनक में चल सकते हो, अपने आपको घायल कर सकते हो। तुम्हारे खुद के बचाव के लिए, तुमको अचल बनाया गया है। परन्तु डरो नहीं, तुम्हारे अंदर कोई खराबी नहीं आएगी। जब हम (अपना काम) समाप्त कर लेंगे, तो तुम्हारे स्वास्थ्य में सुधार के साथ, तुमको तिब्बत के किसी दूसरे भाग में लौटा दिया*

जाएगा और सिवाय इसके कि, अभी भी तुम्हारी ऑखें नहीं होंगी, तुम सामान्य होगे। तुम समझोगे कि, इस काले डिब्बे को लिए हुए, तुम आसपास नहीं जा सकते।'' वह मेरी दिशा में थोड़ा सा मुस्कुराया, और उसने मेरी दृष्टि की परास के बाहर, पीछे की तरफ कदम बढ़ाये।

लोग विविध चीजों को जॉचते हुए, आसपास चले। वहॉ काफी संख्या में अजनबी वृताकार चीजें, जैसे सबसे अच्छे कॉचों से ढ़की हुईं छोटी खिड़कियॉ थीं। परन्तु कॉच के पीछे, सिवाय एक छोटे संकेतक के, जिसने कुछ निश्चित अनजान अंकों की ओर एक संकेत किया या चला, वहॉ कुछ महत्वपूर्ण दिखाई नहीं दिया। मेरे लिए इस सबका कुछ मतलब नहीं था। मैंने इसे उड़ती हुई निगाह से देखा, परन्तु ये पूरी तरह से मेरी समझ के इतना बाहर था कि, मैंने किसी चीज को अपनी समझ से बाहर मानते हुए, मामले को खारिज कर दिया।

समय गुजरा, और मैं न तो ताजा और न ही थका हुआ महसूस करते हुए, वहॉ लेटा परन्तु बिना अनुभव के, लगभग स्थिर अवस्था में। निश्चित ही, मैं पीड़ित नहीं था, निश्चित ही, मैं चिन्तित नहीं था। मुझे अपने शरीर की रासायनिक प्रक्रिया में एक हल्का सा परिवर्तन लगा और तब मैंने ब्लेक बॉक्स की धारियों की दृष्टि के अन्दर देखा कि कोई व्यक्ति, विभिन्न उभारों को, जो कॉच की उन तमाम नलियों में हो कर, जो धातु के फ्रेम से जुड़ी थीं, आए थे, मोड़ रहा था। जैसे ही उस व्यक्ति ने इन उभारों को मोड़ा, कांच की छोटी खिड़कियों पीछे की, छोटी चीजों ने विभिन्न संकेत बनाए। सबसे छोटा आदमी, जिसे मैंने बोना समझा था, परन्तु जो ऐसा लगा, कि इसका प्रभारी था, उसने कुछ कहा। और तब मेरी दृष्टि की परास में वह एक (व्यक्ति) आया, जिसने मुझसे मेरी खुद की भाषा में, मुझे बताते हुए कहा कि, अब वे मुझे कुछ समय के लिए सुला देंगे ताकि मैं तरोताजा हो जाऊॅ, और जब मुझे पोषण और नींद मिल जायेगी तब वे मुझे ये दिखायेंगे, जो वह मुझे दिखाना चाहते थे।

जब मेरी चेतना दुबारा गई, उसने मुश्किल से कहना खत्म किया, मानो बटन बंद किया हो। मुझे बाद में पता चला कि, वास्तव में, ये ऐसा ही मामला था; उनके पास एक यंत्र था, जिसके द्वारा क्षणिक और हानिरहित अचेतनता (unconsciousness), एक उंगली के छूने से प्रेरित की जा सकती थी।

मैं कितना देर सोया, या अचेतन था, मेंरे पास यह जानने का कोई तरीका नहीं था, ये एक घंटा हो सकता था, या एक दिन भी। मेरा जागना उतना ही क्षणिक था जैसे कि मेरा सोना; एक क्षण मैं, में अचेतन था, अगले ही क्षण मैं एकदम जगा हुआ। मेरे गहरे खेद के लिए, मेरी नई दृष्टि चलन (operation) में नहीं थी। मैं उतना ही अंधा था, जितना कि पहले। धातु की धातु के साथ टकराहट, कॉच का बजना, और कदमों का दूर जाते हुए चलना, ऐसी–ऐसी अजीब आवाजें मेरे कानों को फोड़ रही थीं। लुढ़कन हुई, और कुछ क्षणों के लिए, सभी धात्विक आवाजें शांत हो गईं। मैं अनजान घटनाओं के ऊपर आश्चर्य करते हुए, जो मेरे जीवन में ऐसी खलबली लाईं थीं, सोचता हुआ लेटा। मेरे अन्दर डर और उत्सुकुता, तेजी से बढ़ रही थीं, तभी एक परेशानी आई।

खटखट करते हुए, छोटे और असंबद्ध कदम, मेरे सुनने में आए। उनके साथ, दूरस्थ फुसफुसाहट की आवाजों के दो समूह थे। ध्वनि बढ़ती गई, और मेरे कमरे में प्रविष्ट हुई। फिर धातु की फिसलन, और दो मादाऐं, अपनी ऊॅची उदास आवाजों में बातें करती हुईं, अभी भी– दोनों एक ही समय में बात करते हुए, अथवा मुझे ऐसा लगा, क्योंकि मैंने उनका होना इसीप्रकार निश्चित किया, मेरी तरफ आईं। वे दोनों मेरे अगल बगल से रुकीं, और तब आतंकों का भी आतंक, उन्होंने मेरे एक मात्र पर्दे को चाबुक की तरह से उड़ा दिया। वहॉ कोई चीज नहीं थी, जिसके बारे में, मैं सदेह करता। शक्तिहीन, गतिहीन, मैं उन महिलाओं की कृपा पर निर्भर, वहॉ पड़ा रहा। नंगा, नंगा जैसे कि, मैं पैदा हुआ था। इन अनजान महिलाओं की नजर के सामने नंगा। मैं, एक भिक्षु, जो औरतों को कुछ नहीं जानता था, जो (मुझे मुक्तरूप से स्वीकार करने दो) औरतों से डरा हुआ था।''

बूढ़ा साधु रुका। इस दृश्य की ऐसी भयानक अभद्रता पर विचार करते हुए, नौजवान भिक्षु ने, उसको आतंक में घूर कर देखा। साधु ने, जब भूत जैसे इस समय को दुबारा जिया,

उसके माथे पर पसीने की एक सतह ने, तंग त्वचा को तर कर दिया। वह कांपते हुए हाथों से, अपने कटोरे, जिसमें पानी भरा था, के लिए बाहर आया। कुछ चुस्कियॉ लेने के बाद, उसने कटोरे को, सावधानी से, पीछे, अपने बगल से रख दिया।

परन्तु अभी, और खराब होना था, वह हिचकिचाते हुए डगमगाया; नौजवान औरतों ने मुझे अपने बगल से लुढ़का दिया और एक नली, मेरे शरीर के अनुल्लेखनीय अन्दरूनी हिस्सों में डाल दी। द्रव मेरे अन्दर गया और मैंने महसूस किया कि, मैं फट जाऊँगा। तब बिना किसी उत्सव के, बिल्कुल मुझे उठा लिया गया और एक अत्यन्त ठण्डा बर्तन, निम्नस्थ भाग में, मेरे नीचे रखा गया। उन औरतों के सामने आगे जो हुआ, उसका वर्णन करने के लिए, मुझे शालीनता के कारण बचना चाहिए। परन्तु अभी ये एक प्रारंभ मात्र था; उन्होंने मेरे नंगे शरीर को धोया और मेरे नग्न शरीर के निजी भागों के साथ, बेशर्मी का परिचय दिया। मैं पूरा का पूरा गरम हो गया और भ्रम से लगभग पूरी तरह भर गया। धातु की तीखी छड़ें मेरे अन्दर घुसाई गईं और मेरे नकुओं में हो कर नली निकाली गई और एक ताजी, दूसरी, जबरदस्ती बुरे तरीके से घुसाई गईं। तब, मेरी गर्दन से मेरे पैरों के नीचे तक, मेरे ऊपर, एक कपड़ा डाल दिया गया। अभी भी उनका काम पूरा नहीं हुआ था; उन्होंने मेरी खोपड़ी को कष्टपूर्ण तरीके से फाड़ा और एक बड़े चिपचिपे, जलन पैदा करनेवाले पदार्थ को वहॉ लेपने से पहिले, तमाम अनुल्लेखनीय बातें कीं। इस बीच, नौजवान औरतें चहकती और खिलखिलाती रहीं मानो, शैतान ने उनके दिमाग को चुरा लिया हो।

काफी समय के बाद, वहॉ दुबारा धातु के चटकने की आवाज आई और भारी कदम समीप आते गए, जबकि औरतों की बातचीत बन्द हो गई। एक आवाज ने, मेरी खुद की भाषा में, मेरा अभिनन्दन किया ; *''अब आप कैसे हैं ?''*

''भयानक!'' मैंने महसूस करते हुए जवाब दिया, *''आपकी मादाओं ने मुझे नंगा कर दिया और मेरे शरीर के साथ बुरा बर्ताव किया, जो एक तरीके से, श्रेय के लिए, बहुत धक्का लगानेवाला है।''* वह ऐसा लगा कि मेरी इन टिप्पणियों से, वह बहुत तेज मनोरंजन महसूस कर रहा हो। वास्तव में, एकदम खराब होने के लिए, वह हॅसी से फूट पड़ा, जिसने मेरी भावनाओं को शांत करने के लिए कुछ नहीं किया।

हमें तुमको साफ करना पड़ा,'' उसने कहा, ''हमें तुम्हारे शरीर से मलमूत्रों को साफ करना पड़ा और हमें किसी भी तरीके से, तुम्हें खिलाना पड़ा। तब विभिन्न नलियॉ और बिजली के जोड़ हटा दिये गए और कीटाणुरहित किए गए और दूसरे सामानों से बदले गए। तुम्हारी खोपड़ी में चीरा देखा जाना था और दुबारा पट्टी की जानी थी। अब, जब तुम यहॉ से जाओगे, वहॉ केवल एक हल्की सी गूंथ बनी रहेगी।''

बूढ़ा साधु, नौजवान भिक्षु की तरफ, आगे झुका। *''देखा''* और उसने कहा, *''यहॉ मेरे सिर के ऊपर पांच निशान हैं।''* नौजवान भिक्षु, अपने पैरों पर खड़ा हुआ और उसने बहुत अधिक अभिरुचि के साथ, साधु की खोपड़ी को नजर गड़ाकर देखा, हॉ, वहॉ चिन्ह् थे, हर एक लगभग दो इंच लम्बा, हर एक, अब भी एक मृत सफेद दवाब को दिखाता हुआ। कितना भयानक, नौजवान ने सोचा, औरतों के हाथों से इस अनुभव से गुजरना। वह अनिच्छुकरूप से कांप गया, और मानो, पीछे तरफ से एक हमले को डरते हुए, सहसा नीचे बैठ गया!

साधु ने कहना जारी रखा, मुझे किसी आश्वासन के द्वारा शान्त नहीं किया गया, बदले में, मैंने पूछा, ''परन्तु औरतों के द्वारा, मेरे साथ ऐसा बुरा व्यवहार क्यों किया गया ? यदि ऐसा इलाज अनिवार्य (imperative) था, तो क्या यहॉ कोई आदमी नहीं है ?''

मेरा अपहरणकर्ता, क्योंकि मैंने उसको ऐसा ही समझा, दुबारा नए सिरे से हंसा और उसने जवाब दिया, *''मेरे प्रिय आदमी, इतने मूर्ख, पाखण्डी मत बनो। तुम्हारा नंगा शरीर– ज्यों का त्यों– उनके लिए कोई अर्थ नहीं रखता। जब हम अपने कर्तव्य पर उपस्थित नहीं होते, हम यहॉ लगभग पूरे समय नंगे रहते हैं। शरीर आत्मा (अधिस्वयं overself) का एक मंदिर है और इसलिये शुद्ध है। जो पाखण्डी हैं, कामी विचार रखते हैं। चूंकि, औरतें जो तुम्हारी देखभाल कर रही थीं, उनके लिये ये उनका कर्तव्य था; वे परिचारिकायें (nurses) हैं और उन्हें ऐसे कामों के*

लिए प्रशिक्षण दिया गया है।''

''परन्तु मैं हिल क्यों नहीं सकता ?'' मैंने पूछा *''और मुझे देखने की अनुमति क्यों नहीं है ? ये प्रताड़ना है !''*

''तुम हिल नहीं सकते,'' उसने कहा, ''क्योंकि तुम विद्युदाग्रों (electrodes) को बाहर खींच सकते हो और अपने आपको घायल कर सकते हो या तुम अपने उपकरणों को खराब कर सकते हो। हम तुम्हें, दुबारा दृष्टि के लिए, बहुत अधिक अभ्यस्त हो जाने के लिए, आज्ञा नहीं दे रहे हैं क्योंकि, जब तुम यहॉ से जाओगे, एक बार फिर अंधे होगे और तुम यहॉ नजर का जितना ज्यादा उपयोग करोगे, उतना ही ज्यादा, तुम यहॉ के अनुभवों को, महसूस किए हुए अनुभवों को, जो अंधापन विकसित करता है, भूल जाओगे। यदि हम तुम्हें, जब तक कि तुम यहॉ से नहीं छोड़ो, दृष्टि दें दें, क्योंकि तब तुम असहाय हो जाओगे। ये प्रताड़ना होगी। तुम यहॉ, अपने आनन्द के लिए नहीं, परन्तु ये सुनने और देखने के लिए और ज्ञान का एक भंडार (repository) बनाने के लिए, दूसरे, (किसीएक) के लिए, जो तुम्हारे पास आएगा और जो तुमसे उस ज्ञान को ले जाएगा, (आये) हो। सामान्यतः ये ज्ञान लिखा जाएगा, परन्तु हमको, उनके *''पवित्र पुस्तकों के लेखनों से, दूसरे शोर शराबे के प्रारंभ करने का, डर है। यदि तुम इस ज्ञान को, अवशोषित करते हो और इसको आगे बढ़ाते हो, तो ये बाद में, लिखा जाएगा। इस बीच याद रखो, तुम यहॉ हमारे उद्देश्य से हो, अपने से नहीं।''*

गुफा में सब कुछ शान्त था; बूढ़ा साधु कहने से पहले कुछ रुका, *''मुझे अस्थाई रूप से विराम लेने दें, मुझे थोड़ा सा आराम चाहिए। तुमको पानी लाना चाहिए और गुफा को धोना चाहिए। जौ को पीसना है।''*

''क्या मैं आपकी अन्दर वाली गुफा को पहले साफ करूँ, आदरणीय ?'' नौजवान भिक्षु ने पूछा।

''नहीं, आराम करने बाद, मैं उसे खुद कर लूंगा, परन्तु तुम मेरे लिए अतिरिक्त रेत लाओ और यहॉ छोड़ दो।'' उसने अलसायेपन में, पत्थर की दीवारों में से एक के, थोड़े से रिक्त स्थान में खोज मारा। *''अस्सी से अधिक सालों के लिए खाने के बाद, त्सम्पा और त्सम्पा के अलावा कुछ और नहीं ''* उसने कुछ उत्कंठता से कहा, *''मुझे यहॉ से वहॉ के लिये गुजरने से पहले, जहॉ मुझे कुछ और खाने की आवश्यकता नहीं होगी, एक बार दूसरे खाने का स्वाद लेने की भी, एक अनजान इच्छा अनुभव हो रही है।''* उसने अपना सफेद बूढ़ा सिर हिलाया और जोड़ा, *''शायद भिन्न खाने का सदमा, मुझे मार डालेगा।''* इसके साथ ही वह अपनी गुफा के निजी हिस्से में घूमा, एक हिस्सा, जिसमें नौजवान भिक्षु ने अभी प्रवेश नहीं किया था।

नौजवान भिक्षु, गुफा के प्रवेशद्वार में से, एक मजबूत खपच्ची लाया और ताकत के साथ, गुफा के कठोरता से जमे हुए फर्श को ढीला करके ठीक करने का प्रयास किया। कठोर हो गई सतह को रगड़ते हुए, उसने पूरे सामान को खुले में उलट दिया और उसे काफी दूर तक छितरा दिया, जिससे कि निकाली गई सामग्री के द्वारा प्रवेशद्वार न रुके। झील के किनारे से गुफा तक, अपनी ऊपर उठाई हुई पोशाक में, जितना अधिक से अधिक रेत वह उठा सकता था, लाते हुए, वह थके हुए अंदाज में, पैदल चला और पॉव घसीट कर दुबारा चला। उसने सावधानीपूर्वक, ताजे रेत को, फर्श के ऊपर बिखरा दिया और इसे ठोक कर नीचा किया और बाद में उसने, किनारे से छः और चक्कर लगाये, और तब वह बूढ़े साधु के लिए, पर्याप्त मात्रा में रेत ला चुका था।

गुफा के अन्दर वाले सिरे पर, एक चिकनी चोटी वाली चट्टान थी, जिसमें युगों से पानी के द्वारा उत्पन्न किया हुआ गड्ढा, बन गया था। उसने दो पसों भर कर जौ गड्ढे में डाले। वहॉ इस उद्देश्य के लिए पड़ौस में रखा हुआ, गोल किया हुआ एक भारी पत्थर, एक स्पष्ट औजार था। कुछ प्रयास के साथ उसको उठाते हुए, नौजवान भिक्षु ने आश्चर्य किया कि, अपदस्थ किए जाने के द्वारा दुर्बल और अंधा हुआ साधु, इतना पुराना आदमी कैसे हो सकता है, जो इसकी व्यवस्था करे। परन्तु पहले से ही भुने हुए जौ– पीसे जाने थे। एक आवाज सहित झटके के साथ पत्थर को नीचे लाते हुए, और वापस पत्थर को उठाने से पहले दूसरा झटका

देने के लिए, उसने इसे आधा चक्कर घुमाया। वह जौ को घिसते हुए, दानों को और महीन पीसने के लिए पत्थर को घुमाते हुए, पिसे हुए महीन आटे को इकट्ठा करते हुए, बाहर भरते हुए और दूसरे, औरअधिक दानों के साथ, उन्हें बदलते हुए, नीरसता से चलता गया। टुक! टुक! टुक! अंत में, दुखती हुई भुजाओं और पीठ के साथ, वह उस मात्रा से संतुष्ट था और पत्थर को, बालू से चिपकने वाले दानों को हटाने के लिए, उसने उस उद्देश्य के लिए, पिसे हुए सामान को सावधानीपूर्वक, एक पुराने डिब्बे में रखा और थक कर गुफा के प्रवेशद्वार की ओर चला।

देर शाम का सूर्य, अभी भी गरम चमक रहा था। नौजवान भिक्षु, चट्टान पर लेटा हुआ था और तर्जनी उंगली के साथ, इसे मिलाने के लिए, आलसपूर्वक अपने त्सम्पा को हिला रहा था। सिर के एक तरफ, पूरे आत्मविश्वास के साथ, एक छोटी चिड़िया, हर चीज को सावधानीपूर्वक देखती हुई, एक शाखा पर बसेरा कर रही थी। झील के शान्त पानी में से, एक बड़ी मछली, एक नीचे उड़ते हुए कीट को पकड़ने के लिए सफल प्रयास के रूप में उछली। समीप में ही, एक पेड़ के आधार में, नौजवान भिक्षु की उपस्थिति से पूरी तरह अनजान, कुतरने वाले (rodent) कुछ जानवर, बिल खोदने में व्यस्त थे। एक बादल ने सूर्य की किरणों की गर्मी को रोका और नौजवान भिक्षु, ठण्ड के कारण सहसा कंपकंपा गया। अपने पैरों पर उछलते हुए, उसने अपने कटोरे को खंगाला, साफ किया और उसे बालू से रगड़ कर चमकाया। चिड़िया, खतरे में चहचहाते हुए उड़ गई, और कुतरने वाला जानवर, आसपास पेड़ के तने की तरफ चल दिया और उसने ध्यान से और तेज चमकीली ऑखों से, घटनाओं को देखा। उस नौजवान भिक्षु ने, कटोरे को अपनी पोशाक के सामने डालते हुए, गुफा तक जाने की जल्दी की।

बूढ़ा साधु, अब सीधा तन कर नहीं, बल्कि उसकी पीठ एक दीवाल के सहारे थी, उस गुफा में बैठा हुआ था। *''मैं आग की ये गर्मी अपने ऊपर एक बार फिर अनुभव करना चाहूँगा,''* उसने कहा *''क्योंकि मैं पिछले साठ सालों या इससे अधिक समय में, कभी अपने लिए आग जलाने में योग्य नहीं हो सका। क्या तुम मेरे लिए (आग) जलाओगे और हम गुफा के मुँह पर बैठेंगे ?''*

''पूरी निश्चिंतता के साथ,'' नौजवान भिक्षु ने उत्तर दिया, *''क्या आपके पास चकमक पत्थर या जलाने की सामग्री है ?''*

''नहीं, मेरे पास मेरे जौ के डिब्बे, कटोरे और मेरी दो पोशाकों के सिवाय कुछ नहीं है। मेरे पास एक कम्बल भी नहीं है।'' इसलिए नौजवान भिक्षु ने अपना जीर्णशीर्ण कम्बल, उस बूढ़े आदमी के कंधों के आसपास रखा और बाहर खुले में चला गया।

गुफा से थोड़ी दूर, एक पुरानी चट्टान के गिरने ने, जमीन पर मलवा फैला दिया। यहॉ से नौजवान भिक्षु ने, सावधानी से दो गोल चकमक पत्थर (flint) चुने, जो उसकी हथेली में आसानी से बैठ जाते थे। प्रयोग करने के लिए, उसने घसीटती हुई चाल के साथ, दोनों को आपस में रगड़ा और पहले ही प्रयास में चमक की एक पतली धारा पा कर वह धन्य हुआ। दो चकमक पत्थरों को अपनी पोशाक में सामने की ओर रखते हुए, उसने अपना रास्ता मरे हुए और खोखले पेड़ की ओर बनाया, जो स्पष्टरूप से तड़ित के द्वारा प्रभावित हुआ था और काफी लम्बे समय से मरा हुआ था। उसने अन्दर वाले खोखले भाग में कुछ जॉच की और खुरचा और अन्त में सफेद सूखी हड्डी जैसी सड़ी हुई और चूर्ण, लकड़ी को पसों में भर कर फाड़ दिया। सावधानी से, उसने इसे अपनी पोशाक के अन्दर रखा, तब सूखी और भुरभुरी शाखाऐं चुनीं, जो पेड़ के आसपास छितराई हुई फैली थीं। इतना लदा हुआ होते हुए कि, उसकी ताकत पूरी तरह से जवाब दे गई थी, उसने अपना रास्ता धीमे–धीमे वापस गुफा की ओर बनाया और अपने भार को, चलनेवाली हवा से दूर, ताकि बाद में गुफा में धुंआ न भर सके, धन्यवादपूर्वक, प्रवेशद्वार के बाहर की तरफ, उतार दिया।

बालूआ मिट्टी में, खोखला गड्ढ़ा बनाने के लिए, उसने एक चमचा गढ़ाया और अपने दोनों चकमक पत्थरों को अपने बगल में रखते हुए, पहले उसने लम्बाई में तोड़ी हुई, सूखी, तीलियों को बिछाते हुए, एक आड़ी तिरछी (crisscross) समझ में आनेवाली छोटी–छोटी

बनावट की और उसे सड़ी हुई लकड़ी, जो उसने गोल घुमाते हुए अपने हाथों में रगड़ी और जब तक कि, ये लगभग आटे जैसे महीन नहीं हो गई, से ढ़का। उदासी से वह झुका, और हर हाथ में एक, दोनों चकमक पत्थरों को पकड़ते हुए, उसने बगल से आपस में टकराया ताकि, बेचारी छोटी चमक की धारा, उस सूखी जलाऊ लकड़ी के ऊपर पड़े। फिर और फिर, (बारबार) उसने ऐसा प्रयास किया, जबतक कि अन्त में, ज्वाला का एक महीन कण प्रकट नहीं हुआ। अपने आपको झुकाते हुए, ताकि उसकी छाती जमीन पर रहे, उसने सावधानीपूर्वक– ओह इतनी सावधानीपूर्वक– अमूल्य चिंगारी की तरफ फूँका। धीमे से वह बड़ी हो गई। धीमे से (चिंगारी का) यह छोटा धब्बा बड़ा हुआ, जबतक कि नौजवान भिक्षु, उसे अपने हाथ से फैलाने में, और उसके आसपास के क्षेत्र में सूखी लकड़ियों को, उस स्थान पर कुछ सेतु बनाते हुए रखने में समर्थ नहीं हुआ। उसने फूंका, औरफूंका और अंत में, उसे वास्तविक ज्वाला को बढ़ते हुए और सूखी लकड़ियों के साथ जलते हुए देखने का, संतोष मिला।

किसी मॉ ने, अपने पहले पैदा होने वाले बच्चे के लिये इतनी अधिक सावधानी नहीं रखी होगी, जितनी कि उस नौजवान आदमी ने, अपनी बच्चा आग के लिये रखी। धीमे–धीमे, वह बढ़ गई और चमकदार हो गई। अन्त में, विजयी भाव से, उसने बड़ी और बड़ी लकड़ियॉ आग के ऊपर रखीं, जिसने उत्सुकुता के साथ जलना शुरू किया। वह गुफा के अन्दर, बूढ़े साधु के पास गया। *''आदरणीय,''* नौजवान साधु ने कहा, *''आपकी आग तैयार है, क्या मैं आपकी सहायता कर सकता हूँ ?''* उसने बूढ़े आदमी के हाथ में एक मजबूत लाठी रखी, और धीमे से उसको मदद करते हुए, उसने उसके पैरों पर, उसके पतले शरीर के चारों तरफ, एक भुजा रखी और उसे सावधानीपूर्वक, आग और धुंए से दूर, एक बगल से रखने में, बैठाने में, मदद की। *''मैं जाऊँगा और रात के लिए, अधिक लकड़ी इकट्ठी करके लाऊँगा''* नौजवान भिक्षु ने कहा, *''परन्तु पहले मैं इन चकमक पत्थरों को और इस सूखे जलाऊ सामान को, गुफा के अन्दर रखूँगा ताकि, वे सूखे बने रहें।''* ऐसा कहते हुए, उसने फिर से कम्बल को अपने वरिष्ठ के कंधों के चारों तरफ समायोजित किया, और चकमक पत्थरों और जलाऊ सामान को ले कर गुफा के अन्दर, एक स्थान पर जौ के डिब्बे के बगल से रखा और उसके बगल से पानी रखा।

गुफा को छोड़ते हुए, नौजवान भिक्षु ने, आग के पास और ज्यादा लकड़ी इकट्ठी की और सुनिश्चित किया कि बूढ़ा आदमी, किसी भी ज्वाला के असर से सुरक्षित बचा रहे, तब वापस जाते हुए, उसने शिविर के स्थल की ओर रुख किया, जिसका उपयोग व्यापारियों ने किया था। वे शायद, वहॉ कुछ लकड़ी छोड़ गए होंगे, उसने सोचा। परन्तु नहीं, उन्होंने कोई लकड़ी नहीं छोड़ी थी। यद्यपि, लकड़ी से अच्छा, उन्होंने एक धातु के कनस्तर को अनदेखा किया था, स्पष्टरूप से, जब याकों के ऊपर सामान लादा जा रहा था, या वे जब दूर जा रहे थे, ये अनदेखा कनस्तर गिर गया था। शायद, किसी दूसरे याक ने, इस कनस्तर को उछाल कर गिरा दिया होगा ओर ये एक चट्टान के पीछे गिर गया होगा। अब, वास्तव में, ये नौजवान भिक्षु के लिए खजाना था। अब पानी गर्म किया जा सकता था ! मोटी कड़ी (spike) डिब्बे के नीचे रखी पड़ी थी, इसका उद्देश्य क्या था, नौजवान भिक्षु, इसका अनुमान भी नहीं लगा सका, परन्तु यह किसी प्रकार से लाभदायक होगी, इतना वह सुनिश्चित था।

कड़ी मेहनत के साथ, आसपास पेड़ों के खोखलों में नजर घुमाते हुए, शीघ्र ही, यात्रा के बाद यात्रा करते हुए, लकड़ियों को गुफा की तरफ खींचते हुए, शाखाओं को ढोते हुए, उसे लकड़ियों का एक काफी संतोषप्रद ढ़ेर मिल गया। अभीतक, उसने अपने बूढ़े साधु को, अपनी उपलब्धि के बारे में नहीं बताया था, कुछ गर्म पानी रखते हुए, वह पूरे आनन्द के साथ, बूढ़े आदमी की संतुष्टि का आनन्द लेता हुआ, वहॉ रुके रहने के लिए समर्थ होना चाहता था। चाय, उसके पास थी क्योंकि, व्यापारियों ने उसे कुछ दे दी थी, परन्तु वहॉ पानी को गरम करने का कोई साधन नहीं था, अबतक नहीं।

लकड़ियों का आखिरी भार बहुत हल्का था, ये शायद, व्यर्थ की यात्रा हो गई थी। नौजवान भिक्षु, एक उपयुक्त शाखा पाने के लिए आसपास घूमा। पानी के किनारे, एक झुरमुट

के पास, उसने अचानक पुराने चिथड़ों का एक ढ़ेर देखा। वे वहॉ कैसे पहुँचे, वह ये नहीं कह सकता था। आश्चर्य ने, इच्छा के सामने समर्पण कर दिया। वह चिथड़ों को उठाने के लिए आगे बढ़ा और हवा में एक पैर से उछला, जब उन्होंने शोक मनाया ! नीचे झुकते हुए उसने देखा कि ये चिथड़ा, एक आदमी था, एक आदमी, जो विश्वास के परे पतला था। उसकी गर्दन पर, लकड़ी का एक टुकड़ा, जो हर तरफ लगभग ढ़ाई फुट लम्बा था, एक तिखटी (cangue) लगी थी। ये एक बगल से एक कब्जे के द्वारा, साथ–साथ जोड़ी हुई, दो अर्द्धभागों में बॅटी हुई थी और उसका सामने का किनारा, बकसुओं से, कुन्डी से जुडा था और उसमें ताला लगा था। लकड़ी का केन्द्र इस तरह बनाया गया था कि, पहनने वाले की गर्दन में ठीक बैठता था। आदमी चलता फिरता कंकाल था।

नौजवान भिक्षु अपने घुटनों पर झुका और (उसने) तिखटी के पत्ते को एक तरफ खिसका दिया, तब अपने पैरों पर खड़ा होता हुआ वह, पानी की तरफ दौड़ा और उसने अपना कटोरा भरा। शीघ्रता से, वह गिरे हुए आदमी की तरफ आया और उसके थोड़े से खुले हुए मुँह में, पानी की बूंदे डालीं। आदमी हिला और उसने अपनी ऑखें खोलीं। अपने ऊपर झुके हुए भिक्षु के नजर आने पर, उसने संतुष्टि के साथ आह भरी। *''मैंने पानी पीने का प्रयास किया,''* वह बुदबुदाया, *''और मैं गिर गया। इस बोर्ड के साथ मैं तैरता रहा और लगभग डूब गया। मैं कई दिनों तक पानी में रहा और अभी हाल ही में पानी से बाहर निकल पाया।''* और थका हुआ वह रुका। और तब नौजवान भिक्षु ने, उसको पानी और पानी के साथ अच्छी तरह मिला हुआ जौ का आटा दिया। *''क्या आप इस चीज को हटा सकते हैं ?''* आदमी ने पूछा। *''यदि आप इस ताले पर, बगल से दो पत्थरों के बीच में चोट मारें तो ये उछल कर खुल जाएगा।''*

नौजवान भिक्षु अपने पैरों पर खड़ा हुआ और दो भारी पत्थरों के लिए झील के बगल से गया। लौटते हुए, उसने बड़े पत्थर को एक चट्टान के किनारे के नीचे रखा और उसे दूसरे से जबरदस्त चोट दी। *''दूसरे सिरे पर भी कोशिश करो,''* लामा ने कहा, *''और वहॉ, उस पिन पर मारो जो सीधी निकले। तब उसे कस कर नीचे खींचो।''*। नौजवान भिक्षु ने, सावधानीपूर्वक, ताले के सिरे को सिरे की तरफ घुमाया और जैसी सलाह दी गई थी, उसे जबरदस्त सटाया। बाद में, उसे एक संघर्षमय तड़कन के साथ नीचे की ओर खींचते हुए, यह उसे इनाम मिला – और ताला अलग हो कर आ गया। धीमे से उसने लकड़ी के पट्टे को खोला और आदमी की गर्दन को, जो इतनी गहरी घुस गई थी कि, उसमें से खून रिसने लगा था, मुक्त किया।

''हम इसे जला देंगे,'' नौजवान भिक्षु ने कहा,'' इसको व्यर्थ करने में हमको तरस आता है।

अध्याय तीन

कुछ समय के लिए नौजवान भिक्षु उस बीमार आदमी के सिर के ढांचे को गोद में रखते हुए और उसको कुछ थोड़ी मात्रा में त्सम्पा खिलाते हुए, जमीन पर बैठा। अंत में वह खड़ा हुआ और उसने कहा, *''मुझे, तुम्हें साधु की गुफा तक ले जाना पड़ेगा।''* उसने ऐसा कहते हुए, चेहरा नीचे की ओर लटकते हुए, और रोल बनाए हुए (rolled) कम्बल की तरह से मोड़ते हुए, आदमी को उठाया और अपने कन्धों में से एक के ऊपर, लादने की व्यवस्था की। भार की लडखड़ाहट के साथ, उसने अपना रास्ता पेड़ों के थोड़े बीच में से लिया और चट्टानी रास्ते पर गुफा की तरफ चला। अंत में, जो अनन्त यात्रा दिखती थी (उसे तय करके), वह आग के बगल से पहुँचा। धीमे से, उसने आदमी को जमीन पर फिसल जाने दिया। *''आदरणीय,''* उसने कहा, *''मुझे झील के बगल से, एक तिखटी में ये आदमी मिला है। इसकी गर्दन के चारों तरफ, एक तिखटी लगी थी और ये बहुत बीमार है। मैंने उसकी तिखटी हटा दी है और उसे यहाँ लाया हूँ।''*

एक टहनी के साथ, नौजवान भिक्षु ने आग को हिलाया, जिससे, चिनगारियाँ ऊपर की तरफ उठीं और हवा, जलती हुई लकड़ी की आनन्दमयी गंध से भर गई। केवल (कुछ) और लकड़ी डालने के लिए रुकते हुए, वह बूढ़े साधु की ओर वापस मुड़ा। *''तिखटी, ऐं ?''* बाद वाले (बूढ़े साधु) ने कहा। *''इसका अर्थ है कि वह अपराधी है, परन्तु एक अपराधी यहाँ क्या कर रहा है ? कोई बात नहीं, उसने क्या किया है, यदि वह बीमार है तो, जो हम कर सकते हैं, वह हमको करना चाहिए। शायद आदमी कुछ बोल सके ?''*

''हाँ, आदरणीय, '' आदमी कमजोर आवाज में बुदबुदाया।*'' मैं शारीरिकरूप से, मदद पाने से इतनी दूर हो गया था कि, मेरी मदद नहीं की जा सकती थी। मैं आध्यात्मिक सहायता की आवश्कता में हूँ, मैं चाहता हूँ कि, मैं शान्ति से मर सकूँ। क्या मैं आपसे बात कर सकता हूँ ?''*

''निश्चय ही, पूरी निश्चिंतता के साथ'' बूढ़े साधु ने जवाब दिया। *''बोलो, और हम सुनेंगे।''* बीमार आदमी ने, पानी से, जो उसे नौजवान भिक्षु के द्वारा दिया गया, अपने ओठों को गीला किया, अपने गले को साफ किया, और कहा, *''मैं ल्हासा के शहर में, चांदी का (काम करने वाला) एक सफल सुनार था। व्यापार अच्छा था, लामामठों से भी मेरे पास काम आता था। तब विनाश के भी विनाश, भारतीय व्यापारी आए और उन्होंने भारत के बाजारों से ला कर, सस्ता सामान उपलब्ध करा दिया। चीजें, जिन्हें वे ''अधिक मात्रा में उत्पादित'' कहते थे। घटिया, निकम्मा सामान, मैंने उसे नहीं छुआ। मेरा व्यापार गिरता गया, धन की तंगी हो गई, मेरी पत्नी इस व्यथा को नहीं सहन कर पाई, इसलिए वह दूसरे के साथ भाग गई। एक धनी व्यापारी के साथ, जिसने पहले भी, मेरे उससे शादी करने से पहले, उसे ललचाया था। एक व्यापारी, जो अभी तक भारतीय प्रतियोगियों से छुआ नहीं गया था। मेरे पास, मुझे मदद करने के लिए कोई नहीं था। देखभाल करने के लिए कोई नहीं और ऐसा कोई नहीं, जिसकी मैं देखभाल कर सकूँ।''*

वह रुका, अपने कड़वे विचारों से उबर पाया। बूढ़ा साधु और नौजवान भिक्षु, उसके दुबारा से ठीक हो जाने की प्रतीक्षा करते हुए, शान्त रहे। अन्त में, उसने कहना जारी रखा : *''प्रतियागिता बढ़ती गई, एक आदमी, चीन से और अधिक सस्ता सामान ले कर, याकों पर लाद कर लाया। मेरा व्यापार बंद हो गया। मेरी अत्यल्प पूर्तियों को छोड़ कर, जिनको कोई नहीं चाहता था, मेरे पास कुछ नहीं था। अंत में, एक भारतीय व्यापारी मेरे पास आया और मुझे अपमानित करते हुए, मेरे घर और उसमें जो कुछ मेरे पास था, के सबसे कम दाम लगाए। मैंने मना कर दिया, और उसने मुझे यह कहते हुए कि, शीघ्र ही वह इसे बिना मूल्य ले लेगा, मजाक उड़ाया। भूखा होने और दिल से दुखी होने के कारण, मैंने अपना काबू खो दिया और उसे अपने घर के बाहर फेंक दिया। वह सड़क पर अपने सिर के बल गिरा और उसकी कनपटी, वहाँ पड़े हुए एक पत्थर से चटक गई।''*

फिर, बीमार आदमी, अपने विचारों से उबरते हुए रुका, दूसरे लोग तब तक शांत रहे,

जब तक कि वे उसे कहने के लिए प्रतीक्षा करते रहे। *''मुझे तिखटी से घेर दिया गया,''* वह कहता गया *''कुछ लोग मेरे ऊपर आरोप लगाते और कुछ लोग मेरे पक्ष में बोलते। शीघ्र ही, मुझे खींच कर एक न्यायाधिकारी के सामने ले जाया गया और कहानी उसे सुनाई गई। कुछ लोगों ने मजिस्ट्रेट से मेरे लिए (समर्थन में) कहा और कुछ लोग मेरे विरोध में बोले। उसने फैसला सुना दिया, परन्तु सजा देने से कुछ पहले, उसने मुझे एक साल के लिए, ये तिखती पहना दी। इस युक्ति को लगा कर, मेरी गर्दन में ताला डाल दिया गया, इसके रहते मैं अपने आपको खाना नहीं खिला सकता और न ही पानी पिला सकता था, परन्तु हमेशा दूसरों की कृपा के ऊपर निर्भर रहता हूँ। मैं काम नहीं कर सकता था और भीख मांगने के लिए घूमना मुश्किल होता, केवल खाना नहीं, बल्कि कोई दूसरा (आदमी) भी, जो मुझे खिलाए, आवश्यक होता। मैं लेट नहीं सकता था, परन्तु हमेशा खड़ा रहना या बैठना पड़ता था।''*

वह और अधिक पीला पड़ गया, और मृत्यु के अंतिम सिरे पर प्रतीत हुआ। जवान भिक्षु ने कहा, *''आदरणीय, व्यापारियों के शिविर के बगल से, मुझे एक कनस्टर मिला है, मैं उसे ले कर आऊँगा और तब चाय बना सकूँगा।''* अपने पैरों पर खड़े होते हुए, उसने नीचे रास्ते पर, जहाँ उसने लकड़ियाँ, डिब्बे और ढ़ली हुई, गढ़ी हुई, नीचे बढ़ी हुई, स्प्रिंगदार तिखटी को छोड़ा था, जाने की जल्दी की। उस पहले शिविर के आसपास, उसे एक हुक मिला, जो स्पष्टरूप से कनस्तर का था। उसे बालू से मांजने के बाद, बर्तन को पानी से भरते हुए, हुक, तीली, तिखटी और पानी के बर्तन को लिए हुए, वह रास्ते पर वापस शुरू हुआ। शीघ्र ही, वह अत्यधिक प्रसन्नता के साथ वापस आ गया और (उसने) भारी तिखटी को, सीधा आग के ऊपर उछाल दिया। चिनगारियाँ फूटीं और धुएं के बादल उड़े, जबकि उसकी गर्दन के छेद में से, तिखटी के केन्द्र में से, एक लंगड़े कीप का ठोस स्तम्भ बाहर आया।

नौजवान भिक्षु,गुफा में अन्दर की ओर दौड़ा और बण्डलों को, जो अभी हाल ही में व्यापारी द्वारा उसे दिये गए थे, बाहर लाया। चाय की ईंट। याक के मक्खन की एक बड़ी और ठोस टिकिया, धूल भरी, काफी कुछ बासी, बदबूदार, परन्तु अभी भी मक्खन के रूप में पहचाने जाने योग्य। एक विरला भोज, भूरी शक्कर (brown sugar) का एक छोटा थैला। बाहर, आग के पास, उसने सावधानी से बर्तन के हैंडिल में हो कर एक चिकनी लाठी को लुढ़काया और उसे इस चमकीली आग के केन्द्र के ऊपर रख दिया। छड़ी को बाहर की तरफ लुढ़काते हुए, उसने सावधानी से उसे एक तरफ रख दिया। चाय की ईंट पहले से ही तोड़ी जा चुकी थी, इसलिए उसने कुछ छोटे डेलों को चुना और उन्हें पानी में, जो अब गरम होना शुरू हो गया था, डाल दिया। एक नुकीले सपाट पत्थर की सहायता से, कठोर मक्खन का एक चौथाई भाग तोड़ लिया। अब उबलते हुए, बुलबुले देते हुए पानी में, पिघलने के लिये डाला गया और यह सतह के ऊपर, एक मोटी पीली पर्त के रूप में फैल गया। सुहागे का एक छोटा डेला, एक बड़े डेले का हिस्सा, चाय में डाला गया। इसके बाद गंध को सुधारने के क्रम में पूरी पसों भर भूरी चीनी और तब, ओह! कमाल की दावत। नौजवान भिक्षु ने ताजा चिकनी की गई की टहनी को पकड़ते हुए, पूरे घोल को अच्छी तरह हिलाया। अब पूरी सतह भाप से ढक गई, इसलिए उसने छड़ी को हत्थे के अन्दर खिसका दिया और डिब्बे को उठा कर बाहर कर दिया।

बूढ़ा साधु, इन गतिविधियों को बड़ी रुचि के साथ समझ रहा था। ध्वनियों से, वह प्रत्येक चरण के मामले के प्रति, सावधान हो गया। अब, बिना कुछ पूछे हुए, उसने अपना कटोरा निकाला। नौजवान भिक्षु ने उसे लिया, और उस घोल में से धूल की तलछट (scum), तीलियों और बेकार के झागों को अलग हटाते हुए, सावधानीपूर्वक उसे वापस देने से पहले, उसने बूढ़े आदमी के कटोरे को आधा भर दिया। अपराधी बुदबुदाया कि, उसके चिथड़ों में भी एक कटोरा था। उसे बाहर लाते हुए, इस ज्ञान के साथ कि, वह दृष्टिवान होने के कारण, उसमें से कुछ भी नहीं फैलायेगा, उसे चाय का पूरा कटोरा भर कर दिया गया। नौजवान भिक्षु ने अपना कटोरा, पूरा भरा और संतुष्टि, जो कि उन लोगों को मिलती है, जो किसी चीज को प्राप्त करने के लिए कड़ी मेहनत करते हैं, की आह के साथ, उसे पीने के लिये पीछे बैठ गया। चूंकि हर आदमी अपने खुद के विचारों में लबलीन था, कुछ समय के लिए, सब कुछ शान्त था।

समय–समय पर नौजवान भिक्षु, अपने साथियों के और अपने खुद के कटोरों को भरने के लिए उठा।

शाम गहराती गई, ठण्डी हवा ने, पेड़ों में होते हुए, पत्तों को फुसफुसाते हुए, विरोध में आह भरी। झील का पानी बढ़ गया, लहरें उठीं, लहरें और बढ़ीं और उन्होंने भी आह भरी। किनारे के अगले भाग के पत्थरों के साथ, धीमे से, नौजवान भिक्षु ने, बूढ़े साधु को लिया, हाथ से पकडा और वापस अब अपनी गुफा के अन्दर वाले, अंधेरे हिस्से में ले गया, तब वह बीमार आदमी की ओर वापस लौटा। जैसे ही नौजवान भिक्षु ने उसे उठाया, वह अपनी नींद से जग पड़ा। *''मुझे बात करनी चाहिए,''* उसने कहा, *''क्योंकि अब मेरे लिए, मेरे अन्दर बहुत थोड़ा जीवन शेष रह गया है।''* नौजवान भिक्षु, उसे गुफा के अन्दर ले गया और (रेत में) उसके कूल्हे की हड्डी को दबाने के लिए गड्ढ़ा और उसके सिर को उठाने के लिए, छोटा टीला बनाया। आग के आसपास, उसे दबा देने के लिए और पूरी रात भर थोड़ा सा सुलगते रहने देने के लिए, बलुआ मिट्टी (sandy soil) के लिये, बाहर की एक यात्रा की। आग सुबह तक शान्त हो जाएगी, लाल हो जायेगी और उसे जानदार लपटों के रूप में फिर से जलाना आसान होगा।

एक पुराना, एक मध्य आयु का, और एक जवानी को पहुँचता हुआ, तीन आदमियों के साथ, एक दूसरे के पास, बैठे हुए या लेटे हुए, सजायाफ्ता ने दुबारा फिर कहा, *''मेरा समय कम होता जा रहा है,''* उसने कहा, *''मैं महसूस करता हूँ कि मेरे पूर्वज, मेरा अभिनन्दन करने के लिए और मेरा स्वागत करने के लिए, ऊपर के घर में तैयार हैं। मैं एक साल से पीड़ित हूँ और भूखा रहा हूँ। एक साल के लिए, मैं खाने की खोज में, और सहायता की खोज में, ल्हासा (Lhasa) से वापस फारी (Phari) तक, आशा करता रहा हूँ। मैं महान लामाओं को, जिन्होंने मुझे ठुकरा दिया और दूसरों को, जो मेरे प्रति दयालु रहे, मिला हूँ। मैंने अनेक लोगों को मुझे (खाना) देते हुए देखा है, जबकि वे खुद भी इसके लिए भूखे थे। एक साल से, मैं अधिकांशतः निम्न लोगों के नौमाड (Nomad) क्षेत्रों में, घूमता रहा हूँ। मैं टुकड़ों के लिए कुत्तों से लड़ता रहा हूँ – और तब मैंने यह पाया कि, मैं अपने मुँह तक नहीं पहुँच सकता था।''* वह रुका और (उसने) ठण्डी चाय, जो उसके बगल में रखी थी, (और) अब जमे हुए मक्खन के कारण गाढ़ी हो गई थी, का एक घूंट पिया।

''परन्तु आप हम तक कैसे पहुँचे ?'' बूढ़े साधु ने, अपनी कांपती हुई आवाज में पूछा।

''मैं झील के किनारे से बहुत दूर, पानी पीने के लिए पानी में झुका, और तिखटी ने मेरा संतुलन खराब कर दिया, जिससे मैं अंदर गिर गया। एक तेज हवा ने मुझे पानी के आरपार उड़ा दिया और इसप्रकार मैंने रात को देखा, दिन को देखा और फिर रात को देखा, जो उसके बाद आई और दिन उसके बाद आया। चिड़ियॉ, तिखटी के ऊपर आ कर बैठतीं रहीं और उन्होंने मेरी ऑखों को नोंच–नोंच कर बाहर निकालने की कोशिश की, परन्तु मैं चिल्लाया और मैंने उनको डराया। फिर भी, जबतक कि, मैंने अपनी चेतना को नहीं खो दिया, मैं तेज गति से दौड़ा, और मैं इससे आगे नहीं जानता कि, मैं कितना दूर दौड़ा। मेरे पैरों ने, आज पूर्वान्ह में, झील की तली को छुआ और मुझे उठा दिया। सिर के ऊपर एक गिद्ध मंडरा रहा था, इसलिये मैंने उसके साथ संघर्ष किया और तिखटी समेत, सिर को अंदर गिराने के लिए, पहले रेंग कर तट पर आया, जहॉ नौजवान पिता ने मुझे पा लिया। मैं बहुत ज्यादा परेशान हूँ, मेरी शक्ति समाप्त हो गई है और मैं शीघ्र ही, स्वर्ग को जाऊँगा।''

''रात भर विश्राम करो,'' बूढ़े साधु ने कहा। *''रात की आत्मायें, इस समय जागी हुई हैं, गतिशील हैं। इससे पहले कि हम अत्यधिक विलंबित हो जाऐं, हमको अपनी आकाशीय यात्राऐं करनी चाहिए।''* अपनी मजबूत लाठी की सहायता से, वह अपने पैरों से चढ़ा और गुफा के अन्दर वाले हिस्से में गया। नौजवान साधु ने, उस बीमार आदमी को थोड़ा त्सम्पा दिया, उसे अधिक आराम से व्यवस्थित कराया, और तब वह दिन भर की उन घटनाओं के ऊपर विचार करते हुए लेट गया और नींद में सो गया। चन्द्रमा अपनी पूरी ऊँचाई से उठा और शानदार तरीके से आकाश के दूसरी ओर चला। घंटे–घंटे पर, रात की ध्वनियॉ, शोर, बदलते रहे। कीट घूम रहे थे, और शब्द करते हुए घूम रहे थे, तभी बहुत दूर से आये हुए और डरे हुए एक उल्लू

की चीख आई। जब रात की ठण्डी हवा में, चट्टानें ठण्डी हुईं और सिकुड़ीं, पहाड़ की श्रेणियॉ चरमराईं। पड़ौस में, एक चट्टानी स्रोत ने, जैसे ही चट्टानें और पहाड़ों का मलवा, लुढ़कता हुआ, पूरी तरह लदी जमीन पर, टेटू पर गिर कर, उसे चूरचूर करते हुए, नीचे आया, विजली की कड़क में योगदान दिया। रात को कुतरने वाले (rodent) एक जीव ने, आवश्यक रूप से, अपने साथी को कुछ कहा, और फुसफुसाती हुई बालू में अज्ञात जीवों की सरसराहट और बुदबुदाहट हुई। धीमे से तारे पीले पड़ गए और अगले दिन की शुरूआत की घोषणा करते हुए, पहली किरण आकाश से फूटी।

सहसा, मानो कि विद्युत से प्रभावित हो कर, नौजवान भिक्षु सीधा तन कर बैठ गया। वह, बेकार में घूरता हुआ, गुफा के तीव्र अंधेरे में घुसने का प्रयत्न करता हुआ, पूरी तरह जगा हुआ बैठा था। अपनी सांस को रोके हुए, उसने अपना ध्यान, सुनने पर केन्द्रित किया। कोई लुटेरे यहॉ नहीं आ सकते, उसने सोचा, हर एक जानता है कि, बूढ़े साधु के पास कुछ नहीं था। बूढ़ा साधु बीमार था, नौजवान भिक्षु ने आश्चर्य किया; अपने पैरों पर खड़े होते हुए, उसने गुफा के अन्त तक का एक सुरक्षित रास्ता, अनुभव किया। *''आदरणीय ! क्या आप एकदम ठीक हैं ?''* उसने पुकारा।

बूढ़े आदमी की कांपती हुई आवाजें आयीं, *''हॉ, हो सकता है, ये हमारा अतिथि है ?''* उस सजायाफ्ता को पूरी तरह से भूल जाने में, नौजवान भिक्षु ने मूर्खता अनुभव की। जहॉ गुफा के प्रवेशद्वार में एक धुंधला भूरा धब्बा दिखा, मुड़ते हुए, उसने शीघ्रता की। हॉ, अच्छी तरह से सुरक्षित आग, अभी भी जिन्दा थी। एक छड़ी को पकड़ते हुए, नौजवान भिक्षु ने, उसे आग के लाल दिल में भौंका और लगातार फूंका। आग की लपटें प्रकट हुईं और उसने ज्यादा सूखी लकड़ियों के ढेर को, उसके ऊपर लपटों में डाल दिया, अब तक पहली लकड़ियॉ, सिरों पर अच्छी तरह जलने लगी थीं, उन्हें पकड़ते हुए, उन्हें घुमाया और जगाने के लिए, तेजी से गुफा में गया।

जलती हुई लकड़ी ने, पागलपन से नाचती हुई विचित्र छायाओं को, दीवारों पर भेजा। जैसे ही मशाल की मंद सी रोशनी में एक आकृति बनी, नौजवान भिक्षु उछल पड़ा। ये बूढ़ा साधु था। वह सजायाफ्ता, टागों को अपनी छाती तक खींचे हुए, गठरी बन कर, नौजवान भिक्षु के पैरों में पड़ा हुआ था। मशाल, उसकी चौड़ी खुली हुई ऑखों से, उनको झपकने जैसा प्रभाव देते हुए, परावर्तित हुई। मुॅह ओंधा हो कर खुल गया और कोनों से बहती हुई, सूखे खून की एक पतली रेखा, उसके गालों तक फैल गई और उसके कानों के पास, एक सूजा हुआ, भरा हुआ ताल जैसा बन गया। अचानक ही वहॉ एक घबराने वाली गड़गड़ाहट की आवाज हुई और शरीर, ऐंठन के साथ, अनियंत्रितरूप से, झटके से, कसे हुए कमान के रूप में खिंच गया और एक हिंसक और अंतिम सांस के बाहर निकलने से, शिथिल हो गया। शरीर चटका और तरलों के कुछ गरारे हुए। भुजाऐं बेकार हो गईं और मुखाकृतियॉ लटक गईं।

बूढ़े साधु और नौजवान भिक्षु ने एक साथ, जाने वाली आत्माओं की मुक्ति के लिए, सेवा प्रार्थना की और उसे अपने पथ पर, स्वर्गीय यात्रा पर जाने के लिए, दूरानुभूतिपूर्वक निर्देश दिए। गुफा के बाहर प्रकाश तेज हो गया। चूंकि एक ताजा दिन उग चुका था, चिड़ियां गाने लगीं परन्तु यहॉ मृत्यु हो चुकी थी।

''तुम्हें इस लाश को ठिकाने लगाना पड़ेगा,'' बूढ़े साधु ने कहा। ''तुम्हें इसे तोड़ना पड़ेगा और इसकी अंतड़ियों को निकालना पड़ेगा ताकि गिद्ध, वायु–संस्कार (air burial) को ठीक से पूरा कर सकें।

''मेरे पास चाकू नहीं है, आदरणीय'' नौजवान भिक्षु ने ऐतराज किया।

''मेरे पास एक चाकू है,'' साधु ने जवाब दिया, ''मैं इसे रखे हुए हूॅ कि, मेरी खुद की मौत ठीक तरह से संचालित की जा सके। ये यहॉ है। अपना कर्तव्य करो और चाकू को मुझे लौटाओ।''

नौजवान साधु ने अनिच्छापूर्वक, मृत शरीर को उठाया और गुफा के बाहर ले गया। चट्टान के पास, चट्टान के गिरने के पास, वहॉ एक बड़े सपाट पत्थर की पटिया थी। काफी

प्रयास के बाद, उस समतल सतह तक, उसने लाश को उठाया और उसके खराब और कटे–फटे चिथड़ों को हटा दिया। सिर के ऊपर, बहुत ऊपर भारी पंखों के फड़फड़ाने की आवाज हुईं। गिद्ध, मृत्यु की गंध पाते हुए, पहले ही प्रकट हो चुके थे। नौजवान भिक्षु ने, चाकू की नोंक को, कांपते हुए उसके पतले पेट में घोंप दिया और उसे नीचे खींचा। खुले हुए घाव से अंतड़ियॉ निकल कर बाहर आ गईं। शीघ्रता से, उसने पतली कुंडली को पकड़ा और उन्हें बाहर खींचा। चाकू भौंकते हुए और उसे घुमाते हुए, उसने दिल, यकृत, गुर्दों, और पेट को, चट्टान के ऊपर फैला दिया। उसने भुजाओं और टागों को काट दिया। उसने इस भयानक दृश्य से जल्दी की और खून से भरे नंगे शरीर के साथ, झील की ओर दौड़ा। वह तेजी से पानी में दौड़ा और अपने आपको महीन, गीली, पसों भर रेत के साथ रगड़ा। उसने सावधानी से बूढ़े साधु के चाकू को धोया और रेत से रगड़कर साफ किया।

अब वह ठण्ड और सदमे से कॉप रहा था। उसके नंगे शरीर पर ठण्डी हवायें झपट्टे मार रहीं थीं। नीचे टपकता हुआ पानी, ऐसा लगा जैसे कि, मौत की उंगलियॉ, उसकी लगभग कांपती हुई त्वचा के ऊपर, रेखाऐं खींच रही हों। शीघ्र ही, वह उछल कर पानी के बाहर, बाहर आया और एक कुत्ते की तरह से अपने आपको फुरफुराया। गुफा के मुंह तक वापस दौड़ते हुए, उसने, अपने शरीर को थोड़ा गरम किया और अपनी पोशाक को, जो पहले से उतारी हुई थी ताकि, वह उस विभाजित लाश के द्वारा खराब नहीं हो सके, पहन लिया और उसे पकड़ लिया। वह गुफा में अन्दर प्रवेश करने के लिए, जैसे ही बाहर हुआ, उसको याद आया कि उसका काम अभी पूरा नहीं हुआ है; शीघ्र ही, उसने अपने कदम उस पत्थर की ओर वापस किये, जहॉ गिद्ध अपनी पसन्द के टुकड़ों के लिए, अभी भी लड़ रहे थे। नौजवान आदमी आश्चर्यचकित था कि, शरीर का केवल कितना थोड़ा सा हिस्सा, अब शेष बचा था। कुछ गिद्ध संतुष्ट हो कर पड़ौस की चट्टानों के ऊपर बैठे थे और शान्ति से अपने पंखों को संवार रहे थे, दूसरे लाश की खुली हुईं पसलियों को, चुनने की आशा में थे। वे पहले से ही, खोपड़ी को नंगा करते हुए, खाल को सिर के ऊपर से, पूरी तरह हटा चुके थे।

नौजवान भिक्षु, एक भारी पत्थर को उठाते हुए, उसे अत्यधिक तेज बल के साथ, खोपड़ी के, हड्डियों के कंकाल पर, एक अण्डे के खोल की तरह से उसे तोड़ते हुए, और– जैसा आशय था– उन हमेशा भूखे गिद्धों के लिए, मस्तिष्क को खोलते हुए, नीचे लाया। तब, उस मरे आदमी, जो किसी समय, पत्नी के साथ, घर और अच्छी दक्षता के साथ, एक धनी कलाकार था, के वहॉ पड़े चिथड़ों और कटोरे को, उसकी तिखटी के धातु वाले हिस्से, केवल और अंतिम अवशेषों को, इकट्ठा करते हुए, वह तेजी से आग की ओर दौड़ा और चिथड़ों और कटोरे को, उस अभी भी गरम–लाल जलती हुई आग के केन्द्र में, एक तरफ उछाल दिया। पूरे मामले पर आश्चर्य करते हुए, नौजवान भिक्षु पीछे मुड़ा और उसने गुफा में प्रवेश किया।

बूढ़ा साधु ध्यान में बैठा था परन्तु जैसे ही उसका कनिष्ठ पहुॅचा वह उठ खड़ा हुआ। *''मनुष्य अस्थाई है, मनुष्य दुर्बल है,''* उसने कहा, *''पृथ्वी पर जीवन माया है और महान सत्य इसके परे है। हम अपना व्रत तोड़ेंगे और तब ज्ञान का हस्तांतरण जारी रखेंगे, क्योंकि जब तक मैं तुम्हें पूरा नहीं बता दूं, मैं अपने शरीर को नहीं छोड़ सकता और तब मैं चाहता हूॅ, वह सब करने के लिए, जो तुमने अभी हमारे अपराधी दोस्त के लिए किया। यद्यपि, अब हम खा लें, क्योंकि जितना अच्छा हम कर सकते हैं, हमको अपनी शक्ति बचा कर रखनी चाहिए। क्या तुम पानी लाओगे और उसे गरम करोगे। अब मेरा अन्त इतना निकट है, कि मैं, किसी भी छोटी सीमा तक, अपने शरीर का, कहीं भी शामिल होना, नहीं झेल सकता।''*

नौजवान भिक्षु ने बर्तन उठाया और गुफा के बाहर, उस स्थान को, जहॉ उसने मरे हुए आदमी के खून को धोया था, दुरासाध्य ढंग से टालते हुए, झील की तरफ, नीचे गया। उसने सावधानीपूर्वक, बर्तन को अन्दर और बाहर से मांजा। उसने सावधानीपूर्वक, बूढ़े साधु के कटोरे को और इसके साथ साथ अपने खुद के कटोरे को भी मांजा। बर्तन को पानी से भरते हुए, अपने बांये हाथ में लिया और एक भारी सी शाखा को दांये हाथ से खींचता हुआ चला। एक अकेला गिद्ध, ये देखने के लिए कि क्या हो रहा था, नीचे उतरता हुआ आया। तेजी से नीचे

उतरते हुए, उसने कुछ चरणों की उड़ान भरी तब उसको मूर्ख बनाने के कारण, गुस्से की एक चीख के साथ, वापस हवा में उड़ गया। आगे दांयी तरफ ऊँची चढ़ाई पर, गिद्ध, हवा में जाने की, बेकार में ही कोशिश कर रहा था। वह दौड़ा, और शक्ति के साथ उछला, उसने सोटी से पीटते हुए जैसे पंखों से, हवा को पछाड़ा, परन्तु वह बहुत अधिक खा चुका था। अन्त में, इसे छोड़ते हुए, उसने शर्म से, एक पंख के नीचे अपना सिर गढ़ाया और जबतक कि, प्रकृति उसका बजन घटा न दे, तबतक प्रतीक्षा करते हुए, सोने चला गया। नौजवान भिक्षु ये सोच कर मुस्कुराया कि, पक्षी भी बहुत अधिक खा सकते हैं, और उसने अधिक आकांक्षा के साथ, ये आश्चर्य किया कि बहुत अधिक खाने का मौका मिलने पर क्या होगा। उसे कभी पर्याप्त नहीं मिला था, दूसरे अधिकांश भिक्षुओं की तरह, वह कुछ हद तक, हमेशा भूखा ही अनुभव करता था।

परन्तु चाय बनानी थी। समय कभी नहीं रुकता। पानी को गर्म करने के लिए, बर्तन को आग पर रखते हुए, वह चाय, मक्खन, सुहागा, और शक्कर लाने के लिए, गुफा में अन्दर गया। बूढ़ा साधु, आशा सहित, प्रतीक्षा में बैठा रहा।

परन्तु– कोई चाय पीते हुए बहुत लम्बे समय तक बैठा नहीं रह सकता, जबकि जीवन की अग्नि धीमी जल रही हो और जबकि बूढ़े आदमी की जीवन्तता धीमे से घट रही हो। शीघ्र ही, जब नौजवान भिक्षु, आग को जला रहा था, बूढ़े साधु ने अपने आपको नए सिरे से व्यवस्थित किया, बूढ़े आदमी के साठ से अधिक सालों के बाद, मूल्यवान आग से वंचित, ठण्ड के अनेक वर्ष, पूर्ण आत्म–नियंत्रण के अनेक वर्ष, भूख के अनेक वर्ष, और तंगी के अनेक वर्ष, जिनको केवल मृत्यु ही समाप्त कर सकती थी। वर्ष, जबकि अस्तित्व की पूरी तरह से निरर्थकता, उस ज्ञान के द्वारा, जो वहॉ कुल मिला कर, एक कार्य था! साधु के रूप में, अन्यथा ढ़ीली पड़ गई थी। ताजी लकड़ी के धुंए को सूंघता हुआ नौजवान भिक्षु, गुफा में वापस आया। शीघ्र ही वह, वरिष्ठ के सामने बैठ गया।

बहुत दूर के स्थान में, बहुत लम्बे समय पहले, मैं धातु के एक प्लेटफार्म पर आराम कर रहा था। मुझे बंदी बनानेवाले आदमी ने मुझे ये स्पष्ट किया कि, ''मैं वहॉ अपने आनन्द के लिए नहीं परन्तु उनके आनन्द के लिए, ज्ञान का भण्डारण होने के लिए था,'' बूढ़े आदमी ने कहा। मैंने कहा, *''परन्तु मैं प्रबुद्ध, कैसे रुचि ले सकता हूँ, यदि मुझे मात्र बंदी बना कर रखा गया है, एक अनिच्छुक, असहयोगी बंदी, जिसको हल्का सा भी अनुमान नहीं है कि, ये किस संबंध में है या वह कहॉ है ? मैं कैसे दिलचस्पी ले सकता हूँ, जबकि आप मुझे धूल के कण से भी छोटे के समान समझते हैं ? मेरे साथ, उसकी तुलना में, जो हम लाशों के साथ करते हैं, जो गिद्धों को, पक्षियों को, खिलाई जाती हैं, खराब व्यवहार किया गया है। हम मृतकों और जीवितों के प्रति सम्मान प्रदर्शित करते हैं; आप मुझसे मलमूत्र की तरह व्यवहार करते हैं, जिसे बिना किसी उत्सव के, जितना संभव हो, सूक्ष्मतम उत्सव करते हुए, जमीन में फैंक दिया जाता है और फिर भी आप सभ्य होने का दावा करते हैं, इसका जो भी अर्थ हो !''*

आदमी स्पष्टरूप से हिल गया, और मेरे विस्फोट से बिल्कुल प्रभावित नहीं हुआ। मैंने उसे कमरे में चलते हुए सुना। आगे, जब वह मुड़ा, पैरों की रगड (पैदा हुई)। पीछे की तरफ और तब दुबारा आगे। अचानक ही वह मेरे बगल से रुक गया और उसने कहा : *''मैं अपने उच्च अधिकारी से बात करूँगा।''* तेजी से वह दूर चला गया और स्पष्टरूप से उसने किसी कड़ी चीज को उठाया। वह घूमता, घूमता, घूमता, गया और तब हर्र, हर्र, हर्र। धातु की एक तीखी आवाज हुई और उसमें से एक असंबद्ध आवाज आई। आवाज, मैंने निर्णय किया। उसी प्रकार की विशेष आवाजों को निकालते हुए, आदमी, मेरे साथ बहुत विस्तार से बोला। स्पष्टरूप से वहॉ विचार विमर्श हुआ, जो कुछ मिनटों के लिए चलता गया। मशीन से खटखटाहट (click), झनझनाहट (clang) की आवाजें आईं और वह आदमी वापस मेरे पास आया।

''पहले मैं तुम्हें इस कमरे को दिखाने जा रहा हूँ,'' उसने कहा, *''मैं तुम्हें अपने बारे में, हम क्या हैं, हम क्या कर रहे हैं, ये बताने जा रहा हूँ और मैं समझदारी (ज्ञान) के द्वारा, तुम्हारी सहायता को सूचीबद्ध करने का प्रयास कर रहा हूँ। पहले, ये दृष्टि है।''*

मुझ तक प्रकाश आया, मुझ तक दृष्टि आई। एक विशेष प्रकार की नजर भी; मैं आदमी की ठोड़ी के अन्दर की तरफ देखते हुए, उसके नकुओं को देख रहा था। नकुओं में बालों की दृष्टि ने, मुझे किसी विशेष कारण से, अत्यधिक आनंदित कर दिया, और मैं हॅसने लगा। वह नीचे झुका और उसकी ऑखों में से एक ने, मेरी पूरी दृष्टि को भर दिया। *''ओह !''* वह चिल्लाया, *''किसी ने डिब्बे को गिरा दिया है।'' संसार मेरे चारों तरफ घूम रहा है, मेरा पेट विलोया जा रहा है और मुझे मितली और चक्कर आ रहे हैं। ''ओह!'' खेद है (sorry)''* आदमी ने कहा, *''डिब्बे को घुमाने से पहले, मुझे बटन बंद कर देना चाहिए था। बुरा न मानें, आप एक क्षण में या ऐसा ही, अच्छा महसूस करेंगे। ऐसी चीजें होती हैं।''*

अब मैं स्वयं को देख सकता था। अपने शरीर को इतना पीला और कुम्हलाया हुआ देखना, और इसमें से तमाम नलियॉ और औजार, बाहर निकलते हुए देखना, एक भयानक अनुभव था। अपने आपको देखना, और ये देखना कि मेरे पलक कस कर बंद किये हुए थे, वास्तव में, यह एक धक्का था। मैं (उस पर) लेटा हुआ था, जो लगा कि केवल एक खम्भे के ऊपर टिकी हुई, धातु की एक पतली चादर है। खम्भे के पैर में, काफी संख्या में पैडल जुड़े हुए थे, जबकि मेरे पास एक छड़ खड़ी थी, जिसमें रंगीन तरलों से भरी हुई, कॉच की बोतलें रखी थीं। ये किसी तरह से, मुझसे जुडीं थीं। आदमी ने कहा, *''इन पैरदानों के साथ, तुम एक ऑपरेशन टेबिल पर हो,''*–उसने उन्हें स्पर्श किया। *''हम तुमको किसी भी वांछित स्थिति में रख सकते हैं।''* वह एक (पैरदान) पर चढ़ा और मेज चारों तरफ झूल गई। उसने दूसरे को छुआ और मेज, जबतक कि मैं डरा नहीं कि मैं गिर सकता हूॅ, झुक गई। दूसरे को (छूने पर), मेज उठी, जबतक कि मैं इसके ठीक नीचे देख न सकूॅ। एक अत्यधिक अविश्वसनीय अनुभव, जिसने मेरे पेट के अन्दर अनजान अनुभव उत्पन्न किए।

दीवारें, स्पष्टरूप से अत्यधिक सुखद हरे रंग की धातु की थीं। मैंने इससे पहले इतना बढ़िया, चिकना, धब्बा न लगने योग्य पदार्थ, इससे पहिले कभी नहीं देखा था और स्पष्टतः जोड़ने की कुछ विशेष प्रकार विधियॉ काम में लाई गई होंगी, क्योंकि वहॉ ये जानने का कोई चिन्ह् नहीं था कि, दीवारें, फर्श और छतें कहॉ समाप्त हुईं या प्रारंभ हुईं। जैसे कोई कह सकता हो, फर्श में या छत में दीवारें *''बहती''* थीं। कोंने तीखे नहीं थे, किनारे पर एक भी कोना तीखा नहीं। तब, उस धात्विक खड़खड़ाहट के साथ, जिसको मैं जान चुका था, दीवारों का एक खण्ड, बगल से फिसला। एक अनजान सिर, आरपार घुसा, (उसने) सरसरी तौर पर आसपास देखा और सहसा ही बाहर हो गया, दीवार खिसक कर बंद हो गई।

मेरे सामने, दीवार पर छोटी खिड़कियों की एक पंक्ति थी, उनमें से कुछ, बड़े आदमी की हथेली जितनी बड़ी थीं। उनके पीछे, किन्हीं निश्चित लाल और काले निशानों के ऊपर संकेतक लगे थे। कुछ बड़ी, चौकोर, खिड़कियों ने मेरी अभिरुचि को आकर्षित किया; उनमें से एक रहस्यमयी, लगभग नीली आभा उत्सर्जित हुई। प्रकाश के कुछ अनजान धब्बे, अवर्णनीय नमूनों में, हिलने डुलने और नाचने लगे, जबकि तभी दूसरी खिड़की पर, एक भूरी लाल रेखा, अनजान लयपूर्ण आकृतियों में, ऊपर नीचे, लगभग, एक सांप के नृत्य की तरह से हिली, मैंने सोचा। आदमी– मैं उसे अपना बंदीकर्ता कहूॅगा– मेरी अभिरुचि के ऊपर मुस्कुराया। *''ये सारे उपकरण तुम्हारी तरफ इशारा करते हैं,''* उसने कहा, *''और यहॉ तुम्हारे मस्तिष्क से नौ प्रकार की तरंगें, प्रदर्शित की गई हैं। तुम्हारे मस्तिष्क से निकलने वाली ज्या आकृति (sine waves) की नौ अलग–अलग विद्युत तरंगों के साथ, जो उनके साथ जुड़ी हुई हैं, आरोपित हैं। वे दिखाते हैं कि, तुम एक उत्कृष्ट मानसिकता वाले हो। वे दिखाते हैं कि, तुम्हारे पास, वास्तव में, याद रखने की एक उल्लेखनीय क्षमता है। इसप्रकार, इस कार्य के लिए तुम्हारी उपयोगिता है।''*

बहुत हल्के से दृश्य डिब्बे *(sight box)* को घुमाते हुए, उसने कांच के कुछ अजीब सामान की ओर इशारा किया, जो इससे पहले मेरे दृष्टि के क्षेत्र के परे था। *''ये,''* उसने समझाया, *''अपने विचारों को बेकार नहीं, वल्कि लगातार पोषित करते रहो और अपने खून को बहाते रहो। ये दूसरे स्राव, दूसरे व्यर्थ पदार्थों को तुम्हारे शरीर से निकालते हैं। हम अब तुम्हारे*

सामान्य स्वास्थ्य को सुधारने की प्रक्रिया में हैं, ताकि तुम उस अपरिहार्य धक्के को झेलने के लिए, जो हम तुम्हें दिखाने जा रहे हैं, पूरी तरह से तैयार हो जाओ। उसमें झटका लगेगा, क्योंकि कोई बात नहीं, तुम अपने आपको चाहे जितना शिक्षित पुजारी मानते हो, हमारी तुलना में तुम, निम्नतम और सर्वाधिक अज्ञानी कूड़ा हो, और हमें तुम्हारे लिए क्या करना है, ये सामान्य बात है। ये लगभग, तुम्हारे विश्वास के परे आश्चर्य और हमारे विज्ञान के साथ एक पहला परिचय होगा, जो अनेक मनोवैज्ञानिक सदमों को पैदा करता है। फिर भी, ये जोखिम ली जा सकती है और यद्यपि यहॉ जोखिम है, हम इसे न्यूनतम बनाने का पूरा–पूरा प्रयास करते हैं।''

वह हॅसा और उसने कहा, *''शरीर की ध्वनियों के संबंध में, अपने मन्दिर की सेवाओं में, तुम काफी झमेला पैदा करते हो – ओह हॉ ! मैं तुम्हारी सेवाओं के बारे में सब कुछ जानता हूॅ– परन्तु क्या तुम्हारे पास, यथार्थ में सुनी गईं शरीर की आवाजें हैं ? सुनोगे !''* वह दीवार की ओर चला और उसने चमकती हुई सफेद मूठ को घुमाते हुए दबाया, तुरन्त ही तमाम छोटे छेदों में से आवाजें आईं, जिन्हें मैं शरीर की ध्वनियों के रूप में पहचान सका। मुस्कुराते हुए, उसने दूसरी मूठ को घुमाया, और आवाजें बढ़ीं और उन्होंने पूरे कमरे को भर दिया। धड़कना, धड़कना, चलता गया। दिल की आवाजें, इतनी तीव्र आवाज में कि सहानुभूति में, मेरे पीछे (रखा) कॉच का सामान, हिलने लगा। दुबारा एक मूठ को छूना, और दिल की आवाजें गायब, और तब, शरीर में तरलों (fluids) के गरारे करने की आवाजें आईं, परन्तु इतनी तेज, जैसे कि पहाड़ों के झरने, समुद्र तक पहुॅचने की उत्सुकता में, बहुत दूर एक चट्टानी तलहटी पर दौड़ते हैं। वहॉ, बड़े–बड़े पेड़ों की शाखाओं से और एक तूफान के रूप में दौड़ती हुई पत्तियों के बीच में से, गैसों की आह आई। किसी गहरी, गहरी झील में, छपाक, छपाक की ध्वनि, मानो बड़े–बड़े पत्थर लुढ़काये जा रहे हों। *''तुम्हारा शरीर,''* उसने कहा। *'तुम्हारे शरीर की आवाजें। तुम्हारे शरीर के बारे में, हम हर चीज को जानते हैं।''*

''परन्तु अनादरित बंदी बनानेवाले,'' मैंने कहा, *''ये कोई आश्चर्यजनक नहीं है, ये कोई चमत्कार नहीं है। हम बेचारे, अज्ञान, नीच, यहॉ तिब्बत में, इस सबको कर सकते हैं। मान लिया कि हम, ध्वनियों को इतना अधिक प्रवर्धित नहीं कर सकते हैं, परन्तु फिर भी, हम इसे कर सकते हैं। हम शरीर से आत्मा को भी मुक्त कर सकते हैं– और उसे वापस ला सकते हैं।''*

''तुम क्या कर सकते हो ?'' अपने चेहरे पर हास्योत्पादक प्रभाव के साथ, उसने मुझे देखा और कहा, *''तुम आसानी से छोड़ते नहीं, ऐ ? बंदी बनाने वाले के रूप में, तुम हमें दुश्मन समझते हो, ये ?''*

''श्रीमान् !'' मैंने जवाब दिया, *''आपने अभी तक, मेरे प्रति कोई मित्रता नहीं दिखाई है, आपने मुझे कोई कारण नहीं बताया है कि, क्यों मैं आपके ऊपर विश्वास करूॅ अथवा आपको सहयोग करूॅ। आपने मुझे लकवा मारे हुए की तरह से बंदी बना कर रखा है, जैसे कि बर्रे, ततैया अपने बंदियों को रखती हैं। आप लोगों के बीच में कुछ लोग हैं, जो मुझे शैतान प्रतीत होते हैं; हमारे पास ऐसों के चित्र हैं और हम उन्हें रात के सपने के प्राणियों की तरह से धिक्कारते हैं, नरक के किसी क्षेत्र से आया हुआ समझते हैं। फिर भी, यहॉ पर आपके अपनों का जमावड़ा है।''*

''दिखना गलत लग सकता है,'' उसने जवाब दिया। *''इनमें से कुछ लोग, अत्यधिक दयालु हैं। दूसरे, पागलपन के हावभाव के साथ, कुछ भी गिरा हुआ कार्य करेंगे, जो उनके वि कृत मनों में आयेगा। फिर भी तुम, बाहर से दिखने में –एक व्यक्ति के रूप में, दूसरे गिरे हुए लोगों की तरह बेकार हो। ''*

''श्रीमान् !'' मेरा जवाब था, *''मुझे अभी निश्चय करना है कि, आपकी अभिरुचियॉ किस तरफ हैं, भली या बुरी। यदि वे अच्छी हों, और मैं स्वीकार कर लूॅ, उनसे सहमत होऊॅ, तब और केवल तब, मैं सहयोग करूॅगा अन्यथा मैं अपने साधनों का उपयोग करूॅगा। मैं आपके उद्देश्यों को धोखा दे सकता हूॅ, कोई बात नहीं, मुझे इसका कितना भी मूल्य चुकाना पड़े।''*

''परन्तु निश्चितरूप से,'' उसका प्रत्युत्तर कुछ हद तक फजीहत भरा था, *''आप सहमत*

होंगे कि, जब आप भूखे मर रहे थे और बीमार थे, हमने आपका जीवन बचाया ?''

मैंने अपना सबसे निराश चेहरा प्रदर्शित किया, जब मैंने उत्तर दिया, *''मेरे जीवन को बचाया– क्यों, किसके लिए ? मैं स्वर्ग के क्षेत्रों में जाने वाले अपने रास्ते पर था, तुमने मुझे वापस खींच लिया। अब ये इतना क्रूर होगा कि अब तुम कुछ नहीं कर सकते। एक अंधे का, क्या जीवन है ? एक अन्धा क्या पढ़ सकता है ? खाना, मैं अब खाना कैसे खाऊँगा ? नहीं ! मेरे जीवन को लंबा करने में कोई कृपा नहीं थी; तुमने पहले ये कहा भी है कि, मैं यहाँ अपने आनन्द के लिए नहीं हूँ, परन्तु तुम्हारे उद्देश्य के लिए हूँ। इसमें कृपा कहाँ है ? तुमने मुझे भलीभाँति बाँध लिया है और मैं तुम्हारी मादाओं के लिए खेल हूँ। अच्छा है ? और जैसा तुमने उल्लेख किया, इसमें अच्छा कहाँ है ?''*

अपने कूल्हे पर हाथ रखे हुए, वह मुझे देखता हुआ, खड़ा हुआ। *''हाँ,''* उसने अन्त में कहा, *''तुम्हारे दृष्टिकोण से हम दयालु नहीं रहे हैं, क्या हम रहे हैं ? शायद, मैं तुम्हें समझा सकूँ, यद्यपि, तब वास्तव में, शायद तुम और उपयोगी होगे,''* वह मुड़ा और दीवार की तरफ गया। इस बार, जो उसने किया, वह मैंने देखा। वह एक वर्ग के सामने, जो छोटे–छोटे छेदों से भरा हुआ था, खड़ा हुआ और तब उसने, एक काले बिन्दु को दबाया। छेददार बर्ग के ऊपर, एक प्रकाश चमका और चमकदार धुंध के रूप में बढ़ा। वहाँ मेरी स्तब्धता के लिए, एक चेहरा और सिर, जीवन्त रंगों में बना। मेरे बंदीकर्ता ने, उस अनजान विदेशी जुबान में, काफी विस्तार से कहा और तब रुक गया।

आश्चर्य के साथ मेरे स्तब्ध होते हुए, (उसका) सिर मेरी दिशा में घूमा और उसकी घनी भोंहें तन गईं। तब एक छोटी उदास मुस्कुराहट, उसके मुँह के कोनों पर प्रकट हुई। वहाँ खोल चढ़ाया हुआ सुन्दर सा एक वाक्य था, और प्रकाश मंद पड़ गया। धुंध घूमा और दीवार के द्वारा चूसा जाता हुआ लगा। मेरा बंदीकर्ता, अपने चेहरे पर, संतोष के प्रत्येक चिन्ह् के साथ, मेरी तरफ मुड़ा। *''ठीक है, मेरे दोस्त,''* उसने कहा, *''तुमने सिद्ध कर दिया है कि, तुम अत्यन्त मजबूत चरित्रवाले हो, एक बहुत कठोर व्यक्ति, जिनके साथ व्यवहार किया जाना है। अब मुझे तुमको वह, दिखाने की आज्ञा मिल गई है, जिसको कि, तुम्हारे विश्व के किसी भी दूसरे सदस्य ने नहीं देखा।''*

वह फिर दीवार की तरफ मुड़ा और (उसने) काले धब्बे पर चोट की। फिर से कुहरा पैदा हुआ परन्तु इसबार एक नौजवान मादा का सिर था। मेरे बंदीकर्ता ने, स्पष्टतः, आदेश देते हुए उससे बात की। उसने अपना सिर हिलाया, मेरी दिशा में उत्सुकतापूर्ण ढंग से टकटकी लगाकर देखा और मंद पड़ गया।

''अब हमें कुछ क्षणों के लिए प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।'' मेरे बंदीकर्ता ने कहा। *''मैं अन्दर लाए गए एक विशेष यंत्र को, जो मेरे पास है और मैं तुम्हें, तुम्हारे अपने विश्व के स्थानों को दिखानेवाला हूँ। विश्व के शहर। क्या तुम्हारी कोई पसंद है, जिसे तुम देखना चाहोगे ?''*

''मुझे संसार की कोई जानकारी नहीं है,'' मैंने जवाब दिया। *''मैंने यात्राऐं नहीं की हैं।''* *''हाँ, परन्तु निश्चित रूप से, तुमने किसी शहर के बारे में सुना तो होगा,''* उसने आपत्ति का प्रतिवाद करते हुए समझाया। *''ठीक है, हाँ,''* मेरा उत्तर था, *''मैंने कलिमपोंग के बारे में सुना है।''*

''कलिमपोंग, ऐं ? भारतीय सीमा पर एक छोटी बस्ती; क्या तुम कोई अच्छा स्थान नहीं

सोच सकते ? बर्लिन (Berlin)[4], लंदन (London)[5], पेरिस (Paris)[6] या कैरो (Cairo)[7] के बारे में क्या ? निश्चित रूप से, तुम कलिंगपोंग से कुछ अच्छा देखना चाहोगे ?''

''परन्तु, श्रीमान्,'' मैंने जवाब दिया, *''आपने जिनका उल्लेख किया, उनमें मेरी कोई रुचि नहीं है। इनके नाम मुझे, सिवाय इसके कि मैंने व्यापारियों को ऐसे स्थानों के बारे में बातें करते सुना है, कुछ भी नहीं सुझाते हैं परन्तु इनका मेरे लिए कोई अर्थ नहीं है, और न ही मैं इनमें दिलचस्पी रखता हूँ। न ही, यदि मैं, इन स्थानों के चित्र देखूँ तो क्या मैं कह सकता हूँ कि ये सत्य हैं या नहीं। यदि आपकी ये आश्चर्यजनक युक्ति, जैसा आप कहते हैं वैसा कर सकती है,– तब मुझे ल्हासा दिखाओ। मुझे फारी दिखाओ। मुझे पश्चिमी द्वार, कैथेड्रल, पोटाला[8] दिखाओ। मैं इन्हें जानता हूँ और मैं सजग रहूँगा कि, तुम्हारी युक्तियाँ सही हैं या केवल चालाकी की चालें।''*

अपने चेहरे पर एक विशेष भावभंगिमा के साथ, उसने मेरी तरफ देखा; वह स्तब्धित

---

4 अनुवादक की टिप्पणी : बर्लिन, जर्मनी राष्ट्र की राजधानी और इसके छः राज्यों में से एक राज्य की भी राजधानी है। इसकी आबादी लगभग साढे तीन करोड़ है। ये जर्मनी के पूर्वोत्तर भाग में, स्प्री (Spree) और हावेल (Havel) नदियों के किनारे, दलदली जंगली भूमि पर स्थित है। शहर का लगभग एक तिहाई हिस्सा जंगल, पार्क, बाग, नदियों तथा झीलों से भरा हुआ है। बर्लिन की आबादी 3,5 करोड़ है।

बर्लिन को संस्कृति, सभ्यता, राजनीति, संचार माध्यम और विज्ञान का वैश्विक नगर (world city) कहा जाता है। इसकी अर्थव्यवस्था प्रमुखतः, उच्च तकनीकी कम्पनियों और सेवा केन्द्रों पर आधारित है, जो रचनात्मक उद्योगों को, शोध सुविधाओं को प्रश्रय देती है। इसका जलवायु सुहाना है। द्वितीय विश्वयुद्ध के समय, बमबारी, अग्निकांडों और गली–सड़कों की लड़ाईयों के कारण, बर्लिन को पूरी तरह खाली करा दिया गया था। 3 अक्टूबर 1990 से पहले, ये पूर्वी और पश्चिमी दो भागों में बंटा हुआ था। पूर्वी बर्लिन, पूर्वी जर्मनी और पश्चिमी बर्लिन, पश्चिमी जर्मनी का क्षेत्र था। बर्लिन की सर्वाधिक बोले जानेवाली भाषा और आधिकारिक भाषा जर्मन है। बर्लिन में 158 विदेशी दूतावास हैं। यहाँ टेगल हवाई अड्डा (Tegel airport, TXL) और शियोनफेल्ड हवाई अड्डा (Schonfeld, SXF), तथा दो अंर्तराष्ट्रीय वाणिज्यिक हवाई अड्डे, हैं। अभी नया बननेवाला बर्लिन ब्राण्डेनवर्ग हवाई अड्डा (The New Berlin Brandenburg airport, BER), टेगल और श्योनफेल्ड दोनों हवाई अड्डों को मिलाकर एक कर देगा। बर्लिन को अपने उच्च विकसित साइकिल की सड़कों के लिए जाना जाता है। अनुमान है कि बर्लिन में हर एक हजार निवासियों के पीछे 710 साइकिलें हैं। शहर में शोध संस्थानों की बाढ़ है। 2008 में, 62 हजार वैज्ञानिक, विभिन्न शोध संस्थाओं और विश्वविद्यालय आदि में कार्यरत थे।

5 अनुवादक की टिप्पणी : लंदन, इंग्लैंड की राजधानी और सर्वाधिक जनसंख्या वाला नगर है, जो टेम्स (Thames) नदी के किनारे पर स्थित है। इसे रोमन लोगों ने स्थापित किया था और तब इसका नाम लंडोनियम (Londonium) था। लंदन लगभग दो हजार वर्षों से एक बड़ी बस्ती के रूप में बना रहा है। ये महत्वपूर्ण वैश्विक शहर है। 2012 में लंदन ग्रीष्म ओलंपिक खेलों (Summer Olympic Games) का तीन बार आयोजन करने वाला पहला शहर बना।

लंदन में विभिन्न श्रेणियों और विभिन्न सभ्यताओं के लोग रहते हैं और यहाँ 300 से अधिक भाषायें बोली जाती हैं। इसकी आबादी 85 लाख से अधिक है। लन्दन में अंग्रेजों के अलावा काफी बड़ी संख्या में मुसलमान, हिन्दू, सिक्ख, यहूदी समुदाय रहते हैं।

6 अनुवादक की टिप्पणी : पेरिस, फ्रांस की राजधानी और सबसे अधिक आबादीवाला शहर है जो देश के उत्तरी भाग में, जाइन (Seine) नदी के किनारे पर स्थित है। पेरिस शहर का क्षेत्रफल 105 वर्गकिलोमीटर या 41 वर्गमील है। 2014 के अनुमान के अनुसार इसकी आबादी लगभग 22 लाख 41 हजार है। पेरिस को, पेरिसी कहे जाने वाले केल्टिक लोगों के द्वारा, ईसापूर्व तीसरी शताब्दी में बसाया गया था। शुरू में इसमें पेरिसी जनजाति के लोग ही रहते थे, जिन्होंने इस शहर को अपना नाम दिया। 18वीं शताब्दी में ये फ्रांसिसी क्रांति का प्रमुख केन्द्र और फाइनेन्स, कॉमर्स, फैशन, साइंस और आर्ट का महत्वपूर्ण केन्द्र रहा, जो ये आज भी है। पेरिस को बहुधा फैशन का शहर कहा जाता है। ये विश्व में पाँचवा सबसे अधिक खर्चीला शहर है, जहाँ बिलासिता पग–पग पर झलकती है।

पेरिस अंतराष्ट्रीय यातायात का एक प्रमुख केन्द्र है जिसमें चार सर्वाधिक व्यस्त हवाई अड्डे हैं। फ्रांस का सर्वाधिक जल यातायात इसी क्षेत्र में है। पेरिस में 421 से अधिक नगर पालिका के पार्क और उद्यान हैं। विश्व प्रसिद्ध एफिल टावर (Effle Tower) पेरिस में है। इसकी चोटी पेरिस के किसी भी भाग से देखी जा सकती है। (इसकी ऊंचाई 300 मीटर या 984 फुट है, जो विश्व का सबसे ऊँचा ढ़ांचा है।

7 अनुवादक की टिप्पणी : कैरो (Cairo) को बालू का शहर भी कहा जाता है, जो मिस्र की राजधानी और सबसे बड़ा शहर है। ये देश के उत्तरी भाग में है। यहाँ सन् 975 में स्थापित की गई और सबसे पुरानी यूनीवर्सिटी अलअजहर यूनीवर्सिटी है। मध्यपूर्व में अरब देश में, ये सबसे बड़ा महानगरीय क्षेत्र और दुनियाँ का 15 वां सबसे बड़ा शहर है, जो प्राचीन मिस्र के साथ संबद्ध है। गीजा पिरामिड कॉम्प्लेक्स (GÁa Pyramid Complex) और मैम्फिस (Memphis) के प्राचीन शहर, इसके भौगोलिक क्षेत्र में स्थित हैं। नील नदी के मुहाने पर स्थित आधुनिक कैरों को ईसा पूर्व 969 में बसाया गया था। इसकी लगभग 7 लाख आबादी, 453 वर्ग किलामीटर (175 वर्गमील क्षेत्र में फैली हुई है।)

1882 में ब्रिटेन का आक्रमण, वास्तव में, अस्थाई रूप से हुआ था, परंतु ये 20वीं शताब्दी तक जारी रहा। वास्तव में, स्माइल के प्रोजेक्ट (Ismail's project) के ऊपर लिये गये बहुत भारी कर्ज ने, अंग्रेजों को इस पर अपना कठोर नियंत्रण करने के लिए प्रेरित किया। मिस्र 1922 में आजाद हुआ, यद्यपि अंग्रेज सेनायें यहाँ इस देश में 1956 तक जमी रहीं। शहर को, आंतरिक झगड़ों, बलवों फसाद आदि के कारण, जिसे कैरो फायर (Cairo fire) या काला शनिवार (Black saturday) के नाम से जाना जाता है, 1952 में खाली करा दिया गया था। 1992 में यहाँ एक भयंकर भूचाल आया और 2011 में यहाँ मिस्री क्रांति (Egyption revolution) हुई।

8 अनुवादक की टिप्पणी : पोटाला (Potala) महल, जो इसके तिब्बती बौद्ध धर्म और उसके पारंपरिक प्रशासन में केन्द्रीय भूमिका रखता है, सातवीं शताब्दी से दलाईलामाओं का शीतकालीन आवास रहा है। महल में, जो ल्हासा घाटी के केन्द्र में, लाल पहाड़ी के ऊपर बना है, अपने अनेक सहायक भवनों के साथ, सफेद और लाल, दो महल है। समुद्र तल से इसकी ऊँचाई 3700 मीटर है। महल के अंदर ही, सातवीं शताब्दी में बनाया हुआ जोखांग मंदिर एवं मठ, बौद्ध धर्म का एक सर्वोत्कृष्ट प्रतीक है। दलाईलामा का ग्रीष्मकालीन आवास, नोर्बूलिंका (Norbulinka), जो तिब्बती कला का एक बेहतरीन नमूना है, अठारहवीं शताब्दी में बनाया गया था। इन तीनों स्थलों की सुन्दरता और वास्तुकला की मौलिकता और सुरुचिपूर्ण सजावट और समन्वय एक अच्छे परिदृश्य का निर्माण करती है।

सफेद महल में मुख्य समारोह हॉल है, जिसमें दलाईलामा का सिंहासन है, और उनके निजी कक्ष और सभाकक्ष हैं, जो सबसे ऊँची मंजिल पर हैं। महल में 698 कमरे है, जिनमें कपड़े पर की गईं लगभग 10000, चित्रकारियाँ है, गलीचे, चंदोबे, पर्दे और चीनी मिट्टी के अनेक वर्तन और मूर्तियाँ आदि के अनेक नमूने हैं, और सोने और चांदी की अनेक चीजें संकलित की गई है। इसके साथ–साथ धर्मग्रंथों की पाण्डुलिपियों, सूत्रों के तथा अन्य महत्वपूर्ण ऐतिहासिक संग्रह है। पश्चिम की तरफ, पर्वत के ऊपर की तरफ, लाल महल है, जिसमें विगत दलाईलामाओं की समाधियों के जालियों से घिरे हुए स्तूप हैं और अधिक पश्चिम की ओर, दलाईलामा का निजी मठ है, जिसको नोमग्येल दातशांग (Nomgyel äatshang) कहते हैं।

बुद्ध धर्म के प्रसार के लिए, जोखांग मंदिर का मठ भी सातवीं शताब्दी में स्थापित किया गया था। इसमें लगभग 2.5 हैक्टेयर का क्षेत्र है, जो ल्हासा के पुराने नगर के मध्य में है। इसमें एक प्रवेश बरामदा, आंगन और बौद्ध हॉल है, जिसके चारों ओर भिक्षुओं के निवास और भंडार कक्ष हैं। भवन, लकड़ी और पत्थर से बनाये गए है और बौद्ध शैली के अनुपम उदाहरण हैं, जिन पर चीनी, भारतीय और नेपाली प्रभाव स्पष्ट दिखाई देते हैं। इसमें बुद्ध और दूसरे देवताओं की लगभग 3000 से अधिक छवियाँ एवं मूर्तियाँ और प्राचीन पाण्डुलिपियों का खजाना है। नैतिक शिक्षा देने वाले धार्मिक और ऐतिहासिक परिदृश्य, दीवारों पर चित्रित किए गए हैं।

नोर्बूलिंका, जो ल्हासा नदी के किनारे पर, पोटाला महल के लगभग 2 किलोमीटर पश्चिम में स्थित है, दलाईलामा का पहला ग्रीष्मकालीन महल है, जो अठारवीं शताब्दी में बनाया गया था, जिसके चारों तरफ हरियाली छाई है। इसमें एक बड़ा बगीचा है, जिसमें महल के, मठों के और दूसरे हॉल और मंडप है, जो उद्यान में इस तरह से बनाये गए है कि, ये सभी प्रकार की उत्कृष्ट कला का सृजन करते हैं। 36 हेक्टेयर क्षेत्र को घेरे है। संपूर्ण परिसंपत्ति, धार्मिक और राजनैतिक बिन्दुओं पर विचार करने और महत्वपूर्ण राजनैतिक समझौतों पर हस्ताक्षर करने का एक स्थान है। पोटाला महल, जोखांग मंदिर और नोर्बूलिंका, सभी मिल कर, अपनी स्थिति, बनावट और वास्तु कला के लिए, तिब्बती धार्मिक प्रशासन के लिए, अच्छी प्रस्तुति देते हैं।

पोटाला महल को 1994 में, एक विस्तार के रूप में जोखांग मंदिर को 2000 में, और एक दूसरे विस्तार के रूप में नोर्वोलिंका को 2001 में, विश्व संपदा (world heritage) की सूची में शामिल किया गया है।

होने की स्थिति में दिखाई दिया। तब उसने अपने आपको एक प्रकट झटके के साथ खींच लिया और खुशी से चिल्लाया : *'तुम मुझे पढ़ाते हो, अपढ़, नीच, ए ? और वह व्यक्ति ठीक भी है। कुल मिलाकर, उसकी जन्मजात (native) चालाकी में कुछ है। वास्तव में, उसे अपने साथ, संदर्भ का कुछ ढॉचा चाहिए अन्यथा वह विल्कुल भी प्रभावित नहीं होगा। ठीक है ! ठीक है !''*

खिसकने वाला पल्ला (panel), सहसा एक तरफ झटका खा गया और एक बड़े बक्से का, जो हवा में तैरता हुआ लगा, निर्देशन करते हुए चार लोग प्रकट हुए। बक्सा काफी भारी होना चाहिए,यद्यपि ये भारहीन, तैरता हुआ लगा। इसको शुरू करने में या उसकी दिशा बदलने में, या उसे रोकने में काफी प्रयास लगा। धीमे से, बक्सा कमरे में, जहॉ मैं लेटा था, लगाया गया। जैसे ही उन्होंने दबाया और खींचा, एक बार के लिए, मुझे डर लगा कि, वे मेरी मेज को अव्यवस्थित करने जा रहे हैं। ऑख के डिब्बे (eye box) में एक आदमी उछला और परिणामस्वरूप उत्पन्न होने वाले चक्कर ने मुझे, कुछ समय के लिए, बीमार और बेवकूफ की तरह छोड़ दिया परन्तु अन्त में, काफी बातचीत के बाद, बक्से को मेरी नजर की ठीक सीध में, एक दीवार के सामने रखा गया। आदमियों में से तीन ने, उसे खींचा और मेरे पीछे के पेनल को बंद किया।

चौथा आदमी और मेरा बंदीकर्ता, अपने हाथों को खूब हिलाते हुए और इशारा करते हुए, एक जीवन्त वार्तालाप में व्यस्त हो गए। अन्त में मेरा बंदीकर्ता, मेरी तरफ को मुड़ा और उसने कहा, *''वह कहता है कि, हम ल्हासा को नहीं ला सकते क्योंकि, यह काफी समीप है, हमें काफी दूर होना पड़ेगा, ताकि हम फोकस कर सकें।''*

मैंने कुछ नहीं कहा, किसी चीज पर कोई ध्यान नहीं दिया, और थोड़ी प्रतीक्षा के बाद, मेरे बंदी कर्ता ने कहा, *''क्या तुम बर्लिन देखना चाहोगे ? बम्बई ? कलकत्ता ?''*

मेरा जवाब था, *''नहीं, मैं नहीं, ये मुझसे बहुत दूर है !''*

वह दूसरे आदमी की तरफ मुड़ा और काफी कड़वी बहस हुई। दूसरा आदमी, बुरी तरह विषाद और परेशानी में दिखाई दिया, मानो वह रोना चाहता था; उसने अपने हाथ हिलाये और बक्से के सामने अपने घुटनों पर गिर पड़ा। और मैंने देखा, सामने का हिस्सा, जो एक बड़ी खिड़की दिखाई दी– और इससे ज्यादा कुछ नहीं, फिसल गया। तब आदमी ने, अपने कपड़ों में से, धातु के थोड़े से टुकड़े लिए और उस अजीब बक्से के पीछे, धीमे–धीमे रेंगता हुआ चला। खिड़की में अजीब रोशनियॉ चमकीं, अर्थहीन रंगों का घुमाव पैदा हुआ। तस्वीर हिली, वही, और लहराई। एक क्षण था, जब छायाऐं बनीं, जो पोटाला हो सकती थीं परन्तु फिर ये समान रूप से धुँआ सा हो गया।

आदमी, डिब्बे के पिछलेवाले हिस्से में से, कमरे में से, रेंग कर बाहर आया, कुछ बुदबुदाया और उसने जल्दी की। अत्यधिक अप्रसन्न दिखते हुए, मेरे बंदीकर्ता ने कहा, *''हम ल्हासा के इतने अधिक समीप हैं कि हम केन्द्रित नहीं कर सकते। ये वैसा ही है जैसे कि, किसी चीज को, जब वह दूरदर्शी के फोकस से काफी समीप हो, देखने का प्रयास करना। ये दूरस्थ स्थानों के लिए ठीक काम करता है परन्तु समीपवर्ती स्थानों के लिए कोई दूरदर्शी फोकस नहीं करेगा। हमें यहॉ वही कष्ट हैं। क्या ये तुम्हें समझ में आया ?''*

''श्रीमान्,'' मैंने उत्तर दिया, *''आप उन चीजों की बातें करते हैं, जो मैं नहीं समझता। ये दूरदर्शी क्या है, जिसका आपने उल्लेख किया ? मैंने इससे पहले कभी नहीं देखा। आप कहते हैं कि ल्हासा बहुत अधिक समीप है; मैं कहता हूँ कि बहुत लम्बे समय से, ये बहुत लम्बी दूरी पर है। ये इतना नजदीक कैसे हो सकता है ?''*

मेरे बंदीकर्ताओं के चेहरे के ऊपर एक पीड़ायुक्त भाव उभरा; और एक क्षण के लिए उसने अपने बाल जकड़े मैंने सोचा कि वह फर्श पर नाचने लगेगा। तब वह एक प्रयास के साथ शान्त हो गया और उसने कहा, *''जब तुम्हारे पास अपनी ऑखें थीं, तो क्या तुमने कभी कोई चीज (उपयोग में) लायी ताकि तुम्हारी ऑखें केन्द्रित न हो सकें ? ये वह है जो मेरा तात्पर्य है, हम इतनी नजदीक परास में फोकस नहीं कर सकते। ?''*

अध्याय चार

मैंने उसकी तरफ देखा, या कम से कम ऐसा महसूस किया मानो कि, मैंने उसकी तरफ देखा, क्योंकि, ये सबसे अधिक कठिन अनुभव है कि, कोई व्यक्ति अपना सिर, एक स्थान में, किसी तरफ रख सके और दूर स्थान से आती हुई उसकी नजर, कई फुट दूर हो। कैसे भी, मैंने उसकी तरफ देखा और सोचा, ये कैसा आश्चर्य हो सकता है ? आदमी कहता है कि, वह मुझे दुनियॉ के परले सिरे के शहरों को दिखा सकता है, यद्यपि, वह मुझे अपना खुद का देश ही नहीं दिखा सकता। इसलिए मैंने उससे कहा, *''श्रीमान्, क्या आप कोई चीज, दृष्टिवक्स के सामने रखेंगे ताकि मैं अपने खुद के लिए फोकस करने के मामले में निर्णय कर सकूँ ?''*

उसने तुरन्त ही तात्कालिक सहमति में अपना सिर हिलाया, और एक क्षण के लिए, ये आश्चर्य करते हुए कि, अब क्या करना है गोल चक्कर लगाए। जब उसने मेरी मेज की तलहटी में से किसी चीज की पारभासी (translucent) चादर निकाली, जिसके ऊपर कुछ बहुत अजनबी चिन्ह् थे, ऐसे चिन्ह, जो मैंने इससे पहले कभी नहीं देखे थे। स्पष्टरूप से, ये लेखन जैसा लगता था, परन्तु उसने कुछ कागजों को उलटा–पलटा और वह उस स्थान पर आया, जो प्रकट रूप से उसको सर्वाधिक संतुष्ट करती थी क्योंकि, उसने एक आनन्दमयी मुस्कान डाली। जैसे ही वह मेरे दृष्टिबक्स के पास पहुॅचा, उसने चीज को अपनी पीठ के पीछे पकड़ लिया।

''ठीक है, अब मेरे दोस्त!'' वह आनन्द से चिल्लाया, *''हम देखें कि हम तुम्हें विश्वास दिलाने के लिए क्या कर सकते हैं।''* उसने मेरे दृष्टिवक्स के सामने कुछ खिसकाया, जो इसके बहुत पास था और मेरे आश्चर्य के लिए, मैं जो कुछ देख सका, वह धब्बे थे, कुछ भी स्पष्ट नहीं था। वहॉ एक अन्तर था। एक हिस्सा सफेद धब्बा था, दूसरा हिस्सा काला धब्बा था, परन्तु इसका मेरे लिए कोई अर्थ नहीं था, बिल्कुल भी नहीं। वह मेरे हावभाव पर मुस्कुराया– मैं उसे मुस्कुराते हुए नहीं देख सका परन्तु मैं उसे मुस्कुराते हुए सुन सका; जब कोई अन्धा होता है तो उसकी ज्ञानेन्द्रियॉ दूसरी तरह की होती हैं। मैं उसके चेहरे और मांसपेशियों को चटकते हुए सुन सका, और चूंकि वह इससे पहले अक्सर मुस्कुरा चुका था, मैं जानता कि इन चटकनों का क्या अर्थ है। वह अब भी मुस्करा रहा था।

''आह,'' उसने कहा, *''अन्त में, तुम्हारे वतन में लाते हुए, क्या मैं हूॅ ? अब ध्यान से देखो। जब तुम कुछ देखो, मुझे बताओ कि ये क्या है।''* बहुत धीमे से, उसने रोकने वाली चादर को पीछे की तरफ खींचा, धीमे–धीमे, ये मुझे स्पर्श करता गया, और उल्लेखनीय आश्चर्य के साथ मैंने देखा कि, ये मेरा ही एक चित्र था। मैं ये कहने का दावा नहीं करता कि, ये चित्र कैसे पैदा किया गया था, परन्तु वास्तव में, इसमें मुझे मेज पर लेटे हुए, उस आदमी को देखते हुए, जो काले बॉक्स को लिए हुए था, दिखाया गया था। बहुत अधिक आश्चर्य के कारण, मेरा जबड़ा खुला का खुला रह गया। मैं वास्तविक देशी गॅवार की तरह से दिख रहा था, निश्चितरूप से मैंने सोचा, धीरे–धीरे मैंने महसूस किया कि, गर्मी बढ़ रही थी और मेरे गाल भौंचक्केपन के साथ जल रहे थे। मैं उन सभी चीजों के साथ, जो मेरे साथ चिपकी थीं, उछल कर वहॉ गया और चित्र में मेरे चेहरे पर आश्चर्य का भाव, निश्चित रूप से, मुझे स्वदेश नहीं ला सका।

''ठीक है,'' मेरे बंदीकर्ता ने कहा, *''स्पष्टरूप से, तुम मुद्दा समझ चुके हो। हम इसे ठिकाने तक पहुॅचाने के लिए, इसमें दोबारा आगे चलें।''* धीमे से उसने चित्र को पकड़ा ताकि मैं उसे देख सकूॅ, और उसे ऑख के डिब्बे के अधिक समीप लाया। धीमे से यह अस्पष्ट हो गया, जब तक कि मैं एक सफेद से, काले से, धब्बे को नहीं देख सका, और इससे ज्यादा कुछ नहीं। उसने इसे दूर कर दिया और तब मैं बाकी कमरे के कक्ष को दोबारा देख सकता था। वह कुछ कदम पीछे खड़ा हुआ और उसने कहा, *''वास्तव में, तुम इसे पढ़ नहीं सकते, परन्तु देखो। यहॉ छपे हुए शब्द हैं। तुम उन्हें स्पष्टरूप से देख सकते हो ?''*

''मैं उन्हें स्पष्टरूप से देख सकता हूॅ, श्रीमान्,'' मैंने प्रत्युत्तर दिया, *''मैं उन्हें वास्तव में काफी स्पष्टता के साथ देख सकता हूॅ।''*

इसलिए जब वह चीजों को मेरे ऑख के डिब्बे के पास लाया और तब वहॉ फिर से दृष्टि का धुंधलापन पैदा हुआ। *''अब,''* उसने कहा, *''तुम हमारी समस्या को समझोगे। मेरे पास एक मशीन या युक्ति है, तुम इसे जो कुछ भी कहना चाहो, कहो, परन्तु ये तुम्हारी ऑख के डिब्बे का एक बड़ा सहयोगी है। हम इसे तुम्हारे ऊपर उपयोग कर रहे हैं, परन्तु इसका सिद्धान्त, पूरी तरह से तुम्हारी पहुॅच के बाहर रहेगा। तथापि, ऐसा इसलिए है कि, हम इसके साथ दुनियॉ में चारों तरफ देख सकते हैं, परन्तु हम ऐसी किसी भी चीज को नहीं देख सकते, जो पचास मील के अन्दर हो। पचास मील, इसके लिए अत्यधिक समीप होता है, ठीक वैसे ही जैसे कि, मैं इसे तुम्हारी ऑखों के बक्से के कुछ इंच के अन्दर लाया और तुम इसे नहीं देख सके। मैं तुम्हें कलिंगपोंग को दिखाऊॅगा।''* इसके साथ ही वह बगल की तरफ मुड़ा और कुछ मूठों के साथ, जो दीवार पर थीं, उसने कुछ किया।

कमरे की बत्तियॉ मंदी हो गईं, वे बुझी नहीं, परन्तु वे मंदी हो गई ताकि, प्रकाश हिमालय के परे, सूर्यास्त के लगभग समान हो जाए। जहॉ चन्द्रमा अभी नहीं उगा था, और जहॉ सूर्य ने भी अपना प्रकाश अभी पूरी तरह समेटा नहीं था, एक ठण्डा धुंधलापन था। वह बड़े वक्से के काले हिस्से की तरफ मुड़ा और उसके हाथ किसी चीज के ऊपर चले, जिसे मैं नहीं देख सका। तुरन्त ही उसके डिब्बे में प्रकाश चमक उठा। काफी धीमे से, पर्दे पर चमक हुई। हिमालय की ऊॅची चोटियॉ, और एक पगडण्डी के ऊपर व्यापारियों का एक काफिला। उन्होंने एक छोटे लकड़ी के पुल को पार किया, जिसके नीचे एक दौड़ता हुआ झरना, जो यदि वे फिसले, उन्हें निगलने को डरा रहा था। वे दूसरी तरफ पहुॅचे और उन्होंने उबड़–खाबड़ चारागाह की जमीन से हो कर, एक पगडण्डी का अनुगमन किया।

कुछ मिनटों के लिए, हमने उन्हें देखा, और दृश्य ऐसा था, जिसे एक चिड़िया प्राप्त करती, एक ऐसा दृश्य, मानो आकाश के देवताओं में से एक, ऑख के डिब्बे को पकड़े हुए था और धीमे से उस एकदम ऊसर भूमि के आरपार तैर रहा था। मेरे बंदीकर्ता ने दोबारा अपना हाथ हिलाया और वहॉ गति का एकदम धुंधला धब्बा पैदा हुआ, कुछ चीज नजर में आई और गुजर गई। मेरे बंदीकर्ता ने अपने हाथ विपरीत दिशा में हिलाए, चित्र स्थिर हो गया, परन्तु– नहीं ये चित्र नहीं था, ये वास्तविक चीज थी। ये चित्र नहीं था ये वास्तविकता थी, ये सत्य था। ये आकाश के एक छेद में नीचे देखने जैसा था।

नीचे मैंने कलिंगपोंग के घर देखे, मैंने व्यापारियों से भीड़ भरी गलियों को देखा, मैंने पीली पोशाक वाले लामाओं से भरे लामामठों को और लाल पोशाक वाले भिक्षुओं को आसपास घूमते हुए देखा। ये सब बहुत अजीब था। मुझे स्थानों को पहचानने में कुछ दिक्कत हुई क्योंकि, मैं केवल एक बार कलिंगपोंग गया था, और तब मैं एक छोटा बच्चा था, और मैंने कलिंगपोंग को निचले स्तर से, एक खड़े हुए छोटे बच्चे के स्तर से देखा था। ठीक है, मैं मानता हूॅ, अब मैं इसे देख रहा था– मैं इसे हवा में से देख रहा था, जैसे कि चिड़िया देखती है।

मेरा बंदीकर्ता मुझे ध्यान से देख रहा था। उसने कुछ चीजों को चलाया और प्रतिविम्ब या दृश्य, या इसे, इस सुन्दर सी चीज को जो कुछ भी कहा जाना है, गति में धुंधला पड़ गया, और दोबारा से स्थिर हो गया। *''यहॉ,''* आदमी ने कहा, *''गंगा है, जिसे तुम जानते हो, ये भारत की पवित्र नदी है।''*

मैं गंगा के बारे में बहुत कुछ जानता था। कई बार भारत से आने वाले व्यापारी, चित्रों सहित पत्रिकाओं को लाते थे। हम उन पत्रिकाओं में लिखे हुए का एक शब्द भी नहीं पढ़ सकते थे परन्तु चित्र– आह ! ये पूरी तरह अलग था। यहॉ मेरे सामने, बिना किसी गलती के, वास्तविक गंगा नदी थी। तब मेरे पूरे बुत बने आश्चर्य के साथ, ये मेरे ऊपर गिरी, जिसे मैं देख भी रहा था और सुन भी रहा था। मैंने हिन्दुओं को स्तुति करते हुए सुन सकता था, और तब मैंने देखा क्यों। उनके पास एक मृतक था, जो पानी के किनारे से सीढ़ियों पर लेटाया गया था और इसको जलाने वाले घाटों पर ले जाने से पहले, वे गंगा नदी से पवित्र जल को उस पर छिड़क रहे थे। नदी, पूरी तरह भीड़ भरी थी, ये पूरी तरह आश्चर्यजनक दिखाई दिया कि, इस

संसार में एक नदी पर, एक ही स्थान में, एक साथ, इतने आदमी भी हो सकते थे। घाटों पर स्त्रियॉ, बहुत बेशर्मी के साथ, अपने कपड़ों को उतार रही थीं और आदमी भी ऐसे ही (कर रहे) थे। मैंने स्वयं, इस प्रदर्शन के ऊपर गर्व महसूस किया। परन्तु जब मैंने उनके मन्दिरों के बारे में सोचा, और मैंने सीढ़ीदार मन्दिर, आश्रय कुटियॉ, और स्तम्भों की कतार को देखा और मै आश्चर्यचकित हुआ। ये वास्तव में, यथार्थता थी और मैंने मतिभ्रमित (confuse) होना प्रारम्भ कर दिया।

मेरा बंदीकर्ता– क्योंकि मुझे अभी भी याद रखना चाहिए, वह मेरा बंदीकर्ता था– मेरा बंदीकर्ता, तब, उसने कुछ चीज हिलाई और गति का धब्बा प्रकट हुआ। उसने जानबूझ कर खिड़की की तरफ देखा, और तब धुंधलापन, एक झटके के साथ रुक गया। *''बर्लिन,''* उसने कहा। ठीक है, मैं जानता था कि बर्लिन, पश्चिमी विश्व में कहीं एक नगर है, परन्तु ये सब इतना अधिक अनजान था कि, इससे मुझे कुछ और पता नहीं चलता था। मैंने नीचे देखा और सोचा कि, ये एक अच्छा दृष्टिकोण था, जो हर चीज को विकृत कर रहा था। यहॉ, आकार में उल्लेखनीय समानता और आकृति वाली, ऊॅची–ऊॅची इमारतें थीं। मैंने इतना अधिक कॉच अपने जीवन में कभी नहीं देखा था। वहॉ हर जगह कॉच की खिड़कियॉ थीं और तब जो बड़ी कठिन सड़क वहॉ दिखाई दी, एक ही सड़क में व्यवस्थित की हुई, दो पक्की सड़कें थीं। वे एकदम चमकदार और उनके बीच की दूरियों के मामले में सर्वत्रसमान (uniform) थीं। मैं अभी ठीक से नहीं समझ सका।

एक कोने के आसपास और मेरी दृष्टि के क्षेत्र में एक दूसरे के पीछे, दो घोड़े चल रहे थे, और मैं मुश्किल से ही ये उम्मीद करूॅगा कि, आप इस पर विश्वास करें, परन्तु वे एक चीज को खींच रहे थे, जो पहियों के ऊपर, धातु का डिब्बा था। घोड़े, धातु के डण्डों के बीच में चल रहे थे और धातु के बक्स के पहिए, इन छड़ों के डण्डों के बगल से चढ़े हुए थे। डिब्बे में खिड़कियॉ थीं, सब तरफ खिड़कियॉ ही खिड़कियॉ, और इनमें झांकते हुए, मैं लोगों को देख सकता था, डिब्बे के अन्दर लोग, एक साथ खींच कर ले जाए जाते हुए लोग। ठीक मेरी नजर के सामने (मैंने अधिकांशतः कहा, ''मेरी ऑखों के ठीक सामने।'' मैं इस दृश्य के डिब्बे को देखने के लिए इतना अधिक अभ्यस्त था।) मशीन रुक गई, लोग डिब्बे में से बाहर निकले और दूसरे (लोग) अन्दर गए। एक आदमी सामने, एक पहले घोड़े के सामने गया और दूसरी छड़ को जमीन पर चुभाया। तब वह फिर वापस धातु के डिब्बे में आ गया और (उसे) चला कर दूर चला गया, और तब धातु का डिब्बा वॉयी ओर, छड़ों की प्रमुख व्यवस्था से दूसरी तरफ मुड़ा।

मैं इस पर इतना आनन्दित था कि मैं किसी दूसरी चीज को नहीं देख सका, मेरे पास किसी दूसरी चीज के लिए समय नहीं था। मात्र, लोगों को अपने पहियों पर ले जाता हुआ, ये अनजान धात्विक डिब्बा, परन्तु तब मैंने सड़क की बगलों में देखा, जहॉ लोग थे। वहॉ लोग, उल्लेखनीय रूप से चुस्त कपड़ों में थे। उनकी टांगों पर परिधान थे, जो अत्यधिक तंग दिख रहे थे, और टांगों की बाहरी रूपरेखा को दिखा रहे थे और प्रत्येक आदमी के सिर पर, अत्यधिक उल्लेखनीय रूप से, एक औंधे कटोरे जैसी आकृति की, और इसके चारों तरफ, तंग किनारी के साथ, एक चीज दिखाई दी। इसने मुझे थोड़ा आनन्दित किया क्योंकि, वे विशेष दिख रही थीं, परन्तु तब मैंने औरतों को देखा।

मैंने इससे पहले, ऐसी कोई चीज, कभी भी, नहीं देखी थी। इन औरतों में से कुछ, अपने शरीर के ऊपरी भाग में, लगभग पूरी तरह से बिना ढके हुए थीं परन्तु शरीर का निचला भाग, एक काले तम्बू जैसा पूरी तरह से लपेटा हुआ लगा। उनकी टांगें नहीं दिखाई दीं, कोई उनके पैरों को भी नहीं देख सकता था। स्पष्टतः, इसके निचले सिरे को धूल में घसीटने से बचाने के प्रयास में, वे अपने एक हाथ से, इस काले तम्बू जैसी चीज को, बगल से पकड़े हुए थीं। मैंने कुछ और अधिक देखा, मैंने इमारतों को देखा और इन इमारतों में से कुछ, वास्तव में, भद्र हवेलियॉ थीं। गली में नीचे की तरफ, एक बड़ी चौड़ी सड़क पर, एक आदमी की लाश आई। उनमें से पहले भाग के लोगों में से, संगीत निकल रहा था। बहुत कुछ चमकदार था, और मुझे आश्चर्य हुआ कि ये सोना और चांदी के उपकरण हैं, जो उनके पास थे परन्तु जैसे

ही वे पास आए, मैंने देखा कि ये उपकरण पीतल के थे और कुछ केवल धातु के। ये सभी लाल चेहरोंवाले, बड़े आदमी थे और वे सभी, किसी फौजी वर्दी को पहने हुए थे। मैं उनके अकड़ कर चलते हुए ढंग पर, जिसमें वे चल रहे थे, हॅसा। वे अपने घुटनों को अपनी भुजाओं की ऊॅचाई तक ला रहे थे, जिससे ये पूरी तरह क्षैतिज हो जाते थे।

मेरा बंदीकर्ता मुझ पर मुस्कुराया और उसने कहा, *''हॉ, ये वास्तव में बहुत अजनबी मार्च है परन्तु ये जर्मन लोगों का मार्च है, जिसका जर्मन फौज, उत्सव के अवसरों पर प्रयोग करती है।''* मेरे बंदीकर्ता ने अपने हाथ फिर हिलाए, एक बार फिर वहॉ धुंधलापन (पैदा) हुआ, एक बार फिर खिड़की के पीछे की चीजें, डिब्बे में धुंध पैदा करते हुए, उसमें घुल गईं, तब रुकीं और जम गईं। *''रूस,''* मेरे बंदीकर्ता ने कहा, *''जारों का देश। मॉस्को।''*

मैंने देखा, जमीन पर बर्फ पड़ी हुई थी। यहॉ, उनके पास अजनवी वाहन था, वाहन ऐसे, जिनकीं मैं कभी कल्पना भी नहीं कर सकता था। वहॉ एक घोड़ा था, जिसे एक बड़े प्लेटफार्म के साथ लगाया गया था, जिसमें बैठने के स्थान बनाए गए थे, दिखाई दिया। ये बड़ा प्लेटफार्म, जमीन से कुछ चीजों के द्वारा, कुछ इंच ऊपर उठाया हुआ था, जो धातु की चौड़ी पट्टियॉ दिखती थीं। घोड़ा इस मशीन को खींच रहा था, और जब ये चलता था, तो बर्फ में गहरे निशान छोड़ जाता था।

हर आदमी खाल के कपड़े पहने हुए था और उनके मुॅह और नकुओं से जमी हुई सांस, भाप जैसी आ रही थी। ठण्ड के कारण, वे एकदम नीले दिख रहे थे परन्तु मैंने कुछ इमारतों की तरफ, ये सोचते हुए देखा कि, वे उनसे, जिनको मैं पहले देख चुका था, किस प्रकार अलग थीं। वे अनजान थीं, अनोखी, उनमें ऊॅची दीवारें खड़ी की गई थीं, और दीवारों के ऊपर, लगभग प्याज की तरह से उल्टी, उनकी जड़ें हवा में बाहर निकलते हुए, गुम्बद के आकार की उभरी हुई छतें थीं। *''जार का महल,''* मेरे बंदीकर्ता ने कहा।

पानी के झलकने ने मेरी नजर को पकड़ लिया, और मैंने अपनी खुद की प्रसन्नता की नदी के बारे में सोचा, जिसे मैंने काफी लम्बे समय से नहीं देखा था। *''ये मास्को नदी है,''* मेरे बंदीकर्ता ने कहा। *''ये वास्तव में बहुत महत्वपूर्ण नदी है।''* इसके ऊपर, खम्भों से लटकते हुए बड़े–बड़े मस्तूलों के साथ, अनोखे जहाज चलते हैं। जहाज लकड़ी के बने होते हैं। वहॉ आसपास थोड़ी हवा थी, इसलिए पतवारें ढ़ीली होकर लटक रही थीं, और आदमियों के पास चपटे सिरे वाले दूसरे पोल थे, जो उन्होंने हिलाए, जिससे वे चपटे सिरे नदी में डूब गए, और उन्होंने इस तरह धक्का दे कर जहाज (craft) को आगे बढ़ाया।

परन्तु ये सब–ठीक है, मैंने इसमें कोई खास बात नहीं देखी, इसलिए मैंने आदमी को कहा, *''श्रीमान्, मैंने निसंदेह, आश्चर्यजनक चीजों को देखा है, निसंदेह, इसमें से काफी दिलचस्प हैं, परन्तु इस सबका उद्देश्य क्या है, आप मुझे क्या सिद्ध करने का प्रयास कर रहे हैं ?''*

मेरे दिमाग में सहसा एक विचार कौंधा। पिछले कुछ घंटों से मेरे मन के पीछे, कुछ चीज, जो मेरी चेतनता में, एक आग्रहपूर्ण स्पष्टता के साथ अभी उछली, मुझे चिड़चिड़ा बना रही थी। *''श्रीमान्, बंदीकर्ता !''* मैं जोर से चिल्लाया। *''आप कौन हैं ? क्या आप देवता हैं ?''*

विचारमग्न हो कर, उसने मेरी तरफ देखा मानो वह (इस) अप्रत्याशित प्रश्न से, स्पष्टरूप से, कुछ हद तक भौंचक्का रह गया हो। उसने अपनी ठोड़ी में उगलियॉ डालीं, अपने बालों को फैंटा, और अपने कन्धों को थोड़ा सा झिड़का। तब उसने उत्तर दिया, *''आप नहीं समझेंगे। कुछ चीजें ऐसी हैं, जो जबतक कि आप एक निश्चित स्थिति तक न पहुॅच सके हों, समझी नहीं जा सकतीं। मैं तुमसे एक प्रश्न पूछते हुए, तुम्हारे प्रश्न का उत्तर दूॅ। यदि तुम एक लामामठ में होते और तुम्हारे कर्तव्यों में से एक याकों के झुण्ड़ की देखभाल करना होता, क्या तुम किसी याक का उत्तर देते, यदि वो तुमसे पूछता कि तुम कौन हो।''*

मैंने इसके बारे में सोचा, और तब कहा, *''ठीक है, श्रीमान, निश्चित रूप से मैं एक याक से ये उम्मीद नहीं करूॅगा कि, वह मुझसे ऐसा प्रश्न पूछे, परन्तु यदि उसने ऐसा प्रश्न पूछा, तो मैं उसे प्रमाण के रूप में मानूॅगा कि वह याक, प्रखररूप से बुद्धिमान है, और मैं उसे ये बताने*

के लिए कि मैं कौन था, स्वयं कुछ कष्ट उठाऊँगा। आपने मुझे पूछा, श्रीमान, मैं याक के संबंध में क्या करूँगा, जिसने मुझसे एक प्रश्न पूछा, और मैंने आपको उत्तर दिया कि, मैं अपनी पूरी क्षमता के साथ, उस याक के प्रश्न का उत्तर दूँगा। उन हालातों में जिनका आपने बयान किया, मैं कहना चाहूँगा कि मैं एक भिक्षु था और मैं उन याकों की देखभाल करने के लिए नियुक्त किया गया था, और मैं उन याकों के भले के लिए, अपना सर्वोत्तम कार्य कर रहा था, और यद्य पि वे दूसरी आकृतियों में थे, मैं उन्हें अपने भाई और बहिनों की तरह से आदर देता था। मैं याक को ये समझाता कि हम भिक्षु, पुर्नजन्म में विश्वास रखते हैं, मैं ये स्पष्ट करता कि, हम अपने दिए गए कार्य को पूरा करने के लिए और अपने दिए गए पाठों को सीखने के लिए, इस पृथ्वी पर आते हैं ताकि स्वर्ग के लोकों में, हम और अधिक ऊँची चीजों के लिए यात्रा करने के लिए तैयार हो सकें।''

''ठीक कहा, भिक्षु, ठीक कहा,'' मेरे बंदीकर्ता ने कहा। *''मुझे अत्यधिक रूप से खेद है कि, एक निचली श्रेणी के किसी आदमी ने मुझे इस दृष्टि का ज्ञान दिया है। हॉ, आप ठीक हैं, आपने मुझे दृश्य के द्वारा, बहुत अधिक आश्चर्यचकित किया है, भिक्षु, और आपने दिखाया है कि, अपने हठ के द्वारा, मुझे कहना चाहिए, क्योंकि जितना मुझे होना चाहिए, उसकी तुलना में आप अधिक सख्त हैं, यदि मैं इन तुलनात्मक परिस्थितियों में रखा गया, इतना दुर्भाग्यशाली होता।''*

अब मैंने अपने आपको साहसी महसूस किया, इसलिए मैंने कहा, *''आप मुझे निम्नश्रेणी का मानते हैं। इससे पहले आपने मुझे गिरा हुआ, असभ्य, असंस्कृत, कुछ नहीं जानने वाला कहा। जब मैंने इस सत्य को स्वीकार किया कि, मैं इस संसार के बड़े शहरों के बारे में कुछ नहीं जानता, आप मेरे ऊपर हंसे। परन्तु, श्रीमान्, मैंने आपको सत्य बताया, मैंने अपने अज्ञान को स्वीकार किया परन्तु मैं उस अज्ञान को हल्का करना चाह रहा हूँ और आप मेरी सहायता नहीं कर रहे हैं। श्रीमान् मैं आपसे फिर पूछता हूँ: आपने मुझे, मेरी इच्छा के विरुद्ध, पूरी तरह से बन्दी बना लिया है, आप मेरे शरीर का, मेरी आत्मा के मंदिर का, पूरी आजादी के साथ, उपयोग कर रहे हैं, आप स्पष्टतः मुझे प्रभावित करने के लिये बनायी गयीं, कुछ अत्यन्त उल्लेखनीय घटनाओं में लिप्त हैं। श्रीमान्, मैं और अधिक प्रभावित हो सकता था, यदि आपने मेरे प्रश्नों का उत्तर दिया होता, क्योंकि मैं जानता हूँ कि, मैं क्या जानना चाहता हूँ। मैं आपसे फिर पूछता हूँ कि आप कौन हैं ?''*

थोड़े समय के लिये वह भौंचक्का दिखते हुए, वहॉ केवल खड़ा रहा, तब उसने कहा, *''तुम्हारी शब्दावली में इसके लिए कोई शब्द, कोई विचार नहीं हैं, जो मुझे इस स्थिति को स्प्ष्ट करने के योग्य बना सके। किसी विषय पर विचार विमर्श किया जा सके, इसके लिये पहली आवश्यकता यह है कि, दोनों पक्ष, दोनों दल, उन समान पदों को समझते हों, क्या हम कुछ निश्चित विचारों पर सहमत होंगे। एक क्षण के लिए, मुझे मात्र ये कहने दें कि, मुझे आपके चाकपोरी के एक चिकित्सिकीय लामा के समान समझा जा सकता है। मुझे आपके भौतिक शरीर की देखभाल करने का उत्तरदायित्व निर्वाह करने का और जब मैं संतुष्ट होऊँ, कि आप उस ज्ञान को प्राप्त करने के लिए तैयार हैं, आपको इस तरह तैयार करने का, कि आपको ज्ञान से भरा जा सके, प्रभार दिया गया है। जब तक आप इस ज्ञान से भरे नहीं जाते, तब तक कोई भी विचार विमर्श, कि मैं कौन हूँ या मैं क्या हूँ, अर्थहीन होगा। केवल एक क्षण के लिए मान लो कि, हम जो कर रहे हैं, वह दूसरों के भले के लिए है, और यह भी कि यद्यपि तुम बहुत क्रोधित हो, जिसको तुम स्वतन्त्रता समझते हो, जो हम तुमसे ले रहे हैं, फिर भी उसके बाद, जब तुम हमारे उद्देश्य को जान जाओगे, जब तुम जान जाओगे कि हम क्या हैं, और तुम और तुम्हारे लोग क्या हैं, तुम अपनी राय को बदल लोगे।''* इसके साथ उसने मेरी दृष्टि को बंद कर दिया और मैंने उसे कमरे से बाहर जाते हुए सुना। मैं अपने विचारों के साथ, फिर अकेला, और फिर से, अंधेपन की अंधियारी रात में था।

अंधेपन की अंधेरी रात, वास्तव में, अंधेरी रात ही है। जब मुझे अन्धा किया गया, जब मेरी ऑखें नोंच कर बाहर निकाली गईं, चीनियों की गंदी उंगलियों द्वारा नोंच कर बाहर निकाल

ली गईं, मुझे पीड़ा का पता चला था, और मेरी ऑखों को निकाल देने के बाद भी मैंने, बिना आकृति या शक्ल के, नाचती हुईं रोशनियॉ, चमकदार झलकियॉ, जो बाद के दिनों में धीमे–धीमे मन्द पड़तीं गईं, देखी थीं, या देखी जाती हुईं लगतीं थीं, परन्तु मुझे बताया गया है कि, अब मेरी दृश्य नाड़ियों के अन्दर धक्के के साथ, एक यंत्र घुसाया गया है और मैं वास्तव में, इस पर विश्वास कर सकता हूॅ, मेरे पास इस पर विश्वास करने का प्रत्येक कारण है। मेरे बंदीकर्ता ने मेरी दृष्टि को बंद कर दिया, परन्तु इसकी पश्च–स्मृति बनी रही। मैं सिर में सुन्नता और गुदगुदी होने के, झनझनाहट होने के, उस विशेष विसंगतिपूर्ण प्रभाव को अनुभव कर रहा था। सुन्नता को महसूस करने की कहना और उसी समय झनझनाहट की बात करना, वकबास लग सकता था, परन्तु यह ऐसा है, जो मैंने अनुभव किया, और मुझे, सभी घूमती हुई रोशनियों, सुन्नता और झनझनाहट के साथ छोड़ दिया गया।

मैं, उस पर विचार करते हुए, जो मेरे साथ हो चुका था, कुछ समय के लिए वहॉ लेटा रहा। ये विचार मेरे अन्दर आया कि, शायद, मैं मरा हुआ या पागल था, और ये सारी चीजें, इस चेतनलोक को छोड़ते हुए, मन की झूठी कल्पनाऐं थीं। पुजारी के रूप में मेरा प्रशिक्षण, मेरे काम आया। अपने विचारों को पुनः व्यवस्थित करने के लिए, मैंने युगों पुराने अनुशासन का उपयोग किया।

मैंने कारण देना बंद कर दिया और इसलिये अपने अधिस्वयं (overself) को अपने ऊपर काबू करने की, अधिकार करने की, इजाजत दे दी। कोई कल्पना नहीं, ये वास्तविक चीज थी; उच्च शक्तियों के द्वारा, उच्च उद्देश्यों के लिए, मेरा उपयोग किया जा रहा था। मेरा डर और दर्द दब गया। मेरे अन्दर शान्ति वापस लौटी और कुछ समय के लिए, अपनी दिल की धड़कन के साथ, मैं अपने मन में, लय में टिक–टिक करने लगा। क्या मुझे दूसरी तरह से व्यवहार करना चाहिए था, मैंने आश्चर्य किया। क्या मैंने नए विचारों की अपनी पहुॅच में पूरी सावधानियॉ रखीं थीं ? क्या महान तेरहवें दलाईलामा, यदि वह इन्हीं समान स्थितियों में होते, तो क्या किसी दूसरे तरीके से व्यवहार करते ?

मेरी चेतना स्पष्ट थी। मेरा कर्तव्य साफ था। मुझे एक अच्छे तिब्बतीय पुजारी की तरह कार्य व्यवहार करना जारी रखना चाहिए था और सब कुछ ठीक होगा। मेरे अन्दर शान्ति भर गई, अच्छे होने की भावना ने, याक के एक गरम ऊनी कम्बल की तरह से ठण्ड से बचाव करते हुए, मुझे पूरी तरह लपेट लिया। कैसे भी, कई बार, मैं स्वप्नरहित, कष्टरहित नींद में चला गया।

संसार बदल रहा था। हर चीज चढ़ती और गिरती लगी। गति का एक गहरा अनुभव हुआ और तब धातु की एक ठनठनाहट ने मेरी निष्क्रियता से, मुझे अचानक जगा दिया। मैं चल रहा था, मेरी मेज चल रही थी। तभी वहॉ, कॉच की सभी चीजों के चलने के कारण, संगीतमय खनक और ठनक आई। ज्यों ही मैंने याद किया, ये सारी चीजें मेरी मेज के साथ जुड़ी हुई थीं। अब हर चीज चल रही थी। आवाजों ने मुझे घेर लिया। ऊॅची आवाजें, नीची आवाजें। मेरे बारे में विचार विमर्श किये जाते हुए, मैं डरा। परन्तु क्या अजीब आवाजें, किसी भी चीज से, जिसको मैं जानता था, इतनी अलग। मेरी टेबिल चल रही थी, परन्तु शान्तिपूर्ण हलचल। कोई खिसकना, घिसना नहीं। मात्र तैरना। कोई पंख कैसे अनुभव करता होगा, जब वह हवा के द्वारा उड़ा दिया जाता है, मैंने ये सोचा। तब मेज की गति ने दिशा बदली। स्पष्टरूप से, मैं एक गलियारे में ले जाया जा रहा था। शीघ्र ही हम, उसमें प्रविष्ट हुए, जो स्पष्टरूप से बड़ा हॉल था। गूंजों (प्रतिध्वनियों) ने हमको, दूरी पर, काफी दूरी पर, अनुनाद का आभास दिया। एक अन्तिम, मानो कि बीमार सा, हिलता हुआ सा घुमाव, और मेरी मेज नीचे की तरफ, जो मेरा अनुभव मुझे बताता है कि, चट्टानी फर्श था, पर झनझनाई, परन्तु ऐसा कैसे हो सकता है ? मैं सहसा, वहॉ कैसे हो सकता हूॅ, जो मेरे संज्ञान ने एक गुफा बताई थी ? मेरी उत्सुकता शीघ्र ही शान्त कर दी गई या क्या उत्तेजित कर दी गई ? मैं कभी भी निश्चित नहीं कर पाया।

वहॉ गपशप, सब एक ऐसी भाषा में, जिसे मैं नहीं जानता था, लगातार जारी रही। मेरी धातु की मेज को चट्टानी फर्श के ऊपर खनकते हुए, एक हाथ ने मेरे कन्धे को छुआ और मेरे

बंदीकर्ता की आवाज ने कहा, *''अब हम तुम्हें दृष्टि देंगे, अब तक तुमने पूरी तरह से आराम कर लिया होगा।''* तब वहॉ रगड़ने की और क्लिक की, एक आवाज हुई। रंग, मेरे चारों ओर नाचने लगे, रोशनियॉ चमकीं, मंदी पड़ गईं, और एक निश्चित नमूने में स्थिर हो गईं। ऐसा नमूना नहीं, जिसे मैं समझता था, ऐसा नमूना नहीं, जो मुझे कुछ सुझा सकता था। मैं इस पर आश्चर्य करते हुए कि, ये सब किसके बारे में था, लेटा रहा। वहॉ प्रत्याशित शान्ति थी। मैं लोगों को अपनी ओर देखते हुए अनुभव कर सकता था। तब एक तीखा, छोटा, ढका हुआ प्रश्न। मेरे बंदीकर्ता के मेरी तरफ आते हुए कदमों की धीमी आवाजें, *''क्या तुम देख नहीं सकते हो ?''* उसने पूछा।

''मैं एक उत्सुकतायुक्त नमूने को देखता हूँ,'' मैंने जवाब दिया, *''मैं, नाचते हुए रंगों का और चमकती हुई रोशनियों का, हिलती हुई रेखाओं का, एक वह नमूना देखता हूँ, जिसका मेरे लिए कोई अर्थ नहीं है। ये सब कुछ है, जो मैं देखता हूँ।''* वह कुछ बुदबुदाया और जल्दी से दूर हटा। वहॉ निशब्द बातचीत और धातु की चीजों की ध्वनियॉ थीं, जो आपस में एक दूसरे से मिलती जा रहीं थीं। रोशनियॉ झिलमिलाईं और रंग दमकने लगे। और मैंने देखा, हर चीज अजीब नमूनों की पागल बेहोशी में घूमती रही, स्थिर हो गई।

यहॉ, कुछ दो सौ या अधिक फुट ऊँची, एक बड़ी गुफा थी। उसकी लंबाई और चौड़ाई मेरी गणना से परे थी, क्योंकि मेरी दृष्टि के परास के परे, वे अंधकार में धुंधली पड़ गईं। स्थान बहुत बड़ा था और उसमें वह सब था, जिसको मैं केवल बड़ी रंगभूमि कहना पसन्द करता हूँ, जिसके सभी स्थान भरे हुए थे– मैं उन्हें क्या कहूँ ?– प्राणी, जो देवताओं और दैत्यों के सूचीपत्रों (catalogues) में से कुछ भी आकृतियॉ ले सकते थे। रंगभूमि के केन्द्र में, एक औरअधिक अनजान चीज संतुलन बना कर, लटकी थी, फिर भी, ये चीजें इतनी अनजान थीं। धीमे–धीमे घूमता हुआ एक गोला, जिसको मैंने पूरी दुनियॉ समझा, मेरे सामने लटक रहा था, जबकि प्रकाश बहुत दूर से उसके ऊपर गिर रहा था, जैसे कि, पृथ्वी के ऊपर सूर्य का प्रकाश चमकता है।

अब वहॉ सुनसान जैसी शान्ति थी। अनजान प्राणी, मेरे ऊपर टकटकी लगाकर देख रहे थे। मैंने वापस उनके ऊपर टकटकी लगाई, यद्यपि इस शक्तिशाली भीड़ के सामने, मैंने स्वयं को उनकी तुलना में छोटा और पूरी तरह से महत्वहीन अनुभव किया। यहॉ, हर मामले में पूर्ण दिखते हुए, पवित्रता और शान्ति के प्रभामण्डल को उत्सर्जित करते हुए और देवताओं जैसी शक्ल के, छोटे आदमी और औरतें थीं। वहॉ दूसरे वे लोग थे, जो आदमियों जैसे थे परन्तु उत्सुकता के साथ, पूरी तरह से अविश्वसनीय चिड़ियों के सिर की तरह से, पूरी तरह से पंखों और परों के साथ (मैं ये फर्क नहीं कर पाया कि वे क्या थे) और हाथों के साथ जो, यद्यपि शक्ल में आदमी जैसे थे, फिर भी उनके ऊपर आश्चर्यजनक रूप से पपड़ियॉ चढ़ी थीं और (उनके) पंजे थे। वहॉ दैत्य भी थे। बहुत बड़े प्राणी, जो प्रतिमाओं की तरह बनाए गए थे और उन्होंने अपने अत्यंत छोटे साथियों को अपनी छाया में ले रखा था। ये मना न करने योग्य सीमा तक मानव थे, यद्यपि ऐसे आकार के, जो किसी की समझ के पूरी तरह बाहर हों। आदमी और औरतें, या नर और मादाऐं और दूसरे, जो दोनों में कोई भी हो सकते थे, या कोई नहीं। वे बैठे और (उन्होंने) जबतक कि मैं, उनकी स्थाई टकटकी के कारण, बैचेन नहीं हो गया, मेरे ऊपर टकटकी लगा कर देखा।

उनके एक बगल से देवताओं जैसा एक आदमी बैठा, कड़ा चेहरा और सीधा तना हुआ। शानदार जीवन्त रंगों में वह, शाही अन्दाज में, जैसे कि स्वर्ग में देवता बैठा हो, शान्ति से बैठा। तब फिर वह, एक अज्ञात जुबान में बोला। मेरा बंदीकर्ता, जल्दी से आगे आया और मेरे ऊपर झुका। *''मैं इन चीजों को तुम्हारे कानों में डालूँगा,''* उसने कहा, *''और तब तुम, हर शब्द को, जो यहॉ कहा जा रहा है, समझोगे। डरो नहीं।''* उसने मेरे दाहिने कान का ऊपरी किनारा पकड़ा और उसे एक हाथ से ऊपर की ओर खींचा। दूसरे हाथ से, उसने कोई छोटा यंत्र कान के छेद में डाल दिया। तब वह और अधिक झुका और यही चीज उसने मेरे वांये कान में की। उसने एक छोटी मूँठ (knob) को घुमाया, जो मेरे बगल में, गर्दन के बगल में, एक डिब्बे से

जुड़ी हुई थी और मैंने आवाज को सुना। वह मेरे ऊपर झुका ताकि मैं, उस अनजान जुबान को, जो मुझे पहले समझ में नहीं आ सकी थी, समझ सका। इस चमत्कार के ऊपर आश्चर्य करने का कोई समय नहीं था, मुझे इन आवाजों को अपने आसपास सुनने के लिए बाध्य किया गया, आवाजें जिन्हें मैं अब समझता हूँ।

आवाजें, जिन्हें मैं अब समझा, एक भाषा, जिसे मैं अब समझा। हॉ, परन्तु विचारों की भव्यता, मेरी सीमित कल्पना के काफी ऊपर थी। मैं वहॉ से, जिसे *''गवॉरों का भू–भाग''* वर्णित किया गया था, एक अदना सा पुजारी था और मैंने अब जो सुना, मुझे उसका अर्थ समझने के योग्य बनाने के लिए, मेरी समझ पर्याप्त नहीं थीं और (मैंने) ज्ञानवान होने का विचार किया। मेरे बंदीकर्ता ने पाया कि, मुझे परेशानियॉ हो रही हैं और फिर से मेरी तरफ आने की जल्दी की। *''ये क्या है ?''* वह फुसफुसाया।

''मैं सिवाय इन साधारण शब्दों के अर्थ जानने के, इन सब चीजों को समझने के लिए, अत्यधिक अनपढ़ हूँ,'' मैं वापस फुसफुसाया। *''चीजें, जो मैंने सुनी उनका मेरे लिए कोई अर्थ नहीं था; मैं उन्हें, ऐसे उत्कर्ष विचारों को नहीं समझ सकता।''* अपने चेहरे पर बहुत परेशान हावभाव के साथ, हिचकिचाते हुए, –भव्य कपड़ों को पहने हुए, वह एक बड़े कार्यालय में चला – महान (great one) के सिंहासन के समीप खड़ा हुआ। वहॉ एक फुसफुसाहट भरा संवाद हुआ, तब दोनों धीमे से मेरी तरफ चले।

मैंने बातचीत को, जो मेरे संबंध में हो रही थी, समझने का प्रयास किया परन्तु बिल्कुल सफल नहीं हुआ। मेरा बंदीकर्ता मेरे ऊपर झुका और फुसफुसाया; *''उच्चाधिकारी (adjutant) को अपनी परेशानी समझाओ।''*

''उच्चाधिकारी ?'' मेंने उससे कहा, *''मैं ये भी नहीं जानता, इस सबका अर्थ क्या है।''* इससे पहले मैंने अपने आपको इतना अपर्याप्त, इतना अज्ञान, इतनी बुरी तरह से अवसादग्रस्त महसूस नहीं किया था। इससे पहले, मैंने अपनी गहराई के परे, इतना अनुभव नहीं किया गया था। उच्चाधिकारी व्यक्ति मेरे ऊपर मुस्कुराया और उसने कहा, *''क्या तुम समझते हो कि मैं तुमसे क्या कह रहा हूँ ?''*

''वास्तव में, मैं समझता हूँ, श्रीमान्,'' मेरा जवाब था, *''परन्तु मैं महान लोगों की बातों के पूरे मामले से एकदम पूरी तरह अनजान हूँ। मैं विषय को भी नहीं समझ सकता, विचार पूरी तरह मेरे परे (beyond me) हैं।''* उसने अपना सिर हिलाया और जवाब दिया : *''इसके लिए स्पष्टरूप से, हमारे स्वचालित अनुवादकर्ता को दोष दिया जाना चाहिए, न तो वह तुम्हारे शरीर के चयापचन (metabolism) से और न ही तुम्हारे मस्तिष्क प्रादर्शों (brain patterns) से मेल खाता है। कोई बात नहीं, हमें विश्वास है, महाशल्यचिकित्सक (surgen general), जिनको तुम बंदीकर्ता समझते हो, इस मामले को देखेंगे और तुम्हें अगले सत्र के लिए तैयार करेंगे। देरी करना, हल्की बात है और मैं इसको एडमिरल को बता दूँगा।''*

उसने नम्रता से मुझे सिर हिलाया और लम्बे डग भरते हुए महान तक गया। एडमिरल ? एडमिरल क्या होता है, मैंने आश्चर्य किया। उच्चाधिकारी क्या होता है ? इन शब्दों का मेरे लिए कोई अर्थ नहीं है। मैंने अपने आपको शान्त किया और प्रगति की प्रतीक्षा की। जिसको उच्चाधिकारी *(adjutant)* करके बताया गया था, वह महान तक पहुँचा और शान्ति से उनसे बात की। ये बिना जल्दी के, एकदम शान्त दिखाई दिया। महान ने अपना सिर हिलाया, और एडजूटेंट ने मुझे इशारा किया। जिसको महाशल्यचिकित्सक या मेरा बंदीकर्ता कहा जाता था, वह आगे गया और वहॉ एक जीवन्त विचार विमर्श हुआ। अंत में, मेरे बंदीकर्ता ने, अनोखे अन्दाज में, अपना दांया हाथ अपने सिर पर रखा, जिसको मैंने ध्यान से देखा, मेरी ओर मुड़ा, और उसी समय किसी दूसरे को, जो मेरे दृश्यक्षेत्र के बाहर था, इशारा करते हुए, मेरी ओर चल कर आया।

बातचीत जारी रही, कोई व्यवधान नहीं हुआ। एक बड़ा आदमी अपने पैरों पर (खड़ा) था और मुझे ऐसा लगा कि, वह खाने की आपूर्ति के संबंध में कुछ बातचीत कर रहा था। एक अनजान मादा अपने पैरों पर उछली और (उसने) किसी प्रकार का उत्तर दिया। ये किसी चीज

के ऊपर, जिसको आदमी ने बताया था, एक शक्तिशाली विरोध दिखाई दिया। तब गुस्से के कारण–लाल मुँह से ? वह अचानक बैठ गई। आदमी ने बिना विक्षुब्ध हुए कहना जारी रखा। मेरा बंदीकर्ता मेरे पास पहुँचा और फुसफुसाया, *''तुमने मेरा अनादर किया है,* मैंने कहा था, *तुम एक बेवकूफ, निम्न श्रेणी के आदमी हो।''* उसने मेरे कानों में से, चीजें बहुत खराब ढंग से, झटके से खींचीं। उसने एक तेज सफाई के साथ, अपने हाथ से, कुछ किया, जिसने मुझे तुरन्त ही, दृष्टि से फिर वंचित कर दिया। वहाँ कुछ उठने का अनुभव हुआ, और मैंने अपनी मेज को बड़ी गुफा में से दूर जाते हुए महसूस किया। किसी सावधानी के साथ नहीं, मेरी मेज और उसके उपकरण, एक गलियारे की तरफ धकेल दिए गए, तब वहाँ धातु की (टकराने की) आवाज हुई और वह बजी। दिशा में अचानक एक परिवर्तन हुआ, और गिरने की असुखद भावना हुई। एक बड़े विस्फोट के साथ, मेरी मेज फर्श से टकराई और मैंने अनुमान लगाया कि, मैं फिर से धातु के कमरे में था, जहाँ से मैं आया था। अल्प ध्वनियाँ, कपड़ों की सरसराहट और पैरों का पदचाप। धातु के फिसलने वाले दरवाजे का फिसलना, और अपने विचारों के साथ, मैं फिर से अकेला छोड़ दिया गया । ये सब किसके बारे में था ? एडमिरल कौन था ? एडजूटेंट क्या था ? और मेरा बंदीकर्ता महा शल्य चिकित्सक, (surgeon general) क्यों कहलाता था ? ये स्थान क्या था ? पूरी चीजें दूर थीं, मुझसे बहुत ज्यादा दूर। मैं सब जगह गर्मी महसूस करते हुए, जलते हुए गालों के साथ वहाँ लेटा रहा। मैं लगभग अपनी सहनशक्ति की सीमा के बाहर, जैसा कि मैंने समझा, बहुत थोड़ा, थोड़ा अपमानित हुआ। मैंने पूरी तरह सुनिश्चितता के साथ, एक अज्ञान, नीच की तरह से व्यवहार किया था – उन्होंने सोचा होगा, जैसा मैंने सोचा कि, यदि मैं याक को एक सेचतन व्यक्ति समझूँ और उसे ऐसा कहूँ, परन्तु बिना किसी परिणाम के। जब मैंने विचार किया कि, मात्र अपने न समझने की योग्यता के कारण, मैंने अपनी पुजारी जाति के ऊपर किस तरह से शर्म पैदा की है, मेरे पूरे शरीर पर पसीना आ गया; मैंने भयानक महसूस किया।

मैं अपने रहस्यों में उलझा हुआ, सर्वाधिक अंधकार के लिए चारा बना हुआ, गहरे संदेह से पूरी तरह भरा हुआ कि, हम सभी इन अज्ञात लोगों के लिए अधम ही थे और सबसे अधिक अधम विचारों का, मैं वहाँ लेटा और पसीने में तरबतर होता रहा।

दरवाजा चीख के साथ खुला, फूहड़पन से हँसते हुए और खिल्ली उड़ाते हुए, शोर शराबे ने कमरे को भर दिया। वे उल्लेख न करने योग्य मादाऐं, फिर। उन्होंने अति उत्साह के साथ, मेरी एक मात्र चादर को, मुझे नए पैदा हुए बच्चे की तरह नंगा छोड़ते हुए, एक बार फिर मुझसे खींच लिया। मुझे बिना किसी उत्सव के, बगल से लुढ़का दिया गया। किसी चीज की ठण्डी चिपचिपी चादर, मेरी पूरी लंबाई में घुसा दी गई, और हिंसक रूप से मुझे दूसरी तरफ को लुढ़का दिया गया। चूंकि चादर का किनारा मेरे अन्दर और आगे तक खिंचा, वहाँ झटके से खींचने की एक तेज आवाज हुई – एक क्षण के लिए मुझे डर लगा कि, मैं पपड़ी बन कर मेज के बाहर गिर जाऊँगा। मादा हाथों ने मुझे पकड़ा और आवश्यकरूप से मुझे बदबूदार रसायनों से, तीखे औजारों से रगड़ा। मोटे तौर से मुझे कपड़े से, जो मुझे टाट का पुराना कपड़ा महसूस हुआ, रगड़ कर सुखाया गया। मेरे शरीर के सबसे अधिक अभिन्न भाग को कोंचा गया और नोचा गया और उसमें अनजान उपकरण घुसाए गए।

समय खिंचता गया; मुझे लगभग अपनी सहन शक्ति के परे तक उकसाया गया परन्तु वहाँ ऐसा कुछ नहीं था, जो मैं कर पाता। मुझे पूरी तरह से, चलने से वंचित करके, आकस्मिकरूप से, दोबारा स्थिर बना दिया गया था। परन्तु तब मेरे ऊपर हमला प्रारम्भ हुआ, जिससे पहले मुझे लगा कि, मुझे प्रताड़ित किया जा रहा है। मादाओं ने मेरे हाथ और टांगें पकड़ीं और उन्हें मरोड़ दिया और उन्हें सभी कोनों में मोड़ दिया। कठोर हाथ मेरे शरीर की मांसपेशियों में अन्दर तक कोंचे गए और मुझे गूंदा गया मानो कि, मैं आटे का लोथड़ा होऊँ। वक्कलों ने, मेरे अंगों में दबकर, निशान बना दिए और मुझे हवा में, हॉफने के लिए छोड़ दिया गया। मेरी टांगें एक दूसरे से दूर खींच दी गईं और न समाप्त होने वाली बातचीत करती हुई मादाओं ने, ऊन की लम्बी बाहें (sleeves) मेरी टांगों तक, और मेरी जांघों के ऊपर तक, मेरे

पैरों पर चढ़ा दीं। मुझे गर्दन के पीछे की तरफ से पकड़ कर उठाया गया ताकि, मैं कमर से आगे की ओर झुक गया। किसी प्रकार का परिधान, जो मुझे छाती और पेट में बांधनेवाला प्रतीत हुआ, मेरे ऊपरी शरीर के ऊपर फैंका गया।

एक अनोखा, दुर्गन्ध देनेवाला झाग, मेरी खोपड़ी पर टकराया और क्षणिकरूप से, एक बजती हुई ध्वनि सुनाई दी। ध्वनि के स्रोत ने मुझे छुआ और चीनियों द्वारा धक्का देने पर, अधिकांश दॉत निकल जाने के बाद, मेरे थोड़े से– जो बचे थे, किटकिटाने लगे। वहॉ मरोड़ने का कुछ अनुभव हुआ, जिसने मुझे याकों का, जिन पर से ऊन उतारी जा रही हो, ध्यान दिलाया। एक खुरदरा पौंछा, इतना खुरदरा कि, मुझे लगा कि निश्चितरूप से मेरी खाल उधड़ जाएगी, और मेरे सुरक्षारहित सिर के ऊपर, दूसरे प्रकार की धुंध। दरवाजा फिर से खिसका, और तब वहॉ नर लोगों की आवाजें आयीं, जिसमें से एक को, जो मेरा बंदीकर्ता था, मैंने पहचान लिया। वह मेरे पास आया और मेरी खुद की भाषा का उपयोग करते हुए उसने कहा, *''हम तुम्हारे मस्तिष्क को खोलने जा रहे हैं, तुम्हें इसके बारे में चिन्ता करने की कोई आवश्यकता नहीं है। हम तुम्हारे मस्तिष्क में विद्युदाग्र* ***(electrodes)*** *लगाने जा रहे हैं– ''* इन शब्दों का, ये प्रदर्शित करने के सिवाय कि, मैं एक बार फिर, दूसरे खराब समय में था और मैं इस सबके बारे में कुछ भी नहीं कर सकता था, मेरे लिए कोई अर्थ नहीं था।

हवा में अनोखी गन्ध भर गई। बतियाती हुई मादाऐं, शान्त पड़ गयीं। सारी बातें बंद हो गईं। धातु, धातु से टकराईं। तरल पदार्थों के गरारे करने की आवाज आई और मैंने अचानक ही, अपनी वांयी भुजा में ऊपर की ओर, एक गहरी चुभन महसूस की। मेरी नाक, हिंसक रूप से पकड़ी गई और उसमें कुछ अनोखी, नलीदार युक्ति, मेरे नकुओं और नीचे मेरे गले तक, ठूंस दी गई। मैंने अपनी खोपड़ी के आसपास, लगातार तीखी चीजें चुभने की अनुभूति की, जिसने मुझे क्षणिकरूप से सुन्नता प्रदान की। वहॉ एक ऊॅचे तारत्ववाली ***(high pitched)*** रिरियाने की आवाज आई और मेरे आसपास रेंग कर आई एक अत्यन्त भयंकर मशीन ने, मेरी खोपड़ी को छुआ। ये मेरे सिर को ऊपर से चीर रही थी ! घिसाई के भयानक, झटकों ने, मेरे अस्तित्व के प्रत्येक अणु को भेद दिया; (इसका) प्रभाव मेरे ऊपर ये हुआ कि, मेरे शरीर की हर हड्डी विरोध में कंपन कर रही थी। अंत में, जैसा कि मैं अच्छी तरह अनुभव कर सकता हूॅ, एक छोटे से मांस के टुकड़े के सिवाय, जिसने मेरी खोपड़ी को उस बिन्दु पर कब्जे की तरह से घूमता हुआ छोड़ दिया था, मेरे सिर का पूरा ऊपरी हिस्सा, काट कर अलग कर दिया गया। तब तक मैं, आतंक की दशा में था, आतंक की एक भयानक शक्ल, क्योंकि यद्यपि मैं डरा हुआ था, फिर भी मैंने निश्चय किया कि, स्वयं मृत्यु भी मुझे फुसला नहीं सकेगी।

अवणर्नीय अनुभवों ने, बिना स्पष्ट कारण के, मेरे ऊपर हमला किया। मैंने सहसा, एक लम्बा खिंचने वाला शब्द कहा। ''आह – हा हा हा हा हा हा हा।'' तब मेरी उंगलियॉ, हिंसकरूप से टूटने लगीं। मेरे नकुओं की फड़कन ने इसे आदेशात्मक बना दिया कि, मैं तेजी से चीखूॅ– परन्तु मैं चीख नहीं सका परन्तु अभी, और खराब होना था। अचानक ही, वहॉ मेरे सामने मेरा नाना खड़ा हुआ। वह सरकारी अधिकारी की ड्रेस पहने हुए था। वह अपने चेहरे पर करुणा की मुस्कान के साथ, मुझसे (कुछ) कह रहा था। मैंने उसे देखा– और तब मेरे ऊपर उसका प्रभाव हुआ; मैंने उसे नहीं देखा। मेरे पास ऑखें नहीं थीं ! ये क्या जादू था ? मेरे चकित हो कर चिल्लाने के साथ, जिसकी अवधि में मेरा नाना गायब हो गया, मेरा बंदीकर्ता चल कर मेरी बगल से आया। *''ये क्या है ?''* उसने पूछा। मैंने उसे बताया *''ओह, ये कुछ नहीं है।''* वह चिल्लाया, *''हम केवल तुम्हारे मस्तिष्क के कुछ भागों को सक्रिय बना रहे हैं, उत्तेजित कर रहे हैं, जिससे तुम आसानी से समझ सको। हम देख रहे हैं कि, तुम्हारे पास योग्यताऐं हैं, परन्तु तुम आलस में डूबे हुए हो और अंधविश्वास की निष्क्रियता में, अपने मन को खोलने के लिए, अपने आपको इजाजत नहीं दोगे। हम इसे तुम्हारे लिए कर रहे हैं।''*

एक मादा ने, कान की छोटी युक्ति को, अपने बेढ़ंगेपन से, जैसे वह टेंट की खूटियों को कठोर भूमि में कस रही हो, मेरे कानों के सुराखों में कसा। वहॉ एक तड़कन हुई और मैं ये बाहरी भाषा समझ सका। मैं इसे समझ भी सका। मुझे उनके अर्थों में और उनके प्रभाव में,

शब्द जैसे कोर्टेक्स (cortex), मेडूला (medulla) ओबलोंगगाटा (oblongata), साईको सोमेटिक (psychosomatic) और दूसरे शब्द अब स्पष्ट थे। मेरा मौलिक प्रखरता गुणांक (basic intelligence quotient) बढ़ाया जा रहा था– और मैं जानता था कि, इस सबका क्या अर्थ है। परन्तु ये एक जबरदस्ती थी। ये थका देने वाला था, समय स्थिर होता दिखाई दिया। लोग असीमरूप से वृत्तों में, चलते हुए लगे। उनकी निरर्थक बातचीत, कभी खत्म न होनेवाली थी। पूरा मामला पूरी तरह से उबा देने वाला (bore) था। मैंने और दूर, बाहर जाने की इच्छा की, बाहर, इन अजीब गंधों वाले स्थान से कहीं बाहर, इस स्थान से बाहर, जहॉ किसी आधे उबले हुए अण्डे के टोप की तरह से, मेरे सिर का ऊपरी हिस्सा काट दिया गया था। ऐसा नहीं कि, मैंने कड़े रूप से उबला अण्डा कभी देखा है, परन्तु ये उनके लिए, जिनके पास पैसा था, व्यापारियों के लिए था और बेचारे गरीब पुजारियों के लिए नहीं, जो त्सम्पा पर जीवित रहते थे।

समय–समय पर लोग, मेरे बारे में कुछ टिप्पणियॉ, प्रश्न करते, मैं कैसा था ? क्या मुझे कुछ दुख हो रहा है तकलीफ हो रही है क्या मैंने सोचा कि मैंने कुछ देखा ? मैंने कौन से रंग की कल्पना की, जो मैंने देखा ? मेरा बंदीकर्ता थोड़ी देर के लिए, मेरे बगल से खड़ा हुआ और उसने मुझे बताया कि, विभिन्न केन्द्रों को उत्तेजित किया जाना है कि, मुझे इलाज की अवधि में, अनुभव–अनुभूतियॉ, जो मुझे डरा सकती हैं डराऐंगी ? मैं पूरे समय डरा रहा, मैंने उसे बताया। इस पर वह हॅसा और उसने आकस्मिक रूप से टिप्पणी की कि, ये इलाज, जो मुझे दिया जा रहा था, का परिणाम था और मुझे अपने पूरे लंबे जीवन भर के लिए, एक नितान्त अकेले साधु के रूप में रहना पड़ेगा क्योंकि, मेरे दृष्टिक्षेत्र को बढ़ा दिया गया था, जो मुझे चाहिए था। उसने कहा, पूरे जीवन के अन्त में, एक नौजवान व्यक्ति, मुझसे ये पूरा ज्ञान, जो मेरे पास है, लेने के लिए आएगा और अन्त में उसे उन स्थानों को ले जाएगा; एक विश्वसनीय दुनियॉ के सामने रखेगा, तब तक कोई भी आदमी, कभी मेरे साथ नहीं रहेगा।

अंत में, जो मुझे शाश्वत प्रतीत हुआ, मेरी हड्डीयुक्त कपाल की टोपी, बदल कर लगा दी गई। उसमें, दोनों आधे हिस्सों को आपस में जोड़ने के लिए, अनजान धातु के क्लिप घुसा दिए गए। इसके चारों तरफ और मेरे सिर के चारों तरफ, कपड़े की पट्टी बांध दी गई। एक मादा को छोड़ कर, सभी लोग, जो मेरे बगल में बैठे थे, चले गए। कागज की फड़फड़ाहट ने ये स्पष्ट किया कि, अपने कर्तव्यों के ऊपर ध्यान देने के बजाय, वह कुछ पढ़ रही थी। तब वहॉ किताब के गिरने की, छपाक की, एक हल्की सी आवाज आई और तब उस मादा के लयबद्ध खर्राटे। मैंने निश्चय किया कि मैं भी सोऊॅगा।

अध्याय पॉच

गुफा में, बूढ़े साधु ने सहसा ही बोलना बंद कर दिया, और अपने हाथों की उंगलियॉ फैलाते हुए, पंजे को बलुआ (sandy) जमीन पर अपने बगल में रखा। उन संवेदनशील उंगलियों ने मिट्टी के साथ हल्का सा सम्पर्क बनाया। एक क्षण के लिए, उसने ध्यान केन्द्रित किया, और कहा; *''शीघ्र ही हम यहॉ एक आगन्तुक का स्वागत करेंगे।''* जवान भिक्षु ने, अवाक स्थिति में, उसको देखा। आगन्तुक ? किस तरह का आगन्तुक यहॉ आ रहा होगा ? और वह इतना अधिक सुनिश्चित कैसे था ? कोई आवाज वहॉ नहीं थी, गुफा के परे आवाजों की प्रकृति में, किसी विशेष प्रकार का परिवर्तन नहीं था। शायद लगभग दस मिनट के लिये, वे वहॉ, सीधे, ऐसे ही आशा करते हुए, बैठे रहे।

अचानक ही, चमकदार–लिखा हुआ, अंडाकार, जो गुफा का प्रवेशद्वार था धुंधला हुआ और काले धब्बे के रूप में बदल गया। *''क्या आप यहॉ हैं, साधु ?''* उच्च स्वर की आवाज ने कहा। बहुत मोटा भिक्षु, अपने कन्धे पर बोरा डाले हुए, गुफा में थोड़ा डगमगाते हुये चला। *''मैं आपके लिये, ''फाग ! साधु ऐसे अंधेरे और अगम्य स्थानों में क्यों रहते हैं ?'' ''कुछ चाय और जौ लाया हूँ,''* उसने कहा। *''ये बहुत दूर के साधु की कुटियों के लिये था, परन्तु उन्हें इसकी और अधिक आवश्यकता नहीं है और मैं इसे बहुत दूर तक वापस नहीं ले जा रहा हूँ।''* संतुष्टि की आह के साथ, उसने कंधों पर से अपना बोरा झुलाया और जमीन पर पटक दिया। थके हुए आदमी की तरह से वह जमीन पर बैठ भी गया और अपनी पीठ को एक दीवार के विरुद्ध टिका कर बैठ गया। कितनी असावधानीपूर्वक, नौजवान भिक्षु ने सोचा, वह वैसे सीधा क्यों नहीं बैठता है, जैसे हम बैठते हैं ? तब उसे उत्तर मिला; दूसरा भिक्षु अत्यधिक मोटा था, जिससे कि वह किसी भी प्रकार से पालथी मार कर जमीन पर नहीं बैठ सकता था !

बूढ़े साधु ने नरमी से कहा, *''ठीक है, क्या खबरें हैं संदेशवाहक ? क्या बाहरी महान विश्व, ठीक चल रहा है ?''* संदेशवाहक भिक्षु दुखी हुआ और घबराहट में सांस लेने लगा; *''मेरी इच्छा है कि, आप मुझे इस मोटापे के लिये कुछ दें,''* उसने कहा। *''उन्होंने मुझे चाकपोरी में बताया था कि, मुझे ग्रन्थियों सम्बन्धी (grandular) कुछ परेशानी हैं परन्तु उन्होंने मुझे ठीक करने के लिये कुछ भी नहीं दिया।''* उसकी ऑखें, गुफा के गहरे अंधियारे के लिये अब तक समायोजित हो चुकी थीं। सूर्य की चमकदार रोशनी को छोड़ देने के बाद, उसने चारों तरफ देखा। *''ओह ! मैं देख रहा हूँ कि, यहॉ आपके पास, ये नौजवान आदमी है,''* उसने कहा, *''मैंने सुना था, वह आपके पास आ रहा है। वह क्या कर रहा है ? उतना ही प्रखर जितना उन्होंने कहा था ?''*

उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना वह चलता गया, *''कुछ दिन पहले, कुछ ऊॅचाई पर चट्टानें गिरी थीं, बहुत दूर की साधुकुटीर का रक्षक, एक बड़ी चट्टान में फॅस गया और चोटी के ऊपर गिर पड़ा। पक्षी अपना पेट भर रहे हैं अब, ये ?''* वह इस विचार पर हॅसी की परतों में चला गया। *''गुफा का साधु प्यास के मारे मर गया,''* वह कहता गया, *''वहॉ केवल रक्षक और चिरस्थायी (perpetual) साधु था, जो लपेट लिया गया। कोई पानी नहीं– कोई जीवन नहीं, ए ?''*

नौजवान साधु, उन एकान्तवासी साधुओं के ऊपर विचार करते हुए, शान्त बैठा। एक अनजान व्यक्ति, जिसे मानव संसार के प्रत्येक सम्पर्क से, पृथक हो जाने का एक *'बुलावा' (call)* मिलता है। ऐसा एक *'एकान्तवासी,'* एक स्वयंसेवी भिक्षुक के साथ, पहाड़ के बगल से, चोटियों तक यात्रा करता है और एक कुटी, जो (किसी पूर्व साधु द्वारा) त्यागी गई होती है, को पा जाता है। जहॉ वह सबसे अन्दर के कमरे में, जिसमें कोई खिड़की नहीं होती, प्रवेश करता है। उसका स्वयंसेवी *'परिपालक (care taker),'* एक दीवार बनाता है ताकि, वह साधु कमरे को छोड़ कर फिर बाहर न आ सके। दीवार में, एक कटोरे को अन्दर आने–जाने देने के लिये पर्याप्त, केवल एक छोटा खुला मोखला होता है। एक मोखले के द्वारा, प्रत्येक दो दिन में एक बार, उसे एक समीपवर्ती पहाड़ी झरने से एक कटोरा पानी और मुट्ठी भर अनाज दिया जाता है। जब तक वह जीवित रहता है, एक अकेली प्रकाश की किरण भी, कभी भी, उस साधु के कमरे

में प्रविष्ट नहीं हो सकती। न ही, कभी उसके साथ बात की जाती है और न ही वह बात करता है। यहॉ अपने सूक्ष्मशरीर को अपने भौतिक शरीर से मुक्त करते हुए और काफी दूर–दूर तक सूक्ष्मलोकों में यात्रा करते हुए, जब तक वह जिन्दा रहता है, वह पूरी तरह से चिन्तन और ध्यान में रहता है।

कोई बीमारी नहीं, विचारों में कोई परिवर्तन नहीं, जो उसके मुक्त होने को सुरक्षित कर सके। केवल मृत्यु ही ऐसा कर सकती है। उस सीलबन्द कमरे के बाहर, वह परिपालक, हमेशा ये सुनिश्चित करते हुए कि, कोई भी ध्वनि, उस कैद किये गये साधु की तरफ न पहुॅच सके, रहता है और अपने स्वयं के अस्तित्व को बना कर रखता है। चाहे रक्षक (keeper) बीमार पड़े या मर जाये, चाहे वह पहाड़ी पर से नीचे गिर पड़े, तो सामान्यतः प्यास के कारण, साधु को भी मर जाना पड़ेगा। उस बिना गरम किये हुये, अत्यन्त छोटे कमरे में, कोई बात नहीं, कितनी भी कठोर ठण्ड क्यों न पड़े, वह साधु अपने अस्तित्व को बना कर रखेगा। ठण्डे पानी का एक कटोरा, हर दो दिन बाद। कभी गर्म न किया हुआ ठण्डा पानी, कोई चाय नहीं, केवल झरने से लाया हुआ ठण्डे से ठण्डा पानी, जो बर्फीली पहाड़ी चट्टानों से सीधा नीचे को दौड़ता है। कोई गर्म खाना नहीं। हर दो दिन बाद मुट्ठीभर जौ। पहले, जैसे ही पेट सिकुड़ता है, भूख की टीस बहुत भयानक होगी। प्यास की टीसें और खराब होंगी। शरीर पूरी तरह निर्जल हो जायेगा, लगभग भंगुर। खाने की कमी के कारण, मांस पेशियॉ नष्ट हो जायेंगी। पानी और व्यायाम। ज्यों ही कम पानी और कम खाना लिया जायेगा, शरीर की सामान्य क्रियाऐं, लगभग बन्द हो जायेंगी परन्तु, साधु कभी भी अपने कक्ष को नहीं छोड़ेगा। ये सब किया जाना है, प्रकृति ने उसे ये सब करने के लिये पूर्ण बनाया है। ये कमरे के एक कोंने में किया जायेगा, जहॉ समय और ठण्ड, मल पदार्थों को जमी हुई धूल के रूप में बदल देंगीं।

ऑखों की ज्योति चली जायेगी। पहले तो वहॉ, शाश्वत अन्धकार के विरुद्ध, व्यर्थ का तनाव होगा। प्रारंभिक अवस्था में, कल्पना कुछ अनजान प्रकाशों की, लगभग अधिकारिक पूर्ण प्रकाशमान दृश्यों की पूर्ति करेगी। ऑखों के तारे फैल जायेंगे और ऑखों की मांसपेशियॉ क्षीण हो जायेंगी, ताकि यदि कोई बर्फीला तूफान छत को नष्ट कर सके, सूर्य की रोशनी निश्चित रूप से, साधु की ऑखों को जला देगी मानोकि, वह तड़ित के द्वारा प्रभावित हुआ हो।

सुनाई देना, असामान्य रूप से न्यून होता जायेगा। साधु को सताते हुए, काल्पनिक ध्वनियॉ प्रकट होंगी। पतली हवा में, वार्तालाप का अपहरण प्रारंभ होता प्रतीत होगा और जैसे ही वह कुछ सुनने का प्रयास करेगा, एकदम बंद हो जायेगा। बचा हुआ अगली बार के लिये चला जायेगा। उसे पता चलेगा कि, वह बगल से या सामने के रास्ते से, या पीछे की तरफ से लुढ़क कर नीचे आ गया है। शीघ्र ही वह, दीवार के पास अपने पहुॅचने को सुनेगा। अपनी भुजा को उठाने के द्वारा वायु में थोड़ा सा भी विक्षोभ *(disturbance)*, एक तेज तूफान के रूप में सुनाई देगा। काफी पहले, उसे अपने दिल की धड़कनें, एक शक्तिशाली इंजन की धड़धड़ाहट की तरह से सुनाई देंगी। शरीर के अन्दर तरल पदार्थों के बहने की गड़गड़ाहट, अपने स्रावों (secretions) को बाहर निकालते हुए अंगों का निश्वास *(exhalation)*, और जैसे जैसे उसकी सुनने की क्षमता और अधिक न्यून हो जायेगी, मांसपेशियों के ऊपर, मांसपेशियों की, हल्की सी आपसी फिसलन, काफी तेज सुनाई देगी।

मन, शरीर के साथ अनजान चालबाजियॉ करेगा, उत्तेजक चित्र, उसकी ग्रन्थियों को परेशान करेंगे। काले कमरे की दीवारें, भीड़ बनाती हुई लगेंगी; साधु को कुचले जाने का, बहुत तेज अहसास होगा। जैसे–जैसे हवा बासी होती जायेगी, सम्पूर्ण (गहरी) सांस लेना मुश्किल होता जायेगा। प्रत्येक दो दिन के बाद, उस अन्दरवाली दीवार में से, छोटे मोखले में से, पत्थर हटाया जायेगा, जिससे कि पानी का कटोरा, मुट्ठीभर जौ, और जीवनदायिनी हवा अन्दर प्रवेश कर सके और तब उसे फिर से बन्द कर दिया जायेगा।

जब शरीर के ऊपर स्वामित्व प्राप्त हो जाता है, जब सभी भावनाओं को जीत लिया जाता है तो, सूक्ष्मशरीर का वाहन, अलाव से मुक्त होकर उठते हुए धुंए की तरह से प्रतीत होगा। पार्थिव शरीर, उदासीन रूप से, गन्दे फर्श के ऊपर पड़ा रहेगा और केवल रजततन्तु,

उन दोनों को जोड़े रहेगा। पत्थरों की दीवारों में से हो कर, वह सूक्ष्मलोक में गुजर जायेगा। वह भंगुर पथ के ऊपर घूमेगा और वह मांस की जंजीरों से मुक्त हो कर, मुक्त होने के आनन्द का सुख भोग करेगा। वह रेंग कर लामामठों में जायेगा और अतीन्द्रियज्ञानी *(clairvoyant)* और दूरानुभूतिपूर्ण *(telepathic)* लामाओं के साथ वार्तालाप करेगा। न तो दिन और न ही रात, या न ही, गर्मी या सर्दी इसे रोक सकेंगे, न ही, सबसे मजबूत दरवाजे, उसको कोई अवरोध प्रदान कर सकेंगे। विश्व के मंत्रणाकक्ष उसे हमेशा उपलब्ध रहेंगे और वहॉ (ऐसी) कोई नजर, या (ऐसा) कोई अनुभव न होगा, जिसकी गवाही, सूक्ष्मशरीर से यात्रा करने वाला न दे सके।

नौजवान भिक्षु ने, इन चीजों के ऊपर आश्चर्य किया और तब उस साधु के विषय में सोचा, जो दो हजार फुट ऊपर, पुराने कुटीर में, मृत लेटा हुआ था। मोटा भिक्षु बात कर रहा था; हमें दीवार को तोड़ना होगा और उसे बाहर खींचना होगा। मैं कुटीर में घुसा और उसके खाने के दरवाजे पर पुकारने के लिये गया। फॉग ! दुर्गन्ध। वह वास्तव में, पूरी तरह मर चुका था। हम उसे यहॉ नहीं छोड़ सकते। मैं ड्रेपुंग (Drepung) से मदद पाने के लिये, काफी दूर हूँ। ओह ठीक है, जब हम उसे बाहर लायेंगे, पक्षी प्रसन्न होंगे, वे (अपना खाना) मांस पसन्द करते हैं और उसको खाने के लिये, वे बहुत चिंचियाते हुए, कुटीर के ऊपर टिके बैठे हैं। आह मुझे, अपने पुराने घोड़े पर जाना चाहिए और हल्के या गहरे असंतोष के साथ वापस आना चाहिए; मेरे पास इन पर्वतीय यात्राओं की पहचान के लिये कोई आकृतियॉ नहीं हैं।

मोटे भिक्षु ने, व्यर्थ ही अपना एक हाथ हवा में लहराया और गुफा के प्रवेशद्वार की ओर टहलने लगा। नौजवान भिक्षु, अपने पैरों पर तनकर सीधा खड़ा हुआ, टॉग की एक चोट ने, उसे अपनी सांस के नीचे से, शब्द फुसफुसाने के लिये प्रेरित किया। उत्सुकतापूर्वक, उसने जाने वाले भिक्षु का खुले में पीछा किया। एक घोड़ा अलसाये ढंग से, यहॉ–वहॉ उगी, थोड़ी सी वनस्पतियों के ऊपर, नजर डाल रहा था। मोटा भिक्षु, बतख की तरह से चल कर, ठुमकता हुआ, उस तक आया और काफी प्रयास के बाद, उसने अपनी एक टांग, घोड़े की पीठ के ऊपर रखी। धीमे से, वे झील की तरफ गये, जहॉ दूसरे लोग और घोड़े प्रतीक्षा कर रहे थे। जबतक कि पूरा दल, दृष्टि से ओझल नहीं हो गया, नौजवान भिक्षु, उन पर टकटकी लगा कर देखते हुए खड़ा रहा। वह अति उत्साह के साथ, कराह भरते हुए मुड़ा और उसने, स्वर्ग की ऊँचाईयों को चूमती हुई, कठोर पहाड़ी चट्टान को देखा। कुटीर की दीवालों के काफी ऊपर, काफी दूरी पर, सूर्य के प्रकाश में, सफेद और लाल चमक रहा था।

काफी पुराने दिनों में, एक साधु और उसके सहायक ने, यहॉ–वहॉ छितरे हुए पत्थरों को कठिनता से श्रमपूर्वक इकट्ठा करते हुए, उनको स्थान पर रखते हुए, एक पत्थर के ऊपर दूसरा पत्थर जमाते हुए और अन्दर वाले एक कमरे को बनाते हुए, ताकि कभी भी, किसी भी प्रकार का कोई प्रकाश उस अंदरूनी हिस्से में न पहुँच सके, पूरे वर्ष में, कुटीर को बनाया था। जबतक कि वे मूल ढांचे से पूर्णतः संतुष्ट नहीं हो गये, पूरे एक साल तक, उन्होंने मेहनत की। तब स्थानीय पत्थरों से सफेदी की पुताई करने का और उस पर एकदम झकाझक (dazzling) सफेद पर्तें लगाने का, तब उसके बाद गेरुआ मिट्टी घिसने का और उसे समीपवर्ती झरने के पानी के साथ मिलाने का समय आया। ढ़ालू जमीन, जो दो हजार फुट से अधिक प्रक्षिप्त (project) हुई थी, उसकी दीवारों पर चित्रकारी करते हुए, उसे सजाते हुए ताकि वह आदमी की भक्ति का अंतिम स्मारक बने। पूरे समय के लिये साधु और उसके सहायक ने कोई शब्द नहीं कहा। तब वह दिन आया, जब नया साधु समर्पित हो गया और ईश्वर की सेवा में प्रतिष्ठित हो गया। साधु, अन्तिम बार के लिये आदमियों के विश्व को निहारता हुआ, बाहर की तरफ देखता हुआ, ल्हासा के पठार के ऊपर, खड़ा हुआ। वह धीमे से कुटीर में अन्दर प्रवेश करने के लिये मुड़ा – और अपने सहायक के कदमों पर, मर कर गिर पड़ा।

वर्षों तक, वहॉ दूसरे साधु रहते थे। अन्दर के कमरे में, दीवार के अन्दर रहे, वहॉ मरे और इस पत्थर के कमरे में से खोद कर, बाहर निकाले गये और सदैव तत्पर पक्षियों को खिला दिये गये। अब कोई दूसरा यहॉ मर गया है। प्यास से। असहाय। सहायक के चले जाने के बाद, कोई आशा नहीं थी, जीवनदायक पानी को पाने का कोई रास्ता नहीं, करने को कुछ नहीं

परन्तु लेटना और मर जाना। नौजवान साधु ने, पहाड़ी चट्टानों के गिरने से बने हुए रास्ते का पीछा करते हुए, कुटीर के नीचे की ओर, अपनी निगाह घुमाई। पहाड़ी के बगल में, नीचे की तरफ, चमकीले चराई के मैदान। एक धब्बा, ठीक रूखी चट्टान की काई में, थोड़ी रगड़ और छेद करते हुए उखड़ा। नीचे, जहॉ पहाड़ के पार्श्व जमीन को मिलते थे, वहॉ चट्टानों का एक ताजा ढेर था, चट्टानों के नीचे एक लाश।

नौजवान साधु विचारपूर्वक गुफा में प्रविष्ट हुआ, कट्टी को उठाया और ताजा पानी लाने के लिये, नीचे झील की ओर चला। कट्टी को ताजे पानी से मांजने और पानी से भरने के साथ, वह दूसरा कार्य करने के लिये तैयार था। आस–पड़ौस में झॉकते हुए, उसने निराशा में नाक भोंह चढ़ाईं। पीली पड़ी हुईं, गिरी हुई शाखायें, वहॉ नजर नहीं आ रही थीं, और न ही आसानी से मिलनेवाले कुछ पत्ते या टहनियॉ। उसे ईंधन की खोज में, मैदान में और आगे जाना पड़ेगा। वह झाड़ियों में घूमा। छोटे प्राणियों ने, खाने के लिये, अपनी कभी समाप्त न होने वाली खोजों को, अपनी पिछली टांगों पर खड़े रहते हुए और उत्सुकतापूर्वक घूरते हुए, अपने क्षेत्र में आनेवाले आक्रामक को रोक दिया। यहॉ कोई डर नहीं था, यहॉ पशु आदमियों से नहीं डरते, क्योंकि यहॉ आदमी, जानवरों के साथ सहानुभूति में, सामान्जस्य में रहता है।

अन्त में, नौजवान भिक्षु एक क्षेत्र में पहुॅचा, जहॉ एक छोटा पेड़ गिर पड़ा था। सबसे बड़ी शाखाओं को तोड़ते हुए, जो इस नौजवान साधु की शक्ति, उन्हें ऐसा करने की इजाजत दे, वह दुबारा मुड़ा और उन्हें एक–एक करके, अन्दर गुफा के प्रवेशद्वार की ओर लाया। पानी की कट्टी को लाते हुए, वह शीघ्र ही, चाय और त्सम्पा के लिये, एक बार दुबारा, फिर तैयार हुआ। बूढ़े साधु ने आभारसहित गर्म चाय की चुस्की ली। नौजवान भिक्षु, उसके (चाय) पीने के ढंग के ऊपर मोहित हुआ। तिब्बत में खाने के सभी बर्तन, जैसे कि कप और कटोरे, दोनों हाथों से पकड़े जाते हैं, ताकि भोजन, जो हमारा पोषण करता है, के प्रति अपना आदर प्रदर्शित किया जा सके। बूढ़े साधु ने, लम्बे अभ्यास के द्वारा, कटोरे को दोनों हाथों से इस तरह से पकड़ा कि, हर हाथ की उंगली, उसके अन्दर के किनारे को, एक दूसरे के साथ पकड़ ले। द्रव के झुकाव को न देख पाने के कारण, एक तरफ की उंगली गीली हो जायेगी, और वह बूढ़े आदमी को गर्म कर देगी (तब) क्या वहॉ फैलने का कोई खतरा होगा। ठण्डे पानी की दशाब्दियों के बाद, अत्यधिक तेजी से गर्म चाय की प्रशंसा करते हुए, अब वह संतुष्टि के साथ वहॉ बैठा।

''ये अजीव है,'' उसने कहा, *''कि नितान्त धर्मपूर्वक साठ साल से अधिक समय के बाद, मैं अब गर्म चाय की अभिलाषा रखता हूॅ। मैं अभिलाषा रखता हूॅ गर्म सुखदायक चाय की, जो तुम्हारे द्वारा लायी जायेगी– क्या तुमने ध्यान दिया कि, यह हमारी गुफा की हवा को किस प्रकार गर्म रखती है ?''*

नौजवान साधु ने तरस खाते हुए, उसको देखा। ऐसी छोटी अभिलाषायें, इतने छोटे सुख। *''क्या आप कभी बाहर नहीं आये, आदरणीय ?''* उसने पूछा।

''नहीं, कभी नहीं,'' साधु ने जवाब दिया। *''यहॉ मैं हर पत्थर को जानता हूॅ। यहॉ दृष्टि का चला जाना, मुझे कोई बड़ा कष्ट नहीं देता, परन्तु बाहर कोई भी जोखिम उठाना, जहॉ बड़ी–बड़ी चट्टानें और हड़बड़ियॉ हैं– वह एक दूसरी बात है ! मैं झील में गिर सकता था और किनारे से परे तैर भी सकता था; मैं इस गुफा को छोड़ भी सकता था और मैं अपने कदमों को दुबारा ढूंढने में असमर्थ था। ''*

''आदरणीय,'' नौजवान भिक्षु ने संकोचपूर्वक कहा, *''आप यहॉ इस न पहुॅच सकने योग्य गुफा तक, इतनी दूरी तक, कैसे पहुॅचे, क्या आपको यह अचानक ही मिल गई ?''*

''नहीं, मैं नहीं,'' बूढ़े आदमी ने जवाब दिया। *''जब दूसरे विश्व के आदमियों ने मेरे साथ (अपना काम) समाप्त किया, वे मुझे यहॉ लाये। उन्होंने ये गुफा विशेष रूप से मेरे लिये बनाई !''* वह अच्छी तरह से यह जानते हुए कि, इसका उसके सुननेवाले पर क्या प्रभाव पड़ेगा, संतुष्टिपूर्ण मुस्कान के साथ वापस बैठा। नौजवान भिक्षु नाचने लगा और लगभग पीछे की तरफ गिर गया, उसे इतना अधिक आश्चर्य हुआ। *''बनाई, आपके लिये ?''* वह बुदबुदाया, *''परन्तु वे इस पहाड़ के अन्दर, ऐसा छेद किस प्रकार काट सके ?''*

बूढ़ा आदमी प्रफुल्लता के साथ मन्द–मन्द मुस्कुराया। *''दो आदमी मुझे यहॉ लाये,''* उसने कहा, *''वे मुझे यहॉ एक प्लेटफार्म पर लाये, जो हवा में उड़ता था, जैसे कि मानो चिड़ियॉ उड़ती हैं। यह शोररहित था– चिड़ियों की तुलना में अधिक शोररहित, क्योंकि वे चिंचियाती हैं; मैं उनके पखों की फड़फड़ाहट सुन सकता हूँ, क्योंकि वे हवा को पीटती हैं। मैं उनके पंखों को, जैसे ही हवा उनमें हो कर सरसराती है, सुन सकता हूँ। ये चीज, जिसमें मैं आया, इतनी शान्त थी, मानो कि छाया। ये बिना प्रयास के हवा में उठी, वहॉ कोई बहाव नहीं था, चाल का कोई अनुभव नहीं। दो लोगों ने मुझे यहॉ उतार दिया।''*

''परन्तु यहॉ क्यों, आदरणीय ?'' नौजवान भिक्षु ने प्रश्न किया।

''क्यों ?'' बूढ़े आदमी ने उत्तर दिया। *''क्यों ? ठीक, लाभों के बारे में सोचो। ये व्यापारियों के रास्ते से कुछ सौ गज दूर है और इसलिये व्यापारी मेरे पास सलाह लेने के लिये या आशीर्वाद पाने के लिये आते थे और वे मुझे जौ (barley) देते थे। ये दो लामामठों की ओर जानेवाली और सात छोटी कुटियों की पगडण्डियों के समीप है। मुझे यहॉ भूखा मरने की आवश्यकता नहीं पड़ी। मुझे यहॉ खबरें मिलतीं रहीं। लामा (मिंग्यार डोंडुप) मुझसे मिलने आते थे, वे मेरे जीवन के ध्येय (mission) को जानते थे– और वे तुम्हारे जीवन के ध्येय को भी जानते थे !''*

''परन्तु, श्रीमान्,'' नौजवान भिक्षु फिर भी हठ करता रहा, *''जब गुजरनेवालों ने एक गहरी गुफा देखी, जहॉ इससे पहले कभी कोई नहीं रहता था, निश्चितरूप से इसने एक आश्चर्यजनक उत्तेजना (पैदा) की होगी।''*

''नौजवान,'' साधु खुशी से हॅसा; *''तुम यहॉ आसपास रहे हो, क्या तुमने यहॉ और पानी के पास के बीच में कोई गुफायें देखीं ? नहीं ? यहॉ नौ से कम नहीं हैं। तुम गुफाओं में अभिरुचि नहीं रखते थे, इसलिये तुमने उन्हें नहीं देखा।''*

''परन्तु ये गुफा दो आदमियों द्वारा कैसे बनाई गई, इसे बनाने में महीनों लगे होंगे !'' नौजवान आश्चर्यचकित था। *''जादू के द्वारा, जिसे वे आण्विक विज्ञान (atomic science) कहते थे,''* बूढ़े साधु ने धैर्य के साथ जवाब दिया; *''एक आदमी उड़ते हुए प्लेटफार्म के ऊपर बैठा और (उसने), ये देखते हुये कि वहॉ कोई देखनेवाला तो नहीं है, आसपास देखा। दूसरे ने, अपने हाथ में एक छोटा औजार पकड़ा, वहॉ भूखे दैत्यों के गरजने जैसी आवाजें हुईं और इसप्रकार, जैसे मुझे बताया गया – केवल दो प्रकोष्ठों के रूप में इसको छोड़ते हुए, सारी चट्टानें भाप बन कर उड़ गईं। मेरे अन्दर के प्रकोष्ठ में, काफी कम पानी का एक रिसाव (trickle) है, जो मेरे कटोरे को एक दिन में दो बार भर देता है। यह मेरी आवश्यकताओं के लिये पर्याप्त है, और ये इसप्रकार व्यवस्थित किया गया कि, मुझे पानी के लिये झील तक नहीं जाना पड़े। यदि मेरे पास जौ नहीं होते– जैसाकि कई बार, समय–समय पर हुआ है, मैं काई, जो मेरी अंदर की गुफा में उगती है, को खाता था। ये सुखद नहीं है, परन्तु ये तब तक जीवन को संरक्षित करती है, जब तक कि मैं दोबारा जौ नहीं पा जाऊँ।''*

नौजवान भिक्षु, अपने पैरों पर खड़ा हुआ और गुफा की दीवार, जो दिन के उजाले के सबसे समीप थी, की तरफ चला। हॉ, चट्टान कुछ विशेष, लुप्तप्रायः (extinct) ज्वालामुखियों की गुफाओं जैसी, जो उसने चॉग तॉग के उच्चदेशों (high lands of Chang Tang) में देखे थे, दिखाई देती थी। चट्टान ऐसी दिखती थी, मानो ये पिघला कर ठण्डा करने के बाद, किसी खुरदरेपन या प्रक्षेप के बिना, कॉच की कड़ी सतह में डुबाई गई हों।

सतह पारदर्शी दिखाई देती थी और इसकी स्पष्टता में से, प्राकृतिक चट्टान की सीमाओं, धारियों, और यहॉ–वहॉ चमकती हुई सोने की नसों को, देखा जा सकता था। एक बिन्दु पर, उसने देखा, सोना पिघला हुआ है और उसने, दीवार के नीचे की तरफ, एक गाढ़े शरबत (syrup) के रूप में, बहना शुरू कर दिया है, तब वह ठण्डा हुआ और उस कॉच के द्वारा, जो सिलिकोन डाईऑक्साईड (Silicon dioxide) के ठण्डे होने की प्रक्रिया के बीच, उन परतों से, जो रवा बनाने में असमर्थ थीं, बना था, ढ़क दिया गया। इसलिये गुफा की दीवारें प्राकृतिक कॉच की थीं !

परन्तु यहॉ घरेलू कर्तव्य (domestic duties) किये जाने थे; बातें करने के लिये समय नहीं था। फर्श को साफ किया जाना था, पानी लाना था और जलाऊ लकड़ी को उचित आकारों में तोड़ना था। नौजवान भिक्षु ने, घिसटती हुई शाखा को पकड़ा और बिना किसी विशेष प्रयास के व्यवस्थित रख दिया। घर का काम ऊब पैदा करनेवाला था ! सावधानीपूर्वक, उसने अपने सोने के स्थान को झाड़ कर साफ किया, वह अभी भी सावधानीपूर्वक, साफ करते हुए, प्रवेशद्वार की तरफ मुड़ा। उसकी साफ करती हुई शाखा ने फर्श के ऊपर, एक छोटे ढ़ेर को टक्कर मारी, उसे वहॉ से हिला दिया, और उसके नीचे से एक भूरी सी–हरी सी कोई चीज निकली, अनावरित हुई। नौजवान भिक्षु, यह आश्चर्य करते हुए कि वह वहॉ कैसे आया, उभरते हुए पत्थर को हटाने के लिये झुका। उसने चीज को उठा लिया और एक अत्यधिक खुशी की चीख के साथ उछल पड़ा; ये पत्थर नहीं था, ये क्या था ? उत्सुकतापूर्वक, उसने चीज के ऊपर निगाह गढ़ाई और उसे एक तीली के साथ खरोंचा। ये खनकते हुए लुढ़क गई। उसने उसे उठाया और उसके साथ तेजी से बूढ़े साधु की तरफ गया। *''आदरणीय !''* उसने कहा, *''अपराधी जहॉ लेटा था, वहॉ उसके नीचे, मैंने एक अजीब चीज की खोज की है।* बूढ़ा आदमी, लड़खड़ाता हुआ, अन्दर के प्रकोष्ठ से बाहर आया *''मुझे इसका वर्णन करो,''* उसने आदेश दिया।

'ठीक है,' ''नौजवान भिक्षु ने कहा, *''मेरी दोनों मुट्ठियों को पकड़ने के लिये, ये इतना बड़ा कि, एक थैले जैसा दिखाई देता है। ये चमड़े का है या किसी अन्य प्रकार की जानवर की खाल का।''* उसने इसको हाथ से टटोला, *''और इसकी गर्दन के पास एक डोरी है। मैं एक तीखा पत्थर खोजूँगा।''* वह तेजी से गुफा के बाहर गया और उसने एक नुकीले पत्थर को उठाया। लौटते हुए, उसने थैले की गर्दन के चारों ओर, चीज को देखा। *''बहुत कठोर,''* उसने व्यक्त किया। *''पूरी चीज, नमी के साथ पतली है और अभी भी फफूंद से ढ़की हुई है, आह ! मैंने इसे काट दिया है।''* सावधानी से उसने थैले को खोला और उसके सामान को अपनी पोशाक के घेर पर औंधा कर दिया। *''सोने के सिक्के,''* उसने कहा, *''मैंने इसके पहले धन कभी नहीं देखा है, केवल इसके चित्र देखे हैं। रंगीन कॉच के चमकते हुए टुकड़े। आश्चर्य करता हूँ कि ये किसलिए हैं ? और यहॉ सोने की पॉच अंगूठियॉ हैं, जिन पर कॉच के छोटे टुकड़े जड़े गये हैं।''*

''मुझे उन्हें महसूस करने दो'' साधु ने आदेश दिया। नौजवान भिक्षु ने अपनी पोशाक उठाई और वरिष्ठ के हाथ को छोटे से ढ़ेर की ओर पहुँचने के लिये निर्देशित किया। *''हीरे,'' साधु ने कहा। ''लाल– मैं उन्हें कंपनों के द्वारा बता सकता हूँ– और ..... ''* जैसे ही उसने धीमे से पत्थरों के ऊपर उंगली फिराई, बूढ़ा आदमी शान्त हो गया, अंगूठियॉ और सिक्के। अन्त में, उसने एक लम्बी सांस खींची और टिप्पणी की, *''हमारे अपराधी ने इनको चुराया होगा, मैं अनुभव करता हूँ कि ये भारतीय सिक्के हैं। मैं उनमें बुराई देखता हूँ। ये बहुत अधिक बड़ी राशि का धन हैं।''* उसने एक क्षण के लिये, शान्ति के साथ आश्चर्य किया और तब सहसा कहा, *''उन्हें ले लो, उन्हें ले लो और झील के सबसे गहरे हिस्से की ओर, जितना दूर तुम फैंक सकते हो, फैंक दो। यदि हम उन्हें यहॉ रखते हैं, तो वे बुराई लायेंगे। उनमें कामना, हत्या और दुख है। उन्हें जल्दी से ले लो !''* ऐसा कहते हुये, वह मुड़ा और धीमे से अन्दरवाले प्रकोष्ठ में वापस रेंग गया। नौजवान साधु ने उन चीजों को चमड़े के थैले में वापस इकट्ठा किया और गुफा के बाहर की तरफ, झील की तरफ चला। पानी के किनारे, एक सपाट चट्टान पर, उसने चीजों को फैलाया और उत्सुकता के साथ उनकी परीक्षा की, तब एक सोने का सिक्का लेते हुये, उसने उसे उंगली और अंगूठे के बीच में रखा और उसे बलपूर्वक फेंका, ताकि वह, तरंग से तरंग पर उछलता कूदता, अन्तिम छपाक की ध्वनि करता हुआ, पानी में नीचे डूब गया। सिक्के के बाद सिक्का चलता गया। तब अंगूठियॉ और पत्थर, जबतक कि कुछ भी शेष नहीं रहा।

अपने हाथों को धोते हुये, वह मुड़ा और आश्चर्य के साथ मुस्कुराया, एक बड़ी, मछली–खानेवाली चिड़िया, उस खाली थैली को लेकर उड़ चुकी थी और दूसरी दो चिड़ियॉ,

गरमा–गरम उद्यम में पीछे पड़ी थीं। मृतकों के लिये गाये जानेवाले पाठ में से एक पद्य को गुनगुनाते हुए, नौजवान साधु पीछे मुड़ा और उसने अपना रास्ता वापस गुफा की तरफ लिया– और गृहकार्य।

परन्तु, गृहकार्य कभी भी सदा के लिये समाप्त नहीं होते। समय आया जबकि नौजवान साधु ने, अच्छी तरह संजोई हुई टहनियों से भरी हुई शाखा को, जिसे वह झाड़ू के रूप में उपयोग कर रहा था, एक तरफ रख दिया। समय आया, जब वह अपनी ओर प्रशंसा के भाव से, देख सकता था और फर्श पर साफ बालू को, मंदी आग के पास लकड़ियों के एक ढ़ेर को, पानी से भरी हुई टंकी को देख सकता था और जब वह एक प्रतीक के रूप में, कि उस दिन का पूरा गृहकार्य समाप्त हो चुका था, अपने हाथों को आपस में रगड़ सकता था। अब समय आया जब नौजवान की, सजग स्मृति कोशिकायें (alert memory cells), जानकारी को प्राप्त करने और उसे भण्डारित करने के लिये तैयार थीं।

बूढ़ा साधु, अन्दर के प्रकोष्ठ में से हिलता हुआ आया। नौजवान भिक्षु की अनुभवहीन निगाहों के लिये भी, बूढ़ा आदमी स्पष्टरूप से असफल हो रहा था। धीमे से साधु ने अपने आपको जमीन पर व्यवस्थित किया और अपने बाजू (lobe) को अपने आसपास व्यवस्थित किया। नौजवान आदमी ने, आगे बढ़ते हुए कटोरा लिया और उसे ठण्डे पानी से भर दिया। सावधानीपूर्वक, उसने उसे बूढ़े आदमी के बगल में रख दिया और उसके हाथ को किनारे की तरफ निर्देशित किया ताकि, वह उसकी सही स्थिति जान सके। तब वह भी जमीन पर बैठा और उसने अपने वरिष्ठ के बोलने की प्रतीक्षा की।

चूँकि बूढ़ा आदमी बैठा और उसने अपने विचारों को व्यवस्थित ढंग से तैयार किया, कुछ समय के लिये, वहॉ कोई आवाज नहीं थी। तब, काफी खॉसते और खँखारते हुए और अपने गले को साफ करते हुए, उसने प्रारम्भ किया। मादा सो गई, और तब मैं सोया। परन्तु मैं लम्बे समय के लिये नहीं सोया। वह भयानक रूप से खर्राटे भर रही थी और मेरा सिर टीस मार रहा था। ऐसा महसूस हुआ कि, मेरा दिमाग सूज रहा था और मेरी खोपड़ी के ऊपरी भाग को बाहर की ओर धकेलने की कोशिश कर रहा था। तब मेरी गर्दन के खून की कोशिकाओं की जोरदार धुनाई हुई और मैंने खुद को लगभग मृत्यु की कगार पर महसूस किया। तब वहॉ खर्राटों की गति में कुछ परिवर्तन हुआ, एक पैर की चहल कदमी की आवाज, और सहसा एक उल्लेखनीय पुकार के साथ, मादा अपने पैरों पर उछल पड़ी और मेरी बगल की तरफ दौड़ी। वहॉ से खनकने और बजने की और तरल पदार्थों, जो मेरे अन्दर बह रहे थे, के दौड़ने की आवाजें आईं, लय भिन्न हो गयी। एक या दो क्षण में, मेरे मस्तिष्क के झटके समाप्त हो गये। मेरी गर्दन का दवाब समाप्त हुआ और काफी समय तक, कटी हुई हड्डियों के किनारे का संघर्ष और झंकार, नहीं हुई।

मादा ने, काफी समय तक, हड़बड़ी के साथ, कॉच से कॉच को और धातु से धातु को बजाते हुए, चीजों को इधर–उधर किया किया। जब वह गिरी हुई पुस्तक को उठाने के लिये झुकी, मैंने उसकी चीखने की आवाज सुनी। फर्नीचर, जिसे एक नई स्थिति के लिये, फर्श पर खिसकाया गया था, की कोई चीज खोली गई। जैसे ही उसके पीछे का दरवाजा खिसका कर बन्द किया गया, मैंने सरकाने और झनझनाने की आवाज सुनी। तब गलियारे में नीचे की ओर, उसके कदमों की मन्द पड़ती हुई आवाज आई। मैं वहॉ लेटा रहा और (मैंने) उस सबको सोचा, जो मेरे साथ हो चुका था। मुझे वहॉ लेटना पड़ा, क्योंकि मैं हिल नहीं सकता था ! निश्चितरूप से, मेरे दिमाग में कुछ किया गया था; मैं अधिक सजग था। मैं अधिक स्पष्टता से सोच सकता था। पहले ही, वहॉ काफी भ्रमित विचार चल रहे थे जो, क्योंकि मैं उन्हें तीखे फोकस में लाने में असमर्थ रहा था, मैंने उन्हें अपने मन के अज्ञात भाग में कहीं धकेल दिया था। अब, सभी विचार ऐसे स्पष्ट थे, मानो पर्वतों से पानी का झरना।

मैंने पैदा होने को याद किया। विश्व के सम्बन्ध में मेरी पहली नजर, जिसमें मैं असावधान किया गया था। अपनी मॉ का चेहरा। जन्म कराने में सहायता देने वाली औरत का बुद्धिमान चेहरा। बाद में, मैंने पिता के द्वारा मुझे लिया जाना, नया पैदा हुआ बच्चा, यद्यपि वह

मुझसे डरे हुये थे– पहला नवजात बच्चा, जो उन्होंने देखा था। मुझे उनके चेहरे का डरा हुआ भाव, और इतने लाल और झुर्री पड़े चेहरे के ऊपर उनकी दुख भरी निगाहें, अभी याद आया। तब प्रारम्भिक बचपन के दृश्य मुझे याद आये। एक बेटा, जो पुजारी बनेगा और उनके परिवार को सम्मान दिलायेगा, जिसे पाने की चाह, मेरे माता–पिता में हमेशा से थी। स्कूल, और फर्श पर बैठ कर, स्लेट के टुकड़ों के ऊपर लिखती हुई, हमारी पूरी भीड़। भिक्षु शिक्षक, एक से दूसरे की ओर जाते हुये, किसी की प्रशंसा करते, और किसी को झिड़की देते हुये, और मुझे यह कहते हुये कि, यदि मैंने अच्छा किया तो मैं लम्बा टिकूँगा और मैं अपने साथियों की तुलना में, अधिक सीख पाऊँगा।

मेरी याददाश्त पूरी थी, मैं चित्रों को, जो भारतीय व्यापारियों द्वारा लाई गई पत्रिकाओं में दिखाई दिये थे, चित्र जिनको मैं जानता भी नहीं था, और जो मैंने देखे, आसानी से याद कर सकता था। परन्तु स्मृति दो धार वाला उपकरण है; मैंने पूरे विस्तार के साथ, उस प्रताड़ना को याद किया, जो चीनी हाथों ने मुझे दी थी। क्योंकि मैं पोटाला के कागजों को ले जा रहा था, चीनियों ने सोचा कि, वे राज्य के रहस्य थे और इसलिये उन्होंने मेरा अपहरण किया और उनके बारे में उगल देने के लिये, मुझे प्रताड़नायें दीं। मैं, मात्र एक विनम्र पुजारी, जिसकी सबसे अधिक रहस्यमय जानकारी थी कि, लामा कितना अधिक खाते हैं।

धातु के घिसने की आवाज के साथ, दरवाजा खिसका कर खोला गया। अपने विचारों में डूबे होने के कारण, मैंने गलियारे में से आते हुए, समीप पहुँचते हुए कदमों की आवाज को नहीं सुना था। एक आवाज ने पूछा, *''अब आप कैसे हैं ?''* और मैंने अपने अपहरणकर्ता को अपने बगल से खड़े हुए महसूस किया। जैसे ही वह बोला, उसने अपने आपको, अजनबी युक्तियों के साथ, जिनसे मैं जुड़ा हुआ था, व्यस्त कर दिया। *''अब आप कैसे हैं ?''* उसने दुबारा पूछा।

''अच्छा,'' मैंने जवाब दिया, *''परन्तु उन सभी अजनबी चीजों के ऊपर दुखी, जो मेरे साथ घट चुकीं थीं। मैं बाजार में चौराहे पर खड़े, एक बीमार याक की तरह अनुभव करता हूँ!''* वह हँसा और मुड़ कर कमरे के दूसरी तरफ, दूर चला गया। मैं पृष्ठों के पलटे जाने की, भूल न किये जाने योग्य ध्वनि को, कागजों की सरसराहट को, सुन सकता था।

''श्रीमान्!'' मैंने कहा, *''एक एडमिरल (Admiral) क्या होता है ? मैं बुरी तरह परेशान हूँ। और एक एडजूटेन्ट (Adjutant) क्या होता है ?''* ''वह एक भारी पुस्तक, या कम से कम वह, जो पुस्तक की तरह प्रतीत हुई, के पास बैठा और मेरी तरफ आया। *''हाँ,''* उसने, अपनी आवाज में करुणा के साथ, जवाब दिया। *''मैं तुम्हारे दृष्टिकोण से कल्पना कर सकता हूँ कि, हमने तुम्हारे साथ बुरी तरह व्यवहार किया है।''* वह हिला और मैंने उसे इन अजनबी धातु की बैठकों (seats) में से एक को, खींचे जाते हुए सुना। जैसे ही वह उस पर बैठा, वह खतरे के साथ चटकी। *''एक एडमिरल,''* उसने मनोरंजन के साथ कहा। *''ठीक है, ये एक स्पष्टीकरण है और एक जो तुम्हें बाद में मिलेगा, परन्तु अभी हम तुम्हारी तात्कालिक उत्सुकता को शान्त कर दें। तुम एक जहाज के ऊपर हो, जो अंतरिक्ष में यात्रा करता है, अंतरिक्ष का समुद्र, जैसा हम इसे कहते हैं, क्योंकि जिस गति पर हम यात्रा करते हैं, इतनी तेजी के साथ, अंतरिक्ष में बहुत कम पदार्थ मिलते हैं, ऐसा लगता है मानो कि पानी का सागर। क्या तुम समझ गये ?''* उसने पूछा।

मैंने इसके सम्बन्ध में सोचा और– हाँ– और मैं अपनी प्रसन्नता की नदी के और खालों वाली नाव के, जो उस पर यात्रा करती हैं, विचार के द्वारा ये समझा। *''हाँ, मैं जानता हूँ,''* मैंने प्रत्युत्तर दिया। *''तब ठीक है,''* उसने जारी रखा, *''हमारा जहाज इस समूह में से एक है। ये उन सबमें सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। इसको शामिल करते हुये, हर एक जहाज – पर एक कप्तान होता है, परन्तु एडमिरल वह है, हम कहें कि, जो सभी कप्तानों का कप्तान होता है। इनके लिये हमारा शब्द, एडमिरल है। अब हमारे अन्तरिक्ष नाविकों के अतिरिक्त, जहाज पर हमारे पास सैनिक होते हैं और एक वरिष्ठ सैनिक अधिकारी का, एडमिरल के सहायक के रूप में कार्य करना, सामान्य है। हम ऐसे सहायक को एडजूटेंट कहते हैं। इसे तुम्हारे अपने शब्दों में*

कहने के लिये, मठाध्यक्ष के साथ एक पुरोहित होता है, जो बड़े–बड़े निर्णयों को अपने वरिष्ठ के ऊपर छोड़ते हुये, सारे सामान्य कार्य करता है।''

ये मेरे लिये काफी स्पष्ट था; जब मेरे बंदीकर्ता, मैं इस बात के ऊपर आश्चर्य कर रहा था, मेरी तरफ नीचे को झुके और फुसफुसाये, कि :*''और कृपया मुझे अपने बंदीकर्ता के रूप में न समझें। मैं इस जहाज का वरिष्ठ शल्य चिकित्सक हूँ। फिर, तुम्हारे खुद के संदर्भ पदों में– मैं तुम्हारी चाकपोरी के वरिष्ठ चिकित्सीय लामा के समकक्ष हूँ। तुम मुझे डॉक्टर कहो, बंदीकर्ता नहीं !''* इसने मुझे, वास्तव में, आनन्दित किया, ये जानने के लिये कि, ऐसे महान आदमी की भी, अपनी चारित्रिक कमजोरियॉ होती हैं। एक आदमी, उसके समान परेशान हो जाता है कि, एक अज्ञान अदने से (जैसा उसने मुझे कहा था) आदमी ने उसे बंदीकर्ता कहा। मैंने उसे हास्य के साथ प्रस्तावित किया, इसलिये मैंने दब्बूपने से जवाब दिया, *''हॉ, डॉक्टर।''* मेरा इनाम था, अत्यधिक आभारयुक्त नजर, और उसके सिर की एक आनन्ददायक हामी।

कुछ समय के लिये, वह कुछ उपकरणों के साथ कार्य करता रहा, जो मुझे अपने सिर से जुड़े हुये प्रतीत हुये। अनेक सामंजस्य बढ़ाये गये, तरलों का प्रभाव बदला गया, और अनजान चीजें, जिन्होंने मेरी खोपड़ी में खुजलाहट छोड़ दी। कुछ समय के बाद उसने कहा, *''तुम तीन दिन तक आराम करोगे। उस समय तक हड्डियॉ जुड़ जायेंगी और जबरदस्ती स्वस्थ कराई हुई वे, ठीक से, अपने रास्ते पर आ जायेंगी। तब, बशर्ते जैसा हम आशा करते हैं, तुम ठीक होगे, हम तुमको वापस परिषद के प्रकोष्ठ में ले चलेंगे और अनेक चीजें दिखायेंगे। मैं नहीं जानता कि, क्या एडमिरल आपसे बात करना चाहेंगे, यदि वे चाहते है, डरना मत। उनसे ठीक वैसे ही बात करना, जैसे मेरे साथ करते हो।''* अफसोस के साथ, *''या अधिक विनम्रता के साथ, पश्चवर्ती विचार के रूप में, उसने जोड़ा !''* उसने मुझे मेरे कन्धे पर एक हल्की सी थपकी दी और कमरे के बाहर चला गया।

मैं अपने भविष्य के लिये सोचता हुआ, निश्चल रूप से वहॉ लेटा रहा। भविष्य ? एक अन्धे के लिये क्या भविष्य होता ? मैं क्या करता यदि, मुझे इस स्थान में जिन्दा छोड़ दिया गया होता या मुझे जीवित छोड़ भी दिया गया होता ? क्या मुझे भिखारियों, जो पश्चिमी दरवाजे पर भीड़ लगाये खड़े रहते हैं, की तरह भीख मांगनी पड़ेगी ? कैसे भी, उनमें से अधिकांश झूठे थे। मैंने आश्चर्य किया कि मैं कहॉ रहूँगा, मुझे खाना कहॉ से मिलेगा ? हमारा एक कठोर वातावरण था और आदमी के लिये, जिसका कोई घर न हो– अपने सिर को छिपाने का कोई ठिकाना न हो, कोई स्थान नहीं था। मैं चिन्तित हुआ और सभी घटनाओं से थक कर व्यथित हुआ और चिन्ताओं से, मैं एक चंचल नींद में गिर गया। समय–समय पर मैंने खिसकने वाले दरवाजे को खुलते हुये, और उन लोगों की उपस्थिति को भी, जो शायद ये देखने के लिये आये थे कि मैं अभी भी जिन्दा था, अनुभव किया। चुटकियों की आवाज और खुजलाहट मुझे नींद की दहलीज तक उठाने में असफल रही। कोई तरीका नहीं था, जिसमें मैं समय के पथ की गणना कर पाता। सामान्य अवस्थाओं में, हम (समय नापने के लिये) मिनटों को गिनने के लिये, अपने दिल की धड़कन का उपयोग करते हैं, परन्तु ये तो घन्टे थे, ऐसे घन्टे, जिनमें मैं बेहोश रहा था।

कुछ समय बाद, जो मुझे लम्बे अन्तराल के रूप में प्रतीत हुआ, जिसके बीच, मैं भौतिक विश्व और आत्माओं के विश्व के बीच, झूलता हुआ लगा, मैं रुखाई से, एक शीघ्र जागरूकता की ओर उठा। वे भयानक मादायें, फिर से मेरे ऊपर गिर चुकी थीं, जैसे कि मुर्दे के ऊपर गिद्ध। उनकी खिलखिलाती हुई बातचीत ने मेरे ऊपर हमला किया। उन्होंने मेरे सुरक्षा विहीन शरीर के ऊपर और अधिक हमला करने की भद्दी स्वतन्त्रता का लाभ उठाया। फिर भी, मैं उनकी भाषा नहीं बोल सकता था और न ही, मैं हिल सकता था। एक आश्चर्य ये था कि इन जैसी मादाओं की, कमजोर लिंग (weaker sex) की तथाकथित सदस्यों की, इतनी कठोर भावनायें और इतने कठोर हाथ भी हो सकते हैं। मैं दुर्बल, दोषी और उल्लेखनीयरूप से बेचारगी की अवस्था में था, फिर भी ये मादायें, संवेदनाहीन ढंग से, मेरे आसपास घूमती रहीं मानो कि मैं, पत्थर का एक टुकड़ा होऊँ। दुर्गन्धयुक्त लोशन, अनाड़ीपन से मेरे ऊपर पोते गये,

मेरी सिकुड़ती हुई खाल के अन्दर, रगड़े गये और मेरे नकुओं में से नलियॉ खींच लीं गईं और दूसरी स्थिति में, उतनी ही कठोरता के साथ बदल दी गईं। मैं आत्मा से कांप गया और आश्चर्य किया। क्या फिर से, भाग्य का दैत्यवत् झटका लगा, जिसे मैं इतनी अवमाननाओं के साथ झेलूँगा।

इन आक्रामक मादाओं के चले जाने के बाद, मुझे शान्ति मिली परन्तु बहुत थोड़े समय के लिये। तब दरवाजा खिसकाकर फिर खोला गया और मेरा अपहरणकर्ता, नहीं, मुझे *''डॉक्टर,''* कहना, याद रखना चाहिये, प्रविष्ट हुआ और (उसने) अपने पीछे के दरवाजे को बन्द किया। *''शुभ प्रभात, मैं देखता हूँ, आप जग गये हैं, ''* उसने प्रसन्नता से ऐसा कहा।

''हॉ, डॉक्टर श्रीमान्,'' मैंने थोड़े चिड़चिड़ेपन से जवाब दिया, *''यहॉ सोने की कोई संभावना नहीं है, जबकि बतियाती हुई वे मादायें प्लेग की तरह से मेरे ऊपर गिरी !''* ये उसे काफी हद तक प्रसन्न करता हुआ लगा। अब तक, अनुमानतः, क्योंकि, वह मुझे अधिक बताना प्रारम्भ कर रहा था, वह मुझसे मानव की भॉति अधिक व्यवहार कर रहा था, यद्यपि एक मन्दबुद्धि मानव की भॉति। *''हमें इन नर्सों का उपयोग करना पड़ता है,''* उसने कहा, *''ताकि तुम्हारी देखभाल की जा सके, और तुम्हें मधुर सुन्दरता के साथ, सुगन्ध देते हुये, साफ रखा जा सके। तुम्हें शक्ति दी गई है, सुगन्ध, और दूसरे दिन के लिये आराम करने के लिये तैयार किया गया है।''*

विश्राम ! विश्राम ! मैं विश्राम नहीं करना चाहता था, मैं बाहर निकलना चाहता था। परन्तु मुझे जाना कहॉ था ? जैसे ही डॉक्टर, मेरी शल्यक्रिया की गई खोपड़ी के स्थल की, जॉच करने के लिये खड़ा हुआ, मैंने, उस सबके ऊपर, जो उसने मुझे बताया था, फिर से सोचा, ये कब था ? कल ? या बीते हुये परसों ? मुझे नहीं मालूम। मैं नहीं जानता कि, एक चीज ने मुझे बहुत बुरी तरह परेशान किया था। *''श्रीमान् डॉक्टर,''* मैंने कहा, *''आपने मुझे बताया कि, मैं अंतरिक्ष में एक जहाज पर था। मेरी ये समझ, क्या ठीक है ?''*

''वास्तव में ऐसा ही है,'' उसने जवाब दिया। *''तुम इस निरीक्षण करने वाले बेड़े के सर्वोत्कृष्ट जहाज पर हो। अब हम तिब्बत के उच्च स्थानों के पहाड़ों के बीच, एक पठार के ऊपर, आराम कर रहे हैं। क्यों ?''*

''श्रीमान् !'' मैंने उत्तर दिया, *''जब मैं इन सभी अद्भुत लोगों के बीच, प्रकोष्ठ के अन्दर था, मैंने देखा कि, हम एक बड़े पत्थर के प्रकोष्ठ के अन्दर हैं; एक बड़ा, पत्थर का प्रकोष्ठ, इस जहाज के ऊपर कैसे हो सकता है ?''*

वह हॅसा मानो कि, मैंने कोई बड़ा मजाक किया हो। मुस्कुराहटों के बीच उबरते हुये, उसने कहा *''तुम जागरूक हो, बहुत सजग, और तुम ठीक हो। ये चट्टानी पठार, जिसके ऊपर ये जहाज टिका है पहले एक ज्वालामुखी के द्वारा बनाया हुआ था। इसमें गहरे–गहरे रास्ते और बड़े–बड़े प्रकोष्ठ हैं, जिनमें हो कर युगों में, बीत हुये युगों में, पिघला हुआ लावा बहता रहा है और आगे वमन किया है। हम इन रास्तों का उपयोग करते हैं, और हमने अपने खुद के उद्देश्यों के लिये, उन प्रकोष्ठों के आयतन को बढ़ा दिया है। हम इस स्थल का बहुतायत के साथ उपयोग करते हैं– विभिन्न जहाज, समय–समय पर, इसका उपयोग करते हैं।''*

''तुमको जहाज से, एक चट्टानी प्रकोष्ठ के अन्दर लाया गया था, एक चट्टानी प्रकोष्ठ के अन्दर, जहाज से लाया गया ! इसने धातु के एक चट्टानी प्रकोष्ठ के लिये, गलियारे से बाहर निकलने का प्रभाव, मुझ पर एक अजनबी प्रभाव डाला, जो मैंने प्राप्त किया। ''श्रीमान् डॉक्टर,'' मैं खुशी से चिल्लाया, *''मैं सुरंगों और चट्टानी प्रकोष्ठ को जानता हूँ; पोटाला पहाड़ के नीचे, एक बहुत बड़ा छिपा हुआ प्रकोष्ठ है, उसमें एक झील भी है।''*

''हॉ,'' उसने टिप्पणी की, *''हमारे भू–भौतिकी (geophysical) फोटोग्राफ, हमें ये दिखाते हैं। यद्यपि, हम नहीं जानते कि, तुम तिब्बती लोगों ने इनको खोज लिया है !''*

वह अपने आपको ठीक करता हुआ चला– मैं बहुत सावधान था कि, वह मेरे शरीर में, नलियों में, बहने वाले तरल पदार्थों के साथ, परिवर्तन कर रहा था। मेरे शरीर के तापमान में

स्पष्ट बदलाव दिखाई दिया और बिना मेरी जानकारी के, मेरी सॉसें मन्द पड़ गईं और गहरी हो गईं; मुझे बीच बाजार, एक कठपुतली की तरह नचाया जा रहा था।

''श्रीमान् डॉक्टर !'' मैंने उत्सुकता से टिप्पणी की, *''तुम्हारे अंतरिक्ष के जहाज हमें मालूम हैं, हम इन्हें देवताओं के रथ कहते हैं, तुम हमारे नेताओं से सम्पर्क क्यों नहीं करते ? तुम अपनी उपस्थिति को खुल कर प्रकट क्यों नहीं करते ? तुम चुपके–चुपके, लुक–छिप कर, मेरे जैसे लोगों को क्यों भगा लाते हो ?''*

सॉस लेने में तीखापन था और उससे पहले एक विराम, उसने अन्तिम रूप से जवाब दिया *''ठीक है, आह, मैं ये कहना चाहता हूँ ''* वह हकलाया, *''यदि मैं तुम्हें उस कारण को बताऊँ, जो कि तुमको, उन जलन पैदा करने वाली टिप्पणियों के प्रति, जो हम में से किसी के लिये भी, अच्छी नहीं हैं, तुमको उत्तेजित कर देगा''*

''नहीं, डॉक्टर श्रीमान,'' मैंने उत्तर दिया, *''मैं आपका बंदी हूँ, जैसे कभी मैं चीनियों का बंदी था, मैं आपको छेड़ना गवारा नहीं कर सकता। मैं अपने अशिष्ट तरीके से, चीजों को समझने की कोशिश कर रहा हूँ– जो शायद, आपकी भी इच्छा है।''*

वह अपने पैरों के साथ आसपास घूमा और स्पष्टरूप से वह यह तय कर रहा था कि, क्या किया जाना सबसे अच्छा होगा। निर्णय पर पहुँचते हुए, उसने कहा, *''हम पृथ्वी के बागवान हैं, और, वास्तव में, दूसरे अनेक आबादी वाले विश्वों के भी। कोई बागवान, अपनी पहचान या योजनाओं को अपने फूलों के साथ नहीं बतियाता, या चीजों को, मामलों को, थोड़ा सा उठाने के लिये, यदि कोई याक का गड़रिया यह समझता है कि कोई याक, जो औसत से अधिक तेज दिखाई देता है तो फिर भी, गड़रिया उसके पास नहीं जाता और न ही आदेश देता है, ''तुम मुझे अपने नेता के पास ले चलो।'' न ही वह गड़रिया, उस प्रखर बुद्धि वाले याक के साथ, मामलों पर विचार विमर्श करता है, जो स्पष्टरूप से याक की समझ के एकदम परे हैं। उन विश्वों में से किसी के, जिनका हम निरीक्षण करते हैं, रहवासियों के साथ दोस्ती करने की हमारी नीति नहीं है। हम ऐसा पिछले युगों से करते हैं और इससे सभी के ऊपर तमाम विपत्तियॉ आई हैं और इसने तुम्हारे खुद के संसार में, अपनी पागलपन्थी कहावतें, उत्पन्न कर दी हैं।''*

मैं गुस्से और तिरस्कार में नाक चढ़ा कर बोला; *''पहले आप कहते थे कि, मैं अशिष्ट निम्न श्रेणी का हूँ, और अब आप मुझे एक याक कहते हैं, या समझते हैं।''* मैंने प्रतिवाद किया। *''तब यदि मैं इतना ही नीच हूँ– तो आपने यहॉ बंदी क्यों बना रखा है ?''* उसका तीखा जवाब था :

''क्योंकि हम तुम्हारा उपयोग कर रहे हैं, क्योंकि तुम्हारे पास एक कल्पनातीत स्मृति है, जिसे हम बढ़ा रहे हैं, क्योंकि तुम किसी एक के लिये, जो तुम्हारे जीवन की लगभग समाप्ति के समय तुम्हारे पास आयेगा, ज्ञान का मात्र एक भण्डार बनने जा रहे हो। अब सो जाओ!'' मैंने सुना, या महसूस किया, क्लिक की एक आवाज, और तब अंधियारी बेहोशी ने, धीमे से मुझे आ घेरा।

अध्याय छः

असीम घन्टे, थकावट के अंदाज में, कष्ट के साथ गुजरे। मैं हैरानी के साथ जड़तापूर्वक, लेटा रहा, जिसमें यथार्थता नहीं थी और जिसमें भूत, वर्तमान, और भविष्य, एक साथ मेरे अन्दर लुढ़काये गये थे। मेरा पिछला जीवन, मेरी नपुंसकता की स्थिति, जिसमें मैं न तो हिल सकता था और न ही देख सकता था, और अपने भविष्य के लिये मेरा भयानक भय, जब मैं *''यहॉ''* से बाहर जाऊँगा– यदि मैं वास्तव में, गया। समय–समय पर मादायें आईं और उन्होंने मेरे साथ काफी आश्चर्यजनक हरकतें कीं। मेरी भुजायें मरोड़ी गईं, मेरे सिर को घुमाया गया और मेरे शरीर–रचना (anatomy) के सभी भाग, निचोड़ दिये गये, चुभाये गये, कूटे गये और गूंधे गये। आदमियों के समूह, समय–समय पर, अन्दर आये और जबतक उन्होंने मेरे सम्बन्ध में विचार किया, मेरे आसपास खड़े रहे। वास्तव में, मैं उन्हें समझ नहीं सका, परन्तु निष्कर्ष स्पष्ट था, तब भी, वे मेरे अन्दर चीजों को चिपकाते परन्तु मुझे देखने के संतोष के प्रति, तीखी चुभन के साथ मैंने मना किया। मैं हिलता रहा, हिलता रहा।

तब समय आया, जब मैं एक बार फिर से सावधान हुआ। अज्ञात घन्टों पहले जैसा, उनींदा सा, थका सा, यद्यपि, कमरे के दरवाजे को खिसकाकर खोले जाने के प्रति सावधान, मैं झपकी ले रहा था। मैं इससे परेशान नहीं हुआ। मैं, ऊन की तहों के बीच में घुसाया गया सा महसूस करते हुए, और अपने साथ ही नहीं, वल्कि, किसी और के साथ जो हुआ, उसकी भी चिन्ता न करते हुए, अन्यमनस्क (withdrawn) था। अचानक ही, मेरी खोपड़ी के चारों तरफ, फाड़ डालनेवाले तेज दर्द की एक श्रृंखला, शुरू हुई। मुझे उकसाया और कोंचा गया और एक आवाज ने मेरी खुद की भाषा में कहा, *''आह, ठीक है, अब हम उसे पुर्नजीवित करें !''* गुंजन की एक दबी हुई आवाज, जिसके प्रति मैं केवल तभी जागरूक हुआ, जब वह एक हल्की सी क्लिक की आवाज के साथ, समाप्त की गई। तुरन्त ही मैं सावधान, जिन्दा हो गया, और (मैंने) उठकर बैठने का प्रयास किया। मैं फिर से अवसाद में था, मेरे अत्यधिक आक्रामक प्रयासों ने, मेरी भुजाओं में, विल्कुल भी हलचल पैदा नहीं की। *''ये फिर से हमारे साथ है,'' एक आवाज ने कहा। ''हे ! क्या तुम हमें सुन सकते हो ?''* दूसरे ने पूछा।

''हॉ, मैं सुन सकता हूँ,'' मैंने उत्तर दिया, *''परन्तु ऐसा कैसे है कि, आप तिब्बती भाषा बोल रहे हैं ? मैंने सोचा था कि, केवल डॉक्टर महोदय ही मेरे साथ संवाद स्थापित कर सकते हैं।''* वहॉ दबी हुई हॅसी हुई; *''तुम हमारी भाषा का उपयोग कर रहे हो,''* जबाब था। *''तुम उस हर चीज को नहीं समझोगे, जो तुम्हें कही जाती है,''*

बगल से, दूसरी आवाज फूटी *''आप उसे क्या कहते हैं ?''* किसी, जिसे मैंने डॉक्टर के रूप में पहचाना था, ने उत्तर दिया, *''उसे बुलाओ ? ओह ! हमारे पास उसे पुकारने के लिये कोई नाम नहीं है, मैं उसे केवल ''तुम'' कहता हूँ।''*

''उच्चाधिकारी (admiral) *चाहते हैं कि, उसका कोई नाम होना चाहिए,''* दूसरे ने जोर डाला, *''तय करें कि, उसे क्या कहकर पुकारा जाए,''* एक काफी सजीव वार्तालाप हुआ, जिसमें अनेक नाम सुझाये गये। उनमें से कुछ, अत्यधिक अपमानजनक थे, जो ये इंगित करते थे कि, इन लोगों की निगाह में, मेरा दर्जा, उससे भी जो, हम याकों, या गिद्धों, जो मुर्दों की लाशों पर जीवित रहते हैं, को देते थे, से भी कम था। अंततः, जब उक्तियॉ काफी फूहड़ और अश्लील होती जा रही थीं, डॉक्टर ने कहा : *''अब हम इसको बन्द करें, आदमी भिक्षु है। इसलिये उसे हम यही कह कर, 'भिक्षु' कह कर बुलायेंगे।''* एक क्षण के लिये शान्ति रही, और तब हाथों से आवाजें पैदा की गईं और जिसको मैंने ठीक से, तालियों के साथ प्रशंसा के रूप में लिया *''बहुत ठीक,''* एक आवाज ने कहा, जिसको मैंने पहले नहीं सुना था, *''सर्वसम्मति से पारित किया; यहॉ से आगे, हम उसका उपनाम भिक्षु रखेंगे। इसलिये इसे अभिलेख में लिखा जाये।''*

इसके बाद में, एक असंगत वार्तालाप हुआ, जिसमें मेरी रुचि बिल्कुल नहीं थी क्योंकि, ऐसा लगा कि, ये लोग विभिन्न मादाओं के मूल्यों में कमी और उनके मूल्यों के ऊपर, विचार–विमर्श कर रहे थे और उनके आराम के श्रेणी की कोटि तक, जो उन्हें मिल सकता था, उनका मूल्यांकन कर रहे थे। शरीररचना संबंधी (anatomic) उनके कुछ इशारे, पूरी तरह से

मेरी समझ के बाहर थे, इसलिये मैंने वार्तालाप के रुख को समझने का कोई प्रयास नहीं किया परन्तु, उनके संभावित चेहरेमोहरे के सम्बन्ध में अपने दिमाग में विचार लाते हुए, अपने आपको संतुष्ट किया। कुछ लोग छोटे थे और कुछ लोग बहुत बड़े थे। अब ये एक बहुत अनजान चीज थी और जिसने मुझे बहुत अधिक परेशान किया क्योंकि, जहॉ तक मैं जानता था, पृथ्वी पर ऐसे लोग नहीं हैं, जिनके नाकनक्श और उनके आकार ऐसे हों, जैसे उन लोगों के थे।

पैरों के घिसने की आवाज से और उन अजीब कुर्सियों के खिसकने जैसी प्रतीत होने वाली आवाजों से झटका खा कर, अचानक ही मैं, वर्तमान की स्थिति में आ गिरा। आदमी उठ खड़े हुये और एक–एक कर के, कमरे के बाहर निकल गये। अंत में, वहॉ केवल एक, डॉक्टर, बचा रहा। *''बाद में,''* उसने कहा, *''हम तुम्हें, फिर से, पहाड़ों में अन्दर, परिषद प्रकोष्ठ की ओर ले चलेंगे। परेशान न हों, डरने जैसा कुछ नहीं है, भिक्षु, तुम्हारे लिये यह अनजान, अनोखा होगा, परन्तु तुम्हें कोई नुकसान नहीं होगा।''* ऐसा कहते हुये, उसने भी कमरे को छोड़ दिया और मैं फिर अपने विचारों के साथ अकेला रह गया। किसी असाधारण कारण से, मेरे सामने एक विशेष दृश्य, अपने आपको, मेरी कॉपती हुई याददाश्त को, प्रस्तुत करता रहा। मुझे हाथ पैर पसार कर, एक दीवार के विरुद्ध बांध दिया गया। चीनी प्रताड़कों में से एक, रहस्यमयी मुस्कान के साथ, मेरे पास तक पहुॅचा और उसने कहा, *''जो हम जानना चाहते हैं, उसे बताने के लिये एक अन्तिम अवसर, या मैं तुम्हारी ऑखों को नोंच लूॅगा।''*

मैंने जवाब दिया, *''मैं एक गरीब साधारण भिक्षु हूॅ, और मेरे पास बताने लायक कुछ नहीं है।''* इसके साथ ही, प्रताड़ना देने वाले उस चीनी ने, एक उंगली और अंगूठा, मेरी बांयी ऑख के कोनों में जोर से घुसा दिया और ऑख बेर की गुठली (stone) की तरह बाहर निकल आई। ये मेरे गालों के ऊपर, झूलती हुई लटकती रही। विकृत दृष्टि का दुख, बहुत भयानक था; सीधी ऑख, जो अभी भी सही सलामत थी, सीधे सामने को देख रही थी। बॉयीं ऑख, झूलते और नाचते हुये, मेरे गाल पर ठीक नीचे देख रही थी। मानसिक प्रभाव बहुत भयानक थे। तब, एक जोर के झटके साथ, चीनी आदमी ने ऑख को, स्वतंत्ररूप से तोड़ दिया और दूसरी सीधी ऑख को यही व्यवहार देने से पहले, मेरे चेहरे पर फेंका ।

मैंने याद किया, अन्त में उनकी प्रताड़ना की ताण्डवलीला कैसे संतुष्ट हुई, उन्होंने मुझे बाहर कूड़े के ढ़ेर पर फैंक दिया था। परन्तु मैं मरा नहीं था, जैसा उनका विश्वास था, रात की ठण्डक ने मुझे पुनर्जीवित कर दिया था और मैंने अन्धेपन से, लड़खड़ाते हुये, आसपड़ौस में घूमना शुरू किया, जबतक कि, आखिर में कुछ अनुभव नहीं हुआ, जो मुझे चीनी लोगों के मिशन (mission) के प्रांगण तक और अन्त में ल्हासा के शहर के बाहर ले गया। इन सब विचारों के साथ, जबतक कि, अन्तिम व्यक्ति मेरे कमरे में आये, मेरा समय का ज्ञान, पूरी तरह समाप्त हो गया, और ये कुछ हद तक मेरे लिये आरामदायक भी था। अब मैं, जो कहा गया था, उसे समझ सकता था। एक उठाने वाली युक्ति, कुछ–कुछ प्रतिगुरुत्व (antigravity) के नाम सी, प्रतिगुरुत्व के अनजान नाम सी, एक विशेष प्रकार की युक्ति, मेरी मेज के ऊपर रखी गई और ''बटन दबा कर चालू कर दी गई।'' मेज हवा में उठी, और सभी आदमियों ने उसे, दरवाजे और गलियारे में होकर बाहर की ओर मार्गदर्शन किया। ऐसा लगा कि, यद्यपि, मेज में अब कोई आभासी भार नहीं था, इसमें अभी भी जड़त्व (inertia) और संवेग (momentum) थे, यद्यपि इन सबका मेरे लिये कोई अर्थ नहीं था ! अभी भी मुझे देखभाल की आवश्यकता थी ताकि, कोई नुकसान वहन न करना पड़े।

सावधानीपूर्वक, मेज और उससे संबंधित उपकरण खींचे गये या उनकी विकृत प्रतिध्वनियों की आवाज के साथ, धात्विक गलियारे में नीचे की ओर, और विमान के बाहर अंतरिक्ष में धकेले गये। हम पहाड़ी के महाप्रकोष्ठ की तरफ दुबारा अन्दर आये। वहॉ बड़ी भीड़ थी। मुझे प्रसन्नता के दिनों में ल्हासा के कैथेड्रल के अगले हिस्से के आंगन में खड़ी हुई, लोगों की भीड़ को ध्यान दिलाती हुई, लोगों की आवाज, मेरे आसपास थी। मेरी मेज खींची गयी और अन्त में मुझे झुला दिया गया और फर्श की तरफ कुछ इंच नीचे किया गया। मेरी बगल से एक आदमी आया और वह फुसफुसाया, *''महा शल्य चिकित्सक (surgeon-general) कुछ ही क्षणों*

में तुम्हारे पास होंगे।''

मैंने वापस कहा : *''क्या आप मुझे दृष्टि नहीं देने जा रहे हैं ?''* परन्तु वह जा चुका था और मेरी प्रार्थना, अनसुनी रह गयी। मैं अपने मन में, जो हो रहा था, उस चित्र को बनाने का प्रयास करते हुये, वहॉ लेटा रहा। मेरे स्मृति में, संक्षिप्त सी झिलकियॉ थीं, जो पूर्व में मेरे पास थीं, परन्तु मैं काफी आशान्वित था कि, मुझे कृत्रिम दृष्टि प्रदान कर दी जायेगी।

चट्टानी फर्श के ऊपर, परिचित कदमों की आवाज की प्रतिध्वनि हुई। *''आह, वे तुम्हारे लिये सुरक्षा लाये हैं। क्या तुम्हें ठीक लग रहा है ?''* डॉक्टर ने, महा शल्यचिकित्सक ने पूछा।

''डॉक्टर श्रीमान्,'' मैंने जवाब दिया, *''मुझे अधिक अच्छा लगेगा, यदि आप मुझे देखने की आज्ञा प्रदान करें।'' ''परन्तु आप अन्धे हैं और आपको अन्धेपन के लिये अभ्यस्त हो जाना चाहिए था, जीवन में बहुत लम्बे समय तक, तुमको इसी अवस्था में रहना पड़ेगा।''*

''परन्तु, डॉक्टर श्रीमान्'' मैंने कुछ विचारयुक्त खीझ के साथ कहा, *''मैं इन सभी आश्चर्यों को, जो आपने मुझे वायदा किया था कि, मैं देखूॅगा, कैसे सीखूॅगा और याद करूॅगा। यदि आप, उस कृत्रिम दृष्टि के द्वारा, मुझे इससे अधिक प्रदान नहीं करेंगे ?''*

''इसे हम पर छोड़ दें,'' उसने उत्तर दिया, *''हम प्रश्न पूछेंगे और आदेश देंगे, आप ठीक वैसा ही कीजिये, जैसा आपको कहा जाता है।''*

वहॉ, मेरे आसपास की भीड़ में शान्ति नहीं, एक खामोशी छा गई, क्योंकि जहॉ भीड़ इकट्ठी हो, वहॉ शान्ति नहीं हो सकती। मैं खामोशी में, काफी तेज कदमों में, जो सहसा समाप्त हो गए, भेद कर सकता था, पहचान सकता था। *''बैठ जाइये !''* एक रूखी सी सैनिक आवाज ने आदेश दिया। वहॉ आराम से, कपड़ों को झाड़ा–पोंछा गया। सरसराहट, कड़े कपड़ों की सरसराहट, चमड़े की चटकन, और अनेक कदमों की चहल–पहल की आवाज। एक रगड़ती हुई आवाज, मानो बैठने के उन अजीब कुर्सियों (seats) में से एक को पीछे की तरफ दबाया गया हो। एक (किसी) व्यक्ति के अपने पैरों पर खड़े होने की आवाज। एक सेकण्ड या ऐसे ही समय के लिये, एक तनावयुक्त, प्रत्याशित खामोशी, उस स्थान में फैल गई और तब आवाज ने कहा।

''महिलाओ और पुरुषो,'' इसे सावधानीपूर्वक, गहरी, परिपक्व आवाज में उच्चारित किया गया, *''हमारे महा शल्यचिकित्सक ये समझते हैं कि, मूलनिवासी* (native) *के स्वास्थ्य में काफी हद तक सुधार हो चुका है, और उसे शिक्षा दी गई है, ताकि वह बिना किसी अनावश्यक जोखिम के भूतकाल की स्मृति को सजोने के लिये तैयार हो सके। इसमें वास्तव में, एक जोखिम है, परन्तु हमें इसका सामना करना चाहिये। यदि प्राणी मर जाता है, तब हम इस थकानेवाले कार्य को, दूसरे की तलाश को, फिर से शुरू करेंगे। ये मूल निवासी शारीरिक रूप से, अपने स्वास्थ्य की खराब स्थिति में हैं; इसलिये हम आशा रखें कि उसकी इच्छा शक्ति मजबूत है और जीवन के ऊपर उसकी पकड़ मजबूत है।''* मैंने अपने मांस को, अपनी भावनाओं के कठोर असम्मान के ऊपर, रेंगते हुये अनुभव किया, परन्तु आवाज कहती गई :

''हमारे बीच कुछ लोग हैं, जो मानते हैं कि हमको केवल लिखित अभिलेखों को ही, कुछ मसीहा या साधु को, जो इस उस उद्देश्य के लिये पृथ्वी पर भेजे गये है, बताना चाहिए, परन्तु मैं कहता हूॅ कि, ये अभिलेख पहले भी, अत्यधिक विश्वास करनेवाले आदरणीय लोगों को दिये गये थे, जिन्होंने उनके प्रभाव का शून्यीकरण कर दिया, क्योंकि वे अक्सर गलत समझे गये, उनका गलत अर्थ लगाया गया। मूल निवासियों ने लिखित में दी गयी सामिग्री का यह अर्थ नहीं निकालना चाहा होगा, परन्तु केवल उनके दिखावटी अर्थ को ही महत्व दिया, और बहुधा उस दिखावटी अर्थ को गलत तरह से ग्रहण किया। इसने उनके विकास को लगातार हानि पहुॅचाई है और एक कृत्रिम जाति व्यवस्था उत्पन्न कर दी है, जिसके अन्तर्गत कुछ मूल निवासी मानते हैं कि, वे उच्च शक्तियों के द्वारा, जो लिखा नहीं गया था, उसे सिखाने पढ़ाने के लिये चुने गये हैं।''

''वे बाहर अंतरिक्ष में, हम लोगों के बारे में कोई यथार्थ विचार नहीं रखते। जब हमारे गश्ती जहाज देखे गये, देखनेवालों की तरफ से, उनको विभिन्न प्राकृतिक आकाशीय चीजें या मात्र भ्रम, समझा गया, इसलिये उनकी नकल उतारी गई और उनकी समझदारी पर बार–बार

प्रश्न उठाये गये। उनका विश्वास है कि, मनुष्य को भगवान की छवि में बनाया गया है और इसलिये आदमी से बेहतर कोई दूसरा जीवन नहीं हो सकता। उनका ये पक्का विचार है कि, ये अदना सा विश्व ही जीवन का एक मात्र स्रोत है, ये नहीं जानते हुये कि काफी बड़ी संख्या में, इस पूरी दुनियॉ में जितने बालू के कण हैं, उनसे कहीं अधिक संख्या में, आबाद लोक हैं और कि, ये लोक सबसे छोटों में से और सर्वाधिक महत्वहीन है।''

''उनका विश्वास है कि, वे सृष्टि के स्वामी हैं और इस विश्व के सभी प्राणी, उनके चारे के रूप में हैं। फिर भी, उनका खुद का जीवनकाल, ऑख के झपकने के समय के बराबर ही है। हमारी तुलना में, वे एक कीट की तरह हैं, जो केवल एक दिन के लिये उत्पन्न होता है, प्रौढ़ता प्राप्त करता है, संतान उत्पन्न करता है, फिर संतान उत्पन्न करता है, और कुछ घन्टों में ही मर जाता है। हमारा औसत जीवनकाल (पृथ्वी लोक के) पॉच हजार वर्षों का है, उनका केवल कुछ दशकों का। और ये सब कुछ, महिलाओ और पुरुषो!, उनकी विशेष आस्था के कारण, और उनके दुखपूर्ण गलत विचारों के द्वारा लाये गये हैं। इस वजह से, भूतकाल में, वे हमारे द्वारा भुला–विसरा दिये गये हैं, परन्तु अब हमारे विद्वान लोग कहते हैं कि, अर्द्ध शताब्दी की अवधि में ये मूल निवासी, परमाणु के कुछ रहस्य खोज लेंगे। वे इसके द्वारा, अपने छोटे संसार को उड़ा सकते हैं। खतरनाक विकरण, अंतरिक्ष में भी जा सकते हैं और प्रदूषण का खतरा उत्पन्न कर सकते हैं।''

''जैसे आप लोगों में से अधिकांश जानते हैं, बुद्धिमान लोगों ने आदेश दिया है कि, किसी उपयुक्त मूल निवासी को पकड़ा जाये– हमने इसको पकड़ा है – और उसका मस्तिष्क सुधारा जाये, जिससे कि ये उस सबको याद रख सके, जो हम इसको पढ़ाने जा रहे हैं। ये इस प्रकार से उपचारित (treat) किया जायेगा कि, इसे यह केवल एक व्यक्ति को बता सकेगा, जिसे हम उचित समय पर, इस कार्य के साथ कि, वह इस छोटे से ब्रम्हाण्ड में, इन तथ्यों को सुननेवाले लोगों तक पहुॅचा सके और दुनियाओं, विश्वों के बाहर, दूसरे लोगों के इच्छा विचारों पर नही, विश्व में भेजेंगे। ये मूल निवासी, एक नर (male), विशेष रूप से तैयार किया गया है, जो उस संदेश का ग्रहणकर्ता होगा, जो बाद में किन्हीं दूसरों को भेजा जाना है। तनाव बहुत अधिक होगा, वह धक्कों में होकर जीवित नहीं रह सकेगा, इसलिये हम सबको, उसको शक्ति देने के सम्बन्ध में सोचना चाहिये। यदि उसका जीवन इस मेज पर खत्म हो जाये, तब हमें दूसरे के लिये, नये सिर से अपनी तलाश करनी होगी और जैसाकि, हमने समझा है, ये बहुत कष्टप्रद है।''

बेड़े के एक सदस्य ने इसका विरोध किया कि, हमको मूल निवासी को किसी अधिक विकसित देश में से लेना चाहिए था, एक वह, जिसकी अपने लोगों के बीच में ऊॅची पहुॅच हो, परन्तु हमारा विश्वास है कि, ये एक गलत कदम होता; ऐसे मूल आदमी का पढ़ाना और अपने साथियों के साथ–साथ, उसके अपनी ही तरह के दूसरों के बीच, उसका भूल जाना, तुरन्त इस अविश्वास को सुनिश्चित करेगा और हमारे कार्यक्रम को गंभीरतापूर्वक विलंबित करेगा। तुम, तुम सभी, जो यहॉ हो, भूतकाल की इस स्मृति को साक्षी देने के लिये, अनुज्ञप्त किये जा रहे हो। यह वास्तव में, विरला ही है, इसलिये याद रखो कि, दूसरों की तुलना में तुम्हारा पक्ष (favour) लिया जा रहा है।''

जब इस महान किसी ने बोलना बंद किया, उससे पहले नहीं, एक कोई अनजान, सरसराता हुआ और चटकने की आवाज करता हुआ आया। और तब एक आवाज परन्तु क्या आवाज! ये अमानवीय सुनाई देती थी, न तो ये नर की और न ही मादा की आवाज थी। इसे सुनते ही, मैंने अपने बाल खड़े होते महसूस किये और मेरे मांस में से छोटे–छोटे, दाने निकल आये।

''चूॅकि वरिष्ठ जीवविज्ञानी, न तो जलसेना और न ही थलसेना के प्रति उत्तरदायी हैं,'' इस अत्यंत दुखदायी आवाज ने कर्कश वाणी के साथ कहा, *''मैं बैठक की कार्यवाही का अनुमोदन नहीं किये जाने के, अपने इस विरोध को, लिखित अभिलेख में लाने की इच्छा भी रखता हूॅ। मेरी पूरी मीमांसा मुख्यालय को उचित समय में अग्रेषित कर दी जायेगी। अब मैं*

यहॉ स्वयं को सुने जाने की मॉग करता हूँ।'' जो लोग वहॉ इकट्ठे हुये थे, वे सभी एक प्रकार से निराश, अनमने से हॉफते हुए महसूस हुए। एक क्षण के लिये, वहॉ काफी अधिक बेचेनी हुई और तब पहला वक्ता, बोलने के लिये अपने पैरों पर खड़ा हुआ। *''इस बेड़े के एडमिरल के रूप में,''* उसने सूखी सी टिप्पणी की, *''मैं इस निरीक्षण अभियान का प्रभारी हूँ, कोई बात नहीं, हमारे असंतुष्ट वरिष्ठ जीवविज्ञानी ने जो विस्तृत तर्क प्रकट किये तथापि, एकबार हम उन तर्कों के विरोध पक्ष को फिर सुन लें।''*

''तुम जारी रख सकते हो, जीवविज्ञानी !'' धन्यवाद के किसी शब्द के बिना, किसी सामान्य औपचारिक अभिवादन के बिना, धीमे से बोलती, गुनगुनाती हुई ध्वनि जारी रही; *''मैं समय व्यर्थ गंवाने का विरोध करता हूँ। मैं विरोध करता हूँ कि, हमें इन दोषपूर्ण प्राणियों की प्रजातियों का कोई दूसरा उद्यमशील* (endeavours)*,उपयोग में लाना चाहिये। भूतकाल में, जब उनकी यह प्रजाति असंतोषजनक थी– उन्हें निर्मूल कर दिया गया था और ग्रह पर दूसरे बीज बोये गये थे। हमें समय बचाना चाहिये और काम करना चाहिए और इससे पहले कि वे, अंतरिक्ष में प्रदूषण पैदा करें, अब उन्हें पूरी तरह समाप्त कर देना चाहिए।''*

एडमिरल बीच में ही टूट पड़ा, *''क्या तुम्हारे पास और कोई विशेष सुझाव है कि, वे दोषयुक्त क्यों हैं, जीव विज्ञानी ?''*

''हॉ, मेरे पास है,'' गुस्से से जीव विज्ञानी ने टिप्पणी की। *''इस प्रजाति की मादायें, दोषयुक्त हैं। उनका प्रजनन का तरीका (fertility mechanism) त्रुटिपूर्ण है, उनके प्रभामण्डल, जो योजना बनाई गयी थी, उसको संगत (conform) नहीं बनाते। हमने इस विश्व के, अच्छे कहे जाने वाले क्षेत्रों में से एक में से, अभी हाल ही में एक (मादा) को पकड़ा था। जब हमने उसके कपड़ों को हटाया, जिनमें वह लपेटी हुई थी, वह चिल्लाई और लड़ी और जब हमने उसके स्रावों का विश्लेषण करने के लिए, जॉच का एक उपकरण उसके शरीर के अन्दर डाला – उसे पहले मिर्गी का दौरा पड़ गया और तब वह बेहोश हो गई। बाद में, फिर से सचेत हुई, उसने मेरे सहयोगियों में से कुछ को देखा और नजर ने उसे अपने विवेक, या ऐसा ही कुछ जिसको वह रखती थी, से वंचित कर दिया। हमें उसको नष्ट करना पड़ा और हमारे काम के सारे दिन बेकार हो गये।''*

बूढ़े साधु ने बोलना बंद कर दिया और पानी का एक घूँट लिया। नौजवान भिक्षु, इन चीजों के ऊपर, जो उसने आतंक के साथ सुनी थी, उन अनजान चीजों के ऊपर, जो उसके इस वरिष्ठ के साथ हुई थीं, लगभग अनजान हो कर, स्तब्ध हो कर, बैठा। उनमें से कुछ वर्णन, परिचित अनजान तरीके में थे। वह नहीं कह सका कि कैसे, परन्तु साधु की टिप्पणियों ने उसे उसमें अनोखी उत्तेजना पैदा कर दी, उत्तेजना मानोकि, दबी हुई स्मृतियॉ, फिर से जीवित हो रही हों। मानोकि, साधु की टिप्पणियॉ, एक उत्प्रेरक थीं। बूढ़े व्यक्ति ने, सावधानीपूर्वक, एक बूंद भी गिराये बिना, पानी के अपने कटोरे को, अपने बगल से रखा, अपने हाथों को आपस में जोड़ा, फिर से कहना जारी किया।

मैं मेज पर था, मैंने हर शब्द को सुना और समझा, सभी भय, और सभी अनिश्चितितायें मुझे छोड़ गईं। मैं उन लोगों को दिखाऊँगा कि, तिब्बत का पुजारी कैसे रहता है, या मरता है। मेरी स्वभाविक आतुरता ने, मुझे जोर से उत्तर देने से रोका, *''देखिए, एडमिरल श्रीमान्, आपका जीवविज्ञानी हम से कम सभ्य है, क्योंकि हम, उनको भी, जो निम्नस्तर के प्राणी कहे जाते हैं, मारते नहीं हैं। हम सभ्य लोग हैं !''* एक क्षण के लिये, पूरा समय ठहर गया। मुझे अपने पास के सभी लोगों की सांसे भी रुकी हुई दिखाईं दीं, तब, मेरे अत्यधिक आश्चर्य के अनुसार और वास्तव में झटका, वहॉ अचानक तालियों की गड़गड़ाहट गूंजी और थोड़े से लड़ाई–झगड़े भी हुए। लोगों ने अपने हाथों को एकसाथ थपथपाया, जिससे मैंने समझा कि, यह उन लोगों के बीच अनुमोदन का संकेत था। लोगों में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई, और मेरे समीप के कुछ तकनीशियन लोगों में, प्रसन्नता की चीखें गूंजी, और मेरे समीप के कुछ तकनीशियन झुके और बड़बड़ाये, *''तुम्हारे लिये अच्छा है भिक्षु, तुम्हारे लिये अच्छा है। अब और कुछ मत बोलो, अपने भाग्य को दॉव पर मत लगाओ !''*

एडमिरल, ये कहते हुए, बोला, *''मूल निवासी भिक्षु बोल चुका है। उसने मेरे संतोष के अनुसार प्रदर्शित किया है कि, वह वास्तव में एक संवेदनशील प्राणी है और उसको दिये हुये कार्य को करने में पूरी तरह से समर्थ है, और एर, मैं पूरी तरह से, उसकी टिप्पणियों का समर्थन करता हूँ और उन्हें अपने विद्वानों को भेजे जाने वाली रिपोर्ट में उनका उल्लेख करूंगा।''*

जीवविज्ञानी, कड़क कर, तेजी के साथ बोला : *''मैं इस प्रयोग से, अपने आपको हटा लेता हूँ।''* उसके साथ, उस (नर) (he), (मादा) (she) या (नपुंसक अथवा उभयलिंगी) (it) –प्राणी–ने चट्टान के प्रकोष्ठ में से, जहॉ आराम की एक सामूहिक आह थी, एक बहुत शोरदार वापसी की; स्पष्टतः वह वरिष्ठ जीवविज्ञानी अधिक पक्ष लेने वाला व्यक्ति नहीं था। किसी व्यक्ति, जिसे मैं देख नहीं सका, से चेतावनी पाने के कारण, बड़बड़ाहट धीमे–धीमे समाप्त हो गई। वहॉ पैरों के घिसने की और कागज के सरसराने की हल्की सी आवाज हुई। उम्मीदों की हवा, लगभग साकार हो रही थी।

''महिलाओ और पुरुषो,'' एडमिरल की आवाज आई, *''अब हमने आपत्तियों का और हस्तक्षेपों* (objections and interruptions) *का निराकरण कर दिया है, मैं उन लोगों के लाभ के लिये, जो इस अधीक्षण स्टेशन के लिये नये हैं, ये कुछ शब्द कहना प्रस्तावित करता हूँ, आपमें से कुछ ने, कुछ अफवाहें सुनी होंगीं, परन्तु अफवाहें कभी विश्वसनीय नहीं होतीं। मैं आपको ये बताने जा रहा हूँ कि क्या होगा, ये सब किस सम्बन्ध है, तब आप इन कार्यक्रमों* (events) *का स्वागत कर सकेंगे, जिनमें आप शीघ्र ही भाग लेनेवाले हैं।''*

''इस संसार के लोग, एक तकनीक का विकास कर रहे हैं, जो जब तक अच्छी तरह से रोकी न जाये, उन्हें समाप्त कर देगी। इस प्रक्रिया में, वे अंतरिक्ष को इतना गंदा कर देंगे कि, इस समूह के दूसरे नवजात (infant) लोकों के ऊपर (इसका) विपरीत प्रभाव पड़ेगा। हमें उसे रोकना चाहिए। जैसा आप ठीक से जानते हैं, ये और इसी समूह के दूसरे विश्व भी, विभिन्न प्रकार के प्राणियों के लिये, परीक्षण स्थल (testing grounds) हैं। जैसा कि, पौधों के साथ होता है कि, खरपतवार को उगाया नहीं जाता; प्राणी जगत में भी, एक कोई कुलीन अथवा अचेत आदमी, अव्यवस्थित हो सकता है, प्राणी जगत में किसी को कुलीन या तुच्छ मिल सकते हैं। इस विश्व के मानव, बाद के संवर्ग के (तुच्छ) होते जा रहे हैं। हमने इस विश्व पर, मानव जैसे तमाम स्टॉक को खपाया था। हम, जिन्होंने इस विश्व को, मानव जैसी जातियों के बीजों से बोया, हमको यह निश्चित कर लेना चाहिये कि, दूसरे विश्वों पर भी हमारी दूसरी प्रजातियॉ, खतरे में तो नहीं है।''

''यहॉ, हमारे सामने, इस विश्व का एक मूल निवासी है, वह एक देश के, एक उपसंभाग, जिसका नाम तिब्बत है, से है। ये एक धर्मतन्त्र (theocracy) है, अर्थात्, ये एक (ऐसे) नेता के द्वारा शासित किया जाता है, जो राजनीति की तुलना में, धर्म के आचरण को अधिक महत्व प्रदान करता है। यह देश कभी कोई आक्रमण नहीं करता। कोई दूसरे की जमीन के लिये लड़ता नहीं है। सिवाय कुछ निम्न श्रेणी के लोगों के द्वारा, जो बिना किसी अपवाद के, हमेशा ही लगातार दूसरे देशों के मूल निवासी रहे हैं, किसी का जीवन नहीं लिया जाता। यद्यपि हमको उनका धर्म, कल्पनातीत प्रतीत होता है, फिर भी वे इसे पूरी तरह जीते हैं और दूसरों को परेशान नहीं करते, और न हीं वे अपनी आस्थाओं को, दूसरों के ऊपर थोपते हैं। वे अत्यधिक शान्तिपूर्ण हैं और इससे पहले कि, वे हिंसा में सम्मिलित हों, अत्यधिक मात्रा में प्रेरणा की मॉग करते हैं। इसलिये ऐसा सोचा गया था कि, हमको एक अद्भुत स्मृतिवाला, एक मूल निवासी मिल सकता है, जिसकी स्मृति को हम और अधिक बढ़ा सकते हैं, एक मूल निवासी, जिसमें हम ज्ञान, जिसे किसी और को दिया जाना है, जिसको हम इस विश्व पर बाद में स्थापित करेंगे, डाल सकते हैं।''

''आपमें से कुछ आश्चर्य कर सकते हैं कि, हम अपने प्रतिनिधि को सीधे ही क्यों नहीं बता सकते। हम पूरे संतोष के साथ, ऐसा नहीं कर सकते क्योंकि, इसमें भूल और विक्षेप की संभावनायें हैं। ये कई अवसरों पर आजमाया जा चुका है, परन्तु कभी भी, जैसा हम चाहते थे,

वैसा नहीं हुआ। जैसा तुम बाद में देखोगे, हमने इसे एक आदमी पर, जिसको पृथ्वी के निवासी, मोसेस (Moses)[9] के नाम से जानते थे, बहुत अच्छी सफलता के साथ आजमाया था। परन्तु उसके साथ भी ये पूरा नहीं था और उसमें अनेक त्रुटियॉ और गलतफहमियॉ थीं। अब, अपने आदरणीय वरिष्ठ जीवविज्ञानी के बावजूद, हम इस तंत्र (system) को उपयोग में लाने का प्रयत्न कर रहे हैं, जिसको बुद्धिमान लोगों द्वारा निकाला गया है।''

''पृथ्वी के लाखों वर्ष पहले, जैसे ही उनकी सर्वाधिक वैज्ञानिक कुशलतायें, 'प्रकाश के वेग से अधिक' के लिये अभियान, पूर्ण हुई थीं, वैसे ही, उन्होंने, एक विधि को, जिसके द्वारा खुद आकाशीय अभिलेख (akashic records) भी देखे जा सकते हैं, पूर्णता प्रदान की। इस तन्त्र में, एक व्यक्ति, जो विशेष उपकरण के अन्दर है, वह सब देख लेगा, जो कि भूतकाल में हुआ। जहॉ तक उसके प्रभाव उसे बतायेंगे, वह वास्तव में, उन सभी अनुभवों को जियेगा; वह देखेगा और शुद्धता के साथ सुनेगा, मानोकि, वह उन पुराने बीते हुये दिनों में, जी रहा होगा। उसके लिये वह वहॉ होगा !''

''उसके मस्तिष्क से एक सीधा विशेष विस्तार, हम में से प्रत्येक को, स्थानापन्नरूप (vicariously) से, उसमें भाग लेने के लिये, योग्य बना देगा। वह– तुम– अथवा मैं, या मुझे 'हम' कहना चाहिए– अपने सभी आशयों और उद्देश्यों के लिये, इस समय में अस्तित्व में रहना बंद कर देते हैं, और जहॉ तक हमारी भावनाओं, दृष्टि, श्रवण और, मनोभावों का सवाल है, जिनके वास्तविक जीवन और घटनायें, हम अनुभव कर रहे होंगे, उन बीते हुये युगों को, हस्तांतरित कर दी जायेंगी, ठीक वैसे ही जैसे हम यहॉ, अभी, अनुभव करते रहे हैं, और जहाज और नाव के जीवन को, या कुछ छोटे गस्ती जहाजों के ऊपर के जीवन को या इस विश्व में, इसकी सतह के काफी नीचे, अपनी भूमिगत प्रयोगशाला में काम करते हुए, इस समय में होंगे।''

''मैं इसमें निहित सिद्धान्तों को पूरी तरह समझ लेने का दिखावा नहीं करता। आपमें से कुछ, इस विषय में, मेरी तुलना में अधिक जानते हैं, यही कारण है कि आप यहॉ हैं। दूसरे, अलग कर्तव्यों के साथ, मेरी तुलना में कम समझेंगे और ये उनके ऊपर निर्भर करता है, जिनको मैं इन टिप्पणियों को पहुँचा रहा हूँ। हमें ये ध्यान रखने दें कि, हम भी जीवन की पवित्रता के संबंध में कुछ आदर भाव रखते हैं। आपमें से कुछ, पृथ्वी के इस मूलनिवासी को, प्रयोगशाला के दूसरे प्राणी की भाँति, कह सकते हैं परन्तु जैसा उसने प्रदर्शित किया है, उसमें अपनी भावनायें हैं। उसमें बुद्धि है और– इसे अच्छी तरह ध्यान रखें– कि हमारे लिये, वर्तमान में, वह इस दुनियॉ का सबसे अधिक मूल्यवान प्राणी है। यही कारण है कि, वह यहॉ है। कुछ लोगों ने पूछा है, *''परन्तु ज्ञान को इस प्राणी में भरना, विश्व को कैसे बचायेगा।'' ? उत्तर है कि, ये नहीं होगा।''*

एडमिरल ने एक नाटकीय विराम लिया। स्वभाविक रूप से, मैं उसे देख नहीं सका परन्तु मैंने अनुमान लगाया कि, दूसरों ने भी इस तनाव को अनुभव किया, जो मुझे अभिभूत *(overwhelm)* कर रहा था। तब उसने कहना जारी रखा, *''ये दुनियॉ बहुत खराब है, हम जानते हैं कि ये बीमार है। हम नहीं जानते क्यों। हम इस 'क्यों' को जानने का प्रयास कर रहे*

---

9 अनुवादक की टिप्पणी : मोसेस (Moses) या मूसा (Musa) (अरबी में), एब्राहीन धर्म (Abrahimic religion) के एक पैगम्बर (prophet) हैं। हिब्रू (Hebrew) बाइबिल के अनुसार, वह पूर्व में मिस्री राजकुमार थे, जो बाद में धार्मिक नेता और न्याय के प्रणेता (law giver) के रूप में स्थापित हुए, जिन्होंने टोराह (Torah) का लेखन किया। हिब्रू में इन्हें मोसे रेबेनू (Moshe Rabbenu) भी कहा जाता है, जिसका शाब्दिक अर्थ है, मौसे –हमारा शिक्षक)। ये जूडा धर्म (Judaism) के सर्वाधिक महत्वपूर्ण पैगम्बर हैं, साथ ही ईसाई, इस्लाम, बहाई और अन्य अनेक धर्मों में ये महत्वपूर्ण पैगम्बर माने जाते हैं।

निष्कासन की पुस्तक (book of Exodus) के अनुसार, मोसेस का जन्म उस समय हुआ, जब अल्पमत में होने के कारण इजराइलियों को, जो संख्या में बढ़ते जा रहे थे, गुलाम बनाया जा रहा था। तब मिस्री फराओ (Egyptian Pharaoh) को चिंता हुई कि, वे मिस्र के दुश्मनों के साथ दोस्ती कर सकते हैं। इजराइलियों की आबादी घटाने के लिए हिब्रू बच्चों की हत्याऐं कराईं गयीं। इसलिए जब फराओ ने सभी नवजात शिशुओं की हत्या करने का आदेश दिया तो मौसेस की हिब्रू मां जोकेबेड (Jochebed) ने उसे गुप्त रूप से छिपा दिया। फराओ की पुत्री के माध्यम से, (जिसको बीथिया मिडरास (Bithia Midras) में रानी के रूप में जाना जाता है), इस बच्चे को नील नदी में पाकर गोद ले लिया गया और मिस्री राज्य परिवार के द्वारा उसका पालन पोषण किया गया। गुलामों के मिस्री स्वामी के मारे जाने के बाद (क्योंकि गुलामों का मालिक हिब्रू बोल रहा था), मौसेस लाल सागर से होता हुआ मीडियन की ओर भाग गया, जहॉ उसने होरेब के पहाड (जो उसने देवों के पर्वत के रूप में समझा) के ऊपर, एक ''जलती हुई झाड़ी,'' जो आग से जल नहीं पाई थी, के अन्दर से इसराइल के देवता का सामना किया।

ईश्वर ने, इजराइरिली लोगों को गुलामी से मुक्ति दिलाने की मांग करने के लिए, मौसेस को वापस मिस्र में भेज दिया। मौसेस ने कहा कि वह आश्वासन या बातचीत के साथ कुछ नहीं कह सकता, इसलिए ईश्वर ने आरोन (Aron) को, जो उसका भाई था, उसके प्रवक्ता (spokesperson) के रूप में नियुक्त किया। दस विपत्तियों के बाद, मौसेस ने इजराइली लोगों को, मिस्र से बाहर निकाला और लाल सागर के पास, जिसके बाद उसने अपने आपको सिनाई पहाड़ पर स्थापित कर लिया, जहां मौसेस को 10 आदेश (Commandants) प्राप्त हुए। मरुस्थल में 40 साल घूमने के बाद, मौसेस पूर्वकथित देश में मर गया। मौसेस का जीवनकाल 1391 ईसापूर्व से 1271 ईसापूर्व तक (120 वर्षों का माना जाता है)।

हैं। हमारा पहला कार्य है, यह पहचानना कि बीमारी की अवस्था अस्तित्व में है। दूसरी बात, हमें यहॉ के मानवों को समझाना चाहिए कि वे बीमार हैं। तीसरी बात, हमें उनके अन्दर इलाज कराने की इच्छा पैदा करनी चाहिए। चौथी बात, हमें शुद्धता से खोजना चाहिए कि, बीमारी की प्रकृति क्या है। पॉचवी बात, हमें एक आरोग्यकारी कारक (curative agent) उत्पन्न करना चाहिए, और छठवीं बात, हमें मानवों के पीछे पड कर, वह करने के लिये समझाना चाहिए, जो कि इलाज को प्रभावित करेगा। बीमारी, प्रभामण्डल के साथ जुड़ी हुई है। फिर भी हम खोज नहीं सकते, क्यों। कोई दूसरा आना चाहिए, इस दुनियॉ से नहीं होना चाहिए–क्योंकि क्या कोई अन्धा आदमी, अपने साथियों की बीमारियों को देख सकता है, जबकि वह भी अन्धा ही है ?''

टिप्पणियों ने मुझे काफी गहरा झटका दिया। ये मुझे विरोधाभासी (contradictory) प्रतीत हुआ; मैं अन्धा था, फिर भी मुझे इस कार्य के लिये चुना गया था। परन्तु नहीं, नहीं, मैं नहीं था; मुझे केवल ज्ञान के किसी खजाने के रूप में होना था। ज्ञान, जो दूसरे को इस योग्य बनायेगा कि, वह पूर्व व्यवस्था के अनुसार, योजना को संचालित कर सके। परन्तु एडमिरल दुबारा बोल रहा था।

''हमारा मूल निवासी, जब वह हमारे द्वारा तैयार हो जायेगा, जब हम उसके साथ पूरा काम कर लेंगे, एक स्थान को ले जाया जायेगा जहॉ वह एक लम्बे जीवन के लिए जिन्दा रह सके। जबतक कि वह इस ज्ञान को दूसरे को न दे दे, वह मरने में समर्थ नहीं होगा। उसके अन्धेपन के वर्षों के लिये और एकान्त के लिये, उसे आंतरिक शान्ति मिलेगी और ये ज्ञान, कि वह इस विश्व के लिये बहुत कुछ कर रहा है। परन्तु अब हमें उस मूल निवासी की दशा की एक अन्तिम जॉच करनी होगी और तब हम प्रारम्भ करेंगे।''

अब वहॉ विचारणीय, परन्तु व्यवस्थित, हलचल थी। मैंने लोगों को आसपास चलते फिरते अनुभव किया। मेरी मेज पकड़ी गई थी, उठाई गई, और आगे खिसकाई गई। अबतक वहॉ खनकने की और दरकने की परिचित आवाजें हुईं, जैसे कि कॉच का सामान और धातु एक दूसरे के सम्पर्क में आये हों। प्रमुख शल्य चिकित्सक, मेरे पास आया और फुसफुसाया : *''अब आप कैसे हैं ?''*

मैं मुश्किल से ही जानता था कि मैं कैसा था और कहॉ था, इसलिए मैंने ये कहते हुये, मात्र जवाब दिया, *''जो कुछ मैंने सुना है, उसने मुझे अच्छा नहीं महसूस कराया। परन्तु अभी भी मेरे पास दृष्टि नहीं है ? मैं इन आश्चर्यों को कैसे अनुभव कर सकता हूँ, जबतक कि आप मुझे दुबारा दृष्टि नहीं देंगे ?''*

''थोड़ा आराम करो,'' उसने शान्तिदायक रूप से फुसफुसाकर कहा, *''सब कुछ ठीक हो जायेगा। तुम ठीक क्षण में, सबसे अच्छे संभव तरीके से देखोगे।''*

जब कोई दूसरा व्यक्ति आया, वह एक क्षण के लिये रुका और उसको एक टिप्पणी के साथ सूचित किया, तब उसने कहना जारी रखा, *''ये वह है, जो होगा। हम तुम्हारे सिर के ऊपर इसे, जो तुम्हें एक तारों (wires) के जाल का बना हुआ दिखाई देगा, लगायेंगे। जबतक कि तुम इसके अभ्यस्त नहीं हो जाते, ये ठण्डा प्रतीत होगा। तब हम तुम्हारे पैरों के ऊपर कुछ चीजें रखेंगे, जिन्हें तुम तारों की सेंडिल कह सकते हो। हमने पहले से ही, तुम्हारी भुजाओं में हो कर तार लगा दिये हैं। तुम्हें शुरू में कुछ अटपटा अनुभव होगा और बहुत सम्भव है असुखद खुजली भी, ये शीघ्र ही समाप्त हो जायेगी और तुम्हें बाद में, आगे, कोई भौतिक असुविधा नहीं होगी। विश्वास रखो कि, हम तुम्हारे लिये, प्रत्येक संभव सावधानी रखेंगे। हमारे लिये इसका बहुत अधिक महत्व है। हम सब इसे महान सफलता देखना चाहते हैं; अर्थात् इसकी असफलता हमारे लिये, बहुत अधिक खोने के बराबर होगी।''*

'हॉ,' मैं बड़बड़ाया, *'सबसे ज्यादा नुकसान मुझे होनेवाला है, मैं अपने जीवन को खोनेवाला हूँ !'*

महा शल्य चिकित्सक खड़ा हुआ और मुझसे दूर की तरफ मुड़ा। *''श्रीमान्!''* उसने अत्यधिक आधिकारिक आवाज में कहा, *''मूल निवासी को जॉच लिया गया है और वह तैयार है। आगे बढ़ने की आज्ञा पाने की प्रार्थना की जाती है।'' ''आज्ञा दी जाती है''* एडमिरल की

गम्भीर आवाज ने जवाब दिया।*''आगे बढ़ो!''* तभी वहॉ क्लिक की एक तीखी आवाज हुई और एक आनन्दमय आवाजदार भड़ाभड़ाहट हुई। हाथों ने मुझे गर्दन के पीछे से पकड़ा और मेरे सिर को उठाया। दूसरे हाथों ने उसे, जो धातु के मुलायम तारों का थैला प्रतीत होता था, मेरे सिर के ऊपर, मेरे चेहरे के ऊपर, खींचा और तब उन्होंने मेरी ठोड़ी के नीचे टटोला। वहॉ तीन अजीब फफोले थे और धातु का थैला कसकर मेरे ऊपर लगा था और मेरी गर्दन के आसपास बॉध दिया गया था। हाथ अलग हटा दिये गये, इस बीच दूसरे हाथ, मेरे पैरों पर थे। कुछ अनोखा, चिकनाई भरा बदबूदार लोशन, उनमें लगाया गया और तब धातु के दो थैले, मेरे पैरों पर खींचे गये। मैं अपने पैरों को इसप्रकार कसे जाने व इस सबके लिये बिल्कुल अभ्यस्त नहीं था और ये वास्तव में, अत्यधिक असुखद था। फिर भी वहॉ ऐसा कुछ भी नहीं था, जो मैं कर पाता। उनकी तनाव की आशा की हवा, बढ़ रही थी।

गुफा में बूढ़ा साधु, सहसा पीछे की तरफ लुढ़क गया। लम्बे क्षणों के लिये, वह नौजवान भिक्षु, डर कर पथराया हुआ बैठा रहा, तब आकस्मिकता के कारण प्रेरित, वह क्रियाशील हुआ, अपने पैरों पर कूदा और एक चट्टान के नीचे, एक विशेष दवा के लिये, जो वहॉ ऐसी ही किसी घटना होने पर उपयोग की लिए तैयारी में रखी हुई थी, टटोला। हाथों से अत्यन्त कष्टदायी ढक्कन को खोला, उसे थोड़ा सा हिलाया, उसमें से कुछ, उस बूढ़े आदमी के घुटनों पर गिर गया और उसमें से द्रव की कुछ बूंदे, उसके भिंचे हुये ओठों के बीच, अत्यधिक सावधानी के साथ, ताकि एक बूंद भी फैले नहीं, गिरे नहीं, डाल दीं। उसने ढ़क्कन को बंद किया और कंटेनर के बगल से रख दिया। साधु के सिर को अपने हाथों में, अपनी गोदी में संभाले हुये, उसने हल्के से, बूढ़े आदमी की कनपटियों के ऊपर थपकी दी।

रंग की एक हल्की चमक धीमे से, वापस लौटी। धीमे से, कुछ चिन्ह प्रकट हुये कि उसमें सुधार हो रहा था। अन्त में, उस बूढ़े साधु ने अपने कांपते हुये हाथों को बाहर निकाला और कहा, *''आह ! तुम बहुत ठीक कर रहे हो, मेरे बच्चे, तुम बहुत ठीक कर रहे हो। मुझे थोड़ा आराम करना चाहिए।''*

''आदरणीय,'' नौजवान भिक्षु ने कहा, *''यहॉ आराम करें, मैं आपके लिये कुछ गर्म चाय बनाता हूँ, हमारे पास थोड़ी चीनी और मक्खन बचा है।''* धीमे से, उसने मुड़े हुये कम्बल को, बूढ़े आदमी के सिर के नीचे रखा और उसे पैरों से उठाया। *''मैं पानी को उबालने के लिये रख दूँगा,''* उसने, डिब्बे की तरफ, जिसमें अभी भी आधा पानी भरा था, पहुँचते हुये कहा।

बाहर ठण्डी हवा में से, आश्चर्यजनक चीजों के ऊपर, जो उसने सुनी थीं, परावर्तित होना, अनजान था, अनोखा था। आश्चर्यजनक, क्योंकि उसमें से बहुत कुछ, काफी परिचित था। परिचित, परन्तु भूला हुआ। ये स्वप्न से जगने जैसा था, उसने सोचा, केवल इसबार, स्मृतियॉ, हमेशा एक स्वप्न की तरह से धुंधली होने के बजाय, उमड़ती चली आ रही थीं। अग्नि प्रदीप्त हो रही थी। शीघ्र ही उसने अपने हाथों में भरी हुईं, थोड़ी टहनियों, छोटी पत्तियों को उछाल दिया। गहरे नीले बादल उठे और लहर बनकर हवा में छितरा गये। हवा की एक जानदार भंवर ने, पहाड़ की बगल के आसपास, धुंऐ के एक तन्तु को, नौजवान भिक्षु के ऊपर मरोड़ दिया और उसे लुढ़काते और खांसते हुये और ऑखों में से ऑसू की धारा बहाते हुए, वापस भेज दिया। अब, जब हालत सुधरी, उसने डिब्बे को, सावधानी से, तेज जलती आग के बीच में रख दिया। ये सुनिश्चित करने के लिये मुड़ते हुये, कि साधु में सुधार हो रहा था, वह गुफा में फिर से प्रविष्ट हुआ।

बूढ़ा आदमी अपनी बगल से लेटा हुआ था, स्पष्टरूप से उसका स्वास्थ्य काफी अच्छा था। *''हम कुछ चाय और थोड़ा सा जौ लेंगे''* उसने कहा, *''और तब हम विश्राम करेंगे, जबतक कि कल न हो, क्योंकि मुझे अपनी खोती हुई ऊर्जा को संरक्षित करना है, अपने काम को अधूरा छोड़ते हुये, उसे असफल नहीं होने देना है।''* नौजवान भिक्षु, अपने वरिष्ठ के बगल से, अपने घुटनों पर बैठा और उसकी शक्तिहीन अवस्था को देखा।

''आप जैसा कहते हैं, वैसा ही होगा, आदरणीय,'' उसने टिप्पणी की, *''मैं ये निश्चित करने के लिये यहॉ आया था कि आप एकदम ठीक हैं, अब मैं जौ लाऊँगा और चाय बनाने के*

बारे में देखूँगा।'' वह तेजी से, विरली आपूर्तियों को लेने के लिये उठा और गुफा के अन्त तक गया। उदास होकर उसने, थैले के तले में पड़ी हुई, शक्कर की कम मात्रा को देखा। औरअधिक उदासी के साथ, उसने मक्खन के टुकड़ों के अवशेषों की जॉच की। वहॉ चाय की आपूर्ति पर्याप्त थी, इसको केवल ईंट में से खुरचा जाना था और खराब पत्तियॉ और टहनियॉ बाहर निकालनी थीं। जौ की आपूर्ति भी पर्याप्त थी। नौजवान साधु ने, (खुद) बिना चीनी और बिना मक्खन के, काम चलाने का संकल्प किया ताकि, बूढ़े आदमी को पर्याप्त मिल सके।

गुफा के बाहर, कट्टी का पानी, प्रसन्नता से बुलबुले दे रहा था। नौजवान भिक्षु ने, चाय अन्दर डाली और इसे तेजी से हिलाया और तब उसका स्वाद अच्छा करने के लिये, सुहागे का एक छोटा टुकड़ा उसमें मिलाया। अब तक, दिन का प्रकाश धुंधला होता जा रहा था, सूर्य तेजी से डूब रहा था। यद्यपि, अभी भी करने को काफी काम बाकी था। औरअधिक पानी, और, औरअधिक जलाऊ लकड़ी लानी थी, वह पूरे दिन, किसी भी काम के लिए बाहर नहीं गया। मुड़ते हुये, उसने धुंधली होती हुई गुफा में अन्दर जाने की जल्दी की। बूढ़ा साधु उठ कर बैठा हुआ था और अपनी चाय की प्रतीक्षा कर रहा था। उसने थोड़े से जौ, उसके कटोरे में छिड़क दिये, मक्खन की थोड़ी सी थपकी उसमें डाली, और तब उसने, नौजवान भिक्षु के द्वारा, कटोरे को चाय से पूरा भरने के लिए कटोरे को पकड़ा। *''ये उसकी तुलना में, अधिकतम ऐश (luxary) है, जो मुझे साठ से अधिक सालों में मिला,''* उसने प्रसन्नता से कहा। *''मैं सोचता हूँ कि, मुझे इतने वर्षों के बाद, कुंछ गर्म चीज पाने के लिये, क्षमा किया जा सकता है। मैं अपने आप, कभी भी आग की व्यवस्था नहीं कर सकता था, (मैंने) केवल एक बार इसकी कोशिश की थी और अपनी पोशाक में आग लगा ली थी। हॉ, मेरे शरीर पर उन लपटों से जलने के कुछ निशान हैं, परन्तु वे भर गये हैं। इसमें हफ्तों लगे, परन्तु वे भर गये। ओ ठीक है, अपने आपको ललचाने का प्रयास करने से ऐसा होता ही है !''* उसने गहरी आह भरी, और चाय की चुस्की ली।

''आपको एक लाभ है, आदरणीय,'' नौजवान भिक्षु हॅसा। *''उजाला और अंधेरा, आपके लिये कोई अर्थ नहीं रखते। इस अंधकार में, देखने में सक्षम न होने के कारण, मैंने आपकी चाय को बिखरा दिया है।''*

''ओह !'' बूढ़ा आदमी खुशी से चिल्लाया, *''यहॉ– मेरी ले लो।''* *''नहीं, नहीं, आदरणीय,''* प्रेम के साथ नौजवान आदमी ने जवाब दिया, *''हम, हमारे पास पर्याप्त है। मैं अपने में कुछ और उडेल लूँगा।''* थोड़े समय के लिये, जबतक कि चाय पूरी समाप्त नहीं हुई, वे सहयोगपूर्ण शान्ति में बैठे। तब नौजवान साधु अपने पैरों पर खड़ा हुआ और उसने कहा *''अब मैं जाऊँगा और अधिक पानी और लकड़ी लाऊँगा, क्या मैं आपका कटोरा ले सकता हूँ, ताकि मैं इसे साफ कर दूँ ?''* अब, जैसे ही नौजवान ने गुफा के बाहर की तरफ अपना रास्ता लिया, दोनों कटोरे पानी की खाली कट्टी के अन्दर, चले गये। बूढ़ा साधु, प्रतीक्षा करते हुए, ठीक वैसे ही प्रतीक्षा करते हुए, जैसे कि वह पिछले अनेक दशकों से करता रहा है, तन कर सीधा बैठा। सूर्य अब डूब चुका था। केवल पर्वतों की ऊँची चोटियॉ, अभी भी सुनहरी रोशनियों से नहाई हुई थीं, रोशनी, जो बैगनी में बदल गई, जब नौजवान साधु उसे देख रहा था। पर्वत श्रंखला की छाया में, कुछ छोटे–छोटे प्रकाश के धब्बे, एक–एक करके, गहराई में उभरे। ल्हासा के पठार की ठण्डी साफ हवा में रहते हुए, दूर स्थित लामामठों के मक्खन के दीप जल उठे। एक घिरे हुये शहर की तरह से, घाटी में नीचे, ड्रेपुंग (äepung) लामामठ का ढॉचा, छाया में आ गया। यहॉ, पर्वत के बगल से खुद नौजवान साधु, शहर के ऊपर, लामामठ, और प्रसन्नता की नदी को चमकते हुए, देख सकता था। बदले में, पोटाला और लौह पहाड़ी के दूसरी तरफ, बहुत दूर, लम्बी दूरियों के माध्यम से, अभी भी, आकार के आभासी घटाव का, प्रभाव डाल रहीं थीं।

परन्तु गंवाने के लिये समय नहीं था ! नौजवान साधु ने, अपने आलस के लिये सहमे हुए आश्चर्य के साथ, अपने आपको झिड़की दी और तेजी से अंधेरा होते हुये रास्ते पर, झील के किनारे की ओर चला। शीघ्रता से उसने दोनों कटोरों और पानी की कट्टी को धोया और मांजा।

उसने जल्दी से, पानी की कट्टी को साफ पानी से भर लिया और उस बड़ी शाखा को खींचते हुये, जो पहले ही पकड़ने में काफी भारी थी, रास्ते पर वापस चला। चूंकि शाखा बहुत बड़ी और भारी थी, अपनी सांस को पुनः प्राप्त करने के लिये, एक क्षण के लिये रुकते हुये, उसने भारत जाने वाले पर्वत के दर्रे की ओर, पीछे देखा। वहॉ काफी दूरी पर, एक टिमटिमाती हुई रोशनी दिखाई दी, जो व्यापारियों के काफिले का, वहॉ रात गुजारने के लिये, शिविर लगा कर रहने का संकेत थीं। कोई व्यापारी, कभी भी, रात को यात्रा नहीं करता था। नौजवान का दिल उछल पड़ा। व्यापारी कल अपना धीमा रास्ता, पहाड़ी पगडण्डी पर लेंगे और इसमें कोई शक नहीं कि, अगले दिन ल्हासा जाने के पहले, वे अपना शिविर झील के किनारे बनायेंगे। चाय ! मक्खन ! नौजवान ने स्वयं के प्रति ठहाका लगाया और अपने पुनः नवीन किये हुए भार को उठाया।

ज्यों ही वह पानी के साथ गुफा में प्रविष्ट हुआ, *''आदरणीय! ''* उसने पुकारा।*''दर्रे पर व्यापारी हैं, कल हमें मक्खन, चीनी मिल सकती है। हम उनके ऊपर कड़ी नजर रखेंगे।''* ज्यों ही उसने टिप्पणी की, बूढ़ा आदमी मन्द–मन्द मुस्कुराया, *''हॉ, परन्तु अब के लिये–अब हम सोयें।''* नौजवान ने, अपने पैरों पर (खड़ा होने में) और उसका हाथ दीवार पर रखने में, उसकी मदद की। कॉपते हुये, वह अन्दर के भाग में चला गया।

नौजवान भिक्षु, नीचे लेटा और (उसने) अपने कूल्हे की हड्डी के लिये, कलछी से गड्ढा बनाया। वह कुछ समय के लिए, उस सब पर, जो उसने सुना था, विचार करते हुये, वहॉ लेटा। क्या ये सत्य था कि, मानव झाड़–झंकार हैं ? केवल प्रयोग के जानवर ? नहीं, उसने सोचा, हम में से कुछ लोग, हमको प्रोत्साहित करने के लिये– अच्छा करने के लिये और ऊपर चलने के लिये, क्योंकि चोटी पर हमेशा जगह होती है, काफी खराब परिस्थितियों और कठिनाईयों में भी, काफी अच्छा कर रहे हैं ! ऐसा सोचते हुए, वह गहरी नींद में गिर गया।

अध्याय सात

नौजवान भिक्षु मुड़ा और ठिठुरता रहा। नींद में रहते हुये उसने अपनी ऑखें मलीं और उठ कर बैठ गया। गुफा का प्रवेशद्वार, उसके अंदर के अंधकारपूर्ण हिस्से के विरुद्ध, धुंधला सा, भूरा सा था। वहॉ हवा में एक तेज बू थी। शीघ्रता से, नौजवान ने अपनी पोशाक को अपने चारों तरफ लपेटा और जल्दी से प्रवेशद्वार की तरफ चला। यहॉ, पेड़ों में से आंहें भरती हुई और पत्तियों को खड़खड़ाती हुई हवा में, वास्तव में, काफी ठण्डक थी। छोटे पक्षी, पिछली तरफ को, तनों के समीप घोंसले में बैठे थे। झील की सतह उत्तेजित और विक्षुब्ध थी। चलती हुई हवा से, किनारों के विरुद्ध और विरोध स्वरूप, नीचे की तरफ कमान जैसा बनाते हुए बल के विरुद्ध, तरंगे उठ रहीं थीं।

नया प्रारम्भ होनेवाला दिन, भूरा और दुःख भरा था। समेटते हुए काले बादल, पहाड़ों की ढ़लानों के ऊपर लहराए और ढ़लानों को ऐसे साफ कर दिया जैसे कि, स्वर्ग के कुत्तों के द्व ारा, झुण्ड की भेड़ें खदेड़ी जाती हैं। उतने ही काले जितनी कि चट्टानें स्वयं थीं, पहाड़ी दर्रे बादलों में छिप गये। फिर भी, देहात को विरूपित करते हुये, ल्हासा के पठार को, लुढ़कते हुये कुहासे में खींचते हुये, झपट्टा मारते हुये बादल, नीचे आये। अचानक, हवा के एक तेज झौंके ने और बनते हुये बादलों ने, नौजवान भिक्षु को खींच लिया। ये इतना घना था कि, वह गुफा के प्रवेशद्वार को और अधिक नहीं देख सका। न ही वह, अपने हाथ का अपने चेहरे के ऊपर रखा जाना, देख सका। जहॉ वह खड़ा था, उससे थोड़ी सी बांयी ओर, आग ने सिसकारी भरी और अपने ऊपर गिरने वाली ओस की बूंदों के कारण, थुकथुकाई।

तेजी से उसने टहनियॉ तोड़ीं और अभी भी जलती हुई आग के ऊपर, उन्हें ढेर लगा कर रखा और उन्हें फूॅका, ताकि वह आसानी से जल सकें। नम लकड़ी चिटचिटाई और उसने धुॅआ दिया और आग को चेताने में काफी श्रम हुआ। हवा का कराहना चीख के साथ, और बढ़ा। बादल गहराते गये और ओलों की जबरदस्त घातक मार ने, नौजवान भिक्षु को ढक लिया। आग सिसकी और धीमे–धीमे मर गई। इससे पहले कि, वह पूरी तरह बुझ पाये, नौजवान बाहर दौड़ा और एक शाखा को, जो अभी भी जल रही थी, पकड़ लिया। वह उसे शीघ्रता से खींच कर, गुफा के मुॅह पर लाया, जहॉ इसे भयंकर तूफान से बचाकर रखा गया। अधिक से अधिक संभव, जितनी लकड़ी, जलाऊ लकड़ी को, वह बचा सकता था, बचाने के लिये, जो अब पानी के साथ बहती जा रही थी, वह दुखपूर्वक दुबारा दौड़ा।

अपने प्रयासों के बाद, कुछ समय के लिये, वह हॉफता हुआ खड़ा हुआ, तब अपनी पोशाक को हटाते हुये, पानी को अधिकांशतः बाहर निकालते हुये, इसे बाहर की ओर निचोड़ा। अब कुहरा अंदर गुफा में घुस रहा था और नौजवान को चट्टानी दीवाल को पकड़ते हुये, अपना रास्ता तलाशना था। सावधानीपूर्वक, उसने अपना रास्ता आगे की ओर बनाया, जबतक कि अंत में वह, एक बड़ी चट्टान से, जिसके नीचे वह सोने का अभ्यस्त था, टकरा नहीं गया।

''ये क्या है ?'' बूढ़े साधु की आवाज ने जानकारी चाही। *''चिन्ता मत करो, आदरणीय,''* नौजवान ने शान्त करते हुए, जवाब दिया *''बादल नीचे आ गये हैं और हमारी आग, लगभग, पूरी तरह बुझ गई है।''*

''कोई बात नहीं,'' बूढ़े आदमी ने दार्शनिक की तरह कहा, *''चाय के पहले वहॉ पानी था, इसलिये जबतक आग हमको इजाजत न दे, हम पानी पियें और चाय और त्सम्पा को स्थगित रखें।''*

''हॉ, आदरणीय,'' कनिष्ठ व्यक्ति ने जवाब दिया, *''मैं देखूॅगा कि, मैं उस लटकती हुई चट्टान के नीचे, आग को दुबारा जला सकता हूॅ, इस उद्देश्य के लिये, मैंने एक जलती हुई टहनी बचा रखी है।''*

उसने प्रवेशद्वार से बाहर जाने का रास्ता लिया। बौछारों में बहुत तेजी के साथ, ओले गिर रहे थे, पूरा फर्श बर्फ के डेलों से ढ़का हुआ था और चमक अधिक तेज थी। तभी वहॉ, बिजली कड़कने के बाद कोड़े मारने जैसी, चटकने की आवाज हुई, एक कड़क, जो गूंजी और उस पूरी बड़ी विस्तृत घाटी के आसपास पुनः गूंजी। समीप से, गिरती हुई चट्टानों की आवाजें

आईं और ज्यों ही उन्होंने पर्वत के आधार पर आकर प्रहार किया, जमीन हिली। चट्टानों में से एक के गिरने ने, बिजली की कड़क के कम्पन पैदा किये या शायद कोई चट्टान बिजली गिरने से टूट गई थी। नौजवान आदमी ने आश्चर्य किया कि क्या बगल से कोई दूसरी, साधु की कुटी, तूफान में एक पंख की तरह से समेट दी गई है। कुछ समय के लिये, वह सुनता हुआ, आश्चर्य करता हुआ कि, सहायता के लिये उसे कोई पुकारेगा, खड़ा रहा। अंत में वह मुड़ा और चमकती हुई टहनी के ऊपर, बुत बन कर खड़ा हो गया। सावधानीपूर्वक, उसने टहनियों के छोटे–छोटे टुकड़े तोड़े और आग को नये सिरे से कुरेदा और घाटी में उड़े तूफान के द्वारा संरक्षित, धुंऐ के गहरे बादल उठे परन्तु, बाहर निकली हुई चट्टान की शरण में लपटें धीमे–धीमे बढ़ीं।

गुफा में अत्यधिक ठण्ड के कारण, बूढ़ा साधु ठिठुर रहा था। नम हवा, उसकी पतली और फटी हुई पोशाक में, अन्दर रिस रही थी। नौजवान भिक्षु ने अपने कम्बल को अनुभव किया और वह भी पूरी तरह गीला हो चुका था। (उसने) बूढ़े आदमी को धीमे से, हाथ के साथ निकालते हुये, गुफा के प्रवेशद्वार की ओर बाहर निकाला और उसे बैठाया। नौजवान आदमी, सावधानीपूर्वक, जलती हुई शाखाओं को खींच कर नजदीक लाया ताकि बूढ़ा आदमी गर्मी का अनुभव कर सके और प्रसन्न हो। *''मैं कुछ चाय बनाऊँगा,''* उसने कहा, *''अब हमारे पास काफी आग है।''* ऐसा कहते हुये, वह पानी की कट्टी पाने के लिये, तेजी से पीछे गुफा में वापस गया और शीघ्र ही, इसके और जौ के साथ लौटा। *''मैं आधे पानी को उड़ेल दूँगा,''* उसने कहा, *''तब हमें काफी लम्बे समय तक इंतजार नहीं करना पड़ेगा और किसी प्रकार भी, पूरी कट्टी को उबालने के लिये, आग अभी कम ही है।''* लटकती हुई चट्टानों के टुकड़े से और बगल से पृथ्वी की सतह से ऊपरी निकली हुई चट्टान के अंश से, खराब से खराब हमले से बचते हुए, वे साथ–साथ बैठे। बादल गहरा था और कोई चिड़िया न तो गा रही थी और न ही चल रही थी।

''ठण्ड बहुत कठोर होगी,'' बूढ़े साधु ने जोर दे कर कहा। *''मैं सौभाग्यशाली हूँ कि, अब मुझे इसे नहीं झेलना पड़ेगा। जब मैं अपना पूरा ज्ञान तुम्हें दे दूँगा, तो मैं अपने शरीर, अपने जीवन को छोड़ सकता हूँ और स्वर्गिक क्षेत्रों को जाने के लिये मुक्त हो जाऊँगा, जहाँ एक बार फिर, मैं देखने में सक्षम होऊँगा।''* उसने एक क्षण के लिये शान्ति में विचार किया, जबकि नौजवान भिक्षु ने, पानी की सतह के ऊपर, धीमी गति की धारा को ध्यानपूर्वक देखा। तब उसने कहना जारी रखा, *''इतने वर्षों तक, पूर्णतः अंधकार में, जहाँ कहने के लिये भी कोई दोस्त नहीं है, प्रतीक्षा करना, इतनी गरीबी में अकेले जीना, जहाँ गर्म पानी भी विलासिता दिखाई देता है, वास्तव में कठोर है। युग गुजर गये हैं और मैंने अपना लम्बा जीवन इस गुफा में व्यतीत किया है। अभी मैंने यहाँ आग तक आने के लिये जितनी यात्रा की है, उससे अधिक यात्रा मैंने कभी नहीं की, क्योंकि मैं इतने लंबे समय के लिये चुप रहा हूँ कि, मेरी आवाज भी, मरी हुई फूटी आवाज में बाहर आती है। जब तक तुम नहीं आये थे, मेरे पास कोई आग नहीं थी, गर्मी नहीं थी, तूफानों के बीच, जब तूफान पहाड़ों को हिलाते थे और चट्टानें लुढ़कती हुई, मुझे अपने अंदर घेर लेने की धमकी देती हुईं, नीचे आती थीं, कोई साथी नहीं था।''*

नौजवान आदमी उठा और आग से सूखे हुये कम्बल को अपने वरिष्ठ के पतले कन्धों के ऊपर लपेटा और तब पानी की कट्टी के लिये, जिसका पानी अब खुशी से बुलबुले दे रहा था, वापस लौटा। कट्टी में, चाय की ईंट का एक बड़ा टुकड़ा डाला गया। जैसे ही ठण्डे कण, पानी को क्वथनांक से नीचे लाये, बुलबुले बंद हो गये। शीघ्र ही, भाप फिर से उठी और पानी में सुहागा और शक्कर का बचा हुआ अंतिम भाग डाला गया। नई छीली हुई छड़ी, उत्साहपूर्ण, उसके उपयोग में लाई गई, और सतह से मलवे को, खराब टहनियों को, हटाने के लिये, एक चपटी लकड़ी ने कलछी का काम किया।

तिब्बती चाय–चीनी चाय– चाय का एक सबसे सस्ता स्वरूप है, जो अच्छी क्वालिटी की चाय के, जमीन पर गिरे हुये झाड़न से बनती है। जब औरतें चाय के पौधों से पत्तियों को तोड़ कर लाती हैं, ये उनका अवशिष्ट भाग होता है, जो धूल के रूप में एक तरफ फैंक दिया

जाता है। सबको ईंटों के रूप में दबा कर ईंटे बना ली जाती हैं, और पहाड़ी दर्रों में हो कर तिब्बत में लाई जाती हैं, जहॉ तिब्बती, जो इससे अधिक मंहगी, अच्छी चाय का व्यय नहीं झेल सकते, अदला–बदली (warter) में, इन ईटों को प्राप्त करते हैं और अपने कठोर अस्तित्व के लिये, सहखाद्य (staple food) के रूप में उपयोग करते हैं। सुहागा (borex), डाली जाने वाली आवश्यक चीज है चूंकि कच्ची चाय इतनी अधिक खराब और कच्ची होती है कि, पेट में मरोड़ बहुत जल्दी हो जाता है। चाय बनाने का एक पारम्परिक और निश्चित तरीका, सतह को मलबे से झाड़ कर साफ करना होता है !

''आदरणीय,'' नौजवान भिक्षु ने पूछा, *''क्या आप कभी झील तक नहीं गये ? क्या आप कभी इस गुफा के दांयी ओर, उस बड़े पत्थर की चट्टान पर नहीं गये ?''*

''नहीं,'' साधु ने जवाब दिया, *''चूंकि मैं इस गुफा में अंतरिक्ष के आदमियों के द्वारा लाया गया था, मैं कभी इससे आगे, इस स्थान पर जहॉ हम बैठे हैं, उससे आगे नहीं गया। मैं क्यों जाऊॅ ? मैं देख नहीं सकता कि, मेरे आसपास क्या है, और मैं सुरक्षित रूप से झील तक यात्रा नहीं कर सकता, क्योंकि मैं उसमें गिर सकता हूॅ। गुफा में लम्बे वर्षों तक अंधेरे में रहने के बाद, मुझे लगता है कि, सूर्य की किरणें, मेरे मांस के लिये कष्टकारी हैं। जब मैं पहली बार यहॉ आया, मैं इस स्थान के रास्ते को अनुभव कर सकता था और सूर्य की रोशनी से गरम हो सकता था, परन्तु अब अनेक लम्बे वर्षों से, मैं अन्दर ही रहा हूॅ। अब कैसा मौसम है ?''*

''खराब, आदरणीय,'' नौजवान भिक्षु ने जवाब दिया। *''मैं अपनी आग को देख सकता हूॅ, मैं उसके पीछे, चट्टान की सबसे धुंधली रूपरेखा को भी देख सकता हूॅ। सब कुछ, इस गहरे भूरे कुहरे से ढ़क दिया गया है। तूफानी बादल, पर्वतों से, भारत की ओर से एक तूफान।''*

आलसपूर्वक उसने अपने नाखूनों की जॉच की, वे बहुत लम्बे थे। उतने आरामदायक नहीं। उसने आसपास में निकले हुए, सड़े हुये पत्थर की एक पट्टी को फेंकते हुए, जो युगों पहले, किसी लावा उबलते हुये ज्वालामुखी के मुंह से जली हुई, बाहर उगली गई चट्टान थी, पायी। ऊर्जा सहित, उसने अपनी हर उंगली के नाखून से चट्टान को रगड़ा, जबतक कि वे घिस कर उचित लंबाई तक नहीं टूट गये। पैर के नाखून भी, वे मोटे और कड़े थे परन्तु काफी लम्बे थे। उदासीन भाव से, उसने अपने एक पैर को लहराया और तब दूसरे को जबतक कि उसने अपने सारे नाखूनों को अपनी संतुष्टि के अनुसार नहीं छॉट दिया।

''तुम किसी दर्रे को नहीं देख सकते हो ?'' बूढ़े आदमी ने जानकारी की। *''क्या व्यापारी पर्वतों के अन्दर कुहरे में फंस गये हैं ?''* *'' सर्वाधिक निश्चित रूप से, वे फंस गये होंगे!''* नौजवान ने उत्तर दिया। दैत्यों को दूर रखा जाये, इस आशा में, वे अपने मनकों (beads) को फेर रहे होंगे। *''आज – या रात तक, जब तक कि कुहरा नहीं छंट जाता, हमें ये व्यापारी नहीं दिखाई देंगे। और तब भी जमीन जमे हुये ओलों से अटी पड़ी है, ये यहॉ काफी मोटे हैं।''*

''ठीक है, तब,'' बूढ़े आदमी ने उत्तर दिया, *''तब हमको, अपनी बातों को आगे बढ़ाना चाहिये। क्या चाय और कुछ बाकी है ?''* *''हॉ, है,''* नौजवान भिक्षु ने जवाब दिया। *''मैं आपके कटोरे को भर दूॅगा परन्तु आपको इसे शीघ्रता से पी लेना चाहिए, क्योंकि ये बहुत तेजी से ठण्डी हो रही है। ये यहॉ है। मैं कुछ और लकड़ी डालूॅगा।''* वह बूढ़े आदमी के फैलाये हुये हाथों में, कटोरा देने के लिये रुका और जलती हुई आग में, कुछ और अधिक लकड़ी झोंकने के लिये उठा। *''बरसात के बाद, मैं कुछ और लकड़ी लाऊॅगा''* उसने मोटे कुहरे में चलते हुये कहा। शीघ्र ही वह, लकड़ी की टहनियों और शाखाओं को खींचता हुआ और घसीटता हुआ लौटा, जो उसने आग की परिधि के आसपास रख दी। जिसकी ऊष्मा की नजदीकी, शीघ्र ही उसे भाप बना कर उड़ा देगी और लकड़ी सूख जायेगी। *''ठीक है, आदरणीय''* अपने आपको बूढ़े आदमी के समीप बैठाते हुये उसने कहा, *यदि आप बोलने के लिये तैयार हों, ''मैं'' सुनने के लिये तैयार हूॅ।''*

बूढ़ा आदमी शायद, गुजरे हुये उन पिछले लम्बे दिनों को, अपने मन में पुनः जीते हुये, कुछ मिनटों के लिये खामोश रहा। अन्त में उसने टिप्पणी की, *''गरीबों से भी गरीब, जैसे कि*

गरीबों में भी गरीबतम के रूप में यहॉ बैठना, और उन आश्चर्यों के ऊपर, जिनका मैं साक्षी रहा हूँ, चिन्तन करना, ''ये अजीब है।'' मैंने बहुत कुछ अनुभव किया है, काफी कुछ देखा है और मुझसे काफी अधिक वायदे किये गये हैं। आकाशीय क्षेत्रों के रक्षक, मुझे अन्दर लेने के लिये, लगभग तैयार हैं। मैंने एक चीज सीखी है,– और आगे आनेवाले वर्षों में, तुम उसे याद करके अच्छा ही करोगे, वह है– ये जीवन छाया जीवन है। यदि हम इस जीवन में अपने काम करें तो हम इसके बाद, हम अपने वास्तविक जीवन में जायेंगे। मैं इसे जानता हूँ क्योंकि, मैं इसे देख चुका हूँ। परन्तु अब हम उसके साथ जारी रखें, जिसको तुम्हें बताने का भार, मुझे दिया गया है। मैं कहॉ था ?''

वह हिचकिचाया और एक क्षण के लिये रुका। नौजवान भिक्षु ने, आग में और अधिक लकड़ी फेंकने के लिये इस अवसर का लाभ लिया, तब साधु दुबारा बोला; *''हॉ, उस चट्टान के प्रकोष्ठ के अन्दर, तनाव की हवा बढ़ी, और बढ़ी और मैं सर्वाधिक तनावग्रस्त हुआ। उचित रूप से ऐसा, क्योंकि पूरी जोखिम मेरे लिये थी ! अंत में, जब तनाव, लगभग, असहनीय बिन्दु तक पहुँच गया, एडमिरल ने एक धार्मिक आदेश दिया। वहॉ, मेरे सिर के पास, किसी तकनीशियन की हलचल हुई और सहसा एक क्लिक की आवाज। मैंने तत्काल महसूस किया कि, नर्क के सारे दुख मेरे शरीर में उभर पड़े; ऐसा लगा कि मैं सूज रहा था और मैं फूटनेवाला था। बिजली का चमकना, मेरे सामने आया, मेरे दिमाग में कौंधा, और मेरे खाली नेत्रगोलकों ने अनुभव किया, मानो वे, जलते हुये कोयले से भरे गये हों। वहॉ एक तीखी, कष्टदायक पकड़, असहनीय कसाव हुआ, और मैं शाश्वत रूप से घूमता चला गया (ऐसा मैंने महसूस किया)। टकराव, विस्तार, और भयानक आवाजें मेरे पास आईं।''*

''मैं, चकराता हुआ, सिर से एड़ियों तक लुढ़कता हुआ, नीचे, औरनीचे गिरा। तब मैंने महसूस किया, मानो मैं पदार्थ से चिपकता हुआ, ऊन की एक मुलायम लम्बी नली में था और नली की चोटी पर, वहॉ खूनी लाल (blood red) रंग की चमक दिखाई दी। अब चकराना बंद हुआ, और मैं धीमा पड़ गया, उस चमक की ओर, धीमे से ऊपर .चढ़ने लगा। मैं कई बार वापस खिसका, कई बार मैं रुका, परन्तु एक भयानक अनवरत दबाब, मुझे कष्ट के साथ, हिचकिचाहट के साथ, हमेशा आगे, हमेशा ऊपर की तरफ, खींचता चला गया। अन्त में, मैं खूनी लाल रंग की चमक के स्रोत पर पहुँचा और उससे आगे नहीं जा सका। एक खाल, या झिल्ली, या वैसी ही कुछ चीज ने मेरे आगे के रास्ते को रोक दिया। फिर और फिर (again and again), मुझे रुकावट के विरुद्ध ठेला गया। फिर और फिर, मुझे आगे बढ़ने से रोका गया। कष्ट और भय बढ़ते गये, कष्ट का एक हिंसक उभार और फिर उस रुकावट के विरूद्ध, एक भयानक बल ने, जोर से मेरे पीछे, मुझे दुबारा मारा; और तब एक चीख, फाड़नेवाली आवाज हुई और उस चूर–चूर होते हुयी रुकावट में हो कर, मुझे अत्यधिक वेग के साथ धक्का दे दिया गया।''

जबतक कि भयानक धक्के के द्वारा, मेरी चेतनता मंद नहीं हुई और बुझ नहीं गई, मैं तेजी से ऊपर की तरफ बढ़ा। वहॉ, गिरने का, एक मंदा पड़ता हुआ प्रभाव था, गिरने का। मेरे दिमाग में एक आवाज खाये जा रही थी, *''उठो, उठो !''* मिचली की तरंग के बाद तरंग, ने मुझे घेर लिया। हमेशा उतनी ही जबरदस्त आवाज ने जोर से कहा *''उठो, उठो !''* अंत में, मात्र निराशा में मैंने अपनी ऑखों को बल लगाकर खोला और अपने पैरों पर कुलांछ मारी (stumbled)। परन्तु नहीं, नहीं, मेरा कोई शरीर नहीं था; मैं इस विश्व में कहीं भी घूमने फिरने के लिये स्वतंत्र, बिना शरीर की आत्मा था ये विश्व ? ये विश्व क्या था ? मैंने अपने आसपास देखा और दृश्य की भयानकता मेरे ऊपर बढ़ी। सभी रंग पूरी तरह गलत थे, घास लाल थी और चट्टानें पीली। आसमान हरे से रंग का था और वहॉ दो सूर्य थे ! एक नीला सफेद था और दूसरा नारंगी *(orange)*। छायाऐं ! दो सूर्यों द्वारा बनाई गई छायाओं को बताने का कोई रास्ता नहीं है, कोई उपाय नहीं है, परन्तु सबसे खराब, दिन के प्रकाश में आकाश में तारे दिख रहे थे। तारे सभी रंगों के थे। लाल, नीले, हरे, अम्बर, और सफेद भी। न तो वे तारों की तरह, जिनका मैं अभ्यस्त था, छितराये हुये थे; जैसे कि जमीन पत्थरों से भरी होती है, यहॉ आकाश

इन तारों से भरा हुआ था।

बहुत दूर से आई– शोर, आवाजें। कल्पना के किसी भी विस्तार से, उन ध्वनियों को मैं संगीत नहीं कह सकता, फिर भी, इसमें मुझे कोई शक नहीं कि, वह संगीत था। ठण्डी ओर कठोर आवाज दुबारा आई, *''चलो इच्छा करो, तुम जहॉ जाना चाहते हो,''* इसलिये मैंने उस बिन्दु पर, जहॉ से ये आवाज आई थी, तैरने की सोची– और मैं लाल घास के एक समतल टुकड़े पर, लाइन से लगे हुये, बैंगनी और नारंगी पेड़ों के किनारे पर, वहॉ था। वहॉ, नौजवान लोगों का एक समूह, नृत्य कर रहा था। वे कुछ चमत्कारपूर्ण रंगों के कपड़ों में लपेटे हुये थे, दूसरे बिल्कुल कपड़े पहने हुये नहीं थे। फिर भी, ये बाद वाले, कोई टिप्पणी नहीं कर रहे थे। एक के दूसरी तरफ, वे अपने स्थानों पर टॉगों पर, दूर बैठे और उन्होंने संगीत के माध्यमों को बजाया, जिनका वर्णन करना मेरी क्षमता के पूर्णतः बाहर है, जो शोर उन्होंने किया, उसका वर्णन करना और भी असंभव है! (मुझे) सभी सुर गलत लग रहे थे, और थाप का मेरे लिये कोई अर्थ नहीं था। *''उनके बीच जाओ''* आवाज ने आज्ञा दी।

मुझे अचानक ये लगा कि, मैं उनके ऊपर तैर रहा था। इसलिये मैंने अपने आपको, घास के एक साफ टुकड़े के ऊपर जाने की इच्छा की और खुद को इसके ऊपर सोचा। ये छूने में गर्म था और जबतक कि, मुझे ये ध्यान नहीं आया कि, मेरे पैर ही नहीं हैं और मैं केवल एक शरीररहित आत्मा हूँ, मुझे भय लगा कि, मेरे पैर झुलस जायेंगे। बाद वाला, मुझे शीघ्र ही स्पष्ट हो गया; एक नंगी नौजवान मादा ने, मेरे दांयी ओर हो कर, भड़कीले (कपड़े) लपेटे हुये नौजवान आदमी का, दौड़ते हुये पीछा किया और हममें से किसी ने भी कुछ महसूस नहीं किया। नौजवान मादा ने, अपने आदमी को पकड़ लिया और अपनी भुजाओं को उसी के साथ में, संबद्ध कर दिया। उसको इस स्थान से बैंगनी पेड़ों के पीछे ले गई, जहॉ पर तमाम चीखें और आनन्द की पुकारें आईं। संगीतवाद्यों का उपयोग करने वाले, उन्हें गलत ढंग से उपयोग करते चले गये और हर आदमी, उल्लेखनीय रूप से, संतुष्ट दिखाई दिया।

बिना मेरे खुद के इरादे के, मैं हवा में ऊपर उठा। मुझे कहा गया था मानो, ये एक बच्चे के द्वारा उड़ाई जाती हुई, जो उसके मांजे को पकड़ता है, एक पतंग है। जबतक कि, काफी दूर, मैं पानी की झिलमिल को नहीं पहचान सका, मैं ऊॅचा, औरऊॅचा, उठता गया – क्या ये पानी था– इसका रंग, हल्का लेवेण्डर (lavender) जैसा था, जो अपनी तरंगों के उतंगों (crests) से सुनहरी चमक देता था। प्रयोग ने मुझे मार दिया था, मैंने निश्चय किया, मैं भुलाये गये लोगों के देश में, अनिश्चितता की स्थिति में हूॅ। किसी विश्व में इतनी अजनबी, अजीब चीजें, ऐसे रंग नहीं होंगे। *''नहीं !''* उस निर्दयी आवाज ने मेरे दिमाग में फुसफुसाया, *''प्रयोग सफल रहा। अब, जो सब कुछ हुआ और जिसके बारे में तुम्हें अच्छी तरह से जानकारी दी गई है, तुम्हें उसका ऑखों देखा हाल बताना पड़ेगा। ये महत्वपूर्ण है कि, तुम उस सबको, जो तुम्हें दिखाया गया, समझते हो। अधिक ध्यान दो।''* अधिक ध्यान दो, क्या मुझसे और अधिक अपेक्षा थी या और भी कुछ अपेक्षा थी ? मुझे खेदपूर्वक आश्चर्य हुआ।

मैं ऊॅचा और ऊॅचा उठा। बहुत दूर से, जलने की एक चमक, क्षितिज पर आई। अनजान और डरावनी आकृतियॉ वहॉ खड़ी थीं, जैसे नरक के प्रवेश द्वार पर दैत्य। धुंधले से मैं, चमकीले बिन्दुओं को पहचान सका, जो डूबे और उठे और भिन्न–भिन्न आकृतियों में उभरे। वहॉ आसपास बड़ी–बड़ी सड़कें थी, जो उन आकृतियों से निकल रही थीं, जैसे कि फूलों की पंखुड़ियॉ, उसके केन्द्र से निकलती हैं। ये सब मेरे लिये रहस्य था; मैं उस प्रकृति का अनुमान नही लगा सका, जो मैंने देखी, परन्तु केवल चकित हो कर वहॉ तैरता रहा।

सहसा मैंने अपने आपको, गति में दुबारा झटका खाते हुये और बढ़ती हुई गति के साथ पाया। मेरी ऊॅचाई घट गई थी। मैं पूरी तरह अनिच्छापूर्वक, एक बिन्दु की ओर, नीचे गिरने लगा, जहॉ मैं जगमगाती सड़कों में से प्रत्येक पर, निजी घरों को, इधर–उधर छितरे हुये, देख सकता था। प्रत्येक घर मुझे, कम से कम, ल्हासा के उच्च व मध्यवर्ग के पुरुषों के घर के आकार के बराबर लगा, हर एक में, अन्दर, जमीन का एक बहुत बड़ा टुकड़ा था, धातु की अनजान चीजें, खेतों के आरपार ढेर लगा रहीं थीं, उन कामों को कर रही थीं, जिनको

केवल एक किसान बता सकता था परन्तु तब, जब मैं काफी नीचे लाया गया, मुझे एक बहुत बड़ी रियासत दिखाई दी, जिसमें मुख्य रूप से उथला पानी था, जिसमें छेददार बेंचे और तिपाईयॉ थीं। आश्चर्यजनक पौधे, उन बैंचों के ऊपर रखे थे और उनकी जड़ें पानी में इधर–उधर फैली हुईं थीं। इन पौधों की सुन्दरता और उनका आकार, जमीन में उगनेवाले पौधों की तुलना में, नापे न जा सकने वाली सीमा तक, बड़ा था। मैंने टकटकी लगाकर देखा और इन आश्चर्यों के ऊपर, आश्चर्य किया।

मुझे उस तरफ से, जहॉ से मैं बहुत दूर आगे तक देख सकता था, फिर उछाल दिया गया। आकृतियॉ, जिन्होंने बहुत दूर से, मुझमें इतना कौतूहल पैदा किया था, अब और अधिक समीप थीं परन्तु मेरा संभ्रमित (bemused) मष्तिष्क, जो मैंने देखा, उसको समझने के योग्य नहीं था, ये अतुलनीय, अत्यधिक विलक्षण, अवर्णनीय था। मैं तिब्बत का एक अदना सा मूल निवासी था, मात्र एक विनम्र पुजारी, जो कलिंगपोंग की छोटी यात्रा से अधिक दूर, कभी बाहर नहीं गया था। फिर भी यहॉ मेरी आश्चर्यचकित ऑखों के सामने– क्या मेरी ऑखें थीं ?– एक बड़ा शहर आ खड़ा हुआ, एक भारी भरकम शहर। हवा में अत्यधिक बड़ी मीनारें उभरीं, शायद, अठारह सौ फुट तक। हर एक मीनार या गगनचुम्बी (spire), एक स्प्रिंग जैसी बालकनी के द्व ारा घेरी गई थी, जिनमें प्रत्येक में से, एक जाल, जो कि मकड़ी के द्वारा, बुना जाता है, से अधिक जटिल, सबको आपस में जोड़ते हुये, जगमगाती हुईं, पतली, समर्थनहीन (unsupported) सड़कें निकल रही थीं। सड़कें तीव्रगामी परिवहन से भीड़ भरी थीं। लोगों से लदी हुईं मशीनी चिड़ियाऐं, कुशलता के साथ हर एक, दूसरों से बचती हुईं, जिसने मुझे अत्यधिक प्रशंसा से भर दिया, ऊपर और नीचे, उड़ रही थीं। तेजी से उड़ती हुई एक मशीनी चिड़िया मेरे ऊपर आई, मैंने एक आदमी को, सामने घूरते हुये परन्तु मुझे नहीं देखते हुये, देखा। आनेवाली संभावित टक्कर के विचार के डर से, मेरा पूरा शरीर सिकुड़ गया और विकृत हो गया। फिर भी, मशीन मुझमें अन्दर होकर, और तेजी से चली और मैंने उसे बिल्कुल अनुभव नहीं किया। मैं क्या था ? हॉ, मुझे याद आया, मैं अब एक शरीर से अलग आत्मा था, परन्तु मैंने इच्छा की कि, कोई मेरे दिमाग को, प्रत्येक भाव और मुख्यरूप से डर, जो एक सामान्य पूर्ण शरीर ने अनुभव किया होता, जो मैंने अनुभव किया, के संबंध में बतायेगा।

मैं इन मीनारों में होकर और सड़कों के ऊपर लटकता हुआ, आवारा सा घूमता फिरा। मैंने नये आश्चर्यों को खोजा; कुछ ऊॅचे स्तर के अति विशाल, लटकते हुये बगीचे, उनमें थे। अविश्वसनीय खेल के मैदान, जो वास्तव में भद्रों के थे। परन्तु सभी रंग गलत थे। सभी लोग गलत थे। कुछ बहुत बड़े दैत्य थे और दूसरे बोने थे। कुछ निश्चितरूप से मानव थे और दूसरे, बहुत निश्चितता के साथ, (मानव) नहीं थे। कुछ, वास्तव में, मनुष्यों और पक्षियों का एक अनोखा मिश्रण था, जिनका शरीर आदमी जैसी बनावट का था परन्तु फिर भी, निश्चितरूप से, उनके सिर चिड़ियों जैसे थे। कुछ सफेद थे, कुछ काले थे। कुछ लाल थे, जबकि दूसरे हरे थे। वहॉ सभी रंग थे, केवल छाप और धाप नहीं, बल्कि निश्चित रूप से मूल रंग। कुछ के हर हाथ में चार उंगलियॉ और एक अंगूठा था, फिर भी दूसरों के हर हाथ में, नौ उंगलियॉ और दो अंगूठे थे। एक और समूह के तीन उंगलियॉ थीं, सींग जो कनपटियों से बाहर निकलते थे, और पूँछ थी। बाद वालों को देख कर मेरी नसें कड़क गईं और मैंने, शीघ्र ही, तेजी से ऊपर जाने की इच्छा की।

मेरी नई ऊॅचाई से, शहर ने, स्पष्टरूप से एक बड़ा क्षेत्र घेरा हुआ था, जहॉ तक मैं देख सकता था, ये काफी दूर तक विस्तारित था परन्तु बगल से कुछ दूर की तरफ, एक खाली जगह दिखाई दी, जो सभी ऊॅची ईमारतों से मुक्त थीं। यहॉ हवाई परिवहन बहुत अधिक था। चमकते हुये बिन्दु, क्योंकि वे इतनी दूरी से, ऐसे ही दिखाई दिये, ऑखों को चमत्कृत करने वाले वेग से, क्षैतिज समतल में उभरे। मैंने अपने आपको उस क्षेत्र की तरफ खिसकते हुये अनुभव किया। जैसे ही मैं समीप पहुॅचा, मैंने पाया कि पूरा क्षेत्र, कॉच का बना हुआ लगता था और उसकी सतह के ऊपर धातु के अजूबे वायुयान थे। कुछ आकृति में गोलाकार थे और अपनी यात्रा की दिशा से, इस विश्व के सीमाओं से परे, यात्रा करते हुये दिख रहे थे। दूसरे, इस

विश्व के बाहर जाने की यात्रा के लिये, धातु के दो कटोरों की तरह से, जो किनारे से किनारे जोड कर बने हों, भी दिखाई दिये। फिर भी, अन्य एक बेलचे (spear) की तरह से थे, जो फेंका जाता है, और मैंने प्रेक्षण किया कि ये, एक पूर्व से निश्चित की हुई ऊँचाई तक उठने के बाद, क्षैतिज हो जाते थे और अज्ञात स्थान की, सतह पर ही यात्रा करते थे। वहॉ बहुत अधिक हलचल थी और मैं मुश्किल से ही विश्वास कर सका कि, ये सारे लोग एक ही शहर में रहते होंगे। विश्व के सभी निवासी, यहॉ भीड़ लगाये हुये थे, मैंने सोचा। परन्तु मैं कहॉ था ? मैंने भगदड़ में ऊपर उठता हुआ, अनुभव किया।

आवाज ने मुझे ये कहते हुये उत्तर दिया, तुमको ये समझना चाहिए कि, पृथ्वी एक छोटा स्थान है, पृथ्वी प्रसन्नता की नदी के किनारों पर, महीनतम बालू के कण के समान है। इस ब्रम्हाण्ड, जिसमें तुम्हारी पृथ्वी स्थित है, के दूसरे लोक, बहुत बड़ी संख्या में है और एक दूसरे से इतने अलग हैं जैसेकि, बालू, पत्थर और चट्टानें, जो प्रसन्नता की नदी के किनारों पर, एक पंक्ति में जमी हैं। परन्तु, ये मात्र एक ब्रम्हाण्ड है। यहॉ संख्या से परे ब्रम्हाण्ड हैं, जैसे कि जमीन में, संख्या से परे, घास के तिनके होते हैं। पृथ्वी पर समय, ब्रम्हाण्ड के समय की, चेतनता की, केवल एक झलक है। पृथ्वी पर दूरियॉ किसी क्षण की नहीं, वे महत्वहीन हैं और अंतरिक्ष की दूरियों की तुलना में कहीं नहीं टिकतीं। अब तुम बहुत दूर के एक विश्व में हो, जो बिल्कुल अलग ब्रम्हाण्ड, पृथ्वी से इतना दूर एक ब्रम्हाण्ड, जितना तुम जानते हो कि, तुम्हारी समझ के बाहर होगा, में है। समय आयेगा, जबकि तुम्हारे विश्व के महानतम वैज्ञानिकों को ये स्वीकार करना पड़ेगा कि, दूसरे विश्व भी आबाद हैं, और पृथ्वी, जैसा कि वे अभी विश्वास करते हैं, इस सृष्टि का केन्द्र बिन्दु नहीं है। अब आप इस समूह के प्रमुख लोक में हैं, जिसमें एक हजार से अधिक लोक हैं। इनमें से हर एक लोक आबाद है। इन लोकों में से हर एक, विश्व के स्वामी के अधीन हैं, जहॉ अभी आप हैं। यद्यपि, प्रत्येक विश्व पूरी तरह से स्वयं नियंत्रित है, तथापि वे सभी, एक सामान्य नीति का पालन करते हैं, एक नीति, जो खराब अन्यायों (worse injustices), जिसके अन्तर्गत लोग रहते हैं, को हटाने के उद्देश्य के साथ बनी हुई। एक नीति, जो सभी जीवित लोगों की अवस्था को सुधारने के लिये समर्पित है।

प्रत्येक विश्व में विभिन्न प्रकार के लोग हैं, कुछ छोटे हैं, जैसा तुमने देखा, कुछ बड़े हैं वे भी तुमने देखे। कुछ, हमारे स्तर के अनुसार, भ्रष्ट और पागल हैं, दूसरे, जिन्हें तुम, सुन्दर देवीय स्वरूप वाले कह सकते हो। किसी को कभी भी, बाहर दिखने वाली आकृति से धोखा नहीं खाना चाहिए, क्योंकि हर एक का आशय अच्छा है। ये लोग विश्व, जहॉ आप अभी हैं, के स्वामी की आधीनता स्वीकार करते हैं। इनको नाम देने का प्रयास करना, तुम्हारी बुद्धि के ऊपर तनाव डालने वाला और व्यर्थ होगा, क्योंकि, इन नामों का तुम्हारी अपनी जुबान में और तुम्हारी अपनी समझ में कोई अर्थ नहीं होगा, और ये मात्र, तुमको दुविधा में डालने का काम करेगा। जैसा मैंने कहा, ये लोग, विश्व के उस महान स्वामी, जिसमें किसी भी प्रकार की भौतिक इच्छायें नहीं हैं, के प्रति बफादारी रखते हैं। एक कोई, जिसकी प्रमुख दिलचस्पी, शान्ति को संरक्षित करने में है, शान्ति, ताकि आदमी उसकी आकृति के बिना, उसके आकार या उसके रंग के बिना विचार किये हुये, उसे प्रदान किये गये समय के लिये जीवित रह सके और विनाश के बजाय, जो जब कभी, एक व्यक्ति, जिसे स्वयं को बचाना हो, उत्पन्न करेगा, अपने आपको भलाई के लिये समर्पित कर सके। यहॉ कोई बड़ी सेनायें नहीं हैं। यहॉ कोई युद्धरत समूह नहीं है। यहॉ वैज्ञानिक हैं, व्यापारी हैं, और वास्तव में पुजारी, और यहॉ खोजी भी हैं, जो उनकी हमेशा बढ़ती हुई संख्या के विश्वों को, जो इस शक्तिशाली साम्राज्य में सदस्यता प्राप्त कराते हैं और दूर के विश्वों को, जाते हैं। परन्तु जुड़ने के लिये, किसी को भी आमंत्रित नहीं किया जाता। जो इस संघ में सम्मिलित होते हैं, वे अपने ही निवेदन पर ऐसा करते हैं और केवल तभी, जबकि उन्होंने हथियार नष्ट कर दिये हों।''

विश्व, जिस पर तुम अभी हो, इस विशिष्ट ब्रम्हाण्ड का केन्द्र है। ये सभ्यता का, ज्ञान का केन्द्र है और इससे बड़ा कोई नहीं है। एक विशेष प्रकार की यात्रा का आविष्कार और विकास किया गया है। यहॉ फिर से बताने के लिये, ये तरीका पृथ्वीवाले, महान वैज्ञानिकों के

मस्तिष्क पर अधिक भार डालना होगा। वे अभी तक, चार और पॉच आयामों वाले विचारों में सोचने की स्थिति में नहीं पहुॅचे हैं, और उनके लिये, जबतक कि वे अपने दिमागों में से, अपने मनों में से, उन सारे विश्वासों को निकाल नहीं देते, जिन्होंने उसे काफी लम्बे समय से बंदी बना रखा है, इस प्रकार की चर्चा, एक अस्पष्ट चर्चा जैसी होगी।

दृश्य, जो तुम अभी देख रहे हो वे आज नेतृत्व करने वाले विश्व के हैं। हम तुमको, इसकी शक्तिशाली सभ्यता को, एक सभ्यता इतनी आगे बढ़ी हुई, इतनी भव्य कि, तुम इसे समझने के योग्य नहीं होगे, दिखाने के लिये, इसकी सतह पर यात्रा कराना चाहते हैं। रंग, जो तुम यहॉ देखते हो, उनसे एकदम अलग हैं, जिसके तुम पृथ्वी पर अभ्यस्त हो, परन्तु पृथ्वी सभ्यता का केन्द्र नहीं है। हर विश्व में रंग अलग हैं और प्रत्येक विश्व की परिस्थितियों और आवश्यकताओं पर निर्भर करते हैं। तुम इस विश्व के सम्बन्ध में देखोगे, और मेरी आवाज तुम्हारे साथ जायेगी और जब तुम इस विश्व को काफी देख चुकोगे, तो इसकी महानता तुम्हारे सामने स्पष्ट हो जायेगी। तुम भूतकाल में यात्रा करोगे और तब तुम ये देखोगे कि, विश्व कैसे खोजे जाते हैं, विश्व कैसे पैदा होते हैं, और कैसे हम उनकी सहायता करने का प्रयास करते हैं, जो स्वयं को सहायता प्राप्त करने की इच्छा रखते हैं। इसे हमेशा याद रखो; अंतरिक्ष के हम लोग पूर्ण नहीं हैं क्योंकि ब्रम्हाण्ड के किसी भी हिस्से के एक प्राणी में, जबकि कोई पदार्थ के रूप में हो, पूर्णता अस्तित्व में नहीं हो सकती। परन्तु हम प्रयत्न करते हैं, हम जितना अच्छा कर सकते हैं, उतना करते हैं। कुछ भूतकाल में हैं, जैसा कि तुम सहमत होगे, जो बहुत अच्छे रहे हैं, और कुछ हमारे खुद के दुख के लिये, बहुत खराब रहे हैं। परन्तु हम तुम्हारे विश्व की पृथ्वी की, इच्छा नही करते, इसके बदले में, हम इच्छा करते हैं कि, तुम इसे विकसित करोगे, कि तुम वहॉ रहोगे, परन्तु हमें ये सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि, आदमी के काम, अंतरिक्ष को प्रदूषित न करें और दूसरे विश्व के लोगों को खतरे में न डालें। परन्तु अभी तुम इससे अधिक, नेतृत्व करने वाला विश्व देखोगे।

''मैं इन विश्वों के ऊपर अचम्भित हुआ,'' बूढ़े साधु ने कहा, *''मैंने गहराई से इन टिप्पणियों के पीछे की चेतावनी के ऊपर आश्चर्य किया क्योंकि, मुझे ऐसा लगा कि, भाईचारे की ये सभी बातें, प्रेम का एक ढोंग थीं। मेरे खुद के मामले में, मैंने सोचा, एक ऐसा है, जो इस बहस की भ्रान्ति को दिखाता है। यहॉ मैं, खुद को एक गरीब और अज्ञानी स्वीकार करते हुये, एक अत्यन्त गरीब बंजर, निर्जन अविकसित देश का, निवासी हूॅ और मुझे, पूरी तरह से अपनी इच्छाओं के विरुद्ध, पकड़ा गया था, मेरी शल्य चिकित्सा की गई थी, और जहॉ तक मैं जानता हूॅ, मुझे अपने शरीर से जबरदस्ती बाहर निकाला गया था। यहॉ में था– कहॉ ? इतना सब करने की, मानवता की भलाई की बात, मुझे खोखली दिखाई दी।''*

आवाज, मेरे विक्षुब्ध विचारों के अन्दर, ये कहती हुई फूटी, *''भिक्षु तुम्हारे विचार, हमारे उपकरणों के द्वारा, हमें सुनाई पड़ रहे हैं और तुम्हारे विचार, सही विचार नहीं हैं, तुम्हारे विचार, वास्तव में, भ्रान्तिपूर्ण हैं। हम बागवान हैं और किसी बागवान को, मरे हुए जंगल को हटाना ही पड़ता है, उसे अनचाहे खरपतवार को हटाना ही पड़ता है। परन्तु जब अच्छी प्रणाली मिल जाती है, तब कई बार, बागवान उसे मूल पौधे से हटा देता है और कहीं दूसरी जगह लगा देता है, ताकि ये एक नई प्रजाति के रूप में बढ़ सके या अपनी खुद की प्रजातियों के बीच, अधिक महानता के साथ, विकसित भी हो सके। तुम्हारे खुद के विश्वासों के अनुसार, यहॉ तुमको कुछ–कुछ खराब व्यवहार दिया गया है। हमारे विश्वास के अनुसार, तुमको एक सांकेतिक आदर दिया गया है, एक आदर, जो बड़े–बड़े कुछ लोगों के लिये ही, सुरक्षित है। विश्व की प्रजातियों के लिये, एक आदर, सुरक्षित।''* आवाज हिचकिचाई और तब चलती गई, *''हमारा इतिहास, पृथ्वी के समय के अनुसार, अरबों सालों पीछे तक जाता है, अरबों–अरबों सालों तक, परन्तु हम मान लें कि, तुंम्हारे ग्रह का, जिसे तुम पृथ्वी कहते हो, सम्पूर्ण जीवन, पोटाला की ऊॅचाई से निरूपित किया गया हो, तब पृथ्वी पर मनुष्य का जीवनकाल, एक कमरे की छत की अंदरी सतह पर होती हुई, उस पर फेरे गये पेन्ट की एक सतह की मोटाई के बराबर, माना जा सकता है। ये इसप्रकार है तुम देखो, आदमी, इस पृथ्वी पर इतना नया है कि,*

किसी भी मानव को, ये निर्णय करने के प्रयास करने का, अधिकार नहीं है, कि हम क्या करते हैं।''

''बाद में, तुम्हारे खुद के वैज्ञानिक खोज करेंगे, उनके खुद के, गणितीय संभावनाओं के नियम, जो स्पष्टरूप से ये इंगित करेंगे कि, पृथ्वी के बाहर भी जीवन होने का प्रमाण है। ये भी इंगित करेगें कि, पृथ्वी के बाहर के जीवन के प्रमाण में, उनको बहुत दूर पहुॅचनेवाले, अपने प्रायद्वीपीय ब्रम्हाण्ड को और इसके परे, जिसमें तुम्हारी पृथ्वी शामिल है, दूसरे ब्रम्हाण्डों में भी देखना चाहिए। परन्तु न तो अभी समय है और न ही ये स्थान, इस प्रकृति की चर्चा में उलझने का है। इस आश्वासन को स्वीकार करो कि, तुम अच्छा काम कर रहे हो और हम इसमें अच्छा जानते हैं। तुम आश्चर्य कर रहे हो कि, तुम कहॉ हो और मैं तुम्हें बताऊॅगा कि, तुम्हारी शरीर से मुक्त हुई आत्मा, केवल अस्थाई रूप से, तुम्हारे शरीर से अलग की गई आत्मा ने, तुम्हारे खुद के ब्रम्हाण्ड की पहुॅच से दूरस्थ बिन्दु से भी अधिक दूर की यात्रा कर ली है और दूसरे ब्रम्हाण्ड के ठीक केन्द्र में, प्रमुख गृह के केन्द्रीय शहर में पहुॅच गई है। हमारे पास तुम्हें दिखाने के लिये, बहुत कुछ है और तुम्हारी यात्रा, तुम्हारे अनुभव, केवल शुरूआत मात्र हैं। तथापि, विश्वस्त रहो, कि तुम उस विश्व को जो अभी है, जो ठीक इस क्षण में है, देख रहे हो क्योंकि, आत्मा में समय और दूरियों का कोई अर्थ नहीं होता।''

''अब हम चाहते हैं कि, तुम अपने आपको उस विश्व, जिस पर तुम हो, से परिचित बनाओ, जिससे तुम अधिक आसानी से, अपने अनुभवों के प्रमाण को श्रेय दे सको। जब हम और अधिक महत्वपूर्ण चीजों की ओर आयें क्योंकि शीघ्र ही, हम तुम्हें भूतकाल में, आकाशीय अभिलेखों के माध्यम से भूतकाल में, जहॉ तुम अपने खुद के ग्रह, पृथ्वी का जन्म देखोगे, भेजेंगें।''

''आवाज बन्द हो गई,'' साधु ने कहा, और वह थोड़े, कुछ क्षणों के लिये रुका और उसने अपनी चाय की चुस्की ली, जो अबतक एकदम ठण्डी हो गई थी। उसने अपने कटोरे को एक तरफ रखा और अपनी पोशाक को पुर्नव्यवस्थित करने के बाद, अपने दोनों हाथों को एक दूसरे में फंसाया। नौजवान भिक्षु उठा और (उसने) आग में और अधिक लकड़ी डाली और कम्बल को बूढ़े साधु के कन्धों पर और अधिक कस कर, खींच कर, लपेटा।

''अब,'' बूढ़े आदमी ने कहना जारी रखा, मैं तुम्हें बता रहा था कि, मैं भगदड़ की अवस्था में था; हॉ वास्तव में, मैं भुलावे की अवस्था में था और जब मैं वहॉ इस विशालता के ऊपर झूमा, मैंने अपने आपको गिरता हुआ पाया, मैंने अपने आपको विभिन्न तलों में होकर या बड़ी इमारतों के बीच सेतु में हो कर गुजरता हुआ पाया। मैंने अपने आपको, जो काफी आनन्ददायक पार्क दिख रहा था और एक प्लेट फार्म के ऊपर बनाया गया था, या मेरे समर्थन से ऐसा लगता था, गिरता हुआ पाया। वहॉ की घास लाल थी, और तब मेरे आश्चर्य के लिये, मैंने उसके एक तरफ हरी घास देखी। लाल घास में एक तालाब था, जिसमें नीला पानी था और दूसरे तालाब में, हरे घास के हिस्से में, जिसमें सुगंधित बैंगनी रंग के पानी वाले पुष्प थे। दोनों के आसपास, मिले–जुले लोगों का, एक आश्चर्यजनक जमाबड़ा था। अब तक मैं कुछ–कुछ भेद करना प्रारम्भ कर रहा था कि, कौन से इस लोक के मूल निवासी हैं और कौन से दूसरे ग्रहों से आये हुए आगन्तुक हैं। वहॉ कुछ चीज, झेलने में और उनके आचरण में, परिष्कृत भी थी। जो यहॉ के मूल निवासी थे, वे अधिक उन्नत प्रजाति के, और अपनी उस स्थिति के प्रति पूर्णतः जागरूक दिखाई दिये।

तालाबों के आसपास, वहॉ वे लोग थे, जो अधिक पुरूषत्वपूर्ण और साहसी थे और दूसरे, जो पूरी तरह से मादा स्वभाव के थे। लोगों का तीसरा समूह, जो स्पष्टरूप से उभयलिंगी (epicene) था। मैं यह देखने में रुचि रखता था कि, सिवाय मादाओं के, जो अपने बालों में कुछ पहने हुये थीं, यहॉ सभी लोग पूरे नंगे थे। मैं अन्तर नहीं कर सकता कि वे क्या थे, परन्तु वे किसी प्रकार के धातु के गहने पहने दिखाई दिये। मैंने स्वयं ही उस स्थान से बाहर जाने की इच्छा की क्योंकि, इन नंगे लोगों के कुछ खेल, मेरी पसंद के बिल्कुल नहीं थे, क्योंकि बहुत शुरू के दिनों में मेरा लालन पालन, एक लामामठ में, और इसप्रकार पूरी तरह से पुरुषों के

वातावरण में हुआ था। परन्तु इशारों में से कुछ के उद्देश्यों को, जिनमें मादायें शामिल थीं, मैं हल्के से समझ पाया। मैंने स्वयं के, ऊपर और दूर जाने की इच्छा की।

मैं शेष बचे नगर के ऊपर, तेजी से आरपार चलता गया और नगर के बाहरी किनारे पर आया, जहॉ आबादी काफी कम थी। परन्तु सभी खेत और पेड़–पौधे बहुत अच्छी तरह उगाये गये हुये थे और मैंने समझा, जलीयकृषि (aquiculture) से जुड़ी हुई, बहुत बड़ी–बड़ी जागीरें थीं, परन्तु उन लोगों को छोड़ कर, जो कृषिविज्ञान (agriculture) का अध्ययन कर रहे हों, कम अभिरुचि का भी क्या होगा।

मैं, और किसी उद्देश्य के लिये, जिसके लिये मैंने अपने आपको निर्देशित किया, ऊॅचा उठा और मैंने केसरिया रंग का एक अद्भुत महासागर देखा, वहॉ समुद्रतट पर, लाईन से लगी हुई, बड़ी–बड़ी चट्टानें थीं। पीले रंग की चट्टानें, बैगनी रंग की चट्टानें, सभी रंगों और रंगतों (tints) की चट्टानें। परन्तु समुद्र, स्वयं में केसरिया था। मैं इसे नहीं समझ सका। पानी पहले से ही अलग रंग का दिख रहा था। ऊपर की तरफ ताकते हुये मैंने इसका उत्तर समझा। एक सूर्य छिप चुका था और दूसरा उठ रहा था, इस तरह से तीन सूर्य हो गये ! तीसरे सूर्य के, गिरते हुये और बढ़ते हुये उठान के साथ, एक दूसरे (सूर्य) के कारण रंग बदल रहे थे, हवा की रंगत भी भिन्न प्रकार की लग रही थी। मुझ हतबुद्धि की नजर ने देखा, घास की जमीन (grass land), और, जमीन (land), चौड़ी नदी, जमीन जो समुद्र में डूबी थी (spit land) सब धब्बेदार हो गईं और फिर उनका बदलता हुआ रंग, लाल से बैंगनी हो गया, बैंगनी से ये पीला हो गया, और तब अन्त में स्वयं समुद्र ने भी धीमे–धीमे रंग बदले। इसने मुझे उस विधि का ध्यान दिला दिया, जिसमें शाम के समय, जब संध्या का सूर्य, हिमालय की ऊॅची–ऊॅची श्रेणियों में नीचा, छिप रहा होता था, कई बार उनके रंग बदल जाते थे और घाटी में, दिन की चमकती हुई रोशनी के बदले में, कैसे एक बैंगनी सी संध्या बनती और ऊॅची–ऊॅची बर्फें भी, अपने शुद्ध सफेद रंग को गुमा देतीं थीं और नीली या किरमिची लाल (crimson red) जैसी दिखाई देतीं थीं। और इस प्रकार मैंने समझा कि इस मामले में, मेरी समझ के ऊपर वहॉ कोई बड़ा तनाव नहीं था। मैंने अनुमान किया कि, और दिनों की भॉति, इस ग्रह पर रंग हमेशा बदलते रहते होंगे।

परन्तु इससे पहले इतना अधिक कभी नहीं देखने के कारण, मैं पानी के ऊपर नहीं जाना चाहता था। मुझमें प्राकृतिकरूप से, इसके प्रति डर की भावना थी और कुछ गड़बड़ी हो सकती है इसका डर था, कि मैं इसमें गिर न जाऊॅ। इसलिये मैंने अपने विचारों को अन्दर की तरफ, अन्दर के देश में मोड़ा; इस पर, शरीर से अलग हुई मेरी आत्मा, जैसे पहियों पर घूम गई और मैं, चट्टानी समुद्र तट पर और छोटे खेतोंवाले क्षेत्र में, तेजी से कुछ मील ऊपर चला। और तब अपनी अवर्णनीय प्रसन्नता के लिये, मैंने पाया कि मैं एक इलाके में था, जो कुछ–कुछ परिचित था, इसने मुझे बंजर भूमि की याद दिला दी। मैंने नीचे की तरफ झपट्टा मारा और उस लोक के चेहरे के ऊपर, झुरमुट बनाये हुए छोटे से पेड़ों को भी देखा। अब सूर्य की रोशनी में अन्तर होने के साथ, वे मुझे फूलों वाली झाड़ी के समान, भूरे डंठल के साथ, थोड़े बैंगनी रंग के फूल दिखाई दिये। वहॉ पर, आसपास में उसकी एक कतार थी, जो इस प्रकाश में, पीले भटकटैया जैसी, कॉटेदार झाड़ी से मिलता जुलता था, परन्तु यहॉ के पौधों में कॉटे बिल्कुल नहीं थे।

मैं कुछ सौ फीट ऊपर उठा और धीमे से इस सुखद दृश्य के स्थान पर उतर गया, जो मैंने इस अनोखे विश्व में देखा था। इन लोगों के लिये, निसंदेह ये एक बहुत उजाड़ क्षेत्र था। वहॉ आबादी का कोई चिन्ह् नहीं था, सड़क का कोई निशान नहीं। जंगल की उस आनन्ददायक घाटी में, मैंने एक छोटी झील और एक ऊॅची पहाड़ी पर गिरता हुआ, उसमें लुढ़कता हुआ और उसे पोषित करता हुआ, एक छोटा सा झरना पाया। मेरे सिर के ऊपर की शाखाओं के बीच में से छन कर आने वाले, बदलते हुए प्रकाश से बनने वाले प्रतिबिंबों को, और बदलती हुई छायाओं को देखते रहने के कारण, मैं थोड़ी देर के लिये वहॉ टिका रहा। परन्तु वहॉ लगातार ये जोर पड़ रहा था कि, मैं चलता रहूॅ। मुझे ऐसा लगा कि, मैं यहॉ अपने आनन्द,

मेरे खुद के आनन्द, अपने मनोरंजन के लिये नहीं हूँ,; मैं यहॉ इसलिये था कि, दूसरे लोग मेरे माध्यम से देख सकें। मुझे फिर से उठाया गया और हवा में ऊॅचा उछाल दिया गया, और गति में बहुत तेज बढ़ा दिया गया। मेरे नीचे समुद्र था। मेरी इच्छा के विरुद्ध, जबतक कि मैं वहॉ नहीं आया, जो निसंदेह दूसरी भूमि, दूसरा लोक था, मुझे समुद्र के ऊपर धकेल दिया गया। यहॉ नगर छोटे परन्तु पूरी तरह से फैले हुए थे। परिचित, जैसा कि मैं अब था, वे आकार में कमतर थे परन्तु बड़े, दूसरी किसी भी चीज से बहुत, बहुत बड़े,, जिसको मैं कभी, पृथ्वी, जिसे मैंने अभी छोड़ा हुआ था, पर देखने की आशा कर सकता हूँ।

मेरी गति को सहसा रोक दिया गया और मैं आसपास घूमते हुये, एक गहरे चक्रव्यूह में फॅस गया और तब मैंने नीचे देखा। मेरे नीचे एक बहुत आश्चर्यजनक साम्राज्य था, ये जंगल के बीच में व्यवस्थित, एक पुराने किले जैसा दिखाई दिया। किला पूरी तरह से बेदाग था और मैंने उसके कंगूरों और प्राचीर, जिनका निश्चितरूप से, इस जैसी सभ्यता में कोई स्थान नहीं था, पर आश्चर्य किया। जैसे ही मैं पूरे मामले के ऊपर आश्चर्य कर रहा था, आवाज फूटी, ''ये स्वामी का घर है। ये वास्तव में, अत्यधिक प्राचीन स्थान है, इस प्राचीन लोक में, सबसे अधिक पुरानी इमारत। ये एक पवित्र स्थान है, जहॉ सभी शांतिप्रिय लोग आते हैं ताकि वे प्राचीरों के बाहर खड़े रह सकें और विचारों में शान्ति के लिये, उस शांति के लिये, जोकि सबको प्रकाश के इस साम्राज्य के अन्दर घेर लेती है, अपना धन्यवाद दे सकें। एक प्रकाश, जिसमें कभी अंधेरा नहीं होता, क्योंकि यहॉ पॉच सूर्य हैं और यहॉ कभी अंधेरा नहीं होता। हमारा उपापचय (metabolism), तुम्हारे विश्व से अलग है। हमें अपनी नींद का आनन्द लेने के लिये अंधेरे के घण्टे नहीं चाहिए, हम अलग तरीके से व्यवस्थित किये गये हैं।

अध्याय आठ

बूढ़ा साधु बेचेनी से हिला और पतले कम्बल के नीचे कांपा। *''मैं फिर से गुफा में अन्दर प्रवेश करूँगा,'' उसने कहा, ''मैं इतने लम्बे समय तक खुले में रहने का अभ्यस्त नहीं हूँ।''*

नौजवान भिक्षु, गये गुजरे युग की आश्चर्यजनक कहानी के ऊपर चिन्तन करते हुये, एक झटके के साथ, सजग हुआ। *''ओह !''* उसने चीख मारी, *''बादल उठ रहे हैं। शीघ्र ही हम देखने में समर्थ होंगे।''* सावधानीपूर्वक, उसने बूढ़े आदमी को देखा और उसे हाथों से बचाता हुआ आग की तरफ, और गुफा में अन्दर, जिसमें अब कुहासा साफ हो चुका था, ले गया। *''मुझे ताजा पानी और लकड़ी लानी चाहिए,''* नौजवान आदमी ने कहा। *''जब मैं लौटूंगा, हम कुछ चाय लेंगे परन्तु मैं सामान्य से थोड़ा अधिक बिलम्बित हो सकता हूँ क्योंकि, अब लकड़ी की तलाश में, मुझे ज्यादा दूर तक घूमना पड़ेगा। जो हमारे आसपास थीं, हम उस सबका उपयोग कर चुके हैं।''* उसने गुफा को छोड़ते हुये, खेदपूर्वक कहा। उसने बची हुई लकड़ियों का आग के ऊपर ढेर लगाया और नीचे जाने के लिये तैयार होने से पूर्व, पानी की कट्टी को उस पर रख दिया।

बादल तेजी से उठ रहे थे। ताजी हवा चल रही थी और जैसे ही नौजवान भिक्षु ने बादलों की ओर देखा, वे और ऊँचे उठे और उन्होंने पहाड़ी दर्रे को प्रकट कर दिया। यहाँ तक कि वह, छोटे काले धब्बों को भी, जो कि व्यापारी हो सकते थे, नहीं देख सका। न ही वह, आग के धुंए और हिलते हुये बादलों के बीच फर्क कर सका। व्यापारी अभी भी आराम कर रहे थे, नींद पकड़ने के प्रयास में, थोपे गये (enforced) विराम का लाभ लेते हुये, आराम करते हुये उसने सोचा। कोई भी व्यक्ति, बादल गिरने के समय, पहाड़ी दर्रों में होकर नहीं गुजर सकता, खतरे बहुत ज्यादा होते हैं। एक गलत कदम, आदमी या जानवर को, पहाड़ी चट्टानों की सीमाओं से हजारों फीट नीचे, बहुत नीचे गिरा देगा। नौजवान आदमी ने एक नई ताजी दुर्घटना के बारे में सोचा, जब वह, पहाड़ी की एक चोटी के पैरों में, नीचे, एक छोटे लामामठ की यात्रा कर रहा था। बादल नीचे थे, लामामठ की छत के ठीक ऊपर। अचानक ही वहाँ, गिरते हुए पत्थरों की, कुछ लुढ़कन हुई और एक कर्कश चीख निकली। वहाँ से एक चीख आयी और किसी के दलदली भूमि में गिरने का धमाका हुआ–कोई एक, गीले जौ के बोरे की तरह से, जमीन पर उछाला गया। नौजवान आदमी ने, आदमी जो जमीन पर गिर कर मर रहा था, की अभी भी, आदमी से जुड़ी हुई आँतों को, चट्टान से लगभग बारह फुट ऊपर, गोल फंदा बनते हुये देखा था। बेचारा दूसरा व्यापारी, या यात्री, यात्रा कर रहा था, जबकि यात्रा नहीं करनी चाहिए थी, उसने सोचा।

जैसे ही वह जवान आदमी, अपने रास्ते पर आगे की तरफ बढ़ा, झील अभी भी, कुहरे में ढ़की हुई थी और पेड़ों की चोटियाँ दैत्य और चांदी के रूप में दिख रही थीं। ओह! एक महान उपलब्धि, तूफान के कारण, पेड़ की एक पूरी डाल, अपने मुख्य तने से टूट कर अलग हो गई है। उसने पतली होती हुई बाड़ के बीच में से देखा और निश्चय किया कि तूफान के बीच, पेड़ के ऊपर बिजली गिरी है। चारों तरफ शाखायें थीं, और पेड़ का मुख्य तना, अपने आप में कट कर पूरा खुल गया था। गुफा के इतना अधिक नजदीक, भी, उसने सोचा। उत्साहपूर्ण ढंग से, उसने सबसे बड़ी शाखा को, जिसकी वह व्यवस्था कर सकता था पकड़ लिया और धीमे से इसे गुफा के मुँह की तरफ पीछे खींचा। जबतक कि, वह इतना अधिक नहीं थक गया कि, वह और आगे व्यवस्था नहीं कर सके, वह यात्रा के बाद यात्रा, करता गया। कठिनाई से अपनी कट्टी को पानी से भरते हुये, उसने अपना रास्ता गुफा की तरफ वापस लिया। पानी को गर्म करके उबालने के लिये, आग पर रखने के लिये रुकने के अलावा, वह अन्दर गया और उसने साधु को कहा।

एक पूरा पेड़, आदरणीय! मैंने पानी को उबलने के लिये रख दिया है और हम चाय और त्सम्पा लेने के बाद, व्यापारियों के आने और (आग) जलाने के पहले, मैं बाद में, और अधिक लकड़ी लाऊँगा।

बूढ़े साधु ने दुखपूर्वक जवाब दिया, *''देखने के लिये अयोग्य होने के कारण, और मदद*

करने का प्रयास करने में, मैं फिसल गया और सभी जौ को बिखरा दिया (इसलिये) वहॉ त्सम्पा नहीं होगा। अभी ये हमारे फर्श की जमीन पर पड़ा हुआ है।'' बेचेनी से हॉफने के साथ, नौजवान भिक्षु, अपने पैरों पर उछला और उसने वहॉ के लिये, जहॉ उसने जौ छोड़े थे, जल्दी की। कुछ नहीं बचा था। अपने हाथ और घुटनों के ऊपर झुकते हुये, उसने सपाट चट्टान के आधार के आसपास खरोंच कर देखा। जमीन, बालू और जौ, विकट तरीके से मिल गये थे। कुछ भी बचाया नहीं जा सका। यहॉ विपदा थी। धीमे से, वह अपने पैरों पर खड़ा हुआ और साधु की तरफ चला। एक अचानक विचार ने, उसे वापस दौड़ जाने के लिये भेजा; चाय की ईंट – क्या वह सुरक्षित थी ? दूर की तरफ, बगल से छितरे हुये डेले फर्श पर पड़े थे। बूढ़े आदमी ने ईंट को ठुकरा दिया था और तब केवल कुछ डेलों को छोड़ कर, सब कुछ जमीन पर कुचला हुआ था। नौजवान भिक्षु, दुःखपूर्वक बूढ़े आदमी की तरफ चला। *''और अधिक खाना नहीं है, आदरणीय, और हम इस समय केवल चाय लेंगे। हमें आशा करनी चाहिये कि, आज व्यापारी आयेंगे या हम भूखे रहेंगे।''*

''भूख ?'' बूढ़े ने जवाब दिया। *''बहुधा मैं एक हफ्ते या उससे ज्यादा समय के लिये, बिना खाने के रह जाता हूँ। हम अभी गरम पानी पी सकते हैं; कोई एक, जिसके पास साठ सालों से, ठण्डे पानी के अलावा, पीने के लिये कुछ नहीं है, गरम पानी एक विलासिता* (luxury) *है,''* कुछ क्षणों के लिये वह शान्त था और तब उसने फिर कहा, *''अब भूख को झेलना सीखो। अब धैर्य धारण करना सीखो। अब हमेशा रचनात्मक रास्ते को सीखो, क्योंकि तुम्हारे जीवन में तुमको, भूख और पीड़ा का पता लगेगा; वे तुम्हारे स्थाई साथी होंगे। वहॉ तमाम हैं, जो तुम्हें नुकसान पहुँचायेंगे, तमाम, जो तुम्हें अपने स्तर तक नीचे खींचने का प्रयास करेंगे। केवल सकारात्मक मन के द्वारा– सदैव सकारात्मक– तुम जिन्दा रहोगे और उन सभी सुनवाईयों और आपत्तियों* (trialsand tribulations)*, जो अधिकतम रूप से तुम्हारी होंगी, के ऊपर पार पाओगे। अब, अभी ये सीखने का समय है। अभ्यास करने का समय हमेशा है। जो कुछ भी तुम अभी सीखते हो, जहॉ तक तुमको विश्वास है, जहॉ तक तुम सकारात्मक हो, तब तुम हर चीज को झेल सकते हो, और दुश्मन के सबसे खराब हमलों से, प्रफुल्लित विजय के रूप में उभर सकते हो।''*

डर के मारे नौजवान भिक्षु लगभग बेहोश हो गया; ये सभी आने वाली आपदा के संकेत मात्र थे। समीपवर्ती, आनेवाली कयामत की ये सभी भविष्यवाणियॉ, ये सभी चेतावनियॉ और सम्बोधन। जीवन में, जो उसे जीना था, क्या कुछ खुशी या प्रसन्नता नहीं थी ? परन्तु तब उसे अपनी शिक्षा याद आई; ये माया का लोक है। इस लोक में सभी जीवन माया है। यहॉ हमारा महान अधिस्वयं (overself), अपनी कठपुतली को भेजता है, ताकि ज्ञान प्राप्त किया जा सके, तब मानी गई कठिनाइयों को पार किया जा सकता है। पदार्थ जितना अधिक मूल्यवान होगा, उसकी परीक्षायें उतनी ही सख्त होंगी और केवल दोषपूर्ण पदार्थ फेल होता है। ये माया का लोक है, जहॉ मनुष्य, स्वयं में एक छाया है, उस महान अधिस्वयं के विचारों का एक विस्तार, जो कहीं दूसरी जगह रहता है। फिर भी, उसने उदास हो कर सोचा, वे कुछ अधिक प्रसन्न हो सकते हैं। परन्तु तब, ये कहा जाता है कि, किसी भी व्यक्ति को उससे अधिक नहीं दिया जाता, जितना वह सहन कर सकता है, और मनुष्य स्वयं ही चुनता है कि, वह क्या काम करेगा, किन परीक्षणों के अन्तर्गत वह गुजरेगा। *''मैं पागल हो जाऊँगा,''* उसने अपने आप से कहा, *''यदि मैंने अपने लिये, कष्टों के इस भार को, व्यवस्थित किया !''*

बूढ़े साधु ने कहा, *''तुम्हारे पास, उन शाखाओं के ऊपर, जो तुम लाये, ताजा छाल है?''*

''हॉ, आदरणीय, पेड़ बिजली से टूट गया था। कल ये एकदम ठीक था,'' नौजवान आदमी ने उत्तर दिया।

''छाल को उतार दो। उसकी खाल के बाहरी हिस्से से, अन्दर की तरफ, सफेद परत को निकाल लो, बाद वाली को फैंक दो और तब सफेद को, सफेद तन्तुओं को, उबलते हुये पानी में डाल दो। ये अत्यधिक पुष्टिकारक भोजन होता है, यद्यपि इसका स्वाद उतना अच्छा नहीं होता। क्या हमारे पास कुछ नमक, या सुहागा या चीनी बची हुई है ?''

''नहीं, श्रीमान्, एक बार पीने के लिये पर्याप्त चाय के सिवाय, हमारे पास कुछ नहीं है।''

''तब चाय को भी कट्टी में डाल दो। परन्तु प्रसन्न हो जाओ, हम भूखे नहीं मरेंगे। बिना खाने के तीन या चार दिन, मात्र तुम्हारी मानसिक स्पष्टता को बढ़ायेंगे। यदि चीजें और ज्यादा खराब हो जायें तो, तुम खाने के लिये, आसानी से समीपवर्ती साधु की कुटी तक जा सकते हो।''

उदास हो कर, नौजवान भिक्षु ने छाल में से पतली पर्त को अलग करने का काम शुरू किया। मोटी और खुरदरी, गहरी बाहरी छाल ने, आग को पोषित करने में मदद की। चिकनी हरी सी सफेद अन्दर की पर्त, छीली हुई और अब – उबलते हुये पानी में भरी हुई। उदासी के साथ, उसने चाय के अंतिम डेले को उछाल दिया और इतना ऊँचा कूदा कि, उबलते हुये पानी के छींटों ने, उसकी कलाई को जला दिया। अभी छीली गई टहनी को पकड़ते हुये, उसने पानी की कट्टी के सम्पूर्ण मिश्रण को हिलाया। उचित डर के साथ, उसने टहनी को खींच लिया और उसके अंत को चखा, जिस पर मिश्रण की कुछ बूंदे चिपकी थीं; ये उसके सबसे तेजी से अनुभव होते हुये, खराब भय थे। गर्म पदार्थ, क्षीण चाय की सुगंध के साथ, खालीपन की तरह से स्वाद दे रहा था।

बूढ़े साधु ने अपना कटोरा पकड़ा। *''मैं इसे खा सकता हूँ, जब मैं पहली बार यहाँ आया था, खाने के लिये यहाँ कुछ भी नहीं था। उन दिनों में, यहाँ गुफा के प्रवेशद्वार तक छोटे पेड़ थे। मैंने उन्हें खाया ! अन्त में लोग, मेरी उपस्थिति को जान गये, और तब से अधिकांश समयों में, मैं खाने की आपूर्ति पाता रहा हूँ। परन्तु यदि मुझे हफ्ते या दस दिन के भी, मुझे बिना खाने के रहना पड़े तो मैं कभी चिन्ता नहीं करता। पानी, यहाँ हमेशा रहता है। एक आदमी को इससे ज्यादा क्या चाहिए। ''*

गुफा के अंधियारे में, आदरणीय के चरणों में बैठते हुये, दिन का प्रकाश तेज होते हुये और बाहर की तरफ और तेज होते हुये, नौजवान भिक्षु ने सोचा कि, वह पूरी शाश्वतता (eternity) के लिये, सीखता हुआ, हमेशा सीखता हुआ, यहाँ बैठा रहा है। अब प्रेमपूर्वक उसके विचार, उसके मन में अधिकांशतः भूतकाल की एक चीज, ल्हासा के टिमटिमाते हुये मक्खन के दीपों की तरफ मुड़ गये। उसे कितने लंबे समय तक यहाँ रहना पड़ेगा, यह अनुमान लगाने का विषय था। जबतक कि, बूढ़े आदमी के पास और कुछ बताने के लिये न रहे, उसने सोचा। जबतक कि, बूढ़ा आदमी मर न जाए और वह उसकी लाश को ठिकाने न लगा दे। इस विचार के डर ने, उसमें कंपकपी पैदा कर दी। कितना भयानक, उसने सोचा, तब उस आदमी से बात करनी होगी, ठीक एक घन्टे या उसके बाद, पक्षियों के लिये उसकी अंतड़ियों को खोलना, या उसकी हड्डियों का चूरा करना ताकि उसका कोई भी हिस्सा, जमीन पर बिना पलटा हुआ, बचा न रहे। परन्तु बूढ़ा आदमी तैयार था। उसने अपना गला साफ किया, पानी की एक चुस्की ली और अपनी बाँहों को आराम दिया।

'' उस महान किले के अन्दर घूमता हुआ, जिसमें इस सर्वोच्च लोक का स्वामी रहता था, मैं, शरीर से पृथक, एक आत्मा के रूप में था'' बूढ़े साधु ने प्रारम्भ किया। *''मैं ये देखने की इच्छा कर रहा था कि, आदमी के किस ढंग ने, उसको, इस अस्तित्व के कुछ अत्यन्त शक्तिशाली लोकों का आदर और प्यार दिलाया। मैं ये निश्चय करने के लिये उत्सुक था कि, आदमी –और – औरत का कौन सा ढंग, शताब्दियों तक लगातार झेला जा सकता है। स्वामी और उसकी पत्नी।''* परन्तु ये नहीं होना था। मुझे एक छोटे बच्चे के रूप में, जो अपनी पतंग को (झटका) देता है, पीछे की तरफ, झटका लगा। मैं पीछे की तरफ झटके से खींच लिया गया। *''ये पवित्र भूमि है,''* आवाज ने बहुत रूठकर कहा, ''ये अज्ञानी मूल निवासियों, के लिये नहीं है तुमको दूसरी चीजें देखनी हैं।'' और तब ये हुआ कि, मुझे कई मील नीचे खींचा जाय और तब एक दूसरे अलग रास्ते पर मोड़ दिया गया।

मेरे नीचे, उस लोक की विशेषतायें क्षीण हो गईं और शहर, नदी के किनारे के बालू, जैसे हो गये और मैं हवा के बाहर, हवा में ऊँचा उठा; मैंने, जहाँ हवा नहीं थी, वहाँ की यात्रा

की। अंत में, मेरी दृष्टि के क्षेत्र में, एक अजूबा सा ढॉचा आया, जिसके जैसा मैंने पहले कभी नहीं देखा था। जिसका उद्देश्य में नहीं समझ सका। जहॉ इस वायुरहित रिक्त स्थान में, शरीर से पृथक की हुई आत्मा के सिवाय, मैं अस्तित्व में रह सकता था, वहीं धातु का, तैरता हुआ एक शहर, किसी रहस्यमय तरीके से, मेरे समझने की पूरी ताकत के परे, हवा में ऊॅचा रखा गया था। ज्यों ही मैं समीप पहुॅचा, विस्तार स्पष्ट होते गये और मैंने देखा कि, शहर धातु की एक जमीन के ऊपर खड़ा था और उसके ऊपर के सिरे ढ़के हुये थे। वहॉ एक पदार्थ था, जो कॉच से भी ज्यादा साफ था, यद्यपि ये कॉच नहीं था। उस पारदर्शक चमक के नीचे, मैं लोगों को शहर, एक शहर जो ल्हासा के शहर से बड़ा था, की सड़कों पर देख सकता था।

वहॉ इमारतों में से कुछ के ऊपर, अनोखे उभार थे और ये महल जैसी बड़ी इमारतों में से एक थी, जहॉ मुझे भेजा गया। *''ये एक बड़ी बेधशाला* (observatory) *है,''* आवाज ने मेरे मस्तिष्क के अन्दर कहा।*''एक बेधशाला, जहॉ से तुम्हारे पृथ्वीलोक का जन्म, किसी प्रकाशीय उपकरण के द्वारा नहीं, परन्तु विशेष किरणों के द्वारा, जो तुम्हारी समझ के परे हैं, गवाही के रूप में देखा गया था। कुछ वर्षों के अन्दर तुम्हारे लोक के लोग, रेडियो के इस विज्ञान को खोज लेंगे, अपने उच्चतम विकास में रेडियो, ऐसा होगा जैसे कि, एक निम्नतम कीट का, एक अत्यधिक प्रखर बुद्धिवाले मनुष्य के मस्तिष्क की तुलना में होता है। जो हम यहॉ उपयोग में लाते हैं, वह इससे भी काफी, काफी, परे है। यहॉ ब्रम्हाण्ड के रहस्यों की जॉच की जाती है, दूरवर्ती लोकों की सतह की निगरानी की जाती है, जैसेकि तुम अभी इस उपग्रह की सतह को देख रहे हो। कोई दूरी और कोई बात, कितनी भी बड़ी क्यों न हो, बन्धनकारी नहीं है। हम मन्दिरों में, खेल के मैदानों में भी देख सकते हैं और घरों में भी देख सकते हैं।''*

मैं और भी अधिक नजदीकी के साथ समीप पहुॅचा और अपनी सुरक्षा के लिये डरा क्योंकि, एक बहुत बड़ा स्पष्ट अवरोधक (barrier) मेरे सामने खड़ा था। मुझे उससे टकराने और घाव की पीड़ा का का डर लगा। परन्तु तब, कष्ट मेरे अन्दर आने से पहले, मुझे फिर से याद आया कि, मैं आत्माओं में से एक था, जिनके लिये सबसे अधिक घनी दीवारें भी, एक छाया की तरह से थीं, जिनको इच्छा से पार किया जा सकता था। धीमे से, मैं कॉच जैसे इस पदार्थ में डूब गया और उस अवरोध की सतह के ऊपर आया, जिसको उस आवाज ने उपग्रह नाम दिया था। एक बारगी, मैं, अपने उफनते हुये विचारों को, अपने अन्दर स्थिर करने के प्रयास में, इधर–उधर खिसका, क्योंकि ये *''पिछड़े हुये लोक के एक अविकसित देश के, किसी एक अज्ञानी मूल निवासी को'' झेलने के लिये, और पूरी तरह से विचारवान होने के लिये, सदमा देनेवाला अनुभव था।''*

पर्वत श्रेणियों के ऊपर, नरमी से एक बादल के फिसलने की भॉति, या कोई चन्द्रकिरण शान्ति के साथ, धीमे से, एक झील पर मड़राने की भॉति अलसाते हुये, मैंने, हलचलों, जिसमें मैं पहले शामिल था, से दूर, बगल से खिसकना प्रारम्भ किया और पूरी तरह अनजान मैं, उस पदार्थ की अजनबी दीवार में हो कर बगल से हिला। यद्यपि, मैं अब एक आत्मा था, फिर भी वहॉ मेरे रास्ते का थोड़ा सा विरोध हुआ क्योंकि, मुझे सम्पूर्ण प्राणी होने की खुजली, और– एक बार के लिये– एक अनुभव कि, मैं एक चिपचिपे दलदल में फंसा हुआ था, झेलना पड़ा। एक उत्सुक जकड़ के साथ, जो मेरे पूरे अस्तित्व को फाड़ती हुई लगी, मैंने रुकावट वाली दीवार को छोड़ दिया। जैसे ही मैंने ये किया, मुझे उस आवाज के ये कहने का, गहरा प्रभाव प्रतीत हुआ *''वह निकल चुका है ! मैंने एक बार के लिये सोचा था कि, वह ऐसा नहीं कर पायेगा।''*

परन्तु अब मैं एक बड़े, ढ़के हुये स्थान में और दीवार के पार था, ये *''कमरा''* पद (term) के साथ तुलना करने के लिये अत्यधिक बड़ा था। कल्पनातीत मशीनें और उपकरण आसपास रखे थे। चीजें पूरी तरह से मेरी समझ के परे थीं। फिर भी, उस अहाते के निवासी, कहीं अधिक अनोखी चीज थे। बहुत, बहुत छोटे, मानव प्राणी जैसी, चीजों के साथ, जिन्हें मैंने, हल्के से, उपकरण होना समझा, अपने आप में व्यस्त थे, जबकि दैत्याकार प्राणी, भारी पैकेटों को आसपास, स्थान–स्थान पर हटा रहे थे और उन लोगों के लिये, जो काफी कमजोर थे, कठोर परिश्रम कर रहे थे। *''यहॉ,''* आवाज ने मेरे मस्तिष्क में कहा, *''हमारे पास एक बहुत बड़ा*

तन्त्र है। छोटे लोग नाजुक, सूक्ष्म संतुलन करते हैं और छोटी चीजों को बनाते हैं। बड़े लोग, अपने आकार और शक्ति के अनुसार, बड़ी चीजों को करते हैं। अब चलते चलो।'' उस सहज बल ने मुझे एक बार फिर धक्का दिया जिससे, मैं स्वयं को संतुलित कर सका और उसका मुकाबला कर सका, फिर भी, मेरी प्रगति में दूसरा अवरोध। इसमें प्रवेश करना और निकलना, ये और भी अधिक कठोर था। *''वह दीवार,''* आवाज ने फुसफुसाया, *''ये एक मृत्यु की रोक है। कोई भी यहॉ न तो प्रवेश कर सकता है और न हीं यहॉ से निकल सकता है, जबकि वह मांस (flesh) में हो। यहॉ एक अत्यन्त रहस्यमय स्थान है। यहॉ से हम सभी लोकों को देखते हैं और युद्ध जैसी किसी भी तैयारी को, तुरन्त ही पहचान लेते हैं। देखो !''* मैंने आसपास देखा। क्षणों के लिये, वह, जो मेरे सामने था और उसका कोई अर्थ नहीं था। तब मैंने अपने लुढ़कते हुये अनुभवों के ऊपर पकड़ बनाई और ध्यान केन्द्रित किया। मेरे आसपास की दीवारें, लगभग छै फीट लम्बे और लगभग पॉच फुट ऊॅचे आयतों में बॉटी गई थीं। प्रत्येक एक सजीव चित्र था, जिसके नीचे अनोखे संकेत थे, जिसे मैंने लिखावट समझा। चित्र, चकित करनेवाले थे। यहॉ एक वह था, जिसमें एक लोक चित्रित किया गया था, मानो कि, अंतरिक्ष से देखा गया हो। ये नीला–हरा, अनोखे सफेद पैबन्दों वाला था। एक बड़े धक्के के साथ मैंने देखा कि, ये मेरा खुद का लोक था, मेरे जन्म का लोक। समीपवर्ती चित्र में (हुए) एक परिवर्तन ने, तुरन्त मेरा ध्यान आकर्षित किया। जैसे ही मैंने ऊपर टकटकी लगाई और मैंने देखा कि, मैं अपने लोक का, वहॉ गिरने का एक चित्र देख रहा था, एक विफल अनुभव हुआ, मानो कि, मैं इसके ऊपर गिर रहा होऊॅ।

बादल साफ हो गये, और मैंने भारत और तिब्बत की पुरी बाहरी रेखा (outline) देखी। किसी ने मुझे नहीं बताया कि ऐसा था, फिर भी मैं अपने अंर्तज्ञान (instinct) से इसे जानता था। चित्र बड़ा, और बड़ा, होता गया। मैंने ल्हासा को देखा। मैंने उच्च देशों (high lands) को देखा और तब मैंने ज्वालामुखी के मुॅह को देखा – *''परन्तु तुम उसको देखने के लिये यहॉ नहीं हो''* आवाज ने उत्तेजना में कहा। *''कहीं दूसरी जगह देखो !''* मैंने अपने आसपास देखा और मैं जो देख रहा था, उस पर नये सिरे से आश्चर्य किया। यहॉ, इस चित्र में, एक मंत्री परिषद के प्रकोष्ठ का आंतरिक भाग था। अत्यन्त महत्वपूर्ण दिखनेवाले व्यक्ति, एक सजीव वार्तालाप में मगन थे। आवाजें ऊॅची उठीं, और हाथ भी। शिष्टाचार के एक सदमे भरे अनादर के साथ, आसपास कागज फेंके गये। एक उठे हुये मंच (dias) के ऊपर, बैंगनी चेहरेवाला एक आदमी, व्यग्रतापूर्वक कुछ बोल रहा था। उसकी टिप्पणियों को लगभग समान मात्रा में प्रशंसा (applause) और तिरिस्कार (condemnation) मिल रहे थे। इस सबने, मुझे मठाध्यक्ष स्वामियों (lord abbots) की मीटिंग की याद दिला दी।

मैं मुड़ा। हर जगह ऐसे ही जीवन्त चित्र थे। हर जगह अनजान दृश्य थे, उनमें से कुछ सर्वाधिक असंभव रंगों में थे। मेरा शरीर दूसरे कमरे में चलता गया। अंतरिक्ष के अन्धकार में हिलते हुये, यहॉ धातु की अजीब चीजों के चित्र थे। *''अंधकार''* उपयोग करने का शब्द नहीं है, क्योंकि अंतरिक्ष में, यहॉ अनेक धब्बेदार रंगों के बिन्दु थे, उनमें से अनेक रंग, पहले से पूरी तरह मुझे अज्ञात थे। *''यात्रा में अंतरिक्षयान,''* आवाज ने कहा। *''हम अपने परिवहन का पूर्ण सावधानी के साथ हिसाब रखते हैं।''* दीवार के एक हिस्से में, आदमी का चेहरा आश्चर्यजनक रूप से, सजीव हो कर उछला। उसने कहा, परन्तु मैं उसके शब्दों को नहीं समझ सका। उसने अपना सिर हिलाया और ऐसा संकेत दिया मानोकि, वह एक व्यक्ति के साथ, आमने–सामने बात कर रहा हो। एक मुस्कान व विदाई के संकेत के साथ, वह चेहरा गायब हो गया और दीवार का ढॉचा, फिर से चिकनी भूरी चादर बन गया।

तुरन्त ही ये, एक ऊॅची उड़ती हुई चिड़िया के द्वारा देखे जाने वाले दृश्य से, विस्थापित कर दिया गया। उस लोक का दृश्य, जिसे मैंने अभी छोड़ा था। वह लोक, इस पूरे विस्तृत साम्राज्य का केन्द्र था। इसके पूरे बड़े विस्तार को देखते हुये, मैंने पूरी तरह से यर्थाथता के साथ, नीचे बड़े शहर की ओर देखा। चित्र तेजी के साथ हिला जिससे, मैं फिर से नीचे उस जिले के ऊपर, जिसमें इस महान सभ्यता के स्वामी का निवास था, देख रहा था। मैंने बड़ी

दीवारें देखीं, और अनोखे, आकस्मिक बगीचे, जिनमें इमारतें बनी थीं, देखे। उसके केन्द्र में एक द्वीप के साथ, एक सुन्दर झील भी देखी। परन्तु चित्र हिला, उसकी छाया, यहॉ–वहॉ पड़ी, परिदृश्य को समेटते हुये, जैसे कि कोई पक्षी, अपने शिकार की तलाश में करता है, चित्र रुक गया और बड़ा हुआ और एक धातु की चीज के ऊपर केन्द्रित हो गया, जो आलस्यपूर्ण वृतों को तय कर रही थी और जमीन की तरफ डूब रही थी। चित्र फूल गया, ताकि केवल धातु की चीज ही दिखाई दे। एक आदमी का चेहरा प्रकट हुआ और वह अज्ञात प्रश्नों के जवाब दे रहा था, कुछ कह रहा था। अभिवादन की एक लहर, और चित्र पूरी तरह अंधा (blank) हो गया।

मैं अपने खुद के इरादे से नहीं चल रहा था। मेरे निर्देशित किये गये मन ने, उस अनजान कमरे को छोड़ दिया और दूसरे में प्रविष्ट हुआ। पहले से ज्यादा अनजान, जहॉ, चित्रों के इन नौ पर्दों (screens) पर, नौ बूढ़े आदमी बैठे थे। एक क्षण के लिये, मैंने स्तब्ध होकर आश्चर्य के साथ टकटकी लगाई, तब मैंने लगभग मिर्गी के दौरे के साथ, मन्द–मन्द मुस्कराना शुरू किया। यहॉ नौ बूढ़े आदमी थे, सभी दाढ़ी वाले, देखने में सभी बहुत कुछ हद तक समान, चालढ़ाल में सभी भारी भरकम। मेरे बेचारे दिमाग में गुस्साई हुई आवाज भड़की : *''शान्त, पवित्र वस्तु को खराब करनेवाला। ये विद्वान लोग हैं, जो तुम्हारे भाग्य का नियंत्रण करते हैं। मैं कहता हूँ, शान्त, और आदर प्रदर्शित करो।''* परन्तु बूढ़े विद्वान लोगों ने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया– यद्यपि वे मेरी उपस्थिति से बाकिफ थे, क्योंकि एक पर्दे के ऊपर, पृथ्वी के ऊपर, मेरा एक चित्र था, तारों से और नलियों से घिरा हुआ मेरा एक चित्र। फिर भी, एक दूसरा चित्र मुझे यहॉ वास्तव में, एक अत्यधिक दिल दहलाने वाला अनुभव दिखा रहा था !

''यहॉ,'' स्थित आवाज ने कहना जारी रखा ''क्या बुद्धिमान लोगों ने, विद्वान लोगों में से एक ने, अपने हाथों से कुछ किया, और चित्र बदल गये, पर्दों के ऊपर लोगों के बाद लोग चलते गये। लोगों के बाद लोगों ने, अपने रंगमंच पर आ कर अपने संक्षिप्त कृत्य किये और दूसरों लोगों के द्वारा विस्थापित किये जाने के लिये, गायब हो गये। कॉच की अजीब बोतलें कुलबुलाने लगीं, ऊँची नीची लहरदार रेखाओं से, उनके खुले हुये तले के आरपार, चमकने लगीं। मशीनों ने खड़खड़ाहट की और कागज के लम्बे टेप बाहर निकाले, जो उनके समीप रखी हुई टोकरियों में मुड़ कर गिरे, कागज के टेप, जो उल्लेखनीय संकेतों के साथ भरे थे। पूरा का पूरा मामला, अभी तक, मेरी समझ के बाहर था और अभी भी है, इतने सालों तक, इस सम्बन्ध में सोचने के बाद भी, मैं अभी भी, जो मैंने देखा और बूढ़े विद्वान लोगों ने, कभी भी, कागज की पट्टियों के ऊपर जो लेख लिखे या अपने मुँह के समीप रखी हुई चकतियों में कुछ कहा, उसका अर्थ नहीं समझ सकता था। और उनका जवाब, शरीर से पृथक एक आवाज के रूप में आया जो, जैसे एक आदमी बोलता है, वैसे बोली, परन्तु उसका स्रोत मैं नहीं पहचान सका।

अंत में, ऐसे अनोखे दृश्य के प्रभाव के कारण, जब मेरे ज्ञानचक्षु खुल रहे थे, मेरे मस्तिष्क में आवाज ने कहा, *'अभी तुमने पर्याप्त देख लिया है। अब हम तुम्हें भूतकाल दिखाऐंगे। तुम्हें तैयार करने के लिए, मैं तुम्हें वह बताऊँगा, जो तुम अनुभव करोगे, तब तुम डरोगे नहीं।''* डरा हुआ ? मैंने खुद से सोचा ; यदि वह केवल जान जाए कि, मैं पूरी तरह डरा हुआ था *'पहले,'* आवाज ने पुनः प्रारंभ किया, *'तुम कालापन अनुभव करोगे, और कुछ घुमाओ। तब तुम ये देखोगे कि, ये कमरा क्या है। वास्तव में, ये ऐसा होगा जैसेकि, ये कमरा तुम्हारे समय से करोड़ों साल पहले का है, परन्तु हमारे हिसाब से उतना लंबा नहीं। तब तुम देखोगे, पहले, तुम्हारे ब्रम्हाण्ड की सृष्टि हुई थी, और तब, बाद में, तुम्हारी पृथ्वी कैसे उत्पन्न हुई, उसके साथ–साथ, इस पर प्राणी, जिसे हम मनुष्य कहते है, कैसे लाए गए।''* ध्वनि और इसके साथ मेरी चेतनता भी, मंदी पड़ गई।

चेतनता के साथ, थोड़े समय के लिए, किसी का वंचित हो जाना, ये परेशान करनेवाला अनुभव है। किसी के जीवनकाल में से थोड़े हिस्से को लूट लिया जाना और दूसरा ये भी नहीं जानता कि, वह कितने लंबे समय तक बेहोश रहा है। मैं घूमते हुए भूरे कुहरे के प्रति सावधान हुआ, जिसने अपने तन्तु ठीक मेरे मस्तिष्क में घुसा दिए। रुकरुक कर आनेवाली किसी चीज

की झलकियों ने मुझे परेशान कर दिया और मेरी बेचेनी को बढ़ा दिया। धीमे से, सुबह का कुहरा छंटने की भॉति, सूर्य की उगती किरणों के आने से पहले, मेरी चेतनता, मेरी स्पष्टता, वापस लौटी। मेरे सामने विश्व हल्का हो गया, नहीं, ये विश्व नहीं था, परन्तु कमरा, जिसमें मैं फर्श और छत के बीच, एक फाये की गेंद (puff) की तरह से चढ़ता उतरता हुआ शान्त हवा में तैर रहा था। सुगंध के बादलों की तरह से मंदिर में तैरते हुए, मैं लंबा तैरा और जो मेरे सामने था, उस पर चिंतन किया।

नौ वृद्ध मनुष्य। दाढ़ीवाले। गंभीर। अपने–अपने कामों में मगन। क्यों वे सभी एक जैसे थे ? नहीं, वे नहीं थे कमरा भिन्न तरह का था। पर्दे और उपकरण भिन्न प्रकार के थे। और चित्र भी भिन्न प्रकार के थे। कुछ समय के लिए वहॉ कोई शब्द नहीं कहा गया। इसके पूर्वाभास का कोई स्पष्टीकरण नहीं। अंत में, एक बूढ़ा आदमी बाहर पहुँचा और (उसने) एक मूंठ को घुमाया। एक पर्दा प्रकाशित हुआ और उसमें तारों का वह नमूना दिखा, जो मैंने इससे पहले नहीं देखा था। जब तक कि इसने मेरे दृष्टिक्षेत्र को भर नहीं दिया, जब तक कि ऐसा नहीं लगा कि, मेरे पास अंतरिक्ष में एक खिड़की है, पर्दा विस्तृत होता गया। भ्रमजाल (illusion) इतना बडा था कि, मुझमें ये भावना हुई कि मैं, बिना किसी खिड़की के भी, ब्रम्हाण्ड में था। मैंने टकटकी लगा कर, ठण्डे गतिहीन तारों को, इतने अमैत्रीपूर्ण ढंग से, कठोर रूप से, चमकते हुए देखा।

''हम इसे दस लाख गुना तेजी से चलाऐंगे,'' आवाज ने कहा, *''या तुम अपने जीवनकाल में, किसी भी चीज को नहीं समझ पाओगे।''* एक दूसरे के आसपास, किसी अनदेखे केन्द्र के आसपास, तारों में एक लयपूर्ण उतार चढ़ाव हुआ। चित्र के एक बाहरी किनारे से, अपनी जलती हुई पूँछ को उस अनदेखे, अंधेरे केन्द्र की ओर तानता हुआ, एक बड़ा पुच्छल तारा तेजी से आया। पुच्छल तारा चित्र के आरपार, या दूसरे शब्दों में, उसको दूसरे विश्वों में पीछे खींचता हुआ उड़ा। अंत में, पुच्छल तारा एक ठण्डे, मृत विश्व, जो उस निहारिका (galaxy) का केन्द्र बिन्दु था, से टकराया। बढ़े हुए गुरूत्वाकर्षण के कारण दूसरे विश्व, उस टक्कर वाले पथ के ऊपर, अपनी पहले से तयशुदा कक्षाओं से, बाहर की ओर खींचे गए। उस क्षण, जब पुच्छल तारा और मृत विश्व, आपस में टकराए, पूरा ब्रम्हाण्ड, एक लौ में जलता हुआ दिखाई दिया। चमकदार जलते हुए (incandescent) पदार्थ का घूमता हुआ बबण्डर, पूरे ब्रम्हाण्ड में बिखेर दिया गया। जलती हुई गैसों ने सभी निकटवर्ती विश्वों को निगल लिया। संपूर्ण ब्रम्हाण्ड, जैसा मेरे सामने के पर्दे में दिखाई दिया, चमकदार, हिंसक, जलती हुई गैसों के, एक बड़े पिण्ड के रूप में हो गया।

धीमे–धीमे, पूरे ब्रम्हाण्ड में उपस्थित, तीव्र चमक घटती गई। अंत में, वहॉ जलता हुआ एक केन्द्रीय पदार्थ, जो छोटे, जलते हुए पिण्डों के द्वारा घिरा हुआ था, शेष रह गया। जैसे–जैसे वह केन्द्रीय पदार्थ, कंपन कर रहा था और नए प्रदाह के कारण बीच में, कष्ट में, खुला हुआ था, चमकते हुए पदार्थों के छोटे टुकड़े, तेजी से बाहर की ओर गिरते जा रहे थे। स्वर, मेरे व्यथित विचारों में फूटा, *''तुम मिनटों में ही देखनेवाले हो, जोकि लाखों वर्ष की प्रगति में हुआ। हम चित्र को बदलेंगे।''* मेरी पूरी दृष्टि, पर्दे की सीमाओं तक सीमित थी और मैं जो अब देख रहा था, वह दूर जाता हुआ एक नक्षत्र तंत्र (star system) था। इसलिए मैंने इसे काफी दूर से टकटकी लगाकर देखा। केन्द्रीय सूर्य की चमक धीमी पड़ गई थी, यद्यपि यह अभी भी काफी चमकीला था। आसपास के विश्व, जब वे अपनी–अपनी नई कक्षाओं में घूम और मुड़ रहे थे, लाल चमक रहे थे। मुझे जिस तेज चलती हुई दर पर दिखाया जा रहा था, पूरा ब्रम्हाण्ड चक्कर लगाते हुए गति में दिखाई दिया, जिससे मेरा पूरा ज्ञान चौंधिया गया।

अब चित्र बदल गया। मेरे सामने, बड़ी–बड़ी इमारतों से भरा हुआ, जिनमें से कुछ में, उनकी छतों के ऊपर, काफी अनोखे छज्जे बाहर निकले हुए थे, एक बड़ा मैदान था। प्रक्षिप्त छज्जे, जो मुझे उत्सुकतापूर्ण आकृतियों में, धातु के मुड़े हुए लगे– इसका कारण, मेरी प्रतिभा की समझ के एकदम परे था। अलग–अलग आकृतियों और आकारों के लोगों के झुण्ड, एक वास्तविक उल्लेखनीय चीज के ऊपर, जो उस मैदान के केन्द्र में स्थित थी, विविधरूप से प्रकट हुए। यह एक अकल्पनीय आकार की धातु की नली जैसी दिखाई दी। नली के सिरे, उसकी

मुख्य गोलाई की तुलना में कम थे और एक सिरे पर एक बिन्दु की ओर ढालू थे और एक गोल बिन्दु के रूप में, दूसरे सिरे पर समाप्त हो गया उभार, मुख्य चीज से, कुछ अंतरालों (intervals) में विस्तारित हुआ। मैंने जानबूझ कर टकटकी लगाई और जैसाकि मैं समझ सका, ये पारदर्शी थे। चलते हुए धब्बे अंदर की तरफ थे और मेरे निरीक्षण ने मुझे ये विश्वास करा दिया कि, वे मानव लोग थे। मैंने निर्णय किया कि, पूरी इमारत लंबाई में एक मील या और अधिक भी, (हो सकती) थी। इसका उद्देश्य मुझे पूरी तरह अज्ञात था। मैं नहीं समझ सका कि, कोई इमारत इस उल्लेखनीय आकृति की क्यों हो सकती थी।

जैसे ही मैंने, कुछ न चूकते हुए, आशय सहित देखना प्रारंभ किया तो एक उल्लेखनीय वाहन, भारत के सभी बाजारों को पूरी तरह से भर देने के लिए, अपने पीछे डिब्बों और पर्याप्त गांठों से लदे हुए, तमाम प्लेटफार्मों को खींचते हुए दिखा, ये मेरा निरर्थक विचार था। फिर भी– ऐसा कैसे हो सकता था ?– जैसे मछली पानी मे तैरती है और अपने आपको धक्का देती है, सभी हवा में तैर रहे थे। अनोखी युक्ति ने, बड़े ट्यूब की ओर आकर्षित किया, जो एक इमारत थी और दूसरी सभी गांठें और संदूक एक के बाद एक, उसके अंदर की तरफ खींचे गए, ताकि अनोखी मशीन ने उनके पीछे खाली प्लेटफार्म दुबारा फिर खींचे। नली में प्रवेश करने वाले लोगों का प्रवाह, एक रिसाव की तरह से घटा और तब बंद हो गया। खिसकने वाले दरवाजे खिसके, और नली बंद हो गई। आह ! मैंने सोचा, ये एक मंदिर है, वे मुझे दिखा रहे हैं कि, उनके पास धर्म और मंदिर हैं। अपने स्पष्टीकरण से संतुष्ट होते हुए, मैंने अपने ध्यान को लहराने दिया।

ज्यों ही, वापस चित्र को देखने के लिये, मेरी टकटकी को झटका लगा, कोई शब्द मेरी भावना का वर्णन नहीं कर सकते। ये महान नलिकाकार (tubular) इमारत, लगभग एक मील लंबी और एक मील का छठवॉ भाग मोटी, अचानक ही हवा में ऊपर उठी ! यह हमारे सर्वोच्च पर्वत से भी ऊॅची उठी, कुछ सेकण्डों के लिए वहॉ रुकी रही और तब गायब हो गई ! दो या तीन सूर्यों की, जो उसके आसपास चमक रहे थे, रंगीन रोशनी के साथ, आकाश में लटकी हुई चांदी की एक पच्चड़, एक क्षण (पहले) वह वहॉ थी, जो अब, बिना किसी भी चमक के, (अब) वहॉ नहीं थी। मैंने अपनी तरफ देखा, और तब मैंने अपने पड़ौसी पर्दों (screens) की तरफ इसे देखा। यहॉ तारे एक बड़े लंबे पर्दे, शायद पच्चीस फुट लंबे के ऊपर, भंवर में घूम रहे थे, इसलिए वे लगभग रंगीन रोशनी की धारियों के रूप में दिखाई दिए। स्पष्टरूप से वह इमारत, जिसने इस अनजान विश्व को छोड़ दिया था, पर्दे के केन्द्र में स्थित थी। जब तक कि उन्होंने, सम्मोहन का लगभग एक धब्बा जैसा नहीं बना दिया, गुजरनेवाले नक्षत्रों की गति बढ़ी। मैं दूर मुड़ गया।

मेरे ध्यान को, प्रकाश की एक आभा ने आकर्षित किया और मैंने दुबारा लंबे पर्दे पर देखा। जैसे ही, पर्वत श्रेणियों के ऊपर, सूर्य ने अपनी पहुॅच को पहले से बताती हुई किरणों को भेजा, प्रकाश के दूर वाले सिरे पर एक रोशनी, प्रकाश की इस महान खोज की, भविष्यवाणी करती हुई जल रही थी। प्रकाश शीघ्रता से बढ़ा, जबतक कि ये असहनीय रूप से चमकीला नहीं हो गया। एक हाथ बढ़ कर आगे आया और उसने एक मूंठ को घुमाया। रोशनी घट गई, जबकि चित्र और अधिक स्पष्ट हो गया। बड़ी नली, विस्तृत आकाश में, मात्र एक महत्वहीन धब्बे के रूप में, एक चमकीले खगोलीय पिंड के पास खिंची। इसने घूमकर चक्कर लगाया और तब मुझे दूसरे पर्दे की ओर चलाया गया। एक क्षण के लिए मैंने अपना दिशाज्ञान खो दिया। मैं अपने सामने के चित्र के ऊपर, खालीपन से ताकता रहा। एक बड़े कमरे का चित्र, जिसमें आदमी और औरतें, जिसे मैं अब पोशाक के रूप में जानता हूॅ, पहने हुए थे। कुछ लोग, जो अपने हाथों को लीवरों और मूठों के ऊपर रखे हुए बैठे थे, दूसरे पर्दों पर देख रहे थे, वैसे ही जैसे कि, मैं देख रहा था।

एक, जो दूसरों की तुलना में अधिक भव्य ढंग से कपड़े पहने हुए था, अपने हाथों को अपनी पीठ के पीछे पकड़े हुए, घूम कर रुका। जल्दी ही, उसने अपने कदमों को रोक दिया और दूसरे आदमी के कंधे पर, जबकि वह किन्हीं लिखे हुए नोट्स को या छटपटाती हुई

रेखाओं को, जो कॉच के वृतों के पीछे से प्रकट हो रही थीं, देख रहा था, झांका। तब, एक हामी के साथ, उसने अपने कदमों को दुबारा प्रारंभ किया। अंत में, मैंने भी ऐसा ही करने का मौका पाया। मैंने पर्दे पर, वैसे ही, उसी तरह नजर डाली, जैसेकि उस भव्य आदमी ने डाली थी। वहॉ लपटों में जलते हुए विश्व थे, कितने, मैं नहीं गिन सका, क्योंकि प्रकाश ने मुझे चौंधिया दिया था और अन–अभ्यस्त गति ने मुझे चकित कर दिया था। जहॉ तक, मैं अनुमान कर सका, और ये केवल अनुमान था, जहॉ उस बड़े केन्द्रीय पदार्थ, जिसने उसे जन्म दिया था, की परिक्रमा करते हुए, लगभग पन्द्रह छोटे–छोटे पिंड थे।

नली की इमारत, जिसे मैं अब, अंतरिक्षयान के रूप में जानता हूँ, रुक गई, और उनमें काफी सक्रियता आ गई। तब यान के तली में से, काफी बड़ी संख्या में, वृताकार आकृति के छोटे–छोटे यान प्रकट हुए। वे यहॉ–वहॉ छितरे हुए थे, और उनके जाने के साथ ही, बड़े यान के ऊपर जीवन, क्रम में आया और एक सुव्यवस्थित अस्तित्व का क्रम, फिर से शुरू हुआ। समय गुजरता गया और अंत में, सभी छोटी–छोटी चकतियॉ, अपने अंतिम प्रमुख जहाज की ओर लौटने के लिए चलीं और दूर ले जाई गईं। धीरे–धीरे, वह बड़ी नली घूमी और एक डरे हुए प्राणी की तरह से स्वर्ग में होते हुए, लुढ़कते हुए, तेजी से दौड़ी।

मैं नहीं कह सका कि कितने लंबे समय के पूरे होने में, पूरी यात्रा तेजी से की गई, धातु की नली अपने आधार पर वापस आ गई। आदमी और औरतों ने इसे छोड़ दिया और परकोटे में स्थित इमारतों में प्रविष्ट हुए। मेरे सामने का पर्दा भूरा हो गया।

दीवारों पर हमेशा चलते रहने वाले पर्दों के साथ, छायादार कमरे ने, मुझे मेरी सीमा से परे मोहित किया। पहले मेरा ध्यान केवल एक या दो पर्दों पर था, अब, उनके बन्द होने के साथ, मेरे सामने निष्क्रिय पड़े होने से मुझे आसपास देखने का समय मिल गया। यहॉ लगभग मेरे आकार के लोग थे, आकार, जिससे मेरा तात्पर्य है, जब मैंने *''मानव''* शब्द का उपयोग किया। वहॉ लगभग सभी रंग थे, सफेद, काला, हरा, लाल और पीला और भूरा। शायद, लगभग सौ, उन अजूबा तरीके की एकदम फिट सीटों पर बैठे, जो हर गति के साथ, हर क्षण, हिल रही थीं और झटका खा रहीं थीं। वे दूर की दीवार के साथ कतार में लगे उपकरणों पर, पंक्तियों में साथ–साथ बैठे। नौ विद्वान, कमरे के केन्द्र में एक विशेष मेज पर बैठे। उत्सुकतापूर्वक, मैंने अपने आस–पास देखा, परन्तु उपकरण और दूसरे सहयोगी उपकरण अब तक, मेरे पहले किसी अनुभव में आए हुए उपकरणों से इतनी दूर हटते हुए थे कि, मेरे पास कोई तरीका नहीं है कि, उनका वर्णन किया जा सके। एक भूत जैसी हरी रोशनी वाली टिमटिमाती हुई नलियॉ, झटकों वाले (pulsating) अम्बर प्रकाश की नलिकाऐं, दीवारें, जो दीवारें थीं, यद्यपि वे उसी रंग का प्रकाश विकिरित कर रहीं थीं, जो बाहर खुले में था। कॉच के वृत, जिनके पीछे मुक्त रूप से लहराते हुए, या किसी बिन्दु पर चट्टानों जैसे स्थिर पकड़े हुए, बिन्दु चमक रहे थे – क्या यह आपको कुछ समझा सका ?

दीवार का एक खंड, अचानक ही तारों (wires) और नलियों (tubes) के विस्मयकारी झुण्ड को निकालते हुए, झूल गया। ऊपर चढ़ते हुए और नीचे चलते हुए तारों को, जो किसी प्रकार के औजार थे, अपने कमरबंद से बंधे हुए, अनेक चमकते हुए उपकरणों से सुसज्जित, लगभग अठारह इंच ऊॅचाई के छोटे लोग, ये बौने लोग थे। एक दैत्याकार, किसी बड़े भारी बक्से को लिए हुए अन्दर आया। उसने कुछ क्षणों के लिए, इसे अपने स्थान में पकड़ा, जबकि छोटे लोगों ने इस संदूक को, दीवार के पिछली तरफ बांध दिया। तब दीवार, झुला कर बंद कर दी गई और दैत्याकारों के साथ–साथ, बौने लोग बाहर चले गए। यहॉ शान्ति थी। जैसे ही एक मशीन से एक विशेषग्राह्य (special receptacle) छेद के आगे, फीता (tape) अंतरहित रूप से आगे चला, रोजमर्रा की चक–चक को छोड़ कर शान्ति और शश–शश।

यहॉ, इस पर्दे पर, एक अनजान, अनजान चीज चित्रित की गई थी। पहले, मैंने एक चट्टान के ऊपर टकटकी लगाने की सोची, जो सरसरी तौर पर, एक मानव आकृति में तराशी गई थी। तब, मैंने अपने अत्यन्त तीव्र आतंक के साथ, उस चीज को चलते हुए देखा। एक कच्ची भुजा की आकृति ने, उसे उठा लिया और मैंने देखा कि, वह एक अज्ञात पदार्थ की बड़ी

चादर को, पकड़े हुए थी, जिसके ऊपर लिखाई की आकृतियॉ खोद कर लिखी गईं थीं। कोई उसे *''लेखन''* नहीं कह सकता था और उसको वहॉ से जाने दिया। ये स्पष्टरूप से, इतनी अगम्य थी कि, इसको बताने के लिए, विशिष्ट बोली का एक तरीका खोजना पड़ेगा ताकि, इसका वर्णन किया जा सके। मेरी टकटकी जारी रही; ये मेरे इतनी ऊपर थी कि, मैं प्रार्थना नहीं कर सका या मेरी इसमें कोई दिलचस्पी नहीं थी। जैसे ही मैंने मानवता की इस उपहासात्मक रचना को देखा, मैंने केवल आतंक अनुभव किया।

परन्तु मेरी घूमती हुई निगाहें, सहसा रुक गईं। वहॉ आत्माऐं थीं, पंखवाली आत्माऐं ! मैं इतना अधिक मोहित हो गया कि, ज्यों ही मैं, कुछ और देखने की आशा के साथ, समीप की ओर चला, मैं एक पर्दे से, लगभग, टकरा गया। ये एक आश्चर्यजनक उद्यान का चित्र था, जिसमें पंखदार प्राणी आमोद–प्रमोद कर रहे थे। आकृति से मानव जैसे, नर और मादा दोनों, उन्होंने सुनहरे आकाश में, अपने उद्यान के ऊपर, एक पेचीदा हवाई नमूना बुना। मेरे विचारों में आवाज कोंधी। ''आह ! और तुम मोहित हो, ए ? ये है– (न लिखे जा सकने योग्य नाम) और वे केवल इसलिये उड़ने में समर्थ हैं क्योंकि, वे ऐसे लोक में रहते हैं जहॉ गुरूत्व का खिंचाव बहुत, बहुत, कम है। वे अपने खुद के ग्रह को नहीं छोड़ सकते क्योंकि, वे एकदम फुसफुसे (fragile) हैं। फिर भी वे शक्तिशाली और अद्वितीय बुद्धिमान हैं। परन्तु, दूसरे पर्दों पर अपने संबंध में देखो। शीघ्र ही, तुम अपने खुद के विश्व के इतिहास को, और अधिक देखोगे।''

मेरे सामने का दृश्य बदल गया। मुझे शक है कि जानबूझ कर बदला गया, ताकि मैं वह देख सकूँ, जो मुझे दिखाया जाना वांछित था। पहले वहॉ, आकाश का गहरा बैंगनी दिखाई दिया और तब एक सिरे से, संपूर्ण नीला विश्व, आरपार घूम गया, जबतक कि उसने पर्दे के केन्द्र को नहीं प्राप्त कर लिया। चित्र बड़ा होता गया, जबतक कि उसने, दृश्यक्षेत्र को पूरी तरह नहीं भर दिया। यह अभी भी बड़ा हुआ और फिर पहले–सिर आकाश से बाहर रखते हुए, मुझे गिरने का खतरनाक अहसास हुआ। एक अत्यन्त दुखी करने वाला अनुभव। मेरे नीचे, नीली तरंगे उछलीं और लुढ़क गईं। पृथ्वी घूम गई, पानी, पानी, हर जगह पानी। परंतु उन शाश्वत तरंगों के ऊपर, बाहर की तरफ, एक धब्बा प्रकट हुआ। पूरे विश्व के ऊपर, ल्हासा की घाटी के आकार के लगभग बराबर, एक पठार था। इसके किनारे पर अनोखी इमारतें दिखाई दीं। मानवीय आकृतियॉ, अपनी टांगें पानी में रखे हुए, किनारे पर मंड़राईं। दूसरी आकृतियॉ, समीप की चट्टानों पर बैठीं। यह सब रहस्यपूर्ण था और इसमें से किसी का भी मेरे लिए कोई अर्थ नहीं था। *''हमारा बाध्यकारी (forcing) सायबान''* स्वर ने कहा, *''जहॉ हम अपनी नई प्रजाति के बीजों को उगाते हैं।''*

अध्याय नौ

नीरस घंटों के बाद नीरस घंटे, पीछे खींचते हुए, दिन क्षीण हो रहा था। नौजवान भिक्षु ने नजर टिकाई– जैसे वह एक पर्वत श्रेणी को, जिसमें भारत और तिब्बत के बीच का दर्रा शरण लिए हुए था, निशाना बनाते हुऐ, पूरे दिन के अधिकांश समय के लिए लिए, देखता रहा था। अचानक ही, उसने आनंद की एक चीख निकाली और दौड़कर गुफा में जाने से पहले, अपनी ऐड़ी पर घूम गया *''आदरणीय !''* वह चिल्लाया, *''वे अपने रास्ते पर नीचे की तरफ चलना प्रारंभ कर रहे हैं। शीघ्र ही हमें खाना मिल जाएगा।''* उत्तर की प्रतीक्षा न करते हुए, वह घूम गया और दौड़ कर खुले में गया। तिब्बत की ठण्डी और साफ हवा में, खाली जगह में, सूक्ष्म विवरणों (details) को भी काफी दूरी तक देखा जा सकता है, वहॉ किसी की दृष्टि को वाधित करने के लिए कोई वायु प्रदूषण नहीं है। चट्टानी कगार के ऊपर, उडेलते हुए काले धब्बे आए : नौजवान, संतोष के साथ मुस्कराया। खाना! जल्दी ही, यहॉ जौ और चाय होंगे। शीघ्रता से वह झील के किनारे की ओर, नीचे की ओर दौड़ा और पानी की कट्टी को भर लिया ताकि वह ऊपर तक छलछला जाए। सावधानी से और धीमे, वह इसे गुफा की तरफ वापस ले गया ताकि जब खाना उपलब्ध हो, पानी भी उपलब्ध रहे। ढ़लान के नीचे, उसने दुबारा जल्दी की ताकि, तूफान आने से पहले, वह उन झकोरे हुए पेड़ की अंतिम टहनियों तक को, इकट्ठा कर सके। अब उचित मात्रा में जलाऊ लकड़ी, जलती हुई आग के बगल से, इकट्ठी कर ली गई थी। अधैर्यपूर्वक, नौजवान, चट्टान के किनारे पर, ऊपर गुफा की ओर चढ़ गया। अपनी ऑखों को चमक से बचाते हुए, उसने बाहर और ऊपर की ओर टकटकी लगाई। जानवरों की एक लंबी कतार, झील से दूर की तरफ जा रही थी। घोड़े, (परन्तु) याक नहीं। भारतीय, (परन्तु) तिब्बती नहीं। नौजवान सुन्न होकर, उस आश्चर्यजनक चीज, आवास पर, खड़ा रहा।

धीमे से, भारीपन से, वह जमीन पर उतरा और दुबारा गुफा में घुसा। *''आदरणीय,''* उसने दुख के साथ, *''आदमी भारतीय हैं, वे हमारी तरफ नहीं आ रहे हैं और हमारे पास खाना नहीं है।''*

''चिंता मत करो,'' सांत्वना देते हुए बूढ़े साधु ने कहा, *''क्योंकि खाली पेट, एक स्पष्ट छाला (blain) डालता है। हम व्यवस्था करेंगे, हमें धैर्य रखना चाहिए।''*

नौजवान आदमी को सहसा एक विचारा कौंधा। पानी की कट्टी को पकड़े हुए, उसने चट्टान की तरफ, जहॉ पूरा जौ फैल गया था, (जाने की) जल्दी की। सावधानीपूर्वक, वह अपने घुटनों पर नीचे झुका और रेतीली जमीन में से समेटने लगा। यहॉ जौ– और बालू थे। बालू पानी में डूब जाएगी, उसने सोचा, जबकि जौ तैरते रहेंगे। उसने सावधानी से, पसों भर–भर करके, पानी में डाले और एक बगल से उसे झुका दिया। रेत डूब गया और जौ तैरते रहे। चाय के छोटे–छोटे टुकड़े भी पानी पर तैरे।

उसने जौ को और चाय के डेलों को, कलछी से, बार–बार पानी की सतह के ऊपर से निकाला और उन्हें अपनी कटोरे में रखा। शीघ्र ही, उसे बूढ़े साधु का कटोरा भी लाना पड़ा और अंत में, जब शाम की छायाऐं, फिर से देहात की ओर रेंगने लगीं, दोनों कटोरे पूरे भर गए थे। थका हुआ वह नौजवान भिक्षु, अपने पैरों पर खड़ा हुआ, उसने रेत भरी पानी की कट्टी को उठाया और गुफा को छोड़ दिया। उसने निरर्थक पदार्थों को कट्टी से बाहर फेंकने में समय नहीं गंवाया। तब, दुखी मन से, उसने अपना रास्ता झील की तरफ लिया।

जैसे ही वह कट्टी ले कर दौड़ा और उसे पानी से भरा, रात की चिड़ियॉ जगती जा रहीं थीं, और पूर्णिमा का चन्द्रमा, पहाड़ी की चोटियों के किनारों से झांक रहा था। उसने अपना रास्ता वापस गुफा की ओर बनाते हुए, कट्टी को दुबारा उठाने से पहले, अपने थके हुए अंदाज में, उनमें घुसी हुई रेत से मुक्त होने के लिए घुटनों को और जौ के दानों को धोया और निवृति के प्रहार के साथ–साथ, उसने कट्टी को आग के बीच में झौंक दिया और अधीरता पूर्वक पानी के उबलने की प्रतीक्षा करते हुए, ज्वाला के समीप बैठ गया। अंत में, भाप का पहला झोंका उठा और आग के धुंए के साथ मिल गया। नौजवान भिक्षु भी खड़ा हुआ और जौ और चाय के साथ– दोनों कटोरों और काफी कुछ धूल !– के मिश्रण को लाया। सावधानी से, उसने पूरा का

पूरा, पानी में उंडेल दिया।

शीघ्र ही, भाप फिर से उठने लगी। जब पानी तेजी के साथ बुलबुले दे रहा था, उसके तुरन्त बाद, नौजवान साधु ने, भूरे पदार्थों को घुमाते हुए, तैरते हुए मलवे को, छाल के सपाट टुकड़े को, कलछी बना कर उठाया। और अधिक प्रतीक्षा में असमर्थ होने के कारण, उसने कट्टी के हत्थे के नीचे, एक छड़ी को पकड़ा और उसे आग में से उठा लिया। पहले उसने, बूढ़े साधु के कटोरे को कट्टी में डुबाया और काफी मात्रा में उसको (पेय) पदार्थ से भर दिया, पहले से ही गंदी पोशाक के ऊपर, अपनी उंगलियों को साफ करते हुए, वह तेजी से बूढ़े आदमी की ओर दौड़ा। अप्रत्याशित और अरुचिकर, सर्वोत्तम भोजन। तब वह अपने खाने की ओर लौटा। ये मात्र, खाने योग्य था।

परंतु, केवल ठण्डी कर दी गई भूख की टीस के साथ, वे कठोर और आनंदरहित रेतीली जमीन के ऊपर, एक और कठोर रात में सोने के लिए लेटे। गुफा के परे चन्द्रमा ऊँचा उठा, और बहुत दूर पर्वत श्रेणी में, शाही उतार पर, चल दिया। रात के प्राणी, अपने वैधानिक अवसर पर, आसपास घूमने लगे, और रात की हवाऐं, धीमे से, पेड़ों की भयानक शाखाओं के ऊपर, डगमगाते हुए सरसराने लगीं। दूर के लामामठों में, रात के कुलानुशासकों (proctors) ने, जबकि वे शहर की पिछाडी गलियों में, जो बदनाम थीं, में बैठे, अपनी अन्तहीन दृष्टि का पीछा किया और कूटरचना की कि, वे अपने विश्वसनीय सहयोगियों के ऊपर, लाभ को कैसे प्राप्त कर सकते हैं।

प्रातःकाल आनंदरहित था। तर–बतर जौ और चाय की पत्तियों के अवशेषों ने, कुछ काम चला दिया, परंतु चूंकि जीवित रहने का एक मात्र तरीका उपलब्ध था, उसे बलपूर्वक नीचे लाया गया। प्रातःकाल के प्रकाश के उगने के साथ और सूखी हुई लकड़ी की सतह से, चिनगारियों की फुहारों को थुकथुकाते हुए, नई जलाई हुई आग। बूढ़े साधु ने कहा, *''हमको ज्ञान का स्थानान्तरण जारी रखने दो। ये हमें अपनी भूख को भुलाने में सहायक होगा।''* बूढ़े आदमी के साथ–साथ, नौजवान भी गुफा में घुसा और अपनी अभ्यस्त स्थिति में बैठ गया।

एक आलसी आदमी के, निर्देशहीन, उद्देश्यहीन, विचारों की तरह, *''मैं थोड़ा हिला,''* साधु ने कहा। एक पर्दे से दूसरे पर्दे तक, हिचकिचाते हुए, मंडराते हुए, जैसे ही मुझे घटना–बढ़ना पड़ा, आवाज ने मेरे ऊपर ये कहते हुए, अतिक्रमण किया, *''हमें, तुम्हें कुछ और अधिक बताना चाहिए।''* जैसे ही आवाज ने कहा, मैंने पाया कि, मैं उन पर्दों की ओर, जो पहले ही समझे जा चुके थे, देखे जा चुके थे, मुड़ रहा था और निर्देशित किया जा रहा था। अब फिर वे सक्रिय थे। एक पर्दे के ऊपर ब्रम्हाण्ड को, जिसे अब हम, सौरमण्डल *(solar system)* के रूप में जानते हैं, के साथ चित्रित किया गया था।

आवाज पुनः लौटी, *''यदि वहॉ, उस मामले में कि नए तंत्र से, जो अभी बनने की प्रक्रिया में था, शताब्दियों तक के लिए, विकरण की परेशानियॉ पैदा हों, अत्यधिक सावधानीपूर्वक निगरानी रखी गई। लाखों वर्ष गुजर गए, परंतु एक ब्रम्हाण्ड के जीवनकाल में लाखों वर्ष, आदमी के जीवनकाल के मिनटों के समान हैं। अंत में, यहॉ से, हमारे साम्राज्य के दिल से, दूसरा अभियान प्रारंभ हुआ। एक अभियान, जो अधिकतम आधुनिक उपकरणों के साथ सज्जित था, जिसके द्वारा नए विश्वों की योजना, जिसके हम बीज बो रहे थे, निश्चित की जानी थी।''* स्वर समाप्त हुआ, और मैंने फिर दुबारा पर्दों पर देखा।

अंतरिक्ष के बहुत दूरीवाले क्षेत्र में, तारे ठण्डे हो कर चमक रहे थे। कठोर और भंगुर, वे इन्द्रधनुष की तुलना में, अधिक रंगों के साथ चमके। चित्र बड़ा, औरबड़ा, होता गया, जबतक कि, एक विश्व दिखाया गया, जो बादलों की गेंद जैसा प्रतीत हुआ। अधिक भयानक, बिजली कड़कने के साथ–साथ, लहराते हुए बादल छंट गए। *''यह संभव नहीं है,''* स्वर ने कहा, *''दूर स्थित विश्व का, किसी दूर से जॉच के द्वारा, एक सही विश्लेषण करने के लिए। एक समय हम अन्यथा (otherwise) विश्वास करते थे, परन्तु अनुभव ने हमको हमारी गलतियों को बताया है। अब, लाखों वर्षों से, हमने अभियान भेजे हैं। देखो !''*

जैसे कोई पर्दों को एक तरफ खिसका देता है, ब्रम्हाण्ड एक बगल से समेट दिया

गया। फिर मैंने एक समतल सतह देखी, जो अनन्त तक विस्तारित होती हुई दिखाई दी। इमारतें भिन्न प्रकार की थीं, अब वे लम्बी और नीचीं थी। बड़ा जहाज, जो वहॉ तैयार खड़ा था, वह भी अलग प्रकार था। ये कुछ–कुछ, दो परातों (platters) जैसी चीज थी। ये जहाज था, परात का निचला आधा हिस्सा, ऐसे रखा था जैसे रखा होना चाहिए था, जबकि ऊपरी हिस्सा उल्टा था और नीचेवाले के ऊपर रखा हुआ था। यह पूरे चन्द्रमा की तरह से, अधिक चमकदार दिख रहा था। उनके पीछे, कांच में से, सैकड़ों गोल छेद, परिधि की परिक्रमा कर रहे थे। सबसे अधिक ऊॅचाई पर, एक गुम्बदाकार, पारदर्शी कमरा, जो संभवतः लगभग पचास फुट आरपार का होगा, टिका हुआ था। जहाज की पूरी दैत्याकार गोलाई की तुलना में, मुश्किल से चढ़नेवाली मशीनें, जो उसके आधार पर आपूर्ति करने के लिए लगायीं गई थीं, एक तरह से बोनी (dwarf) पड़ गईं।

आदमी और औरतों के समूह, सभी अनोखी वर्दी वाले परिधान में, सभी वक्सों की एक बड़ी संख्या को, अपने पैरों पर, जमीन पर टिकाते हुए, वहॉ मटरगस्ती कर रहे थे। बातचीत आनंददायक लग रही थी, हास्य अच्छा था। अधिक अलंकृत कपड़े पहिने हुए व्यक्ति, इठलाते हुए, अतुलनीय ढंग से, पीछे और आगे की तरफ, मानो कि– एक विश्व के भाग्य के ऊपर विचार विमर्श कर रहे हों, जैसेकि, वास्तव में उनको होना चाहिए। एक सहसा संकेत ने, उनको शीघ्र ही झुका दिया, उनके पैकेटों को जब्त कर लिया, और प्रतीक्षारत जहाज की ओर भगा दिया। उनके पीछे के धातु के दरवाजे, ऑख की पुतली की तरह से, कस कर बंद हो गए।

धीमे से धातु की विपुल रचना, हवा में कुछ सैकड़ा फुट ऊॅची उछली। एक क्षण के लिए, यह उछली– और अपने पीछे, किसी भी प्रकार का कोई चिन्ह् न छोड़ते हुए, कि यह कभी अस्तित्व में भी थी, तब एकदम गायब ही हो गई। आवाज ने कहा, *''यह अकल्पनीय गति से, जो प्रकाश के वेग से भी अधिक है, यात्रा करता है। यह अपने आप में परिपूर्ण विश्व है और जब कोई इन जहाजों में होता है, वह बाहर के प्रभावों से पूरी तरह अप्रभावित रहता है। गति का कोई अनुभव नहीं होता, गिरने का कोई अनुभव नहीं, तीव्रतम मोड़ों पर भी नहीं। ''अंतरिक्ष,''* आवाज ने कहना जारी रखा, *कोई खाली स्थान नहीं है, जैसा कि आपके खुद के, पृथ्वी के लोग विश्वास करते हैं। अंतरिक्ष घटे हुए घनत्व का क्षेत्र है। इसमें हाइड्रोजन के अणुओं का वातावरण है। अलग–अलग अणु, एक–दूसरे से सैंकड़ों मील दूर हो सकते हैं, परन्तु हमारे जहाज द्वारा उत्पन्न की गई गति पर, वह वातावरण इतना घना दिखाई देता है, जैसेकि, समुद्र। कोई, अणुओं को जहाज की दीवारों के विरुद्ध टकराता हुआ सुन सकता है और हमें आण्विक घर्षण के विरुद्ध उत्पन्न होने वाली गर्मी की समस्या से निपटने के लिए, कुछ विशेष उपाय करने पड़ते हैं। परन्तु देखो !''*

पड़ौस के पर्दे पर, तश्तरी के आकार का जहाज, अपने पीछे आने वाले नीले प्रकाश की, धुंधली सी, लगभग कठोर पगडण्डी को छोड़ते हुए आगे बढ़ रहा था। गति इतनी अधिक थी कि चित्र, जहाज को कदमताल की चाल से चलाना पड़ा। तारे, प्रकाश की ठोस रेखा के रूप में दिख रहे थे। स्वर बड़बड़ाया, *''हम यात्रा के अनावश्यक क्रमों को छोड़ देंगे और उन चीजों पर ध्यान देंगे, जो प्रभावित करते हैं। दूसरे पर्दे पर देखो।''* मैंने ऐसा किया, और अब काफी धीमे–धीमे चलते हुए, सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाते हुए वाहन का साक्षी बना। हमारा सूर्य, परन्तु एक सूर्य, जो अब के सूर्य से एकदम एकदम अलग था। ये, अधिक चमकीला, और अपनी गोलाई में से काफी दूर तक बड़ी बड़ी लपटों को बहाता हुआ, बड़ा था। पहले एक विश्व की, फिर दूसरे विश्व की परिक्रमा करते हुए, जहाज ने चक्कर लगाए।

अंत में, ये एक विश्व के करीब आया, जिसे कैसे भी मैं समझ सका कि, यह पृथ्वी थी। पूरी तरह से बादलों में घिरा हुआ, ये (विश्व) जहाज के नीचे लुढ़क गया। अनेक परिक्रमाऐं की गईं और तब जहाज और भी अधिक धीमा पड़ा। चित्र बदला और मुझे अन्दर दिखाया गया। आदमियों और औरतों का एक छोटा समूह, एक लंबे धात्विक गलियारे में हो कर तैर रहा था। अंत में, वे एक अहाते में बाहर निकले, जिसमें बड़े जहाज की छोटी–छोटी प्रतिकृतियॉ रखी थीं। आदमी और औरतें एक ढ़ालू मार्ग (ramp) पर चले और इन छोटे जहाजों में से एक में,

प्रविष्ट हुए। सभी दूसरे लोग, उस क्षेत्र के बाहर हो गए और एक पारदर्शी दीवार के पीछे एक आदमी देख रहा था। उसके सामने चमकती हुई रोशनियों के साथ, उसके हाथ, अजनबी रंगीन बटनों के ऊपर थे। एक हरी रोशनी चमकी, और उस आदमी ने एक साथ अनेक बटनों को दबाया।

फर्श का एक हिस्सा, छोटे जहाजों से समान दूरी पर पीछे खिसका, और जैसे एक ऑख की पुतली खुलती है, वैसे खुला। जहाज आरपार गिरा और अंतरिक्ष में प्रविष्ट हो गया। ये नीचे, और नीचे, फिसलता ही चला गया, जब तक कि ये बादलों में, जो पृथ्वी को घेरे हुए थे, हमारी नजर से ओझल नहीं हो गया। तब मेरे सामने का दृश्य दुबारा बदला और मानो, मैंने खुद छोटे यान में से देखा। यहॉ घुमड़ते, लहराते हुए बादल थे, जो पहले अभेद्य बाड़ के रूप में दिखते थे परन्तु अंतरिक्ष यान से स्पर्श होते ही पिघल कर दूर हट जाते थे। नीचे, नीचे, हम बादलों में मीलों नीचे चलते चले गए, जबतक कि अंत में, हम एक धुंधले बदमिजाज दिन में नहीं समा गए। भूरा समुद्र लुढ़का और उभरा और दूरी पर, उन भूरे बादलों में समाता हुआ प्रतीत हुआ, बादल जिनके ऊपर किसी अज्ञात स्रोत से रक्तिम आभा परावर्तित हो रही थी।

अंतरिक्ष यान समतल हुआ और बादलों और समुद्र के बीच उड़ा। मीलों गुजर गए, अंतहीन मील, उफनता हुआ समुद्र। क्षितिज पर एक अंधेरा पिंड प्रकट हुआ, रुक–रुक कर निकलने वाली ज्वालाओं की लपटों में से, एक अंधेरा पिंड, बाहर फूटा। जहाज चलता गया। शीघ्र ही, हमारे नीचे पहाड़ी जमीन का एक बड़ा सा पिण्ड उभरा। बड़े–बड़े ज्वालामुखियों ने अपने भद्दे सिर, ऊॅचे बादलों की तरफ उठाए। बहुत बड़ी–बड़ी लपटें, आगे फूटीं और पिघला हुआ लावा, समुद्र में गिरने के लिए, नीचे पहाड़ों के बगल से, रेंगने की एक आवाज से साथ लुढ़कता हुआ, जोर से आगे बढ़ा। यद्यपि ये जमीन के समीप, काफी दूरी पर, एक बुरा धब्बा था, ये एक बहुत अधिक मंद लाल (dull red) के रूप में प्रतीत हुआ।

जहाज चलता गया और इसने कई बार पृथ्वी की परिक्रमा की। वहॉ उछलते हुए समुद्र से घिरी हुई, एक बहुत बड़ी जमीन थी, जो निम्नतर ऊॅचाई (lower altitude) से, भाप निकालता हुआ जैसा, दिखाई दिया। अंत में यह उठा, अंतरिक्ष में प्रविष्ट हुआ और वापस अपने पितृ यान की ओर लौट गया। जैसे ही उस जहाज की गति, साम्राज्य विश्व (Empire world) के वापिसी ओर दुबारा बढ़ी, पर्दा धुंधला पड़ गया।

अब मेरे दिमाग में कहने के लिए, इतने सुपरिचित स्वर ने टिप्पणी की, *''नहीं ! मैं केवल तुमसे ही बात नहीं कर रहा हूॅ, मैं उनको भी सूचित कर रहा हूॅ, जो इस अनुभव में भाग ले रहे हैं। क्योंकि तुम इतने अधिक ग्रहणशील हो कि, तुम मेरी सभी टिप्पणियों के प्रति, जिसे हम ध्वनि संबंधी प्रति पुष्टि (feed back) कहते हैं, जागरूक हो। परन्तु ध्यान दो। ये तुम्हारे ऊपर भी लागू होता है।''*

दूसरा अभियान वापस हुआ– ''(यहॉ एक नाम था, परंतु इसका उच्चारण करना, मेरी क्षमता के परे है, इसलिए मैं इसे बदल दूॅगा और 'अपना साम्राज्य' कहूॅगा। ''वैज्ञानिकों ने उन प्रतिवेदनों (reports) का अध्ययन किया, जो बेड़े के द्वारा जमा कराये गये थे। शताब्दियों की संभावित संख्या, जिसके बाद यह विश्व, उन जीवित प्राणियों को जमा करने के लिए तैयार होता, का अनुमान लगाया गया। सबसे अच्छे प्रकार के प्राणियों को बनाने की योजना बनाने के लिए, जीव विज्ञानी (biologists) और अनुवांशिकी (geneticists) क्षेत्र के लोगों ने साथ–साथ काम किया। जब किसी नए विश्व के ऊपर भण्डारण (stock) करना होता है, और जब वह लोक (पृथ्वी) एक नोवा (Nova)[10] की संतान होती है, आश्चर्यजनक प्राणी और विशाल वनस्पति समुदाय, सबसे पहले आवश्यक होते हैं। पूरी मृदा (soil) चूर्ण की हुई चट्टानों और ज्वालामुखी से निकली हुई धूल के साथ, निश्चित सूक्ष्ममात्रा में मिश्रित कुछ तत्वों से बनी होती है। ऐसी

10 अनुवादक की टिप्पणी : नोवा (Nova) एक तारा है, जो सहसा ही अत्यधिक तीव्रता से चमक उठता है और धीमे–धीमे उसकी चमक घट कर सामान्य हो जाती है। यह वास्तव में, किसी श्वेत वामन तारे (white dwarf) के ऊपर प्रलयंकारी नाभिकीय विस्फोट (nuclear explosion) होता है, जिससे सहसा ही तारे में तीव्र चमक उत्पन्न हो जाती है। माना जाता है कि युग्मक–तारा तंत्र (binary star system) में, दोनों तारे जब एक दूसरे के अत्यधिक समीप होते हैं, तब श्वेत वामन तारे की सतह के ऊपर नोवा बनता है। श्वेत वामन तारे द्वारा, समीपवर्ती तारे की सतह पर से पदार्थ (अधिकांशतः हाइड्रोजन), को खींच कर स्वयं में मिला लिया जाता है और समीपवर्ती श्वेत वामन तारे की सतह पर, इस नई जुड़ी हुई हाइड्रोजन में (जो श्वेत वामन तारे के भार का मात्र लगभग हजारवॉ भाग ही होती है), अत्यंत तीव्र गति से नाभिकीय संगलन (nuclear fission) की प्रक्रिया प्रारंभ हो जाती है, फलतः तारे का तापक्रम और उसकी चमक एकदम बढ़ जाती है, जो समय के साथ धीमे–धीमे घट कर सामान्य हो जाती है।

भूमि केवल मोटी–झोटी खुराक वाले (coarse-feeding) पौधों का समर्थन करती है। जब ये पौधे नष्ट होते हैं, और जानवर मरते और सड़ते हैं और चट्टानों की धूल के साथ मिल जाते हैं, (तब) सहस्त्राब्दियों (millinnania) की अवधि में मिट्टी तैयारी होती है। मिट्टी जब अपनी मूल चट्टानों से एकदम एकदम अलग हो जाती है, अत्यन्त छोटे प्रकार के पौधे उगाए जा सकते हैं। किसी भी ग्रह पर, मिट्टी, वास्तव में, समय के साथ सड़े हुए जानवरों और पौधों की कोशिकाऐं और पहले वालों के, युगों पहले के लोगों के मल–मूत्र होती है।''

मुझे ऐसा लगा कि, आवाज का स्वामी, जब उसने अपने श्रोताओं का निरीक्षण किया, थोड़ी देर के लिए रुका, तब उसने कहना जारी रखा, ''एक नये ग्रह का वातावरण, आदमियों को सांस लेने के लिए बिल्कुल ठीक नहीं होता। ज्वालामुखियों के मुंह से उगले जाने वाले दुर्गंधयुक्त पदार्थ में गन्धक और अनेक जहरीली और मारक गैसें होती हैं। ठीक–ठीक वनस्पतीकरण (vegetation), जहरों को अवशोषित करते हुए और बदले में हानिरहित खनिजों को जमीन को वापस लौटाने में, इन पर पार पा जाता है। पेड़–पौधे, जहरीले धुंओं को ले लेते हैं और उन्हें ऑक्सीजन और नाइट्रोजन में बदल देते हैं, जिनकी मनुष्य जाति को आवश्यकता होती है। इसलिए, उन आधारभूत स्टॉक को तैयार करने में शताब्दियों से, विभिन्न शाखाओं के वैज्ञानिक एक साथ काम कर रहे थे। ये उन्होंने, एक समीपवर्ती विश्व के ऊपर, जिसकी परिस्थितियॉ समान थीं, रखे ताकि वे कुछ परिपक्व (mature) हो सकें, ताकि हम ये निश्चित कर सकें कि, वे पूरी तरह संतोषजनक हैं। यदि आवश्यक होता तो, उनमें सुधार किया जा सकता था।

इसलिए, नये ग्रह के तन्त्र को युगों के लिए, अपनी खुद की युक्तियों के लिए छोड़ दिया गया। तबतक छोड़ दिया गया जबतक कि, हवाओं और लहरों ने उन तीखी चट्टानी पराकाष्ठाओं (pinnacles) को मिटा नहीं दिया। करोड़ों वर्षों तक तूफान और झंझावात, उस चट्टानी भूमि को पीटते रहे। चूरा की हुई चट्टानें, ऊॅची चोटियों से गिर कर बिखरती गईं, और तूफानों में लुढ़कते गए, चट्टानों के चूरे को और अधिक महीन पीसते हुए, भारी पत्थर गिरते गए। दैत्याकार लहरों ने, उनको एक साथ उछालते हुए, थुकथुकाते हुए, कोप करते हुए, उनको छोटे, और छोटे, कणों में घटाते हुए, जमीन पर पछाड़ दिया। लावा, जो सफेद–गर्म (white hot) रूप में, पानी में बह रहा था, उसने गन्ध उठाईं और झाग दिये और वह, उस समुद्र की बालू बनाने के लिए, लाखों कणों में टूट गया। लहरें, बालू को वापस जमीन पर लाने के लिए लहराईं, और तब महाद्वीपीय टकराहट ने, पहाड़ों की मीलों ऊॅचाई को, मात्र दस हजार फुट की ऊॅचाई में तोड़ दिया।

पृथ्वी के समय की अंतहीन शताब्दियॉ गुजर गईं। जलता हुआ सूर्य, अब उतना तीखा नहीं जल रहा था और न ही, छोटी–छोटी लपटें, समीपवर्ती चीजों को जलाने के लिए इतनी उत्सुक थीं। अब सूर्य नियमित रूप से, ठीक जल रहा था। समीप के विश्व भी ठण्डे हो चुके थे। उनकी कक्षाऐं स्थिर हो गईं थीं। बहुधा चट्टानों के छोटे टुकड़े, दूसरे पिण्डों से टकराते थे और वे सभी, लपटों की तीव्रता में अस्थाई रूप से थोड़ी से बढ़त बनाते हुए, सूर्य में डूब जाते थे। परंतु, तंत्र स्थिर होता जा रहा था। विश्व, जिसे पृथ्वी कहते हैं, प्रथम जीवन को पाने के लिए तैयार था।

साम्राज्य के आधार पर, पृथ्वी पर यात्रा करने के लिए, एक बड़ा यान तैयार किया जा रहा था और जिसे तीसरा अभियान कहा जाए, उसके सदस्यों को सभी मामलों में प्रशिक्षण दिया जा रहा था, जो उनके, आनेवाले कामों से संबंधित होते। अनुकूलनता (compatability) और विकसित तंत्रिका रोग (neurosis) की अनुपस्थिति के लिए, आदमी और औरतों को छॉटा जा रहा था। प्रत्येक अंतरिक्ष यान, अपने आप में परिपूर्ण, एक विश्व होता है, जिसमें हवा का निर्माण, पौधों के द्वारा किया जाता है और पानी को हवा और हाइड्रोजन की प्रचुर मात्राओं से प्राप्त किया जाता है, जो इस संपूर्ण ब्रम्हाण्ड में सबसे सस्ती चीज है। उपकरणों को, लाद दिया गया। सामान्य आपूर्तियों को, पूर्व नियोजित समय पर, पुनर्जीवन धारण करने के लिए तैयार नई चीजों को, सावधानीपूर्वक जमा दिया गया। काफी लम्बे समय के बाद, अंत में, क्योंकि कोई

जल्दी नहीं थी, तीसरा अभियान तैयार हुआ।

मैंने यान को, ब्रम्हाण्डीय साम्राज्य में एक दूसरे में हो कर गुजरते हुए, और उसमें प्रवेश करते हुए, जिसमें कि काफी दूरी पर नई पृथ्वी थी, फिसलते हुए देखा। वहॉ चमकदार सूर्य के चारों ओर परिक्रमा करते हुए, अनेक विश्व थे। इन सबको अनदेखा किया गया; संपूर्ण ध्यान केवल एक ग्रह के ऊपर लगाया गया। बड़े यान ने अपनी गति कम की और एक परिक्रमण कक्षा में, इसप्रकार झूल गया कि, ये पृथ्वी पर एक बिन्दु के सापेक्ष, स्थिर था। जहाज के ऊपर एक छोटा जहाज तैयार रखा गया था। छः आदमी और औरतें उसमें प्रविष्ट हुए और फिर मातृयान (parent ship) के फर्श में से एक खुला स्थान दिखाई दिया, जिसमें से उस निरीक्षण यान को गिराया गया। ज्यों ही वह मोटे बादलों में से गिरा और पानी के कुछ हजार फुट ऊपर जाकर उभरा, मैंने फिर पर्दे पर देखा। एक क्षैतिज तल पर चलते हुए, शीघ्र ही यह वहॉ आ गया, जहॉ चट्टानी भूमि पानी में से ऊपर उभरी हुई थी।

ज्वालामुखी की फुफकार, यद्यपि, काफी हिंसक थीं, फिर भी पूर्व की अपेक्षा ये कम तीव्र थीं। चट्टानों के मलवे के झरने, अब पहले से कम थे। सावधानीपूर्वक, अत्यन्त–अत्यन्त सावधानीपूर्वक, छोटा जहाज नीचे, और नीचे, डूबा। उत्सुक निगाहों ने, उतरने के सर्वाधिक सुविधाजनक स्थान के लिए, सतह की खोज की और अंत में, उस स्थिति पर निर्णय कर लेने के साथ, वह वहॉ उतरा। यहॉ, कड़ी सतह पर ठहरते हुए, बेड़े ने वह किया, जो सामान्य जाचें (routine tests), लगता था। इन पर संतुष्ट होते हुए, बेड़े के चार सदस्यों ने, अपने अजीब से परिधान पहने, जो उन्हें गर्दन से पैरों तक पूरा ढ़कते थे। हर आदमी ने अपने सिर के ऊपर, एक पाारदर्शी गोले को रखा, जो किसी प्रकार, उन पोशाकों के गर्दन के समीपवर्ती खण्ड से संबंधित था।

हर आदमी ने एक बक्सा उठाया और वे एक छोटे कमरे में प्रविष्ट हुए, जिसका दरवाजा सावधानीपूर्वक बंद किया हुआ था और उनके पीछे जड़ा हुआ था। दूसरे दरवाजे के सामने एक रोशनी, लाल जल उठी। वृताकार डायल के ऊपर, एक काले संकेतक ने हिलना प्रारंभ किया, और जैसे ही यह ''ओ (0)'' लिखे हुए स्थान पर आ कर टिका, लाल रोशनी बदल कर हरी हो गई और बाहर वाला दरवाजा झूल कर खुल गया। धातु की एक अनोखी सीढ़ी, मानो कि अपने खुद के जीवन से पूरी तरह रंगी हुई, फर्श पर जा कर टकराई और लगभग पंद्रह फुट नीचे, जमीन पर जा कर विस्तारित हुई। एक आदमी सावधानी से सीढ़ी पर उतरा और जैसे ही वह सतह पर पहुॅचा, उसने पैरों से आवाज की। उसने पेटी में से एक लंबी छड़ निकाली, जो उसने जमीन में गाड़ दी। उसने, मोड़ी हुई, छड़ की सतह के ऊपर बनाए गए, उन चिन्हों की सूक्ष्मरूप से परीक्षा की और– अपने पैरों पर खड़े होते हुए, दूसरों को इशारा किया कि, वे भी इसके साथ वहॉ आ सकते हैं।

वेतरतीबरूप से देखते हुए, उन चीजों को करते हुए, जिनका मेरे लिए कोई अर्थ नहीं था, छोटा दल आसपास घूमता रहा। इसको छोड़ कर कि मैं ये जानता था कि, ये लोग प्रखर बुद्धि वाले प्रौढ़ हैं, मुझे उनकी पुरातत्वात्मक विलक्षण (antics) चीजों को, उन खेलने वाले बच्चों के लिए रख लेना चाहिए। कुछ लोगों ने छोटे पत्थरों को उठाया और उन्हें एक थैले में रखा। कुछ ने जमीन को हथौड़े के साथ टकराया, या जो धातु की छड़ प्रतीत होती थी, उसको ठोका। फिर भी, मैंने ध्यान दिया, एक दूसरी मादा, कॉच की उन छोटी चिपचिपी पट्टियों को हिलाते हुए और तब जल्दी से उन्हें बोतल में घुसाते हुए, घूम रही थी। ये सारी चीजें मेरी समझ से पूरी तरह बाहर थीं। अंत में, वे अपने जहाज तक लौटे और पहले प्रभाग (compartment) में घुसे। वे ऐसे स्थिर खड़े हुए, जैसे कि जानवर बाजार में खड़े रहते हैं, जबकि उल्लेखनीय रंगीन रोशनियॉ चमकीं और प्रत्येक की संपूर्ण सतह के ऊपर चलीं। एक रोशनी हरी चमकी, और दूसरी रंगीन रोशनियॉ बुझ गईं। दल ने अपने सुरक्षात्मक परिधानों को हटा दिया और जहाज के प्रमुख भाग की ओर चले।

शीघ्र ही, वहॉ बहुत कुछ करना था। चिपचिपे कॉच की पट्टियों वाली मादा ने, उनमें से हर एक को, धातु के यंत्रों में रखने के लिए, अपने चेहरे को उस पर रखते हुए ताकि वह उन

दोनों नलियों में होकर देख सके, तेजी से दौड़ लगाई। दूसरों पर टिप्पणियॉ करने के साथ ही उसने मूंठ को, जब कभी घुमाया। आदमी, जिसके पास छोटे टुकड़े थे, ने उन्हें एक छोटी मशीन में डाल दिया, जिसमें से घरघराने की एक तेज आवाज निकली और उसने शीघ्र ही टुकड़ों को बाहर निकाल दिया, जो अब पूरी तरह से, बहुत महीन चूर्ण के रूप में बदल चुके थे। अनेक जाचें की गईं, उस बड़े पितृ यान के साथ अनेक वार्तालाप हुए। इन यानों में से दूसरे यान प्रकट हुए, जबकि पहला हट गया और दूसरे बड़े जहाज की ओर लौट गया। दूसरे जो बचे, उन्होंने पूरे विश्व की परिक्रमा की और उनमें से चीजों को गिराया, जो जमीन पर गिरीं और विभिन्न प्रकार की दूसरी, जो समुद्र में गिरीं। अपने काम से संतुष्ट होते हुए, सभी छोटे–छोटे जहाज, एक–दूसरे के पास आ गए और उन्होंने एक लाइन बनाई, जिसके बाद वे ऊॅचे उठे और उन्होंने पृथ्वी के वातावरण को छोड़ दिया। एक के बाद एक ने, मातृयान में फिर प्रवेश किया और जब अंतिम आदमी को ऐसा करना था, बड़ा अंतरिक्षयान कक्षा में से तेजी से उड़ा और उसने इस तन्त्र के दूसरे विश्वों की तरफ यात्रा की। इसप्रकार, पृथ्वी के समय के अनेक–अनेक वर्ष, उपयोग में लाए गए।

पृथ्वी पर अनेक शताब्दियॉ गुजर गईं। अंतरिक्ष में यात्रा कर रहे यान के लिए, ये केवल कुछ सप्ताह का समय था, क्योंकि किसी प्रकार से, जो समझने में मुश्किल हैं, परंतु ऐसा है। दोनों समय, एक–दूसरे से अलग होते हैं। अनेक शताब्दियॉ गुजर गईं, और मोटे तौर पर, जमीन पर और पानी के अंदर, मोटी वनस्पतियॉ फैली फूटीं। काफी मोटी पत्तियों के साथ जहरीली गैसों को सोखते हुए और दिन में ऑक्सीजन को और रात में नाइट्रोजन को बाहर निकालते हुए, बहुत बड़ी फर्न (ferns) आकाश की तरफ, ऊपर चोटी बनाती हुई बढ़ीं। अंत में बहुत लंबे समय के बाद, अंतरिक्ष का एक यान (ark), बादलों में हो कर नीचे गिरा और रेतीले किनारे के ऊपर उतरा। बड़े–बड़े झोले खोले गए और मीलों लंबे अंतरिक्ष यान में से, इकट्ठे किए हुए स्वप्निल भीमकाय प्राणी आए, इतने आश्चर्यजनक कि, पृथ्वी उनके चलने से कांप गई। और भयानक प्राणियों ने हवा में फड़फड़ाते हुए अपने चमड़े जैसे बड़े पंखों से जोर से झपट्टा मारा।

महानयान –आगामी अनेक युगों में से पहला, –हवा में उठा और धीमे से समुद्र के ऊपर, फिसल गया। यान ने, पहले से तय किए हुए क्षेत्रों में, पानी की सतह के ऊपर, डेरा डाला और अनोखे–अनोखे प्राणी, महासागर की गहराइयों में गोता लगा गए। बड़ा अंतरिक्ष यान, ऊपर उठा और अंतरिक्ष के अत्यन्त दूर स्थित रिक्त स्थानों में जा कर गायब हो गया। पृथ्वी पर अविश्वसनीय प्राणी रहे और आपस में लड़े, प्रजनन किया और मर गए। वातावरण बदल गया। प्राणी और वनस्पति बदल गए, और प्राणियों का विकास हुआ। युग बीत गए और विद्वान लोगों की वेधशाला में से, काफी दूर स्थित ब्रम्हाण्डों में से, निगरानी रखी गई।

पृथ्वी अपनी कक्षा में डगमगा रही थी; उत्केन्द्रता (eccetricity) खतरनाक हद तक विकसित हो रही थी। साम्राज्य के दिल (केन्द्र) में से एक विशेष यान आया। वैज्ञानिकों ने तय पाया कि, सागरों को उछलने से रोकने के लिए और पृथ्वी को असंतुलित होने से बचाने के लिए, जमीन का केवल एक टुकड़ा पर्याप्त नहीं था। सतह के ऊपर मीलों तक उछलते हुए बड़े अंतरिक्षयान में से, प्रकाश की एक पतली किरण छोड़ी गई। पृथ्वी के खुले हुए महाद्वीप कॉप गए और छोटे–छोटे खण्डों में टूट कर, टुकड़े–टुकड़े हो गए। मारक भूकम्प उत्पन्न हुए और समय की पूर्णता के साथ, वे पिण्ड परकोटा बनाते हुए, एक–दूसरे से अलग होते गए, जिसके कारण समुद्र, अब अनेक समुद्रों में विभाजित हो गया; बेकार की उखाड़–पछाड़। पृथ्वी अपनी स्थायी कक्षा में स्थिर हो गई। धीमे–धीमे लाखों वर्ष गुजर गए, पृथ्वी के समय के लाखों वर्ष। साम्राज्य से, फिर एक दूसरा अभियान पहुॅचा। इस बार वह प्रथम मानवों को इस संसार में लाया। बैगनी रंग के विचित्र प्राणी उतारे गए। औरतें, जिनके आठ स्तन थे, और आदमी और औरतों के कंधों पर समंजित किए हुए सिर, चौकोर थे ताकि, पूरे शरीर को देखने के लिए एक साथ मुड़ना आवश्यक हो। टांगें छोटी थीं और बाहें लंबी, घुटनों से नीचे उतरती हुईं। वे आग या हथियारों को नहीं जानते थे, फिर भी हमेशा लड़ते रहते थे। वे बड़े–बड़े पेड़ों की

शाखाओं के ऊपर और गुफाओं में रहते थे। उनके पास, खाने के लिए बेर और घास थी और छोटे–छोटे कीड़े–मकोड़े, जो जमीन पर रेंगते थे। परंतु निरीक्षक संतुष्ट नहीं हुए, क्योंकि ये केवल बुद्धिहीन प्राणी थे, जो स्वयं का बचाव नहीं कर सकते थे और उन में विकास (evolution) के कोई चिन्ह भी नहीं दिखते थे।

अब तक, साम्राज्य के यान, पूरे ब्रम्हाण्ड में, जो सौरमण्डल को धारण करता है, लगातार गश्त में थे। यहॉ के दूसरे विश्व भी विकसित किए जा रहे थे। दूसरा ग्रह, पृथ्वी की तुलना में अधिक तेजी से आगे बढ़ रहा था। गश्ती जहाजों में से एक को, पृथ्वी पर जाने के लिए, अलग कर दिया गया, जहॉ वह उतरा। बैंगनी मूल निवासियों में से कुछ, पकड़ लिए गए और उनकी परीक्षा की गई और यह तय पाया गया कि, ठीक वैसे ही, जैसे कि एक माली खरपतवार को समूल हटा देता है, पूरी प्रजाति को समाप्त कर दिया जाए। पृथ्वी पर एक महामारी फैली और सभी मानव मार दिए गए। आवाज ये कहते हुए फूटी, *''आनेवाले वर्षों में, स्वयं आपकी पृथ्वी के लोग, खरगोशों को समाप्त करने के लिए के प्लेग का, इस विधि का उपयोग करेंगे परंतु आपके लोग, प्लेग, जो खरगोशों को कष्ट के साथ मारेगा, का उपयोग करेंगे। हम इसे कष्टरहित ढंग से करते हैं।''*

आकाश से, विभिन्न जन्तुओं और एकदम विभिन्न मानवों को लेते हुए, एक दूसरा यान भी आया। उनको पूरी जमीन पर वितरित कर दिया गया, (इस बार) एक भिन्न प्रकार और शायद एक भिन्न रंग के चुने गए, जो उस क्षेत्र के हिसाब से, परिस्थितियों के हिसाब से उचित थे। पृथ्वी अभी भी गर्जना कर रही थी और कुलबुला रही थी। ज्वालामुखी अभी भी लपटों और धुंओं को, उगल रहे थे और पर्वतों की तरफ से, पिघला हुआ लावा उड़ेला जा रहा था। समुद्र ठण्डे हो रहे थे और उनके अंदर का जीवन बदलती हुई परिस्थितियों को समायोजित करने के लिए बदल रहा था। दोनों सिरों (ध्रुवों) पर पानी ठण्डा था और बर्फ ने पृथ्वी पर, पहली बार जमना शुरू कर दिया था।

युग गुजरते गए। पृथ्वी का वातावरण बदला। दैत्याकार फर्न जैसी उपज ने, परम्परागत पेड़ों के लिए राह बनाई। जीवन के प्रकार स्थिर हो गए। एक शक्तिशाली सभ्यता पनपी। पृथ्वी के बागवान (gardeners of the earth), शहर के बाद शहर घूमते हुए, पूरी पृथ्वी के चारों ओर उड़ते रहे। परंतु उनमें से कुछ, अपने अधीन उन मानवों से या उनकी औरतों से, अत्यधिक घुलमिल गए। मानव प्रजाति के एक दुष्ट पुजारी ने, उन बागवानों में से एक को शारीरिक संपर्क के लिये फुसलाने के लिए, मनाने के लिए, ताकि वह गुप्त रहस्यों के साथ विश्वासघात कर सके, एक सुंदर औरत को प्रलोभन दिया। शीघ्र ही, (उस) औरत के पास कुछ निश्चित हथियार, जो पहले आदमियों की निगरानी में थे, आ गए। कुछ ही घन्टों में, पुजारी ने उन्हें हथिया लिया।

विश्वासघात के द्वारा चुराए गए हथियारों को प्रादर्श (नमूने) के रूप में उपयोग में लाते हुए, पुजारी जाति के कुछ लोगों ने आण्विक हथियार बनाए। एक स्थान को चिन्हित किया गया, जहॉ पर कुछ को एक मंदिर के उत्सव के लिए और उन बागवानों में से कुछ को, धन्यवाद देने के लिए, बुलाया गया। यहॉ, पवित्र मैदानों में, बागवानों को जहर दे दिया गया। उनके उपकरण चुरा लिए गए। दूसरे बागवानों के ऊपर तीव्र हमला किया गया। युद्ध में परमाणु हथियारों का जखीरा, जो अंतरिक्ष यान में रखा था, एक पुजारी के द्वारा विस्फोटित (explode) कर दिया गया। पूरी पृथ्वी हिल गई। एटलांटिस का बड़ा महाद्वीप, लहरों के नीचे डूब गया। बहुत दूर के स्थानों में, आंधी–तूफान ने पहाड़ों को घेर लिया और मानवों को एक दूसरे से अलग कर दिया। समुद्रों में बड़ी–बड़ी तूफानी लहरें उठीं, और विश्व, मानव जीवन से लगभग पूरी तरह रहित हो गया। केवल कुछ एक को छोड़ते हुए, जो कायर बच्चों की तरह से रोते हुए, दूर की गुफाओं में छिपे थे, विश्व पूरी तरह मानवरहित हो गया। उस परमाण्विक विस्फोट के कारण, पृथ्वी वर्षों तक कांपती रही, हिलती रही। वर्षों तक कोई बागवान, पृथ्वी का निरीक्षण करने के लिए नहीं आया। विकिरण बहुत तेज थे, और मानव जाति के बचे हुए अवशेषों ने, पूरी तरह रूपान्तरित, नई संतति आगे बढ़ाई। पौधों का जीवन भी प्रभावित हुआ और वातावरण आधारहीन हो गया।

सूर्य को, नीचाई वाले, लाल बादलों के द्वारा ढक लिया गया। बहुत लंबे समय के बाद, बुद्धिमान लोगों ने आदेश दिया कि, एक दूसरा अभियान, फिर भी, पृथ्वी को भेजा जाए और उनके दूषित हुए गए बाग में नया स्टॉक डाला जाये। अंतरिक्ष में, बहुत दूर पहुॅच के स्थानों में, मानवों, पशुओं और वनस्पतियों का एक महान यान, सुसज्जित किया गया।

बूढ़ा साधु हॉफते हुए गिर पड़ा। नौजवान साधु, सदमे के साथ हवा में कूदा और तब गिरे हुए पुरातन (ancient) की तरफ दौड़ा। अमूल्य बूंदों की एक छोटी सी बोतल, उसके हाथ में थी, और शीघ्र ही, सामान्यरूप से सांस लेता हुआ वह बूढ़ा आदमी, अपनी बगल से लेटा रहा। *''आपको खाने की जरूरत है, आदरणीय,''* नौजवान लामा ने कहा। *''मैं आपके बगल से पानी रख दूंगा और तब मैं प्रभावशाली चिंतन में, कुटी में चाय और जौ पाने के लिए, चढ़ जाऊॅगा। मैं जल्दी करूॅगा।''* जैसे ही उस नौजवान साधु ने पानी का कटोरा उसके बगल से रखा, और पानी भरी हुई पूरी कट्टी को, उसकी पहुॅच के अंदर रखा, साधु ने कमजोरी के साथ अपनी गर्दन हिलाई और आराम किया। *''मैं चोटी के बगल से जाऊॅगा,''* जैसे ही वह गुफा के बाहर तेजी से निकला, उसने कहा।

वह पगडण्डी के धुंधले निशानों को पाने की इच्छा से, जो उसे काफी दूर चौड़े रास्ते पर ले जानेवाले थे, ऊपर की तरफ टकटकी लगाते हुए, पहाड़ के आधार के साथ दौड़ा। यहॉ, दो हजार फुट ऊपर, और छैः मील दूर, एक साधु की कुटी थी, जिसमें अनेक (साधु) रहते थे। मांगने पर खाना मिल सकता है, परंतु रास्ता कठिन था और अब सूर्य का प्रकाश भी घटना शुरू हो गया था। नौजवान साधु ने कठोरता से, तेजी से, लंबे–लंबे डग भरे। धीमे से, उसने चट्टान के सपाट सिरे से प्रारंभ किया और अंत में, जब तक कि वह उन धुंधले चिन्हों तक नहीं पहुॅच गया, जहॉ वह एक बार पहले भी पहाड़ी पर चढ़ चुका था। ऐंठी हुई, अविकसित झाड़ियों के पास से, वह ठीक दांयी ओर मुड़ा और तुरंत ही उसे एक चाकू जैसे निर्दयी पत्थर से सामना करना पड़ा, जिसने दूसरे अनेक लोगों को इसी प्रकार निराश (परेशान) किया था और उन्हें दूसरा रास्ता लेने को बाध्य कर दिया था। रास्ता इतना चक्करदार था कि, उसने छैः मील के रास्ते को बढ़ा कर, बीस से अधिक मील कर दिया था। जहॉ कुछ भी दिखना संभव नहीं था, धीमे–धीमे, हाथ की पकड़ बनाते हुए, उसने ऊपर की तरफ संघर्ष किया। एक–एक कदम करके वह चढ़ता गया। सूर्य, दूर के पहाड़ों की श्रृंखला के नीचे डूब गया और उसने एक बड़े पत्थर के ऊपर टांगें फैला कर बैठते हुए, थोड़ी देर के लिए विश्राम किया। शीघ्र ही, चढ़ते हुए चन्द्रमा की चांदी जैसी किरणों ने, पर्वत श्रृंखला के ऊपर झांकना शुरू कर दिया। शीघ्र ही, ऊपर की चोटियों का चेहरा, आगामी यात्रा को संभव बनाने के लिए, पर्याप्त रूप से दमक उठा। उसने ऊपर की तरफ खतरनाक रास्ते को, उंगलियों से पकड़ते हुए और पैरों के पंजों से खोदते हुए, इंच–इंच करके नापा। उसके नीचे घाटी गहरे अंधकार में थी। वह आराम की एक आह के साथ ऊपर पहुॅचा और संकरे रास्ते पर, जो साधु की कुटी की ओर जाता था, कुलॉच खा गया (tumbled)। उसने अपनी शेष मीलों का रास्ता, आधा दौड़ते हुए, सिसकियों में सांस आते हुए और हर पैर में दुखते हुए, पूरा किया।

उस यात्री को, काफी दूरी पर, अंधेरे में जलते हुए, हल्के से चमकते हुए, टिमटिमाते हुए मक्खन के दीपक, आशा की एक किरण के रूप में दिखाई दिए। सांस लेने के लिए हांफते हुए, और खाने की आवश्यकता के कारण फक पड़ा नौजवान साधु, अन्त में, कुटी के दरवाजे के कुछ गज पहले, लुढ़क गया। अन्दर से, एक बूढ़े आदमी की, पूरी तरह से स्पष्टतः दोहराते हुए, प्रार्थना करते हुए, जप करने की, बुदबुदाती हुई आवाज आई। यहॉ कोई धार्मिक भक्त नहीं है, जिसको मैं परेशान कर सकूॅ, नौजवान भिक्षु ने सोचा, जैसा उसने जोर से कहा, *''साधुओं के परिचारक (caretaker), मुझे इस समय सहायता की आवश्यकता है!''* धीमे स्वर में बार–बार दुहराई गई, बुदबुदाने की आवाज बंद हो गई। अधिक तेजी से चलते हुए, बूढ़ी हड्डियों की चटचटाहट हुई और तब दरवाजा धीमे से खुला। एक अकेले मक्खन के दीपक के प्रकाश के द्व ारा, जो अंधेरे में रूपरेखा बनाते हुए जल रहा था और थुकथुका रहा था, सहसा बूढ़ा परिचारक भिक्षु, ऊॅची तेज आवाज में बोला, *''वहॉ कौन है ? कौन है, जो इतनी रात को पुकारता है*

?'' धीमे से वह नौजवान भिक्षु चला ताकि उसे देखा जा सके। परिचारक भिक्षु, लाल पोशाक को देखने पर, थोड़ा चैन में आया। *''आओ घुसो,''* उसने आमंत्रण दिया।

नौजवान ने हिचक के साथ आगे कदम बढ़ाए। प्रतिक्रिया प्रारम्भ हुई और वह थक गया था। *''साथी पुजारी,''* उसने कहा, *''आदरणीय साधु, जिसके साथ मैं अभी रुका हुआ हूँ, बीमार हैं और हमारे पास खाना नहीं है। हमारे पास कोई नहीं है, न कल था। कोई व्यापारी भी हम तक नहीं आया। हमें केवल झील का पानी मिल रहा है। क्या आप हमें कुछ खाना दे सकते हैं ?''*

रखवाले भिक्षु ने किटकिटाते हुए सहानुभूति में कहा। *''खाना ? हॉ निश्चित रूप से, मैं तुम्हें खाना दे सकता हूँ। जौ –पहले से ही पूरे, अच्छी तरह पिसे हुए। चाय की एक ईंट। मक्खन और शक्कर, हॉ, परंतु तुमको आज रात, विश्राम करना चाहिए, आज रात को तुम पहाड़ी रास्ते पर नहीं जा सकते हो।''*

''मुझे समझना चाहिए पुजारी,'' नौजवान भिक्षु प्रसन्नता से बोला। *''आदरणीय भूखे मर रहे हैं। बुद्ध मेरी रक्षा करेगा। ''*

''तब थोड़ी देर रुको और थोड़ा खा लो और चाय पी लो–ये पहले से ही तैयार है। खाओ और पिओ, और मैं तुम्हें, तुम्हारे लिए, कंधे का एक थैला भर कर बॉध दूँगा। मेरे पास काफी है।''

इस प्रकार ये ऐसा था कि, नौजवान वहॉ पद्मासन की मुद्रा में बैठ गया और उसने, किए गए इतने गंभीर स्वागत के लिए, उसे धन्यवाद देने के लिए, दण्डवत् की। वह बैठा और उसने त्सम्पा खाया और तेज कड़क चाय पी। जबकि बूढ़ा रक्षक, सब प्रकार की गपशप करता रहा और खबरों की, जिसको उसने अच्छी तरह से सेवा किए गए साधुओं से सुना था, चर्चा करता रहा। अंतरतम (The lnmost) यात्रा में थे। ड्रेपुंग के महान स्वामी मठाध्यक्ष ने, दूसरे के खिलाफ अपमानजनक टिप्पणियॉ की थीं। कुलानुशासकों का महाविद्यालय, रखवाली करने वाली एक बिल्ली को धन्यवाद दे रहा था, जिसने कुछ व्यापारियों के बीच से, लगातार चोरी करने वाले एक चोर को, निश्चितता से पकड़ लिया था। एक पहाड़ी दर्रे पर, एक चीनी ताक में था और–जैसा कहा जाता था–वह किनारे पर से, लगभग दो हजार फुट नीचे गिरने के लिए फिसल पड़ा (लाश पूरी तरह से टूट–फूट गई थी और बिना किसी मानवीय सहायता के गिद्धों के लिए तैयार थी।)

लेकिन समय रुका नहीं था। अंत में, अनिच्छापूर्वक, नौजवान भिक्षु खड़ा हुआ और उसने प्रस्तावित थैले को लिया। धन्यवाद और विदाई के शब्दों के साथ, उसने साधु की कुटी में से बाहर जाने के लिए, तेजी से लंबे डग भरे और उसने सावधानी से, रास्ते पर नीचे की तरफ रास्ता बनाया। चन्द्रमा अभी ऊपर चढ़ चुका था। प्रकाश चांदी जैसा और चमकीला था, रास्ता स्पष्ट था, परंतु केवल उन लोगों को ज्ञात, जो ऐसे ऊॅचे स्थानों में रहते हैं। परछाईयॉ गहरे अंधकार की थीं। शीघ्र ही, वह उस किनारे पर आया, जहॉ उसे अधिक सुरक्षित रास्ते को छोड़ देना चाहिए और ढ़ाल पर नीचे की ओर चलना चाहिए।

सावधानीपूर्वक, धीमे–धीमे, उसने अपने आपको किनारे से नीचे किया। असीम सावधानी के साथ, अपने कंधे पर लदे बजन के कारण, कुछ हद तक अपंग। जब उसने, सावधानीपूर्वक, अपने हाथों को पकड़ते हुए, अपने पैरों के साथ एक सुरक्षित पकड़ अनुभव की, एक–एक इंच कर के, एक–एक फुट कर के, अपने हाथों से बजन को पैरों की तरफ हटाते हुए–पैरों से हाथों की तरफ हटाते हुए, वह नीचे की तरफ को रेंगा। अंत में, सिर के ऊपर उतरते हुए चन्द्रमा के साथ, वह घाटी की अंधेरी जमीन पर पहुॅचा।

अपने रास्ते को चट्टान से चट्टान तक अनुभव करते हुए, जबतक कि उसने गुफा के प्रवेशद्वार के सामने आग का लाल गोला नहीं देख लिया, उसने धीमे–धीमे प्रगति की। केवल थोड़ी सी अधिक टहनियों को वहॉ रखने के लिए, अंदर की तरफ रुकते हुए, वह डगमगाया और बूढ़े साधु के पैरों में गिर पड़ा, जिसको वह केवल आग की रोशनी के द्वारा, जो गुफा के प्रवेश द्वार की ओर परावर्तित हो रही थी, देखा जा सकता था।

अध्याय दस

बूढ़ा साधु, गर्म चाय के प्रभाव से, और चीनी की अच्छी मदद के साथ मक्खन की थपकी से, स्पष्टतः कुछ सुधर गया। जौ, महीन पिसे हुए और अच्छी तरह से भुने हुए थे। आग की लपटें प्रसन्नतापूर्वक गुफा के प्रवेशद्वार पर चमकीं। परंतु रात से भोर तक के बीच, पेड़ों की शाखाओं के ऊपर चिड़ियों के सोते हुए और रात के निकम्मे प्राणियों के जगते हुए, समय अभी भी शांत था। चन्द्रमा पूरे आकाश के ऊपर यात्रा कर चुका था और अपने आपको दूरतम श्रृंखला के पीछे, नीचे की तरफ ले जा रहा था। समय–समय पर, पत्तियों की सरसराहट के माध्यम से चिनगारियों को भेजते हुए, रात की बर्फीली हवा की आवाज आयी।

पुरातन आदमी कष्ट के साथ, अपनी जकड़ी हुई टॉगों के ऊपर उठा और अंदर के प्रकोष्ठ में गिर पड़ा। नौजवान भिक्षु लुढ़का और अपने सिर को अच्छी तरह से जमाए गए रेत से टिकाने से पहिले, गहरी नींद में सो गया। आसपास का संसार शान्त था। अंधेरे के साथ, रात गहरी होती गई, जो ये भविष्यवाणी करती थी कि, शीघ्र ही भोर होनेवाला है। ऊपर से एक अकेले पत्थर की, जो बड़े पत्थरों पर टकराने के लिऐ नीचे लुढ़क रहा था, आवाज आई और फिर सब कुछ शान्त था।

जब नौजवान भिक्षु पीड़ा के संसार में जगा, सूर्य काफी आगे आ चुका था। जकड़ी हुई भुजाऐं, थकी हुई मांसपेशियॉ और भूख ! अपनी सांस के अंतर्गत गुप्त शब्दों को बड़बड़ाते हुए, वह अपने पैरों पर, झटके से खड़ा हुआ, पानी की खाली कट्टी को पकड़ा और झटक कर गुफा के बाहर चला गया। आग, लाल राख की सुखद चमक थी। हिचकिचाते हुए, उसने छोटी टहनियॉ आग में उछालीं और बड़ी शाखाओं को उनके ऊपर रख दिया। उदासी के साथ, उसने शीघ्रता से घटती जा रही लकड़ी की आपूर्ति का निरीक्षण किया। उदासी के साथ, उसने चिंतन किया, दूर स्थान से हमेशा–हमेशा आनेवाली ताजा आपूर्ति में आनेवाली परेशानियों को सोचा। चट्टान की सतह पर टकटकी लगाते हुए, जैसे ही उसने अपनी रात की चढ़ाई के ऊपर विचार किया, उसने अनिच्छापूर्वक, अपने कंधे हिलाए। तब, पानी के लिए झील तक जाने के लिये चला।

''हमको आज लंबी बात करनी चाहिए,'' ज्यों ही उन्होंने अपना संक्षिप्त नाश्ता समाप्त किया, बूढ़े साधु ने कहा। *''क्योंकि मैं महसूस कर रहा हूँ कि, स्वर्ग के क्षेत्र मुझे जल्दी करने के लिए कह रहे हैं। एक सीमा है, जहॉ तक मांस झेल सकता है और मैं, मनुष्यों को आबंटित जीवनकाल से काफी अधिक जी चुका हूँ।''*

नौजवान दुखी दिखाई दिया, उसने उस बूढ़े के लिए एक गहरा प्रेम और आदर विकसित कर लिया था और ये सोचा कि, उसके कष्ट अभी तक बहुत बड़े रहे थे। *''आप जब चाहें मैं तैयार हूँ, आदरणीय,''* उसने कहा, *''मैं पहले केवल आपके कटोरे को पानी से भर दूँ।''* उठते हुए, उसने कटोरे को खाली किया और ताजे पानी से दुबारा भर दिया।

बूढ़े साधु ने कहना शुरू किया, ''यान, मेरे सामने के पर्दे पर व्यापक और बोझिल दिखाई दिया। एक यान, जिसने पोटाला (Potala) सेरा (Sera) और ड्रेपुंग (äepung) लामामठों के साथ–साथ, ल्हासा के पूरे शहर को निगल लिया था। ये इतने बड़े आकार का था कि, इसमें से निकलने वाले मानव, तुलनात्मक दृष्टि से इतने छोटे थे, जैसे कि चींटियॉ, जो रेत में कार्यरत दिखती हैं। बड़े पशुओं और नये मानवों की भीड का बोझा उतारा गया। अनुमानतः सभी, नशीली दवा के प्रभाव में डूबे हुए दिखाई दिए, ताकि वे लड़ न सकें। जानवरों और आदमियों को झुण्ड में लाते हुए, धातु की बनी हुई छड़ों के द्वारा उन्हें धकियाते हुए, आदमी, अपने कंधों पर आश्चर्यजनक चीजों के साथ ऐसे उड़े, जैसे चिड़ियॉ उड़ती हैं।

अनेक स्थानों पर उतरते हुए, विभिन्न प्रकार के जानवरों को वहॉ छोड़ते हुए, जहाज संसार के आसपास उड़ा। मानव, जो सफेद थे, जो काले थे, और उनमें कुछ पीले भी थे। छोटे मानव, लंबे मानव। मानव, काले बाल वाले और जिनके बाल सफेद थे। धारियों वाले जानवर, लंबी गर्दन वाले जानवर, बिना गर्दन वाले जानवर, जिनको मैं पहले नहीं जानता था। इतने अधिक रंगों आकारों और विभिन्न प्रकारों के जीवित प्राणियों की श्रृंखला हो सकती है। समुद्र के

प्राणियों में से कुछ इतने बड़े थे कि, एक बार के लिए मैं यह भी नहीं समझ सका कि, वे कैसे चलते होंगे, फिर भी, समुद्र में वे चुस्त–चालाक दिखाई दिए, जैसे कि हमारी झीलों में मछलियॉ।

छोटे यान, जिनमें लोग थे, जो उनके ऊपर, पृथ्वी के नए निवासियों के ऊपर, निगरानी रख रहे थे, लगातार हवा में उड़ रहे थे। अपने धावे में उन्होंने बड़े झुण्डों को बिखरा दिया और ये सुनिश्चित किया कि, पशु और मानव इस गोले (globe) के ऊपर फैल जाऐं। शताब्दियॉ गुजर गईं और आदमी अभी आग तक भी जलाने में समर्थ नहीं हो पाया और न ही पत्थरों के भद्दे हथियारों को आकृति दे सका। बुद्धिमानों ने सभाऐं की और कुछ मानव जातियों को प्रस्तावित करते हुए यह निर्णय लिया कि, जो थोड़े अधिक प्रतिभावान हों, जो जानते हों कि आग कैसे जलाई जाए और चकमक पत्थर से कैसे काम किया जाए, स्टॉक को सुधारा जाए। इस तरह शताब्दियॉ गुजर गईं, जिनमें पृथ्वी के बागवान, मानव प्रजाति को सुधारने के लिए, नए बहादुर नमूनों को लाते गए। धीमे–धीमे, मानव जाति ने, चकमक पत्थर को तराशने के चरण से लेकर, आग जलाने तक की स्थिति में आने में उन्नति की। धीमे–धीमे घर बनाए गए और नगर बसे। बागवान हमेशा मानव प्राणियों के बीच में घूमते–फिरते रहे और मानवों ने उनको पृथ्वी पर देवताओं के रूप में देखा[11]।

आवाज यह कहते हुए टूटी, *''केवल इन अंतहीन दुखों को, जो इस पृथ्वी की नई बस्ती को बसाने में हुआ, समझने से कोई उपयोगी तात्पर्य सिद्ध नहीं होगा। मैं तुम्हें, तुम्हारी खुद की जानकारी के लिए, प्रमुख मुद्दों को बताऊॅगा। जबतक मैं बोलता हूॅ, हम अपने सामने उचित चरणों में लिए गए चित्रों को देखेंगे ताकि, तुम किसी उल्लेखनीय बिन्दु को देख सको।''*

साम्राज्य बहुत बड़ा था, परंतु दूसरे ब्रम्हाण्डों से हिंसक लोग आए, जिन्होंने हमारे ऊपर कब्जा करने का प्रयत्न किया। ये लोग मानवाकार थे और उनके सिरों के ऊपर, कनपटी के क्षेत्र से बाहर निकलते हुए सींग उगे हुए थे। उनके एक पूॅछ भी थी। ये लोग आश्चर्यजनकरूप से लड़नेवाली प्रकृति, युद्धवाली प्रकृति के थे, ये उनका खेल भी था और काम भी। वे काले जहाजों में इस ब्रम्हाण्ड में आ़ाये और व्यर्थ पदार्थों को, कवाड़ को, दूसरे विश्वों में ले गए, जो अभी फिलहाल ही रोपे गए थे। अंतरिक्ष में प्रलयंकारी युद्ध छिड़ गए। विश्व उजाड़ होते गए, विश्व धुंए के बादलों और ज्वालाओं के द्वारा बीरान हो गए और उनके मलवे ने अंतरिक्ष को भर दिया, जैसे कि उल्काओं की पट्टी आज भी करती है। पहले के उपजाऊ विश्वों ने अपने वातावरण को विस्फोटित कर दिया और जो वहॉ रहते थे, वे सब समाप्त हो गये। एक विश्व ने दूसरे विश्व को तेजी से झटके के साथ टक्कर मारी और उसे पृथ्वी के विरुद्ध धकेल दिया। पृथ्वी डगमगाई और हिली और दूसरी कक्षा में धकेल दी गई, जिसने पृथ्वी के दिन को लंबा कर दिया।

''टक्कर की निकट अवधि में, विद्युत विसर्जन ने दैत्याकार रूप से, दोनों विश्वों को लपेट लिया। आकाश फिर से, नए सिरों से लपटों से घिर गया। पृथ्वी के मानवों में से अनेक नष्ट हो गए। बड़ी बाढों ने पृथ्वी की सतह को साफ कर दिया और करुणामय बागवानों ने अपने यानों के आसपास, मानवों और पशुओं को बाहर लाद कर ले जाने के प्रयत्नों में जल्दी की ताकि, वे सुरक्षित रूप से ऊॅचे स्थानों पर, सुरक्षा के साथ ले जाए जा सकें। *''बाद के वर्षों में,''* आवाज ने कहा, *''ये पूरे संसार के क्षेत्रों में एक गलत किंवदन्ती को जन्म देगा।''* परंतु अंतरिक्ष में युद्ध जीत लिया गया। साम्राज्य की सेनाओं ने बुरी तरह से आक्रमकों को हरा दिया और उनमें से अनेक को बंदी बना लिया।

आक्रामकों के राजकुमार, राजकुमार शैतान ने, ये कहते हुए कि, उसे साम्राज्य के लोगों

---

11 अनुवादक की टिप्पणी : हमारी लोक कथाओं के अनुसार, किसी समय में, देवता, मानवों के साथ सहअस्तित्व में थे। हिमालय का क्षेत्र उनका निवास स्थान माना जाता था, जहॉ देवराज इन्द्र राज्य करते थे और उनके क्षेत्र को इन्द्रलोक या स्वर्ग कहा जाता था। देवताओं के पास विमान भी होते थे। स्वर्गलोक में बहुत विलासितापूर्ण और आनन्दमयी जीवन था। देवताओं के, राक्षसों के साथ अनेक युद्ध हुए, जिसमें कई बार, मानव राजाओं ने देवताओं की सहायता की। ऐसे ही एक युद्ध में, कहा जाता है कि, राजा दशरथ ने देवराज इन्द्र की सहायता की थी और युद्ध में राजा दशरथ के रथ की धुरी टूट गई थी। युद्धक्षेत्र में रानी केकेई उनके साथ थी। केकई ने अपना हाथ, पहिये की धुरी के रूप में लगा दिया, युद्ध जारी रहा और अंत में, युद्ध में देवताओं और मनुष्यों की विजय और राक्षसों की पराजय हुई। इस अवसर पर प्रसन्न होकर राजा दशरथ ने केकेई को दो बरदान दिये, जो उसने तत्काल न मांगते हुए बाद में लेने के लिए कहा, जिसके फलस्वरूप राम को बनवास और भरत को राजगद्दी दी गई। शिव का स्थान, शिवलोक भी हिमालय के क्षेत्र में, कैलाश पर्वत, जो आजकल चीन में है, पर माना जाता है, मानसरोबर झील भी वहीं है।

को बहुत कुछ सिखाना है, अपने जीवन की रक्षा के लिए प्रार्थना की। ये कहते हुए कि, वह हमेशा दूसरों की भलाई के लिए काम करेगा। उसको और उसके प्रमुख लोगों में से कुछ को जीवनदान दिया गया। बंदी बनाए जाने के समय के बाद, उसने स्वयं का, सौरतंत्र (solar system), जिसको उसने इतना नष्ट कर दिया था, के पुनर्निर्माण में सहयोग करने का इच्छुक होना व्यक्त किया। अच्छी इच्छावाले लोग होने के कारण, साम्राज्य के सेनानायकों और जनरलों ने, जो इस विश्वासघात और दूसरे के बुरे आशयों की कल्पना नहीं कर सके, इस प्रस्ताव को स्वीकार किया और राजकुमार शैतान और उसके अधिकारियों को साम्राज्य के आदमियों की निगरानी में छोड़ दिया।

पृथ्वी पर मूल निवासी, अनुभवों से, जिनमें होकर वे गुजरे थे, पागल हो रहे थे। वे जलप्लावन[12] के द्वारा और बादलों से होने वाली लपटों के द्वारा, नष्ट कर दिये गये थे। बाहर वाले ग्रहों से, जहॉ कुछ लोग जिंदा बच गए थे, ताजा भर्ती लाई गई। देश अब पूरी तरह अलग थे, समुद्र भिन्न थे। (पृथ्वी की) कक्षा में पूरी तरह परिवर्तन हो जाने के कारण, वातावरण बदल चुका था। अब भूमध्यरेखीय पट्टी गरम थी और दूरस्थ क्षेत्रों में बहुत भारी बर्फ जम गई थी। हिमखण्ड मुख्य पिण्डों से टूट कर अलग हुए और समुद्र में तैरते गए। बड़े जानवर, जब उनके जिंदा रहने के हालात इतने जबरदस्त ढंग से बदले, एकदम गहरी ठण्ड में मर गए। जंगल समाप्त हो गए।

बहुत धीमे–धीमे हालात स्थिर हुए। एक बार फिर, आदमी ने सभ्यता की कृति बनाना शुरू किया। परंतु आदमी, अब अत्यधिक रूप से युद्धप्रिय था और उन लोगों के, जो अपेक्षाकृत कमजोर थे, पीछे पड़ गया। सामान्यचर्या (routine) में, बागवानों ने कुछ ताजे नमूनों को वहॉ प्रवेश कराया ताकि, मूल स्टॉक को सुधारा जा सके। मनुष्य का विकास प्रगति पा गया और एक अच्छे प्रकार के प्राणी, धीमे से उभरे। परंतु बागवान संतुष्ट नहीं थे। ये तय किया गया कि, अधिक बागवानों को, बागवान और उनके परिवारों को, पृथ्वी पर रहना चाहिए। सुविधा के लिए, उच्च स्थानों की पहाड़ी चोटियॉ, आधार के रूप में उपयोग में लाई गईं। एक पूर्वी भूमि के ऊपर, एक आदमी और एक औरत अपने अंतरिक्ष यान में से उतरे और उन्होंने अपना आधार उस ऊॅचे सुखदायक पर्वत पर बनाया। *''इजानागी (Izanagi)[13]"* और *''इजानामी (Izanami)"*

---

12 अनुवादक की टिप्पणी : लगभग सभी धर्मों की दंतकथाओं में जलप्लावन की घटनाओं का उल्लेख मिलता है। हमारे धर्मशास्त्रों के अनुसार एक बार नहीं बल्कि अनेक बार, जलप्लावन या प्रलय हो चुकी है। वर्तमान में वैज्ञानिकों के अनुसार लगभग हर 55लाख वर्षों बाद पृथ्वी पर जलप्लावन होता रहता है। पहले हिमयुग का प्रारम्भ होता है, जब पूरी पृथ्वी बर्फ से ढ़क जाती है तो उसके बाद, धीमे–धीमे वर्फ पिघलती है और पूरी पृथ्वी पर जल की बाढ़ आ जाती है। ऐसी ही एक प्रलय में, माना जाता है कि, सभी प्राणी मर गये थे और केवल एक जोड़ा, मनु और शतरूपा का शेष बचा था, जिनसे स्रष्टि दुबारा प्रारम्भ हुई। इसी से मनु की संतान को मानव (human) कहा जाता है। पुराणों में वर्णित दशावतारों में से एक घटना, जलप्लावन से संबंधित है, जिसमें वर्णन किया गया है कि, सारी पृथ्वी जल में डूब गई थी और तब भगवान विष्णु ने बाराह (pig) रूप धारण कर, इसके स्थलवाले भागों को ढूंढ़ा था। बाद में, उन्हीं स्थानों पर, जिन्हें आजकल द्व ीप या महाद्वीप कहा जाता है, सृष्टि का प्रारम्भ हुआ। वैदिक मान्यताओं के अनुसार अब तक 27 बार प्रलय हो चुकी है। दो प्रलयों के अंतराल को मन्वंतर कहते हैं। वर्तमान मन्वंतर 28वॉ मन्वंतर है।

13 अनुवादक की टिप्पणी : इजानागी (Izanagi) और इजानामी (Izanami) जापानी देवता एवं देवी हैं, जो जापानी दंतकथाओं के अनुसार, सातवीं पीढ़ी में पैदा हुए, और इसे ''इजानागी –महान देवता'' कहा जाता है। इजानागी की छोटी बहिन, इजानामी उसकी पत्नी थी, जिसने जापान के अनेक द्वीपों को और जापानी धर्म परंपराओं के अनेक देवताओं को जन्म दिया। परंतु, एक दंतकथा के अनुसार, (Izanami) का अंधकार भरे नरक, योमित्सु कुनी (Yomitsu Kuni) में पतन हुआ। वह अग्नि के देवता, कागत्सुची (Kagustsuchi) को जन्म देने के बाद मर गई। इजानागी ने अग्नि के देवता कागत्सुची को तलवार से मार दिया, जिसके बाद वह अपनी पत्नी के पास उसको पुनः प्राप्त करने की आशा में गया परंतु उसने अपनी वापसी को असंभव बताया। इजानागी ने अपनी पत्नी को दिए हुए वचन, ''आग को न देखना न जलाना'' का पालन नहीं किया। इजानागी वहॉ से भाग गया परंतु देवता ने प्रतिदिन एक हजार लोगों को मारने की घोषणा की, इजानागी ने इस पर प्रतिक्रिया करते हुए कहा कि वहॉ एक हजार पांच सौ को प्रतिदिन पैदा होंगे। अपनी पत्नी इजानामी से मिलने के लिए इजानागी की यात्रा, कुछ हद तक ग्रीक के ओरफेयस की यात्रा, जो उसने यूरीडाइस के लिए की, के समानान्तर है, परंतु दोनों में समानता है कि उन्होंने नर्क में खाना खा लेने के कारण, वापस लौटने में अपनी असमर्थता प्रकट की

जापानी दंतकथाओं के अनुसार, दो देवता, इजानागी (नर देवता, जो आमंत्रित करता है) और इजानामी (मादा देवी, जो आमंत्रित करती है), जापानी लोक संस्कृति में, देवता और उनके सृष्टिकारक के रूप में माने जाते है। दंतकथाओं के अनुसार, जैसा कि 700 ईसवीं के कोजी की (Kojiki) (''प्राचीन प्रकरणों के लेखे'') और निहोनगी (Nihongi) (''जापान की उद्घोषणाऐं'') में कहा गया है, वे अंधकारपूर्ण नरक में गिरे। जनश्रुतियों के अनुसार, अपने जन्म के बाद इजानामी और इजानागी, स्वर्ग के तैरने वाले पुल पर खड़े थे, तभी उन्होंने एक नगीने जड़े भाले से समुद्र को हिला दिया। जब उन्होंने भाले को उठाया तो पानी की कुछ बूंदे वापस समुद्र में गिरीं, जिनसे ठोस भूमि, सर्वप्रथम ठोस, भूमि पैदा हुई, जिससे ओनोगोरो (Onogoro) नामक द्वीप उत्पन्न हुआ। इजानागी और इजानामी दोनों, द्वीप पर उतरे और पति–पत्नी बन गए। पहला बच्चा विकृत पैदा हुआ और तब दूसरे देवों ने कहा कि इजानामी, अपने विवाह समारोह में अपने पति से पहले बोल पड़ी थी इसलिए ऐसा हुआ।

युगल ने दुबारा विवाह समारोह शुरू किया। इस बार ठीक से। इजानामी के आठ सुन्दर बच्चे पैदा हुए, जो जापान के द्वीप बन गए। तब इजानामी और इजानागी ने अपने देवों और देवियों को सृजित किया, पर्वतों, घाटियों, झरनों, जलधाराओं, हवाओं को और जापान की दूसरी प्राकृतिक चीजों को निरूपित किया, तथापि अग्नि के देवता कागत्सूची के जन्म के दौरान, इजानामी बुरी तरह जल गई थी, लेकिन मरते–मरते तक, उसने देवी और देवताओं का सृजन जारी रखा। फिर दुःख से घिरी इजानामी के ऑसुओं से और भी दूसरे देवी देवता प्रकट हुए।

जब इजानामी मरी तो वह योमी–त्सुकुनी (Yomi-tsukuni) चली गई। इजानागी ने वहॉ जाने और अपनी प्रिय पत्नी को अंधकार और मृत्यु के क्षेत्र और नरक के क्षेत्र से वापस लाने का निर्णय किया। इजानामी ने इजानागी को उसे न देखने के लिए चेतावनी दी और कहा कि वह योमी (Yomi) के देवताओं से, स्वयं को मुक्त करने की व्यवस्था करेगी। अपनी पत्नी को पूरी तरह चाहते वाले इजानागी ने, एक मशाल जलाई और योमी नरक में देखा। इजानामी के सड़ते हुए शव को देख कर, इजानामी वहॉ से भाग गया।

इजानागी ने इजानामी की इच्छाओं का आदर नहीं किया, इससे नाराज होकर इजानामी ने एक रहस्यमय मादा आत्मा को, विद्युत तड़ित के आठ देवताओं और तीखे देवताओं की फौज को, उसका पीछा करने के लिए वहॉ भेजा। इजानागी भागने में सफल हुआ। भागते–भागते उसने नरक और अपने रहने

संरक्षक बन गए और जापानी प्रजाति के संस्थापक हुए और –ध्वनि ने एक ही समय में विषादग्रस्त और चकित होकर कहा– *''एक बार फिर झूठी कहावतें गढ़ी गईं; चूंकि ये दोनों, इजानागी और इजानामी, सूर्य की दिशा से आए थे, इसलिये मूल निवासी विश्वास करते थे कि, वे सूर्य के पुत्र थे। सूर्य देवता और देवियों के पुत्र थे, जो उनके साथ रहने के लिए आए थे।''*

अपने सामने के पर्दे पर मैंने, खूनी लाल (blood red) रंग के सूर्य को आकाश में पूरी तरह चमकते हुए देखा। उसमें से परावर्तित होती हुई डूबते हुए सूरज की किरणों से, एक चमकते हुए लाल रंग का रंगीन यान उतरा। यान और नीचे उतरा, ऊपर तैरता रहा और तब उसने आलस्य से चारों ओर चक्कर लगाया। अंत में, जैसे ही, सूर्य से निकलने वाली शाम की लाल किरणें परावर्तित हुईं, बर्फ से ढ़की हुई पहाड़ी चोटियों पर, अंतरिक्ष यान, एक पहाड़ी के बगल से, एक समतल ढ़लान पर उतरा। सूर्य की किरणों में से अंतिम किरण चमकी और आदमी और औरत यान मे से, अपने बारे में देखने के लिए उतरे, और तब दुबारा उसमें प्रवेश कर गए। दृश्य की भव्यता से अत्यधिक डरे हुए, सहमे हुए, पीली खाल वाले मूल निवासी, यान के सामने दण्डवत् करते हुए लेट गए, (उन्होंने) आदरपूर्वक शान्ति में प्रतीक्षा की और तब वे रात के अंधेरे में गुम हो गए।

चित्र बदला और मैंने एक दूसरे पहाड़ को बहुत दूर भूमि पर देखा। जहॉ, मैं नहीं जानता था, परंतु ये सूचना, शीघ्र ही मुझे दी जाने वाली थी। आकाश में से और यान आए, जिन्होंने आसपास चक्कर लगाए और जबतक कि उन्होंने पहाड़ी ढ़लान को पूरी तरह नहीं भर दिया, धीमे से वे एक नियमित विन्यास (formation) में उतरे। *''ओलंपस के देवता !''* आवाज ने व्यंगपूर्ण स्वर में कहा। *''तथाकथित भगवान, जो इस नौजवान पृथ्वी पर जॉच और आपत्तियों को लाए थे। ये लोग अपने साथ, पूर्व राजकुमार शैतान को, इस पृथ्वी पर बसाने के लिए आए थे, परंतु साम्राज्य का केन्द्र बहुत दूर था। ग्लानि और विरक्ति की भावनाओं (Ennui) और शैतान की प्रेरणाओं ने इन नौजवान आदमी और औरतों की, जिन्होंने इनको इस पृथ्वी पर अनुभव प्राप्त करने का जिम्मा सौंपा था, बरबादी की।''*

''जीयस (Zeus)[14], अपोलो (Apollo)[15], थीसियस (Theseus)[16], एफ्रोडाईट (Aphrodite)[17], कैडमस (Cadmus)[18] की पुत्रियॉ, और दूसरे तमाम, इस बेड़े के हिस्से थे।

के स्थान के बीच के रास्ते को एक बड़ी चट्टान के द्वारा बंद कर दिया। इजानामी उसे वहॉ मिली और उन्होंने अपने विवाह को समाप्त कर दिया।

इजानागी ने, लाश के साथ स्वयं का संपर्क होने के कारण, स्वयं को अस्वच्छ अनुभव किया और उसने खुद को साफ करने के लिये स्नान किया। उसके द्वारा त्यागे गये कपड़ों से, भले और बुरे, दोनों प्रकार के अनेक देवी–देवता प्रकट हुए। उसकी बायीं ऑख से सूर्य की देवी अमेतरासू (Amaterasu), दायीं ऑख से चन्द्रमा का देवता त्सुकी–योमी (Tsuki-yomi) और नाक से सुसानो–ओ (Susano- o) प्रकट हुआ। इजानागी ने अपने इन तीनों भले पुत्रों पर गर्व करते हुये, इनके बीच अपने राज्य को बॉट दिया।

जापान में सन् 1966 से सन् 1970 तक का समय, इजानागी बूम के नाम से जाना जाता है।

14 अनुवादक की टिप्पणी : जीयस (Zesus) देवताओं में सर्वप्रथम और सर्वाधिक वर्चस्ववाला था, जिसे बहुधा ''देवों और मानवों का भी पिता'' कहा जाता है। वह आकाश का देवता है, जो तड़ित (thunder), (बहुधा अस्त्र के रूप में उपयोग में लाते हुए) बिजली की चमक और कड़क के माध्यम से नियंत्रण करता है। जीयस ओलंपस पर्वत (mount olympus), जो ग्रीक के देवों का घर है, का राजा है, जहॉ से वह विश्व पर शासन करता है और देवताओं और मृत्य (mortals) जैसे मानवों के ऊपर, अपनी इच्छाओं को थोपता है।

जीयस, टाइटनों (Titans) और क्रोनस (Cronus) और रिआ (Rhea) का अंतिम बच्चा था और जब रिआ ने यूरेनस (Uranus) और गे (Ge) से सहायता मांगते हुए, उसे अपने पिता (जिसको यह कहा गया था कि उसका बच्चा ही उसको उखाड़ फेंकेगा) के द्वारा निगल लिये जाने से बचाया गया था। क्रोनस पहले से ही डेमेटर (Demeter), हेस्टिया (Hestia), हेडस (Hedes) और पोजाइडोन (Poseidon) को निगल चुका था।

हेडस और पोजाइडोन के साथ–साथ जीयस ने विश्व के साम्राज्य का साझा किया और ओलंपस का राजा बना। क्रोनस के बच्चे के रूप में, उसने अपने भले भाईयों से प्रशंसा पाई और टाइटन्स की लड़ाई में जीयस का पीछा करते हुए, उनके अन्यायी पिता के खिलाफ पक्ष लिया।

जीयस ने अनेक देवियों (Goddesses) और मृत्य लोगों के साथ भी, समागम किया जिनमें एल्जीना (Algina), एल्कमेना (Alcmena), कैलियोक (Calliope), कैसियोपिया (Cassiopea), डायोन (Dione), आईरोपा (Europa), ईयो (Io), लेडा (Leda), लेटो (Leto), नेमोसिन (Mnemosyne), नियोबा (Niobe), परसेफीन (Persephene), और सेमेला (Semela) शामिल हैं परंतु शादी अपनी बहिन हेरा (Hera) के साथ की, जो शादी की और एक पत्नीव्रत की देवी है। जीयस को बहुधा न्याय का स्वामी कहा जाता है, जिसने हिंसा के स्थान पर शान्ति स्थापित की। जीयस को एक चिंतामुक्त, विद्वान, न्यायप्रिय, दयाशील, विश्वसनीय और अनप्रेरेटिबल (unpredictable) के रूप में जाना जाता है। रोमन और हिन्दू धर्म के उसके समकक्ष, क्रमशः जुपीटर (Jupiter) और इन्द्र (Indra) हैं।

15 अनुवादक की टिप्पणी : अपोलो (Apollo) पुरातन ग्रीक और रोमन धर्म के और ग्रीक और रोमन दन्तकथाओं के ओलंपिया के देवताओं में से एक हैं। दाड़ीरहित नौजवान पहलवान के आदर्शों के रूप में, अपोलो को कई बार, संगीत, सत्य, भविष्यकथन, स्वास्थ्य प्राप्ति, सूर्य, प्रकाश, प्लेग, पद्य, और अनेक विधाओं का स्वामी माना जाता है। अपोलो, जीयस और लेटो (Leto) का पुत्र माना जाता है, जिसके आर्टिमिस (Artimis) नाम की एक जुड़वा बहिन थी।

16 अनुवादक की टिप्पणी : ग्रीस की दन्तकथाओं के अनुसार, थीसस (Theseus) ग्रीक का हीरो और हीरो के सामर्थ्य और साहस जैसे तमाम पारम्परिक गुणों को रखनेवाला, ऐथेन्स (Athens) का एक राजा था। वह प्रखर बुद्धिवाला और विद्वान भी था। उसके प्रारम्भिक कार्यों ने ऐथेन्स के शहर और क्षेत्र को लाभ पहुँचाया।

17 अनुवादक की टिप्पणी : एफ्रोडाइट (Aphrodite) प्रेम, कामना और सौन्दर्य की देवी है। अपनी स्वभाविक सुन्दरता के अलावा उसकी एक जादूई करधनी (girdle) भी है, जो हर आदमी को उसको प्राप्त करने की इच्छा के लिए मजबूर करती है। एफ्रोडाइट यौन, प्रेम, आकर्षण, जो लोगों का आपस में बांधकर रखता है को निरूपित करती है। एफ्रोडाइट को बीनस (Venus) भी कहा जाता है जिसे शुक्र ग्रह के साथ जोड़कर जाना जाता है। एफ्रोडाइट के अनेक दूसरे नाम भी हैं जैसे ऐकीडेलिया (Acidelia), साइथेरिया (Cytheria), और सेलिगो (Seligo), जिसे इस देवी के अनेक स्थानीय सभ्यताओं के अनुसार उपयोग में लाया जाता है।

18 अनुवादक की टिप्पणी : ग्रीक दन्तकथाओं के अनुसार, कैडमस (Cadmus), थेबस (Thebes) का संस्थापक और प्रथम राजा था। इसका वास्तविक नाम

संदेशवाहक मरकरी (Mercury)[19], पूरे संसार में इस संदेश और घपलों (scandals) को लिए हुए, जहाज से जहाज तक, तेजी से दौड़ता रहा। आदमी, दूसरों की पत्नियों की इच्छा के साथ अभिभूत (overwhelmed) हुए। औरतों ने, उन आदमियों को जाल में फंसाने के लिए, जिन्हें वे चाहती थीं, अपने आपको तैयार किया। दुनियॉ के आकाश के आरपार तेज दौड़ते हुए हवाई जहाजों की, पागलपन की, एक दौड़ थी, चूंकि औरतें आदमियों का पीछा कर रही थीं या पति, प्रेमियों के साथ भागने वाली पत्नियों के पीछे दौड़ रहे थे। और दुनियॉ के भोले–भाले मूल निवासियों ने, जिन्हें वे देवता समझते थे, उनके यौन व्यापारों को देखते हुए सोचा कि, यही उनका तरीका होगा, जिसमें वे रहते होंगे। इस प्रकार वहॉ निष्कासन का एक दौर शुरू हुआ, जिसमें भद्रता के सारे नियम तोड़ दिए गए।[20]''

''सामान्य से अधिक चतुर और सजग, अनेक कपटी मूल निवासियों ने, अपने आपको पुजारियों के रूप में व्यवस्थित किया और देवताओं के स्वर के रूप में होने का नाटक किया। ''देवता'' लोग अपने व्यभिचार में अत्यधिक व्यस्त थे। परंतु इन व्यभिचारों ने दूसरी ज्यादतियॉ कीं, इतनी अधिक संख्याओं में हत्याऐं की गयीं कि, अंत में उनकी खबर छनकर साम्राज्य में वापस पहुॅच गई। परंतु मूल पुजारियों, जिन्होंने उन देवताओं के प्रतिनिधि होने का बहाना किया था, ने जो हुआ था, वह सब लिख दिया और उक्तियों को इसप्रकार फेरबदल दिया, जिससे कि उनकी खुद की शक्तियॉ बढ़ सकें। विश्व के इतिहास में हमेशा से ऐसा होता रहा है, कि मूल निवासियों में से कुछ ने वह लिखा, जो नहीं हुआ था, परंतु जो उनकी निजी शक्तियों और निजी प्रतिष्ठा को बढ़ाता था। किंवदंतियों में से अधिकांश, जो वास्तव में हुआ था, उसके समीप भी नहीं ठहरती हैं।''

मुझे दूसरे पर्दे की तरफ हटा दिया गया। यहॉ बागवानों या देवताओं का दूसरा समूह

कैडमाईया (Cadmeia) था। पुरातन ग्रीक लोगों द्वारा कैडमस को मूल वर्णमाला, जिसे उसने ग्रीक वर्णमाला से स्वीकार किया, स्थापित करने का श्रेय दिया जाता है। इसे फैनोसियन (Phoenician) वर्णमाला भी कहते हैं। अनुमान है कि कैडमस ईसापूर्व 2000 वर्ष के लगभग जीवित था। ग्रीक दन्तकथाओं के अनुसार, कैडमस के वंशजों ने थेबस पर, ट्रोजन (Trozen) युद्ध के समय को शामिल करते हुए, यदाकदा कई पीढ़ियों तक राज्य किया। कैडमस ग्रीक दन्तकथाओं में फोनिक्स (Phoenix) का पुत्र और आयरोपा का भाई है। आयरोपा को देवताओं के राजा जीयस द्वारा उड़ा ले जाया गया था तब कैडमस को उसका पता लगाने के लिए भेजा गया था। असफल रहने पर उसने डेल्फिक (Delphic) के ज्योतिषी के साथ सलाह मशबिरा किया, जिसने उसे अपनी तलाश को छोड़ देने और एक गाय के पीछे–पीछे चलने को और गाय जहॉ भी बैठ जाये उसी स्थान पर शहर बसाने के लिए कहा। गाय ने उसे बोईयोटिया (Boeotia), जो गायों का देश था, तक निर्देशित किया, जहॉ बाद में थैबस ने थैबस नाम का शहर बसाया। एक ड्रेगन (äagon), जो उसने मार दिया था, के दांत को जमीन में गाड़ दिया। इससे तीखे शस्त्रधारी मनुष्यों की एक प्रजाति पैदा हुई, जिसे स्पार्टी (Sparti) (जिसका अर्थ बोया हुआ होता है) कहा गया। स्पार्टी आपस में एक दूसरे से तबतक लड़ते रहे जबतक कि बाद में केवल पांच जिंदा बचे। इन पॉच लोगों ने कैडमिया या साईटाडेल (Citadel) को बनाने में थैबस की मदद की और शहर में भद्र परिवारों के स्थापित करने वाले बने। कैडमस ने बाद में हार्मोनिया (Harmonia) को, जो एरिस (Ares) और एफ्रोडाइट देवियों की पुत्री थी, को पत्नी स्वीकार किया, जिसके द्वारा उसे पोलिडोरिस (Polydoris) नाम का एक पुत्र और इण्डो (Indo), ऑटोनो (Autonoe), अगावे (Agave) और सिमिली (Semele) नामक चार पुत्रियॉ हुई।

19 अनुवादक की टिप्पणी : मरकरी (Mercury) रोम का प्रमुख देवता है। वह वित्तीय लाभों, वाणिज्य, काव्य संवाद यात्रा सीमाओं, भाग्य, चालबाजी और चोरों का देवता है, वह मृत्यु के बाद जानेवाली आत्माओं का पथ प्रदर्शक भी है। रोमन दन्त कथाओं में उसे माइया (Maia) और जुपीटर (Jupiter) का पुत्र कहा जाता है। रोम सामाज्य में सेक्सटंस (Sextans) और सेमुसिंया (Semuncia) स्थानों पर कांस्य (bronze) के दो सिक्कों के ऊपर वाणिज्य के देव मरकरी के खुदे हुए चित्र मिले हैं। पोम्पली (Pompeli) से मिलनेवाले पुरातत्व प्रमाणों के द्वारा ऐसा लगता है कि, मरकरी रोम के देवताओं में सर्वाधित लोकप्रिय था।

20 अनुवादक की टिप्पणी : लगभग इसी प्रकार का वर्णन हमारे धर्म ग्रन्थों में भी मिलता है। सती की मृत्यु होने के बाद, सती ने पार्वती के रूप में दूसरा जन्म ग्रहण किया और शिव की प्राप्ति के लिए वन में जाकर घोर तपस्या करने लगीं, परंतु शिव का ध्यान विवाह की ओर नहीं था। तब शिव की समाधि भंग करने के लिए, देवताओं ने योजना बनाकर, कामदेव को उन्हें विक्षुब्ध करने के लिए भेजा। कामदेव ने आकर पूरी दुनियॉ में अपना काम का जाल बिछाया। रामचरितमानस में वर्णन है कि, सभी चर और अचर, काम के वशीभूत हो गये। मानस में कहा गया है कि

चौ0– '' सबके हृदय मदन अभिलाषा। लता निहारि नवहिं तरु शाखा।।
नदीं उमगि अंबुज पहिं जाहीं। संगम करहिं तलाव तलाई।।
जहॅ असि दशा जड़न्ह कै बरनी। को कहि सकहि सचेतन करनी।।
पसु पच्छी नभ जल थल धारी। भये कामवस समय बिसारी।।
मदन अंध व्याकुल सब लोका। निशदिन नहिं अवलोकहिं कोका।।
देव दनुज नर किन्नर व्याला। प्रेत पिशाच भूत बेताला।।
इन्ह कैं दसा न कहेउॅ बखानी। सदा काम के चेरे जानी।।
सिद्ध विरक्त महामुनि जोगी। तेपि काम बस भये बियोगी।।

छं – भये कामबस जोगीस तापस पावँरन्हि की को कहै।
देखहिं चराचर नारिमय जे ब्रम्हमय देखत रहे।।
अबला बिलोकहिं पुरुषमय जगु पुरुष सब अबलामयं।
दुइ दंड भरि ब्रम्हांड भीतर कामकृत कौतुक अयं।।

सो – धरी न काहू धीर, सबके मन मनसिज हरे।
जे राखे रघुबीर, ते उबरे तेहि काल महुॅ।। (बालकांड 85)''

अर्थात् सभी चराचर जगत, काम के वशीभूत हो गया। तब काम ने अपना वाण चलाया, जिससे शिवजी की समाधि भंग हुई। उन्होंने देखते ही कामदेव को जला दिया। उसके बाद सप्तऋषियों ने उनकी स्तुति की और तब शिव ने पार्वती के साथ विवाह करना स्वीकार किया, जिससे शिव–पार्वती से उत्पन्न हुई संतान स्वामी कार्तिकेय ने, तारक नाम के राक्षस का संहार किया।

यह एक संयोग ही माना जायेगा, कि शिवजी का घर हिमालय में, कैलाश पर्वत, जो तिब्बत में है, में यह काम कौतुक हुआ। शताब्दियों तक यह लोककथाओं, जनश्रुतियों, पौराणिक कथाओं, धार्मिक पवित्र ग्रन्थों का विषय बना रहा। तिब्बत में इस कथानक का होना कोई अधिक आश्चर्य की बात नहीं है।

था। हॉरस (Horus)[21], ओसीरस (Osirus)[22], एनूविस (Annubis)[23], आईसिस (Isis)[24] और दूसरे अनेक। यहॉ भी व्यभिचार और अतिरेक हो रहे थे। यहॉ भी राजकुमार शैतान का एक पूर्व लेफ्टीनेंट, इस छोटी दुनियॉ में भलाई पैदा करने के, सभी प्रयासों को असफल करने के प्रयासों में लगा था। यहॉ भी अपरिहार्य पुजारी अपनी अंतहीन और असत्य किंवदतियों को लिखने में व्यस्त थे : कुछ ऐसे थे, जिन्होंने देवताओं के विश्वास को घुन लगा दिया और इसप्रकार उस ज्ञान को प्राप्त कर लिया, जिसे सामान्यतः मूल निवासियों के लिए, उनके खुद के भले के लिए, वर्जित किया गया था। उस वर्जित ज्ञान को चुराने और बागवानों की शक्ति को अन्यायपूर्वक हड़पने के लिए, इन मूल निवासियों ने एक गुप्त समाज बनाया। परंतु स्वर ने कहना जारी रखा। *''कुछ निश्चित मूल निवासियों से हमें अत्यधिक परेशानी हुई और उनके खिलाफ ऐसे कदम उठाने पड़े, जो दमनकारी थे। मूल निवासी पुजारियों में से कुछ, बागवानों के कुछ उपकरण चुरा लेने के बाद, उन पर नियंत्रण नहीं कर सके; उन्होंने पृथ्वी पर महामारी फैला दी। अत्यधिक संख्या में लोग मरे। फसलें प्रभावित हुईं।''*

''परंतु बागवानों में से कुछ ने, जो राजकुमार शैतान के नियंत्रण में थे, सोडम (Sodom) और गोमोराह (Gomorrah)[25] शहरों में अपनी पाप की राजधानी स्थापित की। शहर, जिनमें पक्षपात या हेराफेरी और अनैतिकता, मूल्यवान गुण (virtues) समझे जाते थे। साम्राज्य के स्वामी ने, इस सबसे परहेज करने और छोड़ देने के लिए, दृढ़तापूर्वक, शैतान को चेतावनी दी, परंतु उसने इसे हंसी में उड़ा दिया। सोडम और गोमोराह के भले निवासियों में से कुछ को, छोड़ने की सलाह दी गई, और तब, पूर्व निश्चित किए हुए समय पर एक अकेला वायुयान तेजी से हवा में आया और उसने एक छोटा सा पैकेज गिराया : शहर धुंए और लपटों

---

21 अनुवादक की टिप्पणी : हॉरस (Horus) प्राचीन मिस्री धर्म में एक सर्वाधिक महत्वपूर्ण देवता है, जो ग्रीक रोमन समयों से, राजवंशों से पहले के समय से, पूजित होते रहे हैं। हॉरस, आइसिस (Isis) और ओसिरिस (Osiris) का पुत्र था। हॉरस, देवी आइसिस को तब पैदा हुआ था, जब उसने अपने पति ओसीरिस के लिंग के सिवाय, जिसको नील नदी में फैंक दिया गया था, जिसे एक केटफिश (cat fish) ने या किसी कैंकड़े ने खा लिया था, सभी अंगों को प्राप्त कर लिया था।

जब आइसिस को पता लगा कि वह हॉरस के साथ गर्भवती है, वह अपने भाई सेट (Set), जिसने ईर्ष्या के कारण ओसिरिस की हत्या की थी और वह जानती थी कि, ओसिरिस उसके बेटे को भी मारना चाहेगा, से बचते हुए नील के मुहाने की तरफ दलदली भूमि में उड़ गई। वहॉ आइसिस ने हॉरस नाम के एक देवीय पुत्र को जन्म दिया। हॉरस, युद्ध और शिकार का देवता माना जाता है। इस प्रकार वह शक्ति और शासन का प्रतीक बन गया और फराओ (Pharaohs) के प्रादर्श के रूप में, फराओ को मानवीय शरीर में हॉरस कहा जाता था।

22 अनुवादक की टिप्पणी : ओसिरिस एक मिस्री देवता था। सामान्यतः उसकी पहचान, मृत्यु पर्यन्त जीवन के देवता के रूप में थी और अधिक सटीक रूप में वह परिवर्तन, जीवनचक्र और पुनर्जीवन का देवता कहा जाता है। उसे हरी खाल वाले आदमी के रूप में फराओ की दाड़ी के साथ में आंशिक रूप से ममी के रूप में, जिसमें टांगे लपेटी हुई हैं और जो विशिष्ट मुकुट पहने हुए है, दोनों तरफ दो बड़े–बड़े पंखों वाला, और एक प्रतीकात्मक अंकुश और मूसल (crook and flail) पकड़े हुए है, माना जाता था। ओसिरिस को किसी समय पृथ्वी के देवता, जेब (Geb) का पुत्र जाना जाता था, यद्यपि दूसरे स्त्रोत मानते हैं कि सूर्य का देवता रा (Ra), उसका पिता था और आकाश की देवी नट (Nut) उसकी मॉ थी और वह आइसिस का भाई और पति था। हॉरस, उसका पति के मरणोपरान्त पैदा होनेवाला पुत्र था।

23 अनुवादक की टिप्पणी : एनूविस (Anubis) एक ग्रीक देवता का नाम है जो मृत्यु के बाद के जीवन और ममीकरण (mummyfication) का देवता माना जाता है। पुरातन मिस्री धर्म के अनुसार, सामान्यतः उसे एक कुत्ते या कुत्ते जैसे सिर वाले एक आदमी के रूप में चित्रित किया जाता है। एनूविस के पवित्र जानवर की पहचान पुरातत्ववेत्ताओं ने मिस्री कुत्ते के रूप में की है, जिसे उस समय स्वर्णिम गीदड़ कहा जाता था, परंतु आधुनिक अनुवांशिक (genetic) परीक्षणों ने इस मिस्री प्राणी को अफ्रीकी स्वर्णिम भेड़िये (African golden wolf) के रूप में वर्गीकृत किया है।

24 अनुवादक की टिप्पणी : आईसिस, बहुदेवतावादी मिस्र की एक देवी है। इसकी सर्वप्रथम पूजा प्राचीन मिस्री धर्म में होती थी और बाद में उसकी उपासना पूरे रोमन साम्राज्य में और बृहत्तर ग्रीस रोमन विश्व में विस्तारित हो गई। आईसिस की पूजा अभी भी अनेक समाजों में होती है। आदर्श मां के रूप में और पत्नी के रूप में और प्रकृति और जादू की संरक्षिका के रूप में उसकी पूजा की जाती है। वह गुलामों की, पापियों की, आग लगानेवालों की और एकदम निचले कुचले वर्ग की मित्र थीं परंतु वह धनवान महिलाओं की, राजतंत्री लोगों की और शासकों की प्रार्थना भी सुन लेती थी। आईसिस को हॉरस की मां के रूप में चित्रित किया जाता है, जिसका सिर बाज (falcon) का है। आइसिस को मृतों का संरक्षक और बच्चों की देवी कहा जाता है। आइसिस नाम का तात्पर्य है –सिंहासन। उसके सिर का मुकुट एक सिंहासन है। वह पृथ्वी के देवता जेब, तथा आसमान की देवी नट (Nut) की प्रथम पुत्री थी। उसने अपने भाई ओरिसिस के साथ शादी की और हॉरस को जन्म दिया। ये विश्वास किया जाता है कि नील में जो वार्षिक बाढ़ आती है, वह आईसिस के दुख भरे ऑसुओं के कारण आती है, जब वह ओरिसिस के लिए रोती है।

25 अनुवादक की टिप्पणी : सोडम (Sodom) और गोमोराह (Gomorah) दो शहर थे, जिनका उल्लेख जेनेसिस (Genesis) की पुस्तक में तथा आध्योपान्त हिब्रू की बाइबिल में, ''न्यू टेस्टामेन्ट (New testament)" और ''बुक ऑफ बिजडम'' और कुरान (Quran) तथा हैडिथ (Hadith) में भी किया गया है। इन्हें पाप की राजधानी कहा जाता था।

टोराह (Torah) के अनुसार, सोडोम और गोमोराह के राज्यों ने अडमाह (Admah), जेबोइम (Zeboim) और बेला (Bela) शहर के राज्यों के साथ संधि की। ये पॉच नगर मैदानी नगर भी कहे जाते हैं, जो कन्नान (Cannan) देश के दक्षिणी क्षेत्र में, जॉर्डन (Jorden) नदी के किनारे पर स्थित थे। आजकल जिसे मृतसागर (Dead-Sea) कहा जाता है, उसके ठीक उत्तर की तरफ का क्षेत्र, जो भलीभांति सिंचित और हरा भरा था, ईडन का बाग (Garden of Eden) कहलाता था। यहॉ जानवरों को चरने के लिए पर्याप्त वनस्पति थी।

सोडोम और गोमोराह तथा दो पड़ौसी नगरों को, जो पूरी तरह से आग और गंधकाश्म (brimstone) के द्वारा पूरी तरह समाप्त हो गये थे, को ईश्वरीय निर्णय प्रदान किया गया। पड़ौसी (बेला), एकमात्र शहर था, जो बचा था। इब्राहिम (Abrahim) के धर्मों में सोडोम और गोमोराह अधैर्य, पाप और उनके पतन के पर्याय बन गये हैं। सोडोम और गोमोराह की तुलना, पक्षपाती और समलैंगिक (Homosexual) के रूप में की जाती थी, इसलिए अनेक भाषाओं ने इसप्रकार के शब्दों को जन्म दिया है, उदाहरण के लिए अंग्रेजी शब्द 'सोडोमी (sodomy)' यहीं से बना है, जिसका विधिसम्मत अर्थ है, 'प्रकृति के विरूद्ध एक यौन अपराध,' जिसमें गुदामैथुन या मुखमैथुन या किसी भी समलैंगिक के साथ अथवा विषमलैंगिक के साथ अथवा किसी आदमी या किसी जानवर के बीच कोई भी यौनक्रिया आती है। कुछ इस्लामी समाज सोडोम और गोमोराह से सम्बन्धित अपराधों में शरियत के अनुसार दण्ड देते हैं।

यदि ये शहर वास्तव में अस्तित्व में थे तो ये किसी प्राकृतिक आपदा के परिणामस्वरूप नष्ट हो गये होंगे। एक मान्यता के अनुसार, मृतसागर लगभग 2100 से 1900 ई.पू. के काल में, एक भूकम्प के द्वारा नष्ट हो गया था। कुछ लोगों का विचार है कि, यह क्षेत्र किसी उल्कापिण्ड के द्वारा, जो आल्पस (Alps) के क्षेत्र में टकराया, के कारण बना था।

में उड़ा दिए गए। कुकरमुत्ते– की शक्ल के बड़े बादल कांपते हुए आसमान में ऊपर उठे और जमीन पर, केवल तबाही और पत्थरों के मलवे, पिघली हुई चट्टानें, और अविश्वसनीय रूप से, मानवीय बसाहट के सड़ने के मलवे को छोड़ कर कुछ नहीं बचा। एक बीमार बैंगनी सी चमक के साथ, क्षेत्र रात तक चमकता रहा। इस नरसंहार से केवल कुछ ही लोग बच सके।

इस निवेदनपूर्ण चेतावनी के साथ, सभी बागवानों को पृथ्वी की सतह से हटा लेने और मूल निवासियों के साथ कोई संपर्क न रखने का, परंतु उन्हें बहुत दूर से, केवल नमूनों की तरह व्यवहार करने का, निश्चय किया गया। गश्तीयान अभी भी वायुमण्डल में प्रवेश करते। पृथ्वी और उसके निवासियों का निरीक्षण अभी भी किया जाता परंतु औपचारिक रूप से कोई संपर्क नहीं था। इसके बदले में पृथ्वी पर, उन मूल निवासियों को रखा जाना तय किया गया, जो विशेष रूप से प्रशिक्षित किए गए हों और जो यहॉ रखे जा सकें, जिन्हें यहॉ के उम्दा लोगों के द्वारा तलाशा जा सके। आदमी, जो बाद में, उदाहरण के लिए, मौसेस (Moses) के नाम से जाना गया। एक सही मूल महिला, पृथ्वी से हटा दी गई और उसे आवश्यक लक्षणोंवाले बीज के साथ, गर्भवती बनाया गया। अजन्मे बच्चे को दूरानुभूति से प्रशिक्षित किया गया और–एक मूल निवासी के लिए– महान ज्ञान दिया गया। उसे सम्मोहन के द्वारा इस प्रकार प्रतिबंधित किया गया कि, वह पूर्व निश्चित समय के पहले ज्ञान को प्रकट न करे।

उचित समय में बच्चा पैदा हुआ और उसको आगे का प्रशिक्षण और अनुकूलन दिया गया। बाद में, बच्चे को एक उचित बर्तन में रखा गया और अंधेरे के अंतर्गत, बेंत (reeds) की शैयाओं में, जहॉ से जल्दी ही उसका पता लगाया जा सके, उसे सुरक्षित रूप से जमा किया गया। जैसे ही वह जवानी तक बढ़ा, वह बारंबार हम लोगों के संपर्क में आ गया। जब आवश्यक होगा, एक छोटा जहाज पहाड़ों पर जाएगा और वह प्राकृतिक बादलों के द्वारा या उनके द्वारा भी, जो स्वयं हमारे द्वारा बनाए जाऐं, छिपा रहेगा। तब, शक्ति के राजदण्ड को त्यागते हुए या विशेष रूप से जमाए गए ईश्वरीय आदेशों (commandments) की पट्टिकाओं के साथ, जो हमने उसके लिए तैयार की हैं, मौसेस नाम का आदमी, पहाड़ पर चढ़ेगा और यान पर आएगा।

परंतु अभी भी, ये पर्याप्त नहीं था। हमको दूसरे देशों में भी इसीप्रकार की विधि अपनानी पड़ी। उस देश में, जो अब भारत कहा जाता है, हमने विशेषरूप से एक अत्यन्त शक्तिशाली राजकुमार के नर बच्चे को नियंत्रित और प्रशिक्षित किया। हमने सोचा कि, उसकी शक्ति और प्रतिष्ठा, स्थानीय मूल निवासियों को, उसका अनुगमन करने और एक विशेष प्रकार के अनुशासन, जो हमने बनाया था ताकि, वहॉ के मूल निवासियों की आध्यात्मिक अवस्था में, कुछ सुधार हो, को मानने के लिए प्रेरित करेगी। गौतम के अपने खुद के विचार थे, तथापि, उसको त्यागने के बजाय, हमने उसे अपने खुद के प्रकार के आध्यात्मिक अनुशासन को तैयार करने दिया। एक बार फिर, हमने पाया कि, उसके शिष्यों, या पुजारियों ने –सामान्यतः अपने खुद के लाभों के लिए –उसकी शिक्षाओं को अपने लेखन में विकृत कर दिया। इस प्रकार पृथ्वी पर हमेशा ही ऐसा होता रहा; आदमियों की एक जमात, स्वयंभू पुजारी, या धर्मग्रन्थों को परिवर्तित करते या दुबारा लिखती रही ताकि, उनकी खुद की संपदा और शक्तियॉ बढ़ती रहें।

वहॉ कुछ दूसरे लोग थे, जिन्होंने धर्म की नई शाखाऐं स्थापित कीं, जैसे मोहम्मद (Mohammed), कन्फ्यूसियस (Confusius)[26]–उल्लेख करने के लिए नाम, काफी बड़ी संख्या

---

26 अनुवादक की टिप्पणी : कन्फ्यूसयिस (Confucius) (सितम्बर 28, 551 ई.पू. – 479 ई.पू.) – एक चीनी शिक्षक, सम्पादक, राजनीतिज्ञ, और दार्शनिक था, जो चीन के इतिहास के बसंत काल में हुआ। ये बुद्ध और महावीर के समकालीन था।

कन्फ्यूसियस का दर्शन वैय्यक्तिक (personal) और शासकीय (governmental) नैतिकताओं, सामाजिक संबंधों की सत्यता और न्याय एवं गंभीरता पर जोर देता है। उनके अनुयाइयों ने सफलतापूर्वक, क्विन–राजवंश (Quin Dynesty) के 'सैकड़ों दार्शनिकों के काल' के दूसरे पंथों के अनुयाइयों के साथ प्रतियोगिता की है। क्विन के पतन और चू (Chu) पर हान की विजय होने के बाद, कन्फ्यूसियस के विचारों ने आधिकारिक रूप से स्वीकृति पाई और उसे एक वाद के रूप में, जिसे कन्फूसियन वाद कहा जाता है मान्यता मिली। कन्फ्यूसियस को पारम्परिक रूप से, अनेक चीनी ग्रन्थों की रचना या संपादन का श्रेय दिया जाता है, जिसमें पॉच पुस्तकों का एक संकलन, जिसे ''पॉच क्लासिक (Five classics)" कहा जाता है, शामिल है। परंतु उसकी शिक्षाओं को बताने वाली सूक्तियों (aphorisms) को उसकी मृत्यु के कई बरसों बाद, सूक्तिसंग्रह (analect) में संकलित किया गया। कन्फ्यूसियस के सिद्धांत, चीनी परम्पराओं और आस्थाओं में अपनी गहरी पैंठ रखते हैं। उसने कठोर पारिवारिक वफादारी, पूर्वजों की पूजा, बच्चों के द्वारा अपने बड़ों के आदर और पत्नियों के द्वारा अपने पतियों के प्रति आदर, जैसी परम्पराओं पर जोर दिया। उसने आदर्श शासन के लिए, परिवार को इकाई मानने की सलाह दी। उसने सुप्रसिद्ध सिद्धांत ''दूसरों के प्रति वह न करो, जो तुम अपने लिए किया जाना नहीं चाहते।'', इसे स्वर्णिम नियम (Golden rule) कहा जाता है।

कन्फ्यूसियस का जन्म राजशाही और मध्य वर्ग के बीच के वर्ग में (यानी उच्च मध्य वर्ग में) हुआ था। ऐसा माना जाता है कि उन्होंने अपनी जवानी के प्रारंभिक दिनों में, विभिन्न शासकीय कार्य किए – जैसे भेड़ों और घोड़ों का हिसाब–किताब रखना और उनकी देखभाल करना। इससे प्राप्त धन को

में हैं। परंतु इनमें से हर एक आदमी, हमारे नियंत्रण में था, या इस मूल इरादे के साथ कि, दुनियॉ का विश्वास फिर से स्थापित किया जाना चाहिए, हमारे द्वारा प्रशिक्षित किया हुआ था, तब उस धर्म के नेता, जीवन के सन्मार्ग पर, अपने अनुयायियों का भलीभॉति नेतृत्व कर सकेंगे। हमारा आशय था कि, हर आदमी को दूसरों के साथ, वैसा व्यवहार करना चाहिए, जैसाकि वह दूसरों से, अपने प्रति अपेक्षा रखता है। हमने सार्वत्रिक सामंजस्य की वैसी अवस्था स्थापित करने का प्रयास किया, जैसी कि हमारे अपने साम्राज्य में है, परंतु अपने स्वार्थों को एक तरफ रखने की और दूसरों के भलों के लिए काम करने की, ये नई मानवता भी, अभी तक पर्याप्त रूप से उन्नति नहीं कर पाई है।''

''विद्वान लोग, प्रगति से काफी असंतुष्ट थे। उनकी मानसिक प्रक्रिया के परिणामस्वरूप, एक नई योजना विचारार्थ रखी गई। विद्वानों में से एक ने टिप्पणी की थी कि, अब तक पृथ्वी पर भेजे गए सभी लोग, धनवान प्रकार के परिवारों में से थे। जैसा उसने ठीक ही कहा, निम्नवर्ग के लोगों में से अनेक, उच्च वर्ग के ऐसे व्यक्तियों के शब्दों को, स्वतः ही खारिज कर देंगे। इस प्रकार पहले, आकाशीय अभिलेखों को उपयोग में लाते हुए, फिर से, एक उचित औरत की तलाश शुरू की गई, जो पुत्र को धारण कर सके। एक उचित निम्नवर्ग के परिवार में से, एक उचित महिला और एक देश में, जहॉ ये सोचा गया था कि, नया धर्म या नया मत, पनपने की आशा की जा सकती है। शोधार्थियों ने परिश्रमपूर्वक, अपने आपको इस कार्य पर लगाया। काफी बड़ी संख्या में संभावनाओं को प्रस्तुत किया गया। तीन आदमी और तीन औरतें, गुप्त रूप से पृथ्वी पर उतारे गए ताकि, वे अपने अनुसंधान कार्यों को आगे बढ़ा सकें और सर्वाधिक उचित परिवार को चुना जा सके।

विचारों की सर्वसम्मति, एक नवयुवती के पक्ष में थी, जो संतानरहित थी और पृथ्वी के सबसे पुराने व्यापार का अभ्यास, बढ़ई का काम, करने वाले से ब्याही गई थी। विद्वान लोगों ने कारण बताया कि, अधिकांश लोग इस वर्ग के थे और वे लोग, अपने खुद के वर्ग में से, किसी के वचनों को समझने, पालन करने, के अधिक इच्छुक हो सकते थे। इसलिए, हम में से एक, जिसको उसने देवदूत (angel) समझा, उस महिला को जा कर मिला, और उससे कहा कि, उसे महान आदर मिलनेवाला है कि, वह एक नर बच्चे को गर्भ में धारण करनेवाली है, जो एक नया धर्म स्थापित करेगा। समय पूरा होने पर वह महिला गर्भवती हुई परंतु तभी उन घटनाओं में से एक, जो संसार के भागों में सामान्य हैं, हुई; महिला और उसके पति को, स्थानीय राजा के अत्याचार के कारण, अपने घर से भागना पड़ा।

उन्होंने धीमे–धीमे, मध्यपूर्व के एक नगर की तरफ रास्ता लिया और वहॉ उस औरत ने पाया कि, उसका प्रसवकाल पूरा हो चुका है। एक सराय के अस्तबल में जाने के सिवाय, वहॉ और कोई स्थान नहीं था। बच्चा वहॉ पैदा हुआ। हमने घटना का पीछा किया और सभी आवश्यक कदम उठाए। निगरानी करने वाले जहाज के बेड़े के तीन सदस्य, पृथ्वी की सतह पर उतरे और उन्होंने अस्तबल का रास्ता लिया। निराशा के साथ, उन्हें पता लगा कि, उनके जहाज को देख लिया गया था और उसे पूर्व के एक तारे के रूप में निरूपित किया गया था।

बच्चा बालकपन में बढ़ा, और एक विशेष विश्वास के साथ, उसने दूरानुभूति से लगातार संपर्क रखा, उसने बड़े उद्देश्यों को प्रदर्शित किया। नौजवान के रूप में, वह बड़ों के साथ विवाद करेगा और स्थानीय पुजारियों से, खेदपूर्वक दुश्मनी मोल लेगा। प्रारंभिक मानवपन में,

---

उन्होंने अपनी मॉ के समुचित मृतक संस्कार के लिए किया। जब उसकी मां मरी, कन्फ्यूसियस मात्र 23 वर्ष का था और उसने परम्परा के अनुसार 3 वर्ष तक उसका शोक मनाया। यद्यपि कन्फ्यूसियस की शिक्षाओं को चीनी लोगों द्वारा, धर्म के रूप में मान्यता दी गई है परंतु काफी लोग तर्क करते हैं कि उसके मूल्य धर्मनिरपेक्ष हैं और इसलिए उसे धार्मिक नहीं कहा जाना चाहिए परन्तु वह धर्म–निरपेक्ष नैतिकता के अधिक सन्निकट हैं। कन्फ्यूसियस ने मृत्यु के बाद के जीवन के बारे में, स्वर्ग को सम्मिलित करते हुए, भी तत्वों की विवेचना की है परन्तु ये अपेक्षाकृत आत्मा संबंधी कुछ मामलों में, जो धार्मिक विचारों के लिए अत्यावश्यक समझे जाते हैं, जैसे कि आत्मा की प्रकृति, असंबंधित हैं। तथापि, कन्फ्यूसियस की आस्था ज्योतिष में भी थी उसका मानना था कि ''स्वर्ग से अच्छे और बुरे सभी प्रतीक एवं संकेत प्राप्त होते हैं और बुद्धिमान लोग उनका समुचित उपयोग करते हैं।''

कन्फ्यूसियस स्वयं को संदेशप्रसारक (transmitter) (जिसने स्वयं कुछ भी आविष्कृत नहीं किया) के रूप में प्रस्तुत करते हैं। वह अध्ययन के महत्व के ऊपर सबसे अधिक जोर डालते हैं, वह अपने शिष्यों को प्राचीन पुस्तकों के स्वाध्याय और उन पर स्वामित्व प्राप्त करने पर जोर देते हैं, ताकि उनके गहरे विचार और गहन अध्ययन, नैतिकता संबंधी तमाम समस्याओं को सुलझाने में मदद करें। कन्फ्यूसियस की मृत्यु को ढाई हजार वर्ष से अधिक हो गए हैं परन्तु उसकी वंशावली (family heredity) अभी बढ़ती ही जा रही है। चीन में उसकी वंश परम्परा के लोग लगभग बीस लाख से ऊपर हैं। चीन में उसकी वंश परम्परा के ऊपर आनुवांशिकी के आधार पर, एक अध्ययन कराया गया था, जो 2007 में पूरा हुआ, जिसमें पाया गया कि न केवल चीन में बल्कि, कोरिया, ताइवान आदि देशों में और सम्पूर्ण विश्व में उसके आनुवांशिकी के वंशज पाए जाते हैं। चीनी विचारक कहते हैं कि कन्फ्यूसियस के विचार, व्यक्ति को सर्वप्रथम रखते हैं और परस्पर विचार वैषम्य होने के बावजूद भी आपस में सामंजस्य बनाए रखने के ऊपर जोर देते हैं।

वह उन लोगों से पीछे हट गया, जिन्हें वह जानता था और उसने पूर्व और सुदूरपूर्व (far east) के अनेक देशों में यात्रा की। हमने उसे तिब्बत जाने का निर्देश दिया, और उसने पहाड़ों की श्रृंखला को पार किया और उसने कुछ समय के लिए, ल्हासा के कैथेड्रल की भी यात्रा की, जहॉ अभी भी, उसके हाथ की छापें (hand prints) सुरक्षित रखी गई हैं। यहॉ उसे एक धर्म को बनाने के लिए, जो पश्चिमी लोगों के लिए सुविधाजनक था, सलाह और सहायता मिली।

अपने ल्हासा निवास की अवधि में, वह विशेष उपचार, जिसमें पृथ्वी के किसी मानव का सूक्ष्मशरीर, मुक्त किया जाता है और दूसरे अस्तित्व में, दूर ले जाया जाता है, में से हो कर गुजरा। इस सूक्ष्मशरीर को, हमारे चुने हुए शरीर में, अपने स्थान पर, घुसा दिया जाता है। ये आदमी, आध्यात्मिक विषयों में बहुत अधिक अनुभववाला था –अत्यधिक अनुभव, जो पृथ्वी के हालातों में, उसकी तुलना में, प्राप्त किया जा सकते थे। यह, परकाया प्रवेश का वह तरीका है, जिसे हम, जब हम पिछड़ी हुई प्रजातियों के साथ व्यवहार करते हैं, अक्सर काम में लाते हैं। अंत में, हर चीज तैयार थी और उसने अपने गृह देश के लिए, वापस लंबी यात्रा की। वहॉ पहुॅचा, कुछ परिचितों को चुनने में, जो नये धर्म के प्रचार और प्रसार में उसकी सहायता करेंगे, वह सफल हुआ।

दुर्भाग्यवश, शरीर के पूर्व धारक ने, पुजारियों को परेशान किया। अब उन्होंने इस तथ्य को याद किया और सावधानीपूर्वक, एक घटना की व्यवस्था की, जिसके अंतर्गत उस आदमी को गिरफ्तार किया जा सके। न्यायाधीश, जिसने उसका मुकदमा सुना, के ऊपर नियंत्रण रखते हुए; परिणाम एक गये गुजरे निष्कर्ष का था। हमने छोड़ने का एक तरीका प्रभाव में लाने का विचार किया, परंतु इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि, कुल मिला कर, सामान्य आबादी के ऊपर और नये धर्म के लिए, इसका परिणाम बुरा होगा।

आध्यात्मिक अनुशासन का नया तरीका प्रसारित हुआ। परंतु एक बार फिर, कुछ लोग थे, जिन्होंने इसे अपने हिसाब से भ्रष्ट करके बदल दिया। इसको लागू किये जाने के करीब साठ साल बाद, मध्यपूर्व में, इस्तम्बूल (constantinopole) के शहर में, एक बड़ा सम्मेलन[27] हुआ। यहॉ अनेक पादरी इकट्ठे हुए। उनमें से अनेकों ने, आदमियों में, जिनमें खराब यौन इच्छाएं थीं, विकृतियॉ पैदा कीं और जो विषमलैंगिकता (heterosexuality) के संबंधों को खराब नजर से देखते थे। उनके बहुसंख्यक मतों के कारण, वास्तविक शिक्षाऐं बदल दी गईं और औरतों को अस्वच्छ दिखा दिया गया। उन्होंने अब–एकदम गलत तरीके से पढ़ाया कि, सभी बच्चे पाप के कारण पैदा होते हैं। उन्होंने साठ साल पहले की घटनाओं के संबंध में, एक पुस्तक प्रकाशित करने का निर्णय लिया।

''इन उद्देश्यों के साथ, कहानियों और किंवदंतियों का, जितना अधिक हो सके उपयोग करते हुए, जो (अपनी सभी त्रुटियों के साथ) एक आदमी से दूसरे आदमी तक होते हुए, नीचे प्रविष्ट हो चुकी थीं, पुस्तक लिखने के लिए, लेखकों को भाड़े पर लिया गया। एक के बाद एक वर्ष के बाद, अनेक कमेटियॉ, इसको संशोधित करने, इसमें कुछ पाठ्यांशों को बदलने या निकालने के लिए, जो उन्हें अच्छे नहीं लगते थे, बैठाई गईं। अंत में, एक पुस्तक लिखी गई, जो वास्तविक आस्थाओं को नहीं सिखाती है परंतु, जो पादरियों की शक्तियों को बढ़ाने की प्रचार सामग्री के रूप में अधिक प्रभावशील हुई। शताब्दियों तक, जो बाद में गुजरीं, पादरी–जो मानवता का विकास करने में सहायक होने चाहिए थे–सक्रिय रूप से उन्होने इसमें बाधा डाली। मिथ्या किंवदंतियॉ प्रसारित की गईं, तथ्य तोड़े–मरोड़े गए। जबतक कि पृथ्वी के लोग, और

27 अनुवादक की टिप्पणी : कान्स्टेनटिनोपोल (Constantinopole) जिसे इस्ताम्बूल भी कहा जाता है, पहले रोम साम्राज्य का एक राज्य था, जो बाद में, सम्राट कांस्टेनटाईन (Constantine) के समय में, पूर्वी रोम साम्राज्य का एक बड़ा नगर बन गया। इसकी विशिष्टि स्थिति ने, इसको अत्यधिक धनाढ्यता के साथ बहुत तेजी से तरक्की करने वाला औद्योगिक नगर बनाया। नगर के ऊपर अनेक विदेशी ताकतों ने अपनी नजर गढ़ाई, जिसमें पश्चिमी, ईसाई (लेटिन) भी शामिल थे, जिन्होंने 1253 ई. में इसके ऊपर चढ़ाई की। कांस्टेनटिनोपोल के ऊपर ऑटोमेन तुर्कियों (Ottomen Turcks) ने 1453 ई. में चढ़ाई की, जिस के बाद इसका पतन प्रारंभ हुआ और बाईजेनटाइन साम्राज्य (Byzantine empire) का अंत हुआ। तथापि, बाईजेनटाईन साम्राज्य एक बड़ा ऐतिहासिक शक्तिशाली राज्य था, जो लगभग 1100 वर्ष तक चला। अब वह देश, जिसमें कांस्टेनटाईन स्थित है, तुर्की (Turcky) कहलाता है और अब वहॉ इस्लाम के मानने वाले बहुसंख्यक है और ईसाई धर्म के मानने वाले काफी कम है परन्तु विशेष रूप से फानर (Phanar) जिले में, जिसे प्राचीन कांस्टेनटाईनपोल कहा जाता है, ईसाइयत को मानने वाले लोग निवास करते हैं। बाइजेनटाईन साम्राज्य में, सर्वाधिक महत्वपूर्ण और लम्बे समय तक चलने वाला परिवर्तन, धर्म में परिवर्तन था। ईसाइयत को पागन (Pagan) धर्म के द्वारा, जो तत्कालीन सम्राट का आधिकारिक धर्म था, विस्थापित कर दिया गया। पागन धर्म में मूर्तियों (idols) की अथवा काल्पनिक देवी देवताओं की पूजा की जाती है। ईसाई धर्म में, ग्रीस की देवी आर्टिमिस के प्रति समर्पण किया जाता है। चौथी शताब्दी में अपनी स्थापना से लगाकर 13वीं शताब्दी के प्रारंभ तक, कांसटेनटिनोपोल यूरोप का सबसे बड़ा और सबसे धनवान नगर था जो रोम और बाइजेनटाइन के समय में, ईसाइयत के प्रसार में एक माध्यम साबित हुआ।

विशेषरूप से, दुष्ट पुजारी, अपना रास्ता नहीं बदलें, हम साम्राज्य के लोग, पृथ्वी के संसार को अपने हाथों में ले लेंगे। इस बीच, इस जैसे किसी सीमांतक मामले को छोड़ कर, हमें मनुष्य से बातचीत नहीं करने का, और पृथ्वी के किसी भी शासन के साथ, उसे कोई प्रस्ताव नहीं करने का आदेश है।''

आवाज ने बोलना बंद कर दिया। मैं, उन सारे चित्रों को, जो मेरी दृष्टि में लाए गए, जो कुछ बहुत पुराने समय में, पहले हो चुका था, सुन्न हो कर,, इन हमेशा परिवर्तित होने वाले पर्दों को देखता हुआ, उड़ता रहा। मैंने, संभावित भविष्य को भी, अधिकांशतः देखा। क्योंकि, भविष्य के संबन्ध में काफी हद तक, एकदम सही ढंग से, एक विश्व के लिए या एक देश के लिए भी, भविष्यवाणी की जा सकती है। मैंने अपने प्रिय देश को, घृणित चीनी लोगों के द्वारा अतिक्रमित किए जाते हुए, देखा। मैंने एक दुष्ट राजनैतिक शासन का जो साम्यवाद *(communism)* जैसे नाम का प्रतीत होता था, उत्थान–और पतन– देखा, परंतु इसका मेरे लिए कोई अर्थ नहीं था। अंत में मुझे अत्यधिक थकान हुई। मैंने अनुभव किया कि, मेरा सूक्ष्मशरीर भी तनाव के कारण, जो उसके ऊपर डाला गया, टूट रहा है। यहॉ तक जीवन्त रंगों से भरे हुए पर्दे, बदल कर भूरे हो गए। मेरी दृष्टि धुंधली हो गई और मैं बेहोशी की स्थिति में चला गया।

एक भयानक झूलती हुई गति ने मुझे नींद से, या बेहोशी की अवस्था से जगा दिया। मैंने अपनी ऑखें खोलीं–परंतु मेरे पास ऑखें नहीं थीं! यद्यपि मैं अभी भी हिल नहीं सकता था, मैं किसी प्रकार से जागरूक था कि, मैं दुबारा अपने भौतिक शरीर में हूँ। मेज, जिस पर मैं लेटा था, झूल रही थी। मुझे वापस अंतरिक्ष यान के गलियारे में ले जाया गया। एक भावनाहीन स्वर ने, सपाट रूप से कहा *''वह होश में है।''* इसके पीछे स्वीकृति का एक स्वर आया और उसके बाद, सिवाय इसके कि, पैरों के चलने की आवाज और चूंकि एक समय, मेरी मेज एक दीवार से टकरा गई थी, धातुओं के रगड़े जाने की हल्की सी आवाज हुई, फिर शान्ति हुई।

मैं धातु के कमरे में अकेला लेटा हुआ था। लोगों ने मेरी मेज को जमा कर दिया था और शान्ति से वापस हट गए थे। मैं घटनाओं के ऊपर आश्चर्य करता हुआ, जो अभी भी मेरे दिमाग में, थोड़े विरोध के साथ महसूस हो रही थीं, लेटा रहा। पुजारियों के संबंध में लगातार निंदात्मक टिप्पणियॉ; मैं एक पुजारी था और वे मेरी अनिच्छुक सेवाओं को पाने के लिए पर्याप्त प्रसन्न थे। जब मैंने विचारमग्न होते हुए विश्राम किया, मैंने धातु के पैनल को एक बगल से खिसकते हुए सुना। एक आदमी अंदर आया और अपने पीछे की दरवाजे को खिसका कर बंद कर दिया।

''ठीक है, भिक्षु,'' डॉक्टर की आवाज प्रसन्नता से गूंजी, *''तुमने ठीक किया है। हमें तुम्हारे ऊपर अत्यन्त गर्व है। जब तुम अचेत थे, हमने तुम्हारे मस्तिष्क की फिर से जॉच की और हमारे उपकरण हमें बताते हैं कि, सारा ज्ञान, तुम्हारा ज्ञान, मस्तिष्क की कोशिकाओं के अंदर बंद कर दिया गया है। तुमने हमारे नौजवान आदमियों और औरतों को काफी कुछ सिखाया है। शीघ्र ही तुमको मुक्त कर दिया जायेगा। क्या इससे तुम्हें प्रसन्नता नहीं हुई ?''*

''प्रसन्न, डॉक्टर श्रीमान् ?'' मैंने पूछा *''मैं किस संबंध में प्रसन्न होऊँ ? आपने मुझे पकड़ा, आपने मेरे सिर का ऊपरी हिस्सा काट दिया, आपने मेरी आत्मा को बलपूर्वक शरीर के बाहर निकाल दिया, आपने पुजारियों के समुदाय के सदस्य के रूप में मेरा अपमान किया, और अब–मेरा उपयोग करने के बाद–आप मेरा त्याग करने जा रहे हैं, जैसे कि एक व्यक्ति मृत्यु के समय, अपनी काया को छोड़ देता है। प्रसन्न ? मेरे पास प्रसन्न होने के लिए है क्या ? क्या आप मेरी ऑखों को दुबारा लौटाने वाले हैं ? क्या आप मुझे जीने का साधन देने वाले हैं ? अन्यथा मैं कैसे अस्तित्व में रहूँगा ?''* मैं अंत में, लगभग गरज उठा!

''दुनियॉ के मुख्य कष्टों में से एक, भिक्षु,'' डॉक्टर ने आनंद लिया, *''ये है कि तुम्हारे अधिकतर लोग नकारात्मक (negative) होते हैं। कोई नहीं कह सकता कि, तुम नकारात्मक हो। तुम सकारात्मक (positive) रूप से वह कहते हो, जो तुम्हारा आशय है। यदि लोग हमेशा ही रचनात्मक रूप में सोचें, तो दुनियॉ में किसी प्रकार का कष्ट नहीं रहेगा, क्योंकि यहॉ के*

लोगों तक, नकारात्मक अवस्थाऐं स्वभाविक रूप से आती हैं, यद्यपि वास्तव में, नकारात्मक रूप से होने में, अधिक प्रयास लगते हैं।''

''परंतु डॉक्टर श्रीमान् !'' मैं जोर से बोला, *''मैंने ये पूछा था कि, आप मेरे लिए क्या करने जा रहे हैं। मैं कैसे जिंदा रहूँगा ? मैं क्या करूँगा ? क्या मुझे इस ज्ञान को मात्र तब तक सहेज कर रखना होगा जबतक कि, कोई आता है, जो कहता है कि, वही वह आदमी है, और तब मैं हर चीज को एक बूढ़ी औरत की तरह से, जो बाजार में खड़ा होकर बड़बड़ाती है, उसको उगल दूँगा ? और आप ऐसा क्यों सोचते हैं कि, मैं, ये सोचते हुए भी कि, आप पुजारियों के बारे में क्या सोचते हैं, इस काम को करूँगा ?''*

''भिक्षु !'' डॉक्टर ने कहा, *''हम तुम्हें, पत्थर के फर्शवाली, एक सुविधाजनक, अच्छी गुफा में रखेंगे। उसमें टपकते हुए पानी का एक बहुत छोटा स्रोत होगा, जो तुम्हें उस दिशा में, आवश्यकताओं की पूर्ति करेगा। खाने के लिए, तुम्हारी पुजारियों की व्यवस्था, तुम्हारे लिए लोगों से खाना भिजवाएगी। फिर, उसके बाद पुजारी ही पुजारी हैं; तुम्हारे तिब्बत के पुजारी, मुख्यरूप से भले हैं और उनके साथ हमारा कोई विवाद नहीं है। क्या तुम्हें नहीं दिखाई देता कि, हमने इससे पहले भी तिब्बत के पुजारियों का उपयोग किया है ? और तुम उसके बारे में पूछते हो, जिसको तुम ये ज्ञान दोगे; इसके बारे में याद रखो–जब वह आदमी आयेगा, तुम जान जाओगे। अपना ज्ञान उसको ही दो और किसी दूसरे को नहीं।''*

इस प्रकार, मैं पूरी तरह से उनकी कृपा पर निर्भर होते हुए, वहॉ लेटा रहा। परंतु अनेक घंटों के बाद, वह डॉक्टर फिर से, यह कहते हुए मेरे कमरे में आया, *''अब तुमको चलता कर दिया जाएगा। पहले–हमारे पास तुम्हारे लिए एक नई पोशाक है और एक नया कटोरा भी।''* हाथ, मेरे साथ व्यस्त हुए, मुझमें से अजीब चीजें खींच कर निकाल दी गईं, मेरी चादर बदल दी गई और नई पोशाक–एकदम नई, पहली नई पोशाक, जो मुझे पहले कभी मिली थी–मुझे पहनाई गई। तब मेरे अन्दर गति वापस लौटी। किसी नर सहायक ने एक भुजा, मेरे कंधों के चारों तरफ रखी और उस मेज के किनारे से उतरने में मदद की। उन अज्ञात संख्या के दिनों में पहली बार, मैं दुबारा अपने पैरों पर खड़ा हुआ।

उस रात को मैंने अधिक संतुष्टि के साथ, एक कम्बल में लपेटा हुआ जो भी मुझे दिया गया था, विश्राम किया। और अगले दिन मुझे ले जाया गया, जैसे कि मैं तुम्हें पहले बता चुका हूँ, और एक गुफा में जमा कर दिया गया, जहॉ मैं अकेला, साठ साल से अधिक समय के लिए जीता रहा हूँ परंतु अब, इससे पहले कि हम रात के लिए विश्राम करें, हम थोड़ी चाय पी लें, क्योंकि मेरा काम अब समाप्ति पर है।

अध्याय ग्यारह

नौजवान भिक्षु, अपनी गर्दन के पिछले भाग को, डर के साथ खड़ा करते हुए, सहसा उठ बैठा। कुछ चीज उससे रगड़ खा गई थी। किसी चीज ने उस पर, ठण्डी उंगलियों को उसके माथे पर, फिरा दिया था। लंबे क्षणों के लिए, अपने कानों पर, आवाज की हल्की सी आहट को भी सुनने के लिए जोर डालते हुए, वह ठीक सीधा बैठा। उस नितांत अंधियारे में और उसके आसपास, व्यर्थ में परिश्रम से ताकती हुई खुली ऑखें। कोई हलचल नहीं हुई। उसकी चेतना में, हल्के से स्वर की फालतू आवाज नहीं गूंजी। गुफा का प्रवेशद्वार, पूरी प्रकाश की कमी के ऊपर अस्पष्ट रूप से झलकता हुआ, जो पूरी गुफा को घेरे हुए था, मात्र हल्के अंधियारे वाला था।

जबतक कि वह, अपने खुद के दिल की धड़कनों को, और अपने खुद के अंगों से, धुंधली सी चटकने की और कष्ट से सांस लेने को नहीं सुन पाया, उसने अपनी सांस रोकी। हवा से विक्षुब्ध, पत्तियों की किसी खड़खड़ाहट ने, उसको प्रसन्न नहीं किया। रात का कोई प्राणी नहीं बोला। शान्ति। शोर का पूरी तरह अभाव, जो केवल कुछ लोगों को ज्ञात है, और आबाद समाज में (तो) किसी को भी नहीं। फिर, हल्के से तंतु उसके सिर में घूमे। डर की चीख के साथ उसकी दौड़ती हुई टांगें, इससे पहले कि वह जमीन से टकराता, वह हवा में ऊॅचा उछला।

गुफा के बाहर भागते हुए, डर से पसीना निकालते हुए, पूरी तरह काली पड़ गई आग के ऊपर, वह हिचकिचाहट के साथ नीचे झुका। समीप की जमीन और बालू को एक तरफ फैंकते हुए, उसने लाल चमक को खोल दिया। शीघ्र ही, उसने एक पूरी तरह सूखी हुई शाखा को उसमें झोंका और जब तक ऐसा नहीं लगा, कि उसकी रक्त कोशिकाऐं तनाव में आकर विस्फोटित हो जाऐंगी, आग को फूॅका। अंत में लकड़ी ने आग पकड़ ली। उसे हिचकिचाहट के साथ, एक हाथ में पकड़ते हुए, उसमें दूसरी लकड़ी डाली और उसके लिए भी प्रतीक्षा की कि, वह जल कर लपटों में जल उठे। अंत में, हर हाथ में जलती हुई शाखा ले कर, वह धीमे से गुफा में घुसा। लहराती हुई लपटें तीव्र हुईं और उसकी हलचल से नाचने लगीं। उसकी परछाईयॉ विलक्षण रूप से डालीं गईं और उसके किसी भी तरफ लंबी होकर पड़ीं।

अवसादग्रस्त हो कर उसने आसपड़ौस में घूरा। डरते हुए, उसने इस आशा में तलाश की कि, ये मकड़ी का जाला हो सकता था, जो उसको चारों ओर से घेर रहा था, परंतु इसका कोई चिन्ह् वहॉ नहीं था। तब उसे बूढ़े साधु का ख्याल आया और उसने इससे पहले उसके संबंध में न सोचने के लिए, स्वयं को फटकारा। *''आदरणीय !''* उसने थरथराहट के साथ कहा, *''क्या आप एकदम ठीक हैं ?''* कानों पर दवाब डालते हुए उसने सुना, परंतु कोई उत्तर नहीं मिला, कोई गूंज भी नहीं हुई। जलती हुई दो शाखाओं के साथ, जो उसने ठीक सामने फेंकीं थीं, उसने संदिग्ध रूप से डरते हुए, धीमे से, आगे की तरफ, अपना रास्ता लिया। गुफा के अंत में वह दांयी ओर घूमा, जहॉ इससे पहले, वह प्रविष्ट नहीं हुआ था, और जब उसने उस बूढ़े आदमी को एक छोटी गुफा के दूरस्थ भाग में, पद्मासन की मुद्रा में बैठे हुए देखा, वह आराम की एक दबी हुई आवाज में बोला।

जैसे वही शान्ति से वापस होनेवाला था, एक भयानक मांस–मांस–मांस ने उसका ध्यान आकर्षित किया। कठोरता से घूरते हुए उसने देखा कि, एक चट्टानी उभार में से, बूंद–बूंद–बूंद के रूप में, पानी निकल कर गिर रहा है। अब नवयुवक भिक्षु, पहले से शांत था। *''मुझे खेद है, मैंने घुसपैठ की, आदरणीय,''* उसने कहा, *''मुझे डर लगा कि आप बीमार हैं। मैं आपको छोड़ कर जाता हूॅ।''* परंतु इसका कोई उत्तर नहीं मिला। कोई हलचल नहीं। बूढ़ा आदमी, पत्थर की मूर्ति की तरह, शांत बैठा रहा। डरते हुए, नौजवान आदमी आगे बढ़ा और तब एक क्षण के लिए, उस गतिहीन आकृति का अध्ययन करते हुए, खड़ा हुआ। अंत में, भय के साथ, उसने अपनी बाहें आगे बढ़ाईं और बूढ़े आदमी को उसके कंधे पर छुआ। आत्मा बाहर निकल चुकी थी। लपलपाती हुई लपटों से चौंधयाते हुए, उसने प्रभामण्डल के बारे में पहले नहीं सोचा था। अब उसने समझा कि, वह भी मंद पड़ गया है, समाप्त हो गया है।

दुखपूर्वक, वह नौजवान लाश के सामने, पालथी मार कर बैठा और उसने मृत लोगों के लिए, युगों पुराने रीति–रिवाजों को गाया। आत्मा को स्वर्ग के क्षेत्रों के रास्ते पर यात्रा पर जाते हुए, निर्देश देते हुए। अपने भ्रमित मन की अवस्था में, उपद्रवी अस्तित्वों के द्वारा, संभावित खतरों की चेतावनी उसके सामने रखी। अंत में, उसके धार्मिक कर्तव्य पूरे हुए, वह धीमे से अपने पैरों पर उठा, मृत आकृति के प्रति झुका, और–मशालों ने, जो बहुत पहले बुझ गईं थीं– गुफा का बाहर का दरवाजा महसूस कराया।

भोर से पहले की हवा उठती ही जा रही थी और पेड़ों में हो कर अद्भुत रूप से दुख मना रही थी। और ऊँचे स्वर में, शोकयुक्त ध्वनियों का बाजा बजाते हुए, एक जंगली शोकगीत, चट्टान की दरार में से, जिसके आरपार हवाऐं चल रही थीं, निकला। धीमे–धीमे, सुबह के आकाश में, मंद प्रकाश की पहली धारियॉ दिखाई दीं और पहाड़ी श्रंखला का दूर का सिरा, अब पहचाना जा सका। नौजवान भिक्षु ने, इस पर आश्चर्य करते हुए कि, आगे क्या करना है, भयानक कार्य, जो उसके सामने था उस पर सोचते हुए, दीनतापूर्वक, आग के बगल से हाथ जोड़े। समय ठहरा हुआ लगा, जो अनन्त युगों का प्रतीत हुआ। परंतु अंत में, सूर्योदय हुआ और प्रकाश आया। नौजवान ने, एक शाखा को आग में फेंका और जबतक कि, उसका आखिरी सिरा आग में नहीं जल गया, धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा की। अनिच्छापूर्वक, उसने जलती हुई शाखा को उठाया और तब, लड़खड़ाते हुए कदमों से, गुफा में, उसके अंदरूनी प्रकोष्ठ में, आगे बढ़ा।

बूढ़े साधु की लाश बैठी थी मानो कि, वह भी जिंदा है। डर के साथ, नौजवान साधु झुका और उसने बूढ़ी लाश को उठा लिया। उसने अधिक प्रयास के बिना उसे उठा लिया और अपने कंधों पर लाद लिया। थोड़ा सा लड़खड़ाते हुए, उसने गुफा के बाहर और पहाड़ के बगल की ओर, जहॉ बड़ा सपाट पत्थर प्रतीक्षा कर रहा था, अपना रास्ता लिया। गिद्ध भी प्रतीक्षा कर रहे थे। धीमे से, नौजवान ने उस व्यर्थ लाश पर से पोशाक को हटाया और उस नर कंकाल जैसे पतले ढ़ांचे के ऊपर दृष्टि डालते हुए, जिसकी खाल इतनी कड़ाई से जुड़ी हुई थी, क्षणिक करुणा अनुभव की। घृणा के साथ, थरथराते हुए, उसने तीखी नोंक वाले चकमक पत्थर को, उसके पेट के निचले हिस्से में कोंच दिया और उसे कठोरतापूर्वक बाहर निकाला। उसकी उपास्थियों (lower abdomen) और तंतुमय मांसपेशियों को फाड़ने के साथ, एक भयानक ध्वनि हुई, जिसने गिद्धों को सावधान कर दिया और उन्हें अधिक समीप उड़ने के लिए बुला लिया।

लाश के अनावरित (expose) हो जाने के साथ, लाश की गुहा (cavity) को पूरी तरह खोलते हुए नौजवान ने एक भारी पत्थर को उठाया और उसकी खोपड़ी के ऊपर पटका, जिससे मस्तिष्क, लुढ़कता हुआ बाहर आ गया। तब, अपने गालों पर से ऑसुओं की धार बहते हुए, उसने बूढ़े साधु की पोशाक और कटोरे को उठाया और गिद्धों को अपने पीछे आपस में लड़ते हुए छोड़ता हुआ, और पैर घसीटता हुआ वह वापस गुफा में गया। उसने पोशाक और कटोरे को आग में उछाला, शीघ्र ही, ये देखते हुए कि, लपटों ने उसे उपयोग में ले लिया।

दुखपूर्वक, प्यासी पृथ्वी पर, ऑसुओं के साथ छपाक की ध्वनि करते हुए, वह दूर मुड़ गया और जीवन के दूसरे चरण की तरफ, धीमे–धीमे पैर घसीटते हुए, रास्ते पर नीचे उतरा।